सहाइफ़-ए हिकमत और ज़बूर

असल इब्रानी मतन से नया उर्दू तर्जुमा

नाशिरीन

जियोलिंक रीसोर्स कन्सल्टेंट्स

बार ________________________________ दुवुम

The Wisdom Books and Psalms. Job to Song of Songs in Modern Urdu
Translated from the Original Hebrew
Urdu Geo Version (Devanagari) (beta version 150122)
© 2012 Geolink Resource Consultants, LLC

Published by
Geolink Resource Consultants, LLC
10307 W. Broad Street, # 169, Glen Allen, Virginia 23060
United States of America

http://urdugeoversion.com

जुम्ला हुक़ूक़ ब-हक़्क़-ए नाशिरीन, जियोलिंक रीसोर्स कन्सल्टेंट्स, एल-एल-सी महफ़ूज़ हैं

अय्यूब

अय्यूब की दीनदारी

1 [1] मुल्क-ए-ऊज़ में एक बेइल्ज़ाम आदमी रहता था जिस का नाम अय्यूब था। वह सीधी राह पर चलता, अल्लाह का ख़ौफ़ मानता और हर बुराई से दूर रहता था। [2] उस के सात बेटे और तीन बेटियाँ पैदा हुईं। [3] साथ साथ उस के बहुत माल-मवेशी थे : 7,000 भेड़-बकरियाँ, 3,000 ऊँट, बैलों की 500 जोड़ियाँ और 500 गधियाँ। उस के बेशुमार नौकर-नौकरानियाँ भी थे। ग़रज़ मशरिक़ के तमाम बाशिन्दों में इस आदमी की हैसियत सब से बड़ी थी।

[4] उस के बेटों का दस्तूर था कि बारी बारी अपने घरों में ज़ियाफ़त करें। इस के लिए वह अपनी तीन बहनों को भी अपने साथ खाने और पीने की दावत देते थे। [5] हर दफ़ा जब ज़ियाफ़त के दिन इख़्तिताम तक पहुँचते तो अय्यूब अपने बच्चों को बुला कर उन्हें पाक-साफ़ कर देता और सुब्ह-सवेरे उठ कर हर एक के लिए भस्म होने वाली एक एक क़ुर्बानी पेश करता। क्यूँकि वह कहता था, “हो सकता है मेरे बच्चों ने गुनाह करके दिल में अल्लाह पर लानत की हो।” चुनाँचे अय्यूब हर ज़ियाफ़त के बाद ऐसा ही करता था।

अय्यूब के किरदार पर इल्ज़ाम

[6] एक दिन फ़रिश्ते [a]अपने आप को रब के हुज़ूर पेश करने आए। इब्लीस भी उन के दरमियान मौजूद था। [7] रब ने इब्लीस से पूछा, “तू कहाँ से आया है?” इब्लीस ने जवाब दिया, “मैं दुनिया में इधर उधर घूमता फिरता रहा।”

[8] रब बोला, “क्या तू ने मेरे बन्दे अय्यूब पर तवज्जुह दी? दुनिया में उस जैसा कोई और नहीं। क्यूँकि वह बेइल्ज़ाम है, वह सीधी राह पर चलता, अल्लाह का ख़ौफ़ मानता और हर बुराई से दूर रहता है।”

[9] इब्लीस ने रब को जवाब दिया, “बेशक, लेकिन क्या अय्यूब यूँ ही अल्लाह का ख़ौफ़ मानता है? [10] तू ने तो उस के, उस के घराने के और उस की तमाम मिलकियत के इर्दगिर्द हिफ़ाज़ती बाड़ लगाई है। और जो कुछ उस के हाथ ने किया उस पर तू ने बरकत दी, नतीजे में उस की भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल पूरे मुल्क में फैल गए हैं। [11] लेकिन वह क्या करेगा अगर तू अपना हाथ ज़रा बढ़ा कर सब कुछ तबाह करे जो उसे हासिल है। तब वह तेरे मुँह पर ही तुझ पर लानत करेगा।”

[12] रब ने इब्लीस से कहा, “ठीक है, जो कुछ भी उस का है वह तेरे हाथ में है। लेकिन उस के बदन को हाथ न लगाना।” इब्लीस रब के हुज़ूर से चला गया।

[13] एक दिन अय्यूब के बेटे-बेटियाँ मामूल के मुताबिक़ ज़ियाफ़त कर रहे थे। वह बड़े भाई के घर में खाना खा रहे और मै पी रहे थे। [14] अचानक एक क़ासिद अय्यूब के पास पहुँच कर कहने लगा, “बैल खेत में हल चला रहे थे और गधियाँ साथ वाली ज़मीन पर चर रही थीं [15] कि सबा के लोगों ने हम पर हम्ला करके सब कुछ छीन लिया। उन्हों ने तमाम मुलाज़िमों को तलवार से मार डाला, सिर्फ़ मैं ही आप को यह बताने के लिए बच निकला हूँ।”

[16] वह अभी बात कर ही रहा था कि एक और क़ासिद पहुँचा जिस ने इत्तिला दी, “अल्लाह की आग

---

[a]लफ़्ज़ी तर्जुमा : अल्लाह के फ़र्ज़न्द।

ने आसमान से गिर कर आप की तमाम भेड़-बकरियों
और मुलाज़िमों को भस्म कर दिया। सिर्फ़ मैं ही आप
को यह बताने के लिए बच निकला हूँ।”
17 वह अभी बात कर ही रहा था कि तीसरा क़ासिद
पहुँचा। वह बोला, “बाबल के कस्दियों ने तीन गुरोहों
में तक़्सीम हो कर हमारे ऊँटों पर हम्ला किया और
सब कुछ छीन लिया। तमाम मुलाज़िमों को उन्हों ने
तलवार से मार डाला, सिर्फ़ मैं ही आप को यह बताने
के लिए बच निकला हूँ।”
18 वह अभी बात कर ही रहा था कि चौथा क़ासिद
पहुँचा। उस ने कहा, “आप के बेटे-बेटियाँ अपने बड़े
भाई के घर में खाना खा रहे और मै पी रहे थे 19 कि
अचानक रेगिस्तान की जानिब से एक ज़ोरदार आँधी
आई जो घर के चारों कोनों से यूँ टकराई कि वह
जवानों पर गिर पड़ा। सब के सब हलाक हो गए।
सिर्फ़ मैं ही आप को यह बताने के लिए बच निकला
हूँ।”
20 यह सब कुछ सुन कर अय्यूब उठा। अपना
लिबास फाड़ कर उस ने अपने सर के बाल मुंडवाए।
फिर उस ने ज़मीन पर गिर कर औंधे मुँह रब को
सिज्दा किया। 21 वह बोला, “मैं नंगी हालत में माँ के
पेट से निकला और नंगी हालत में कूच कर जाऊँगा।
रब ने दिया, रब ने लिया, रब का नाम मुबारक हो!”
22 इस सारे मुआमले में अय्यूब ने न गुनाह किया,
न अल्लाह के बारे में कुफ़्र बका।

अय्यूब पर बीमारी का हम्ला

2 1 एक दिन फ़रिश्ते [b]दुबारा अपने आप को रब
के हुज़ूर पेश करने आए। इब्लीस भी उन के
दरमियान मौजूद था। 2 रब ने इब्लीस से पूछा, “तू
कहाँ से आया है?” इब्लीस ने जवाब दिया, “मैं
दुनिया में इधर उधर घूमता फिरता रहा।” 3 रब बोला,
“क्या तू ने मेरे बन्दे अय्यूब पर तवज्जुह दी? ज़मीन
पर उस जैसा कोई और नहीं। वह बेइल्ज़ाम है,
वह सीधी राह पर चलता, अल्लाह का ख़ौफ़ मानता
और हर बुराई से दूर रहता है। अभी तक वह अपने
बेइल्ज़ाम किरदार पर क़ाइम है हालाँकि तू ने मुझे
उसे बिलावजह तबाह करने पर उकसाया।”
4 इब्लीस ने जवाब दिया, “खाल का बदला खाल
ही होता है! इन्सान अपनी जान को बचाने के लिए
अपना सब कुछ दे देता है। 5 लेकिन वह क्या करेगा
अगर तू अपना हाथ ज़रा बढ़ा कर उस का जिस्म [c]छू
दे? तब वह तेरे मुँह पर ही तुझ पर लानत करेगा।”
6 रब ने इब्लीस से कहा, “ठीक है, वह तेरे हाथ में
है। लेकिन उस की जान को मत छेड़ना।” 7 इब्लीस
रब के हुज़ूर से चला गया और अय्यूब को सताने
लगा। चाँद से ले कर तल्वे तक अय्यूब के पूरे जिस्म
पर बदतरीन क़िस्म के फोड़े निकल आए। 8 तब
अय्यूब राख में बैठ गया और ठीकरे से अपनी जिल्द
को खुरचने लगा।
9 उस की बीवी बोली, “क्या तू अब तक अपने
बेइल्ज़ाम किरदार पर क़ाइम है? अल्लाह पर लानत
करके दम छोड़ दे!” 10 लेकिन उस ने जवाब दिया,
“तू अहमक़ औरत की सी बातें कर रही है। अल्लाह
की तरफ़ से भलाई तो हम क़बूल करते हैं, तो क्या
मुनासिब नहीं कि उस के हाथ से मुसीबत भी क़बूल
करें?” इस सारे मुआमले में अय्यूब ने अपने मुँह से
गुनाह न किया।

अय्यूब के तीन दोस्त

11 अय्यूब के तीन दोस्त थे। उन के नाम इलीफ़ज़
तेमानी, बिल्दद सूख़ी और ज़ूफ़र नामाती थे। जब
उन्हें इत्तिला मिली कि अय्यूब पर यह तमाम आफ़त
आ गई है तो हर एक अपने घर से रवाना हुआ। उन्हों
ने मिल कर फ़ैसला किया कि इकट्ठे अफ़सोस करने
और अय्यूब को तसल्ली देने जाएंगे। 12 जब उन्हों ने
दूर से अपनी नज़र उठा कर अय्यूब को देखा तो उस
की इतनी बुरी हालत थी कि वह पहचाना नहीं जाता

[b]लफ़्ज़ी तर्जुमा : अल्लाह के फ़र्ज़न्द।

[c]लफ़्ज़ी तर्जुमा : गोश्त-पोस्त और हड्डियाँ।

था। तब वह ज़ार-ओ-क़तार रोने लगे। अपने कपड़े फाड़ कर उन्हों ने अपने सरों पर ख़ाक डाली। 13 फिर वह उस के साथ ज़मीन पर बैठ गए। सात दिन और सात रात वह इसी हालत में रहे। इस पूरे अर्से में उन्हों ने अय्यूब से एक भी बात न की, क्यूँकि उन्हों ने देखा कि वह शदीद दर्द का शिकार है।

अय्यूब की आह-ओ-ज़ारी

3 1 तब अय्यूब बोल उठा और अपने जन्म दिन पर लानत करने लगा। 2 उस ने कहा,

3 “वह दिन मिट जाए जब मैं ने जन्म लिया, वह रात जिस ने कहा, ‘पेट में लड़का पैदा हुआ है!’ 4 वह दिन अंधेरा ही अंधेरा हो जाए, एक किरन भी उसे रौशन न करे। अल्लाह भी जो बुलन्दियों पर है उस का ख़याल न करे। 5 तारीकी और घना अंधेरा उस पर क़ब्ज़ा करे, काले काले बादल उस पर छाए रहें, हाँ वह रौशनी से महरूम हो कर सख़्त दह्शतज़दा हो जाए। 6 घना अंधेरा उस रात को छीन ले जब मैं माँ के पेट में पैदा हुआ। उसे न साल, न किसी महीने के दिनों में शुमार किया जाए। 7 वह रात बाँझ रहे, उस में ख़ुशी का नारा न लगाया जाए। 8 जो दिनों पर लानत भेजते और लिवियातान अज़दहे को तहरीक में लाने के क़ाबिल होते हैं वही उस रात पर लानत करें। 9 उस रात के धुन्दल्के में टिमटिमाने वाले सितारे बुझ जाएँ, फ़ज्र का इन्तिज़ार करना बेफ़ाइदा ही रहे बल्कि वह रात तुलू-ए-सुब्ह की पलकें[d] भी न देखे। 10 क्यूँकि उस ने मेरी माँ को मुझे जन्म देने से न रोका, वर्ना यह तमाम मुसीबत मेरी आँखों से छुपी रहती।

11 मैं पैदाइश के वक़्त क्यूँ मर न गया, माँ के पेट से निकलते वक़्त जान क्यूँ न दे दी? 12 माँ के घुटनों ने मुझे ख़ुशआमदीद क्यूँ कहा, उस की छातियों ने मुझे दूध क्यूँ पिलाया? 13 अगर यह न होता तो इस वक़्त मैं सुकून से लेटा रहता, आराम से सोया होता। 14 मैं उन ही के साथ होता जो पहले बादशाह और दुनिया के मुशीर थे, जिन्हों ने खंडरात अज़ सर-ए-नौ तामीर किए। 15 मैं उन के साथ होता जो पहले हुक्मरान थे और अपने घरों को सोने-चाँदी से भर लेते थे। 16 मुझे ज़ाए हो जाने वाले बच्चे की तरह क्यूँ न ज़मीन में दबा दिया गया? मुझे उस बच्चे की तरह क्यूँ न दफ़नाया गया जिस ने कभी रौशनी न देखी? 17 उस जगह बेदीन अपनी बेलगाम हरकतों से बाज़ आते और वह आराम करते हैं जो तग-ओ-दौ करते करते थक गए थे। 18 वहाँ क़ैदी इत्मीनान से रहते हैं, उन्हें उस ज़ालिम की आवाज़ नहीं सुननी पड़ती जो उन्हें जीते जी हाँकता रहा। 19 उस जगह छोटे और बड़े सब बराबर होते हैं, ग़ुलाम अपने मालिक से आज़ाद रहता है।

20 अल्लाह मुसीबतज़दों को रौशनी और शिकस्तादिलों को ज़िन्दगी क्यूँ अता करता है? 21 वह तो मौत के इन्तिज़ार में रहते हैं लेकिन बेफ़ाइदा। वह खोद खोद कर उसे यूँ तलाश करते हैं जिस तरह किसी पोशीदा ख़ज़ाने को। 22 अगर उन्हें क़ब्र नसीब हो तो वह बाग़ बाग़ हो कर जश्न मनाते हैं। 23 अल्लाह उस को ज़िन्दा क्यूँ रखता जिस की नज़रों से रास्ता ओझल हो गया है और जिस के चारों तरफ़ उस ने बाड़ लगाई है। 24 क्यूँकि जब मुझे रोटी खानी है तो हाय हाय करता हूँ, मेरी आहें पानी की तरह मुँह से फूट निकलती हैं। 25 जिस चीज़ से मैं डरता था वह मुझ पर आई, जिस से मैं ख़ौफ़ खाता था उस से मेरा वास्ता पड़ा। 26 न मुझे इत्मीनान हुआ, न सुकून या आराम बल्कि मुझ पर बेचैनी ग़ालिब आई।”

इलीफ़ज़ का एतिराज़ : इन्सान अल्लाह के हुज़ूर रास्त नहीं ठहर सकता

4 1 यह कुछ सुन कर इलीफ़ज़ तेमानी ने जवाब दिया,

---

[d] पलकों से मुराद पहली किरनें है।

[2]“क्या तुझ से बात करने का कोई फ़ाइदा है? तू
तो यह बर्दाश्त नहीं कर सकता। लेकिन दूसरी तरफ़
कौन अपने अल्फ़ाज़ रोक सकता है? [3]ज़रा सोच
ले, तू ने ख़ुद बहुतों को तर्बियत दी, कई लोगों के
थकेमान्दे हाथों को तक़वियत दी है। [4]तेरे अल्फ़ाज़
ने ठोकर खाने वाले को दुबारा खड़ा किया, डगमगाते
हुए घुटने तू ने मज़बूत किए। [5]लेकिन अब जब
मुसीबत तुझ पर आ गई तो तू उसे बर्दाश्त नहीं कर
सकता, अब जब ख़ुद उस की ज़द में आ गया तो
तेरे रोंगटे खड़े हो गए हैं। [6]क्या तेरा एतिमाद इस पर
मुन्हसिर नहीं है कि तू अल्लाह का ख़ौफ़ माने, तेरी
उम्मीद इस पर नहीं कि तू बेइल्ज़ाम राहों पर चले?

[7]सोच ले, क्या कभी कोई बेगुनाह हलाक हुआ है?
हरगिज़ नहीं! जो सीधी राह पर चलते हैं वह कभी
रू-ए-ज़मीन पर से मिट नहीं गए। [8]जहाँ तक मैं ने
देखा, जो नाइन्साफ़ी का हल चलाए और नुक़्सान
का बीज बोए वह इस की फ़सल काटता है। [9]ऐसे
लोग अल्लाह की एक फूँक से तबाह, उस के क़हर
के एक झोंके से हलाक हो जाते हैं। [10]शेरबबर की
दहाड़ें ख़ामोश हो गईं, जवान शेर के दाँत झड़ गए
हैं। [11]शिकार न मिलने की वजह से शेर हलाक हो
जाता और शेरनी के बच्चे परागन्दा हो जाते हैं।

[12]एक बार एक बात चोरी-छुपे मेरे पास पहुँची, उस
के चन्द अल्फ़ाज़ मेरे कान तक पहुँच गए। [13]रात को
ऐसी रोयाएँ पेश आईं जो उस वक़्त देखी जाती हैं जब
इन्सान गहरी नींद सोया होता है। इन से मैं परेशानकुन
ख़यालात में मुब्तला हुआ। [14]मुझ पर दहशत और
थरथराहट ग़ालिब आई, मेरी तमाम हड्डियाँ लरज़
उठीं। [15]फिर मेरे चेहरे के सामने से हवा का झोंका
गुज़र गया और मेरे तमाम रोंगटे खड़े हो गए। [16]एक
हस्ती मेरे सामने खड़ी हुई जिसे मैं पहचान न सका,
एक शक्ल मेरी आँखों के सामने दिखाई दी। ख़ामोशी
थी, फिर एक आवाज़ ने फ़रमाया, [17]‘क्या इन्सान
अल्लाह के हुज़ूर रास्तबाज़ ठहर सकता है, क्या
इन्सान अपने ख़ालिक़ के सामने पाक-साफ़ ठहर
सकता है?’ [18]देख, अल्लाह अपने ख़ादिमों पर भरोसा
नहीं करता, अपने फ़रिश्तों को वह अहमक़ ठहराता
है। [19]तो फिर वह इन्सान पर क्यूँ भरोसा रखे जो
मिट्टी के घर में रहता, ऐसे मकान में जिस की बुन्याद
ख़ाक पर ही रखी गई है। उसे पतंगे की तरह कुचला
जाता है। [20]सुब्ह को वह ज़िन्दा है लेकिन शाम तक
पाश पाश हो जाता, अबद तक हलाक हो जाता है,
और कोई भी ध्यान नहीं देता। [21]उस के ख़ैमे के
रस्से ढीले करो तो वह हिक्मत हासिल किए बग़ैर
इन्तिक़ाल कर जाता है।

अल्लाह की तादीब तस्लीम कर

5 [1]बेशक आवाज़ दे, लेकिन कौन जवाब देगा?
कोई नहीं! मुक़द्दसीन में से तू किस की तरफ़
रुजू कर सकता है? [2]क्यूँकि अहमक़ की रंजीदगी
उसे मार डालती, सादालौह की सरगर्मी उसे मौत के
घाट उतार देती है। [3]मैं ने ख़ुद एक अहमक़ को जड़
पकड़ते देखा, लेकिन मैं ने फ़ौरन ही उस के घर पर
लानत भेजी। [4]उस के फ़र्ज़न्द नजात से दूर रहते।
उन्हें शहर के दरवाज़े में रौंदा जाता है, और बचाने
वाला कोई नहीं। [5]भूके उस की फ़सल खा जाते,
काँटेदार बाड़ों में महफ़ूज़ माल भी छीन लेते हैं। प्यासे
अफ़राद हाँपते हुए उस की दौलत के पीछे पड़ जाते
हैं। [6]क्यूँकि बुराई ख़ाक से नहीं निकलती और दुख-
दर्द मिट्टी से नहीं फूटता [7]बल्कि इन्सान ख़ुद इस का
बाइस है, दुख-दर्द उस की विरासत में ही पाया जाता
है। यह इतना यक़ीनी है जितना यह कि आग की
चिंगारियाँ ऊपर की तरफ़ उड़ती हैं।

[8]लेकिन अगर मैं तेरी जगह होता तो अल्लाह से
दरयाफ़्त करता, उसे ही अपना मुआमला पेश करता।
[9]वही इतने अज़ीम काम करता है कि कोई उन
की तह तक नहीं पहुँच सकता, इतने मोजिज़े कि
कोई उन्हें गिन नहीं सकता। [10]वही रू-ए-ज़मीन को
बारिश अता करता, खुले मैदान पर पानी बरसा देता
है। [11]पस्तहालों को वह सरफ़राज़ करता और मातम
करने वालों को उठा कर महफ़ूज़ मक़ाम पर रख
देता है। [12]वह चालाकों के मन्सूबे तोड़ देता है

ताकि उन के हाथ नाकाम रहें। [13]वह दानिशमन्दों
को उन की अपनी चालाकी के फंदे में फंसा देता है
तो होश्यारों की साज़िशें अचानक ही ख़त्म हो जाती
हैं। [14]दिन के वक़्त उन पर अंधेरा छा जाता, और
दोपहर के वक़्त भी वह टटोल टटोल कर फिरते हैं।
[15]अल्लाह ज़रूरतमन्दों को उन के मुँह की तलवार
और ज़बरदस्त के क़ब्ज़े से बचा लेता है। [16]यूँ
पस्तहालों को उम्मीद दी जाती और नाइन्साफ़ी का
मुँह बन्द किया जाता है।

[17]मुबारक है वह इन्सान जिस की मलामत अल्लाह
करता है! चुनाँचे क़ादिर-ए-मुतलक़ की तादीब को
हक़ीर न जान। [18]क्यूँकि वह ज़ख़्मी करता लेकिन
मर्हम-पट्टी भी लगा देता है, वह ज़र्ब लगाता लेकिन
अपने हाथों से शिफ़ा भी बख़्शता है। [19]वह तुझे छः
मुसीबतों से छुड़ाएगा, और अगर इस के बाद भी
कोई आए तो तुझे नुक़्सान नहीं पहुँचेगा। [20]अगर
काल पड़े तो वह फ़िद्या दे कर तुझे मौत से बचाएगा,
जंग में तुझे तलवार की ज़द में आने नहीं देगा।
[21]तू ज़बान के कोड़ों से महफ़ूज़ रहेगा, और जब
तबाही आए तो डरने की ज़रूरत नहीं होगी। [22]तू
तबाही और काल की हंसी उड़ाएगा, ज़मीन के वहशी
जानवरों से ख़ौफ़ नहीं खाएगा। [23]क्यूँकि तेरा खुले
मैदान के पत्थरों के साथ अह्द होगा, इस लिए उस
के जंगली जानवर तेरे साथ सलामती से ज़िन्दगी
गुज़ारेंगे। [24]तू जान लेगा कि तेरा ख़ैमा महफ़ूज़ है।
जब तू अपने घर का मुआइना करे तो मालूम होगा
कि कुछ गुम नहीं हुआ। [25]तू देखेगा कि तेरी औलाद
बढ़ती जाएगी, तेरे फ़र्ज़न्द ज़मीन पर घास की तरह
फैलते जाएंगे। [26]तू वक़्त पर जमाशुदा पूलों की तरह
उम्ररसीदा हो कर क़ब्र में उतरेगा।

[27]हम ने तहक़ीक़ करके मालूम किया है कि ऐसा
ही है। चुनाँचे हमारी बात सुन कर उसे अपना ले!”

अय्यूब का जवाब : साबित करो कि मुझ से क्या ग़लती हुई है

6 [1]तब अय्यूब ने जवाब दे कर कहा,
[2]“काश मेरी रंजीदगी का वज़न किया जा
सके और मेरी मुसीबत तराज़ू में तोली जा सके!
[3]क्यूँकि वह समुन्दर की रेत से ज़्यादा भारी हो गई है।
इसी लिए मेरी बातें बेतुकी सी लग रही हैं। [4]क्यूँकि
क़ादिर-ए-मुतलक़ के तीर मुझ में गड़ गए हैं, मेरी
रूह उन का ज़हर पी रही है। हाँ, अल्लाह के हौलनाक
हमले मेरे ख़िलाफ़ सफ़आरा हैं। [5]क्या जंगली गधा
ढीनचूँ ढीनचूँ करता है जब उसे घास दस्तयाब हो?
या क्या बैल डकराता है जब उसे चारा हासिल हो?
[6]क्या फीका खाना नमक के बग़ैर खाया जाता, या
अंडे की सफ़ेदी [ध]में ज़ाइक़ा है? [7]ऐसी चीज़ को मैं
छूता भी नहीं, ऐसी ख़ुराक से मुझे घिन ही आती है।

[8]काश मेरी गुज़ारिश पूरी हो जाए, अल्लाह मेरी आर्ज़ू
पूरी करे! [9]काश वह मुझे कुचल देने के लिए तय्यार
हो जाए, वह अपना हाथ बढ़ा कर मुझे हलाक करे।
[10]फिर मुझे कम अज़ कम तसल्ली होती बल्कि मैं
मुस्तक़िल दर्द के मारे पेच-ओ-ताब खाने के बावुजूद
ख़ुशी मनाता कि मैं ने क़ुद्दूस ख़ुदा के फ़रमानों का
इन्कार नहीं किया।

[11]मेरी इतनी ताक़त नहीं कि मज़ीद इन्तिज़ार करूँ,
मेरा क्या अच्छा अन्जाम है कि सब्र करूँ? [12]क्या
मैं पत्थरों जैसा ताक़तवर हूँ? क्या मेरा जिस्म पीतल
जैसा मज़बूत है? [13]नहीं, मुझ से हर सहारा छीन
लिया गया है, मेरे साथ ऐसा सुलूक हुआ है कि
कामयाबी का इम्कान ही नहीं रहा।

[14]जो अपने दोस्त पर मेहरबानी करने से इन्कार
करे वह अल्लाह का ख़ौफ़ तर्क करता है। [15]मेरे
भाइयों ने वादी की उन नदियों जैसी बेवफ़ाई की है जो
बरसात के मौसम में अपने किनारों से बाहर आ जाती
हैं। [16]उस वक़्त वह बर्फ़ से भर कर गदली हो जाती

[ध]या ख़त्मी का रस।

हैं, [17] लेकिन उरूज तक पहुँचते ही वह सूख जाती, तपती गर्मी में ओझल हो जाती हैं। [18] तब क़ाफ़िले अपनी राहों से हट जाते हैं ताकि पानी मिल जाए, लेकिन बेफ़ाइदा। वह रेगिस्तान में पहुँच कर तबाह हो जाते हैं। [19] तैमा के क़ाफ़िले इस पानी की तलाश में रहते, सबा के सफ़र करने वाले ताजिर उस पर उम्मीद रखते हैं, [20] लेकिन बेसूद। जिस पर उन्हों ने एतिमाद किया वह उन्हें मायूस कर देता है। जब वहाँ पहुँचते हैं तो शर्मिन्दा हो जाते हैं।

[21] तुम भी इतने ही बेकार साबित हुए हो। तुम हौलनाक बात देख कर दहशतज़दा हो गए हो। [22] क्या मैं ने कहा, 'मुझे तोहफ़ा दे दो, अपनी दौलत में से मेरी ख़ातिर रिश्वत दो, [23] मुझे दुश्मन के हाथ से छुड़ाओ, फ़िद्या दे कर ज़ालिम के क़ब्ज़े से बचाओ'?

[24] मुझे साफ़ हिदायत दो तो मैं मान कर ख़ामोश हो जाऊँगा। मुझे बताओ कि किस बात में मुझ से ग़लती हुई है। [25] सीधी राह की बातें कितनी तक्लीफ़दिह हो सकती हैं! लेकिन तुम्हारी मलामत से मुझे किस क़िस्म की तर्बियत हासिल होगी? [26] क्या तुम समझते हो कि ख़ाली अल्फ़ाज़ मुआमले को हल करेंगे, गो तुम मायूसी में मुब्तला आदमी की बात नज़रअन्दाज़ करते हो? [27] क्या तुम यतीम के लिए भी क़ुरआ डालते, अपने दोस्त के लिए भी सौदाबाज़ी करते हो?

[28] लेकिन अब ख़ुद फ़ैसला करो, मुझ पर नज़र डाल कर सोच लो। अल्लाह की क़सम, मैं तुम्हारे रू-ब-रू झूट नहीं बोलता। [29] अपनी ग़लती तस्लीम करो ताकि नाइन्साफ़ी न हो। अपनी ग़लती मान लो, क्यूँकि अब तक मैं हक़ पर हूँ। [30] क्या मेरी ज़बान झूट बोलती है? क्या मैं फ़रेबदिह बातें पहचान नहीं सकता?

अल्लाह मुझे क्यूँ नहीं छोड़ता?

7 [1] इन्सान दुनिया में सख़्त ख़िदमत करने पर मज्बूर होता है, जीते जी वह मज़दूर की सी ज़िन्दगी गुज़ारता है। [2] ग़ुलाम की तरह वह शाम के साय का आरज़ूमन्द होता, मज़दूर की तरह मज़दूरी के इन्तिज़ार में रहता है। [3] मुझे भी बेमानी महीने और मुसीबत की रातें नसीब हुई हैं। [4] जब बिस्तर पर लेट जाता तो सोचता हूँ कि कब उठ सकता हूँ? लेकिन लगता है कि रात कभी ख़त्म नहीं होगी, और मैं फ़ज्र तक बेचैनी से करवटें बदलता रहता हूँ। [5] मेरे जिस्म की हर जगह कीड़े और खुरंड फैल गए हैं, मेरी सुकड़ी हुई जिल्द में पीप पड़ गई है। [6] मेरे दिन जूलाहे की नाल[f] से कहीं ज़्यादा तेज़ी से गुज़र गए हैं। वह अपने अन्जाम तक पहुँच गए हैं, धागा ख़त्म हो गया है।

[7] ऐ अल्लाह, ख़याल रख कि मेरी ज़िन्दगी दम भर की ही है! मेरी आँखें आइन्दा कभी ख़ुशहाली नहीं देखेंगी। [8] जो मुझे इस वक़्त देखे वह आइन्दा मुझे नहीं देखेगा। तू मेरी तरफ़ देखेगा, लेकिन मैं हूँगा नहीं। [9] जिस तरह बादल ओझल हो कर ख़त्म हो जाता है उसी तरह पाताल में उतरने वाला वापस नहीं आता। [10] वह दुबारा अपने घर वापस नहीं आएगा, और उस का मक़ाम उसे नहीं जानता।

[11] चुनाँचे मैं वह कुछ रोक नहीं सकता जो मेरे मुँह से निकलना चाहता है। मैं रंजीदा हालत में बात करूँगा, अपने दिल की तल्ख़ी का इज़हार करके आह-ओ-ज़ारी करूँगा। [12] ऐ अल्लाह, क्या मैं समुन्दर या समुन्दरी अज़दहा हूँ कि तू ने मुझे नज़रबन्द कर रखा है? [13] जब मैं कहता हूँ, 'मेरा बिस्तर मुझे तसल्ली दे, सोने से मेरा ग़म हल्का हो जाए' [14] तो तू मुझे हौलनाक ख़्वाबों से हिम्मत हारने देता, रोयाओं से मुझे दहशत खिलाता है। [15] मेरी इतनी बुरी हालत हो गई है कि सोचता हूँ, काश कोई मेरा गला घूँट

---

[f] यानी शटल।

कर मुझे मार डाले, काश मैं ज़िन्दा न रहूँ बल्कि दम
छोड़ूँ। [16]मैं ने ज़िन्दगी को रद्द कर दिया है, अब मैं
ज़्यादा देर तक ज़िन्दा नहीं रहूँगा। मुझे छोड़, क्यूँकि
मेरे दिन दम भर के ही हैं।

[17]इन्सान क्या है कि तू उस की इतनी क़दर करे,
उस पर इतना ध्यान दे? [18]वह इतना अहम तो नहीं
है कि तू हर सुब्ह उस का मुआइना करे, हर लम्हा
उस की जाँच-पड़ताल करे। [19]क्या तू मुझे तकने से
कभी नहीं बाज़ आएगा? क्या तू मुझे इतना सुकून
भी नहीं देगा कि पल भर के लिए थूक निगलूँ? [20]ऐ
इन्सान के पहरेदार, अगर मुझ से ग़लती हुई भी तो
इस से मैं ने तेरा क्या नुक़्सान किया? तू ने मुझे अपने
ग़ज़ब का निशाना क्यूँ बनाया? मैं तेरे लिए बोझ क्यूँ
बन गया हूँ? [21]तू मेरा जुर्म मुआफ़ क्यूँ नहीं करता,
मेरा क़ुसूर दरगुज़र क्यूँ नहीं करता? क्यूँकि जल्द ही
मैं ख़ाक हो जाऊँगा। अगर तू मुझे तलाश भी करे तो
नहीं मिलूँगा, क्यूँकि मैं हूँगा नहीं।”

बिल्दद का जवाब : अपने गुनाह से तौबा कर!

8 [1]तब बिल्दद सूख़ी ने जवाब दे कर कहा,
[2]“तू कब तक इस क़िस्म की बातें करेगा?
कब तक तेरे मुँह से आँधी के झोंके निकलेंगे? [3]क्या
अल्लाह इन्साफ़ का ख़ून कर सकता, क्या क़ादिर-ए-
मुतलक़ रास्ती को आगे पीछे कर सकता है? [4]तेरे
बेटों ने उस का गुनाह किया है, इस लिए उस ने उन्हें
उन के जुर्म के क़ब्ज़े में छोड़ दिया। [5]अब तेरे लिए
लाज़िम है कि तू अल्लाह का तालिब हो और क़ादिर-ए-
मुतलक़ से इल्तिजा करे, [6]कि तू पाक हो और सीधी
राह पर चले। फिर वह अब भी तेरी ख़ातिर जोश में
आ कर तेरी रास्तबाज़ी की सुकूनतगाह को बहाल
करेगा। [7]तब तेरा मुस्तक़बिल निहायत अज़ीम होगा,
ख़्वाह तेरी इब्तिदाई हालत कितनी पस्त क्यूँ न हो।

[8]गुज़श्ता नस्ल से ज़रा पूछ ले, उस पर ध्यान दे जो
उन के बापदादा ने तहक़ीक़ात के बाद मालूम किया।
[9]क्यूँकि हम ख़ुद कल ही पैदा हुए और कुछ नहीं
जानते, ज़मीन पर हमारे दिन साय जैसे आरिज़ी हैं।
[10]लेकिन यह तुझे तालीम दे कर बात बता सकते
हैं, यह तुझे अपने दिल में जमाशुदा इल्म पेश कर
सकते हैं। [11]क्या आबी नर्सल वहाँ उगता है जहाँ
दलदल नहीं? क्या सरकंडा वहाँ फलता फूलता है
जहाँ पानी नहीं? [12]उस की कोंपलें अभी निकल रही
हैं और उसे तोड़ा नहीं गया कि अगर पानी न मिले
तो बाक़ी हरियाली से पहले ही सूख जाता है। [13]यह
है उन का अन्जाम जो अल्लाह को भूल जाते हैं, इसी
तरह बेदीन की उम्मीद जाती रहती है। [14]जिस पर वह
एतिमाद करता है वह निहायत ही नाज़ुक है, जिस पर
उस का भरोसा है वह मकड़ी के जाले जैसा कमज़ोर
है। [15]जब वह जाले पर टेक लगाए तो खड़ा नहीं
रहता, जब उसे पकड़ ले तो क़ाइम नहीं रहता।

[16]बेदीन धूप में शादाब बेल की मानिन्द है। उस की
कोंपलें चारों तरफ़ फैल जाती, [17]उस की जड़ें पत्थर
के ढेर पर छा कर उन में टिक जाती हैं। [18]लेकिन
अगर उसे उखाड़ा जाए तो जिस जगह पहले उग रही
थी वह उस का इन्कार करके कहेगी, ‘मैं ने तुझे कभी
देखा भी नहीं।’ [19]यह है उस की राह की नाम-निहाद
ख़ुशी! जहाँ पहले था वहाँ दीगर पौदे ज़मीन से फूट
निकलेंगे।

[20]यक़ीनन अल्लाह बेइल्ज़ाम आदमी को मुस्तरद
नहीं करता, यक़ीनन वह शरीर आदमी के हाथ
मज़बूत नहीं करता। [21]वह एक बार फिर तुझे ऐसी
ख़ुशी बख़्शेगा कि तू हंस उठेगा और शादमानी के
नारे लगाएगा। [22]जो तुझ से नफ़रत करते हैं वह शर्म
से मुलब्बस हो जाएंगे, और बेदीनों के ख़ैमे नेस्त-ओ-
नाबूद होंगे।”

अय्यूब का जवाब : सालिस के बग़ैर मैं रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता

9 [1]अय्यूब ने जवाब दे कर कहा,
[2]“मैं ख़ूब जानता हूँ कि तेरी बात दुरुस्त है।
लेकिन अल्लाह के हुज़ूर इन्सान किस तरह रास्तबाज़
ठहर सकता है? [3]अगर वह अदालत में अल्लाह के
साथ लड़ना चाहे तो उस के हज़ार सवालात पर एक

का भी जवाब नहीं दे सकेगा। 4अल्लाह का दिल
दानिशमन्द और उस की क़ुदरत अज़ीम है। कौन
कभी उस से बहस-मुबाहसा करके कामयाब रहा है?

5अल्लाह पहाड़ों को खिसका देता है, और उन्हें पता
ही नहीं चलता। वह ग़ुस्से में आ कर उन्हें उलटा देता
है। 6वह ज़मीन को हिला देता है तो वह लरज़ कर
अपनी जगह से हट जाती है, उस के बुन्यादी सतून
काँप उठते हैं। 7वह सूरज को हुक्म देता है तो तुलू
नहीं होता, सितारों पर मुहर लगाता है तो उन की
चमक-दमक बन्द हो जाती है।

8अल्लाह ही आसमान को ख़ैमे की तरह तान देता,
वही समुन्दरी अज़दहे की पीठ को पाँओ तले कुचल
देता है। 9वही दुब्ब-ए-अक्बर, जौज़े, ख़ोशा-ए-पर्वीन
और जुनूबी सितारों के झुर्मटों का ख़ालिक़ है। 10वह
इतने अज़ीम काम करता है कि कोई उन की तह तक
नहीं पहुँच सकता, इतने मोजिज़े करता है कि कोई
उन्हें गिन नहीं सकता। 11जब वह मेरे सामने से गुज़रे
तो मैं उसे नहीं देखता, जब वह मेरे क़रीब से फिरे तो
मुझे मालूम नहीं होता। 12अगर वह कुछ छीन ले तो
कौन उसे रोकेगा? कौन उस से कहेगा, 'तू क्या कर
रहा है?' 13अल्लाह तो अपना ग़ज़ब नाज़िल करने से
बाज़ नहीं आता। उस के रोब तले रहब अज़दहे के
मददगार भी दबक गए।

14तो फिर मैं किस तरह उसे जवाब दूँ, किस तरह
उस से बात करने के मुनासिब अल्फ़ाज़ चुन लूँ?
15अगर मैं हक़ पर होता भी तो अपना दिफ़ा न
कर सकता। इस मुख़ालिफ़ से मैं इल्तिजा करने के
इलावा और कुछ नहीं कर सकता। 16अगर वह मेरी
चीख़ों का जवाब देता भी तो मुझे यक़ीन न आता कि
वह मेरी बात पर ध्यान देगा।

17थोड़ी सी ग़लती के जवाब में वह मुझे पाश पाश
करता, बिलावजह मुझे बार बार ज़ख़्मी करता है।
18वह मुझे साँस भी नहीं लेने देता बल्कि कड़वे ज़हर
से सेर कर देता है। 19जहाँ ताक़त की बात है तो
वही क़वी है, जहाँ इन्साफ़ की बात है तो कौन उसे
पेशी के लिए बुला सकता है? 20गो मैं बेगुनाह हूँ
तो भी मेरा अपना मुँह मुझे क़ुसूरवार ठहराएगा, गो
बेइल्ज़ाम हूँ तो भी वह मुझे मुजरिम क़रार देगा।

21जो कुछ भी हो, मैं बेइल्ज़ाम हूँ! मैं अपनी जान
की परवा ही नहीं करता, अपनी ज़िन्दगी हक़ीर
जानता हूँ। 22ख़ैर, एक ही बात है, इस लिए मैं कहता
हूँ, 'अल्लाह बेइल्ज़ाम और बेदीन दोनों को ही हलाक
कर देता है।' 23जब कभी अचानक कोई आफ़त
इन्सान को मौत के घाट उतारे तो अल्लाह बेगुनाह
की परेशानी पर हँसता है। 24अगर कोई मुल्क बेदीन
के हवाले किया जाए तो अल्लाह उस के क़ाज़ियों की
आँखें बन्द कर देता है। अगर यह उस की तरफ़ से
नहीं तो फिर किस की तरफ़ से है?

25मेरे दिन दौड़ने वाले आदमी से कहीं ज़्यादा तेज़ी
से बीत गए, ख़ुशी देखे बग़ैर भाग निकले हैं। 26वह
सरकंडे के बहरी जहाज़ों की तरह गुज़र गए हैं, उस
उक़ाब की तरह जो अपने शिकार पर झपट्टा मारता
है। 27अगर मैं कहूँ, 'आओ मैं अपनी आहें भूल जाऊँ,
अपने चेहरे की उदासी दूर करके ख़ुशी का इज़हार
करूँ' 28तो फिर भी मैं उन तमाम तकालीफ़ से डरता
हूँ जो मुझे बर्दाश्त करनी हैं। क्यूँकि मैं जानता हूँ कि
तू मुझे बेगुनाह नहीं ठहराता।

29जो कुछ भी हो मुझे क़ुसूरवार ही क़रार दिया
गया है, चुनाँचे इस का क्या फ़ाइदा कि मैं बेमानी
तग-ओ-दौ में मसरूफ़ रहूँ? 30गो मैं साबुन से नहा
लूँ और अपने हाथ सोडे [8]से धो लूँ 31ताहम तू मुझे
गढ़े की कीचड़ में यूँ धंसने देता है कि मुझे अपने
कपड़ों से घिन आती है।

32अल्लाह तो मुझ जैसा इन्सान नहीं कि मैं जवाब में
उस से कहूँ, 'आओ हम अदालत में जा कर एक दूसरे
का मुक़ाबला करें।' 33काश हमारे दरमियान सालिस
हो जो हम दोनों पर हाथ रखे, 34जो मेरी पीठ पर
से अल्लाह का डंडा हटाए ताकि उस का ख़ौफ़ मुझे

---

[8]लफ़्ज़ी मतलब : क़लियाब, लाई (lye)।

दहशतज़दा न करे। 35 तब मैं अल्लाह से ख़ौफ़ खाए बग़ैर बोलता, क्यूँकि फ़ित्री तौर पर मैं ऐसा नहीं हूँ।

मुझे अपनी जान से घिन आती है

10 1 मुझे अपनी जान से घिन आती है। मैं आज़ादी से आह-ओ-ज़ारी करूँगा, खुले तौर पर अपना दिली ग़म बयान करूँगा। 2 मैं अल्लाह से कहूँगा कि मुझे मुजरिम न ठहरा बल्कि बता कि तेरा मुझ पर क्या इल्ज़ाम है। 3 क्या तू ज़ुल्म करके मुझे रद्द करने में ख़ुशी महसूस करता है हालाँकि तेरे अपने ही हाथों ने मुझे बनाया? साथ साथ तू बेदीनों के मन्सूबों पर अपनी मन्ज़ूरी का नूर चमकाता है। क्या यह तुझे अच्छा लगता है? 4 क्या तेरी आँखें इन्सानी हैं? क्या तू सिर्फ़ इन्सान की सी नज़र से देखता है? 5 क्या तेरे दिन और साल फ़ानी इन्सान जैसे महदूद हैं? हरगिज़ नहीं! 6 तो फिर क्या ज़रूरत है कि तू मेरे क़ुसूर की तलाश और मेरे गुनाह की तहक़ीक़ करता रहे? 7 तू तो जानता है कि मैं बेक़ुसूर हूँ और कि तेरे हाथ से कोई बचा नहीं सकता।

8 तेरे अपने हाथों ने मुझे तश्कील दे कर बनाया। और अब तू ने मुड़ कर मुझे तबाह कर दिया है। 9 ज़रा इस का ख़याल रख कि तू ने मुझे मिट्टी से बनाया। अब तू मुझे दुबारा ख़ाक में तब्दील कर रहा है। 10 तू ने ख़ुद मुझे दूध की तरह उंडेल कर पनीर की तरह जमने दिया। 11 तू ही ने मुझे जिल्द और गोश्त-पोस्त से मुलब्बस किया, हड्डियों और नसों से तय्यार किया। 12 तू ही ने मुझे ज़िन्दगी और अपनी मेहरबानी से नवाज़ा, और तेरी देख-भाल ने मेरी रूह को महफ़ूज़ रखा।

13 लेकिन एक बात तू ने अपने दिल में छुपाए रखी, हाँ मुझे तेरा इरादा मालूम हो गया है। 14 वह यह है कि 'अगर अय्यूब गुनाह करे तो मैं उस की पहरादारी करूँगा। मैं उसे उस के क़ुसूर से बरी नहीं करूँगा।'

15 अगर मैं क़ुसूरवार हूँ तो मुझ पर अफ़्सोस! और अगर मैं बेगुनाह भी हूँ ताहम मैं अपना सर उठाने की जुरअत नहीं करता, क्यूँकि मैं शर्म खा खा कर सेर हो गया हूँ। मुझे ख़ूब मुसीबत पिलाई गई है। 16 और अगर मैं खड़ा भी हो जाऊँ तो तू शेरबबर की तरह मेरा शिकार करता और मुझ पर दुबारा अपनी मोजिज़ाना क़ुदरत का इज़्हार करता है। 17 तू मेरे ख़िलाफ़ नए गवाहों को खड़ा करता और मुझ पर अपने ग़ज़ब में इज़ाफ़ा करता है, तेरे लश्कर सफ़-दर-सफ़ मुझ पर हम्ला करते हैं। 18 तू मुझे मेरी माँ के पेट से क्यूँ निकाल लाया? बेहतर होता कि मैं उसी वक़्त मर जाता और किसी को नज़र न आता। 19 यूँ होता जैसा मैं कभी ज़िन्दा ही न था, मुझे सीधा माँ के पेट से क़ब्र में पहुँचाया जाता। 20 क्या मेरे दिन थोड़े नहीं हैं? मुझे तन्हा छोड़! मुझ से अपना मुँह फेर ले ताकि मैं चन्द एक लम्हों के लिए ख़ुश हो सकूँ, 21 क्यूँकि जल्द ही मुझे कूच करके वहाँ जाना है जहाँ से कोई वापस नहीं आता, उस मुल्क में जिस में तारीकी और घने साय रहते हैं। 22 वह मुल्क अंधेरा ही अंधेरा और काला ही काला है, उस में घने साय और बेतरतीबी है। वहाँ रौशनी भी अंधेरा ही है।"

ज़ूफ़र का जवाब : तौबा कर

11 1 फिर ज़ूफ़र नामाती ने जवाब दे कर कहा, 2 "क्या इन तमाम बातों का जवाब नहीं देना चाहिए? क्या यह आदमी अपनी ख़ाली बातों की बिना पर ही रास्तबाज़ ठहरेगा? 3 क्या तेरी बेमानी बातें लोगों के मुँह यूँ बन्द करेंगी कि तू आज़ादी से लान-तान करता जाए और कोई तुझे शर्मिन्दा न कर सके? 4 अल्लाह से तू कहता है, 'मेरी तालीम पाक है, और तेरी नज़र में मैं पाक-साफ़ हूँ।'

5 काश अल्लाह ख़ुद तेरे साथ हमकलाम हो, वह अपने होंटों को खोल कर तुझ से बात करे! 6 काश वह तेरे लिए हिक्मत के भेद खोले, क्यूँकि वह इन्सान की समझ के नज़्दीक मोजिज़े से हैं। तब तू जान लेता कि अल्लाह तेरे गुनाह का काफ़ी हिस्सा दरगुज़र कर रहा है।

7 क्या तू अल्लाह का राज़ खोल सकता है? क्या तू क़ादिर-ए-मुतलक़ के कामिल इल्म तक पहुँच सकता

है? 8 वह तो आसमान से बुलन्द है, चुनाँचे तू क्या कर सकता है? वह पाताल से गहरा है, चुनाँचे तू क्या जान सकता है? 9 उस की लम्बाई ज़मीन से बड़ी और चौड़ाई समुन्दर से ज़्यादा है।

10 अगर वह कहीं से गुज़र कर किसी को गिरिफ़्तार करे या अदालत में उस का हिसाब करे तो कौन उसे रोकेगा? 11 क्यूँकि वह फ़रेबदिह आदमियों को जान लेता है, जब भी उसे बुराई नज़र आए तो वह उस पर ख़ूब ध्यान देता है। 12 अक़्ल से ख़ाली आदमी किस तरह समझ पा सकता है? यह उतना ही नामुमकिन है जितना यह कि जंगली गधे से इन्सान पैदा हो।

13 ऐ अय्यूब, अपना दिल पूरे ध्यान से अल्लाह की तरफ़ माइल कर और अपने हाथ उस की तरफ़ उठा! 14 अगर तेरे हाथ गुनाह में मुलव्वस हों तो उसे दूर कर और अपने ख़ैमे में बुराई बसने न दे! 15 तब तू बेइल्ज़ाम हालत में अपना चेहरा उठा सकेगा, तू मज़बूती से खड़ा रहेगा और डरेगा नहीं। 16 तू अपना दुख-दर्द भूल जाएगा, और वह सिर्फ़ गुज़रे सैलाब की तरह याद रहेगा। 17 तेरी ज़िन्दगी दोपहर की तरह चमकदार, तेरी तारीकी सुब्ह की मानिन्द रौशन हो जाएगी। 18 चूँकि उम्मीद होगी इस लिए तू महफ़ूज़ होगा और सलामती से लेट जाएगा। 19 तू आराम करेगा, और कोई तुझे दहशतज़दा नहीं करेगा बल्कि बहुत लोग तेरी नज़र-ए-इनायत हासिल करने की कोशिश करेंगे। 20 लेकिन बेदीनों की आँखें नाकाम हो जाएँगी, और वह बच नहीं सकेंगे। उन की उम्मीद मायूसकुन होगी।” [h]

अय्यूब का जवाब : मैं मज़ाक़ का निशाना बन गया हूँ

12 1 अय्यूब ने जवाब दे कर कहा,

2 “लगता है कि तुम ही वाहिद दानिशमन्द हो, कि हिक्मत तुम्हारे साथ ही मर जाएगी। 3 लेकिन मुझे समझ है, इस नाते से मैं तुम से अदना नहीं हूँ। वैसे भी कौन ऐसी बातें नहीं जानता? 4 मैं तो अपने दोस्तों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गया हूँ, मैं जिस की दुआएँ अल्लाह सुनता था। हाँ, मैं जो बेगुनाह और बेइल्ज़ाम हूँ दूसरों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गया हूँ! 5 जो सुकून से ज़िन्दगी गुज़ारता है वह मुसीबतज़दा को हक़ीर जानता है। वह कहता है, ‘आओ, हम उसे ठोकर मारें जिस के पाँओ डगमगाने लगे हैं।’ 6 ग़ारतगरों के ख़ैमों में आराम-ओ-सुकून है, और अल्लाह को तैश दिलाने वाले हिफ़ाज़त से रहते हैं, गो वह अल्लाह के हाथ में हैं।

7 ताहम तुम कहते हो कि जानवरों से पूछ ले तो वह तुझे सहीह बात सिखाएँगे। परिन्दों से पता कर तो वह तुझे दुरुस्त जवाब देंगे। 8 ज़मीन से बात कर तो वह तुझे तालीम देगी, बल्कि समुन्दर की मछलियाँ भी तुझे इस का मफ़्हूम सुनाएँगी। 9 इन में से एक भी नहीं जो न जानता हो कि रब के हाथ ने यह सब कुछ किया है। 10 उसी के हाथ में हर जानदार की जान, तमाम इन्सानों का दम है। 11 कान तो अल्फ़ाज़ की यूँ जाँच-पड़ताल करता है जिस तरह ज़बान खानों में इम्तियाज़ करती है। 12 और हिक्मत उन में पाई जाती है जो उम्ररसीदा हैं, समझ मुतअद्दिद दिन गुज़रने के बाद ही आती है।

13 हिक्मत और क़ुदरत अल्लाह की है, वही मस्लहत और समझ का मालिक है। 14 जो कुछ वह ढा दे वह दुबारा तामीर नहीं होगा, जिसे वह गिरिफ़्तार करे उसे आज़ाद नहीं किया जाएगा। 15 जब वह पानी रोके तो काल पड़ता है, जब उसे खुला छोड़े तो वह मुल्क में तबाही मचा देता है।

16 उस के पास क़ुव्वत और दानाई है। भटकने और भटकाने वाला दोनों ही उस के हाथ में हैं। 17 मुशीरों को वह नंगे पाँओ अपने साथ ले जाता है, क़ाज़ियों को अहमक़ साबित करता है। 18 वह बादशाहों का पटका खोल कर उन की कमरों में रस्सा बांधता है। 19 इमामों को वह नंगे पाँओ अपने

---

[h] या उन की वाहिद उम्मीद इस में होगी कि दम छोड़ें।

साथ ले जाता है, मज़बूती से खड़े आदमियों को तबाह करता है। 20 क़ाबिल-ए-एतिमाद अफ़राद से वह बोलने की क़ाबिलियत और बुज़ुर्गों से इम्तियाज़ करने की लियाक़त छीन लेता है। 21 वह शुरफ़ा पर अपनी हिक़ारत का इज़हार करके ज़ोर-आवरों का पटका खोल देता है।

22 वह अंधेरे के पोशीदा भेद खोल देता और गहरी तारीकी को रौशनी में लाता है। 23 वह क़ौमों को बड़ा भी बनाता और तबाह भी करता है, उम्मतों को मुन्तशिर भी करता और उन की क़ियादत भी करता है। 24 वह मुल्क के राहनुमाओं को अक़ल से महरूम करके उन्हें ऐसे बयाबान में आवारा फिरने देता है जहाँ रास्ता ही नहीं। 25 तब वह अंधेरे में रौशनी के बग़ैर टटोल टटोल कर घूमते हैं। अल्लाह ही उन्हें नशे में धुत शराबियों की तरह भटकने देता है।

13 1 यह सब कुछ मैं ने अपनी आँखों से देखा, अपने कानों से सुन कर समझ लिया है। 2 इल्म के लिहाज़ से मैं तुम्हारे बराबर हूँ। इस नाते से मैं तुम से कम नहीं हूँ। 3 लेकिन मैं क़ादिर-ए-मुतलक़ से ही बात करना चाहता हूँ, अल्लाह के साथ ही मुबाहसा करने की आर्ज़ू रखता हूँ।

4 जहाँ तक तुम्हारा ताल्लुक़ है, तुम सब फ़रेबदिह लेप लगाने वाले और बेकार डाक्टर हो। 5 काश तुम सरासर ख़ामोश रहते! ऐसा करने से तुम्हारी हिक्मत कहीं ज़्यादा ज़ाहिर होती। 6 मुबाहिसे में ज़रा मेरा मौक़िफ़ सुनो, अदालत में मेरे बयानात पर ग़ौर करो!

7 क्या तुम अल्लाह की ख़ातिर कजरौ बातें पेश करते हो, क्या उसी की ख़ातिर झूट बोलते हो? 8 क्या तुम उस की जानिबदारी करना चाहते हो, अल्लाह के हक़ में लड़ना चाहते हो? 9 सोच लो, अगर वह तुम्हारी जाँच करे तो क्या तुम्हारी बात बनेगी? क्या तुम उसे यूँ धोका दे सकते हो जिस तरह इन्सान को धोका दिया जाता है?

10 अगर तुम ख़ुफ़िया तौर पर भी जानिबदारी दिखाओ तो वह तुम्हें ज़रूर सख़्त सज़ा देगा। 11 क्या उस का रोब तुम्हें ख़ौफ़ज़दा नहीं करेगा? क्या तुम उस से सख़्त दहशत नहीं खाओगे? 12 फिर जिन कहावतों की याद तुम दिलाते रहते हो वह राख की अम्साल साबित होंगी, पता चलेगा कि तुम्हारी बातें मिट्टी के अल्फ़ाज़ हैं।

13 ख़ामोश हो कर मुझ से बाज़ आओ! जो कुछ भी मेरे साथ हो जाए, मैं बात करना चाहता हूँ। 14 मैं अपने आप को ख़तरे में डालने के लिए तय्यार हूँ, मैं अपनी जान पर खेलूँगा। 15 शायद वह मुझे मार डाले। कोई बात नहीं, क्यूँकि मेरी उम्मीद जाती रही है। जो कुछ भी हो में उसी के सामने अपनी राहों का दिफ़ा करूँगा। 16 और इस में मैं पनाह लेता हूँ कि बेदीन उस के हुज़ूर आने की जुरअत नहीं करता।

17 ध्यान से मेरे अल्फ़ाज़ सुनो, अपने कान मेरे बयानात पर धरो। 18 तुम्हें पता चलेगा कि मैं ने एहतियात और तरतीब से अपना मुआमला तय्यार किया है। मुझे साफ़ मालूम है कि मैं हक़ पर हूँ! 19 अगर कोई मुझे मुजरिम साबित कर सके तो मैं चुप हो जाऊँगा, दम छोड़ने तक ख़ामोश रहूँगा।

अय्यूब की मायूसी में दुआ

20 ऐ अल्लाह, मेरी सिर्फ़ दो दरख़्वास्तें मन्ज़ूर कर ताकि मुझे तुझ से छुप जाने की ज़रूरत न हो। 21 पहले, अपना हाथ मुझ से दूर कर ताकि तेरा ख़ौफ़ मुझे दहशतज़दा न करे। 22 दूसरे, इस के बाद मुझे बुला ताकि मैं जवाब दूँ, या मुझे पहले बोलने दे और तू ही इस का जवाब दे।

23 मुझ से कितने गुनाह और ग़लतियाँ हुई हैं? मुझ पर मेरा जुर्म और मेरा गुनाह ज़ाहिर कर! 24 तू अपना चेहरा मुझ से छुपाए क्यूँ रखता है? तू मुझे क्यूँ अपना दुश्मन समझता है? 25 क्या तू हवा के झोंकों के उड़ाए हुए पत्ते को दहशत खिलाना चाहता, ख़ुश्क भूसे का ताक़्क़ुब करना चाहता है?

26 यह तेरा ही फ़ैसला है कि मैं तल्ख़ तजरिबों से गुज़रूँ, तेरी ही मर्ज़ी है कि मैं अपनी जवानी के गुनाहों

की सज़ा पाऊँ।[i] 27 तू मेरे पाँओ को काठ में ठोंक कर
मेरी तमाम राहों की पहरादारी करता है। तू मेरे हर
एक नक़्श-ए-क़दम पर ध्यान देता है, 28 गो मैं मै की
घिसी फटी मशक और कीड़ों का ख़राब किया हुआ
लिबास हूँ।

14 1 औरत से पैदा हुआ इन्सान चन्द एक
दिन ज़िन्दा रहता है, और उस की ज़िन्दगी
बेचैनी से भरी रहती है। 2 फूल की तरह वह चन्द
लम्हों के लिए फूट निकलता, फिर मुरझा जाता है।
साय की तरह वह थोड़ी देर के बाद ओझल हो जाता
और क़ाइम नहीं रहता। 3 क्या तू वाक़ई एक ऐसी
मख़्लूक़ का इतने ग़ौर से मुआइना करना चाहता है?
मैं कौन हूँ कि तू मुझे पेशी के लिए अपने हुज़ूर लाए?

4 कौन नापाक चीज़ को पाक-साफ़ कर सकता है?
कोई नहीं! 5 इन्सान की उम्र तो मुक़र्रर हुई है, उस के
महीनों की तादाद तुझे मालूम है, क्यूँकि तू ही ने उस
के दिनों की वह हद बांधी है जिस से आगे वह बढ़
नहीं सकता। 6 चुनाँचे अपनी निगाह उस से फेर ले
और उसे छोड़ दे ताकि वह मज़दूर की तरह अपने
थोड़े दिनों से कुछ मज़ा ले सके।

7 अगर दरख़्त को काटा जाए तो उसे थोड़ी बहुत
उम्मीद बाक़ी रहती है, क्यूँकि ऐन मुमकिन है कि मुढ
से कोंपलें फूट निकलें और उस की नई शाख़ें उगती
जाएँ। 8 बेशक उस की जड़ें पुरानी हो जाएँ और उस
का मुढ मिट्टी में ख़त्म होने लगे, 9 लेकिन पानी की
ख़ुश्बू सूँघते ही वह कोंपलें निकालने लगेगा, और
पनीरी की सी टहनियाँ उस से फूटने लगेंगी।

10 लेकिन इन्सान फ़र्क़ है। मरते वक़्त उस की हर
तरह की ताक़त जाती रहती है, दम छोड़ते वक़्त
उस का नाम-ओ-निशान तक नहीं रहता। 11 वह उस
झील की मानिन्द है जिस का पानी ओझल हो जाए,
उस नदी की मानिन्द जो सुकड़ कर ख़ुश्क हो जाए।
12 वफ़ात पाने वाले का यही हाल है। वह लेट जाता
और कभी नहीं उठेगा। जब तक आसमान क़ाइम है
न वह जाग उठेगा, न उसे जगाया जाएगा।

13 काश तू मुझे पाताल में छुपा देता, मुझे वहाँ उस
वक़्त तक पोशीदा रखता जब तक तेरा क़हर ठंडा
न हो जाता! काश तू एक वक़्त मुक़र्रर करे जब तू
मेरा दुबारा ख़याल करेगा। 14 (क्यूँकि अगर इन्सान
मर जाए तो क्या वह दुबारा ज़िन्दा हो जाएगा?)
फिर मैं अपनी सख़्त ख़िदमत के तमाम दिन बर्दाश्त
करता, उस वक़्त तक इन्तिज़ार करता जब तक मेरी
सबुकदोशी न हो जाती। 15 तब तू मुझे आवाज़ देता
और मैं जवाब देता, तू अपने हाथों के काम का
आरज़ूमन्द होता। 16 उस वक़्त भी तू मेरे हर क़दम
का शुमार करता, लेकिन न सिर्फ़ इस मक़सद से कि
मेरे गुनाहों पर ध्यान दे। 17 तू मेरे जराइम थैले में बांध
कर उस पर मुहर लगा देता, मेरी हर ग़लती को ढाँक
देता।

18 लेकिन अफ़सोस! जिस तरह पहाड़ गिर कर चूर
चूर हो जाता और चटान खिसक जाती है, 19 जिस
तरह बहता पानी पत्थर को रगड़ रगड़ कर ख़त्म
करता और सैलाब मिट्टी को बहा ले जाता है उसी
तरह तू इन्सान की उम्मीद ख़ाक में मिला देता है।
20 तू मुकम्मल तौर पर उस पर ग़ालिब आ जाता तो
वह कूच कर जाता है, तू उस का चेहरा बिगाड़ कर
उसे फ़ारिग़ कर देता है। 21 अगर उस के बच्चों को
सरफ़राज़ किया जाए तो उसे पता नहीं चलता, अगर
उन्हें पस्त किया जाए तो यह भी उस के इल्म में नहीं
आता। 22 वह सिर्फ़ अपने ही जिस्म का दर्द महसूस
करता और अपने लिए ही मातम करता है।”

इलीफ़ज़ का जवाब : अय्यूब कुफ़्र बक रहा है

15 1 तब इलीफ़ज़ तेमानी ने जवाब दे कर
कहा,

2 “क्या दानिशमन्द को जवाब में बेहूदा ख़यालात
पेश करने चाहिएँ? क्या उसे अपना पेट तपती

[i] लफ़्ज़ी तर्जुमा : मीरास में पाऊँ।

मशरिक़ी हवा से भरना चाहिए? 3 क्या मुनासिब है
कि वह फ़ुज़ूल बहस-मुबाहसा करे, ऐसी बातें करे
जो बेफ़ाइदा हैं? हरगिज़ नहीं!

4 लेकिन तेरा रवय्या इस से कहीं बुरा है। तू अल्लाह
का ख़ौफ़ छोड़ कर उस के हुज़ूर ग़ौर-ओ-ख़ौज़ करने
का फ़र्ज़ हक़ीर जानता है। 5 तेरा क़ुसूर ही तेरे मुँह
को ऐसी बातें करने की तहरीक दे रहा है, इसी लिए
तू ने चालाकों की ज़बान अपना ली है। 6 मुझे तुझे
क़ुसूरवार ठहराने की ज़रूरत ही नहीं, क्यूँकि तेरा
अपना ही मुँह तुझे मुजरिम ठहराता है, तेरे अपने ही
होंट तेरे ख़िलाफ़ गवाही देते हैं।

7 क्या तू सब से पहले पैदा हुआ इन्सान है? क्या तू
ने पहाड़ों से पहले ही जन्म लिया? 8 जब अल्लाह की
मजलिस मुनअक़िद हो जाए तो क्या तू भी उन की
बातें सुनता है? क्या सिर्फ़ तुझे ही हिक्मत हासिल
है? 9 तू क्या जानता है जो हम नहीं जानते? तुझे किस
बात की समझ आई है जिस का इल्म हम नहीं रखते?
10 हमारे दरमियान भी उम्ररसीदा बुज़ुर्ग हैं, ऐसे आदमी
जो तेरे वालिद से भी बूढ़े हैं।

11 ऐ अय्यूब, क्या तेरी नज़र में अल्लाह की तसल्ली
देने वाली बातों की कोई अहमियत नहीं? क्या तू इस
की क़दर नहीं कर सकता कि नर्मी से तुझ से बात
की जा रही है? 12 तेरे दिल के जज़बात तुझे यूँ उड़ा
कर क्यूँ ले जाएँ, तेरी आँखें क्यूँ इतनी चमक उठें
13 कि आख़िरकार तू अपना ग़ुस्सा अल्लाह पर उतार
कर ऐसी बातें अपने मुँह से उगल दे?

14 भला इन्सान क्या है कि पाक-साफ़ ठहरे? औरत
से पैदा हुई मख़्लूक़ क्या है कि रास्तबाज़ साबित हो?
कुछ भी नहीं! 15 अल्लाह तो अपने मुक़द्दस ख़ादिमों
पर भी भरोसा नहीं रखता, बल्कि आसमान भी उस
की नज़र में पाक नहीं है। 16 तो फिर वह इन्सान पर
भरोसा क्यूँ रखे जो क़ाबिल-ए-घिन और बिगड़ा हुआ
है, जो बुराई को पानी की तरह पी लेता है।

17 मेरी बात सुन, मैं तुझे कुछ सुनाना चाहता हूँ। मैं
तुझे वह कुछ बयान करूँगा जो मुझ पर ज़ाहिर हुआ
है, 18 वह कुछ जो दानिशमन्दों ने पेश किया और जो
उन्हें अपने बापदादा से मिला था। उन से कुछ छुपाया
नहीं गया था। 19 (बापदादा से मुराद वह वाहिद लोग
हैं जिन्हें उस वक़्त मुल्क दिया गया जब कोई भी
परदेसी उन में नहीं फिरता था)।

20 वह कहते थे, बेदीन अपने तमाम दिन डर के
मारे तड़पता रहता, और जितने भी साल ज़ालिम के
लिए महफ़ूज़ रखे गए हैं उतने ही साल वह पेच-ओ-
ताब खाता रहता है। 21 दहशतनाक आवाज़ें उस के
कानों में गूँजती रहती हैं, और अम्न-ओ-अमान के
वक़्त ही तबाही मचाने वाला उस पर टूट पड़ता है।
22 उसे अंधेरे से बचने की उम्मीद ही नहीं, क्यूँकि उसे
तलवार के लिए तय्यार रखा गया है।

23 वह मारा मारा फिरता है, आख़िरकार वह गिद्धों
की ख़ोराक बनेगा। उसे ख़ुद इल्म है कि तारीकी
का दिन क़रीब ही है। 24 तंगी और मुसीबत उसे
दहशत खिलाती, हम्लाआवर बादशाह की तरह उस
पर ग़ालिब आती हैं। 25 और वजह क्या है? यह
कि उस ने अपना हाथ अल्लाह के ख़िलाफ़ उठाया,
क़ादिर-ए-मुतलक़ के सामने तकब्बुर दिखाया है।
26 अपनी मोटी और मज़बूत ढाल की पनाह में अकड़
कर वह तेज़ी से अल्लाह पर हम्ला करता है।

27 गो इस वक़्त उस का चेहरा चर्बी से चमकता
और उस की कमर मोटी है, 28 लेकिन आइन्दा वह
तबाहशुदा शहरों में बसेगा, ऐसे मकानों में जो सब के
छोड़े हुए हैं और जो जल्द ही पत्थर के ढेर बन जाएंगे।
29 वह अमीर नहीं होगा, उस की दौलत क़ाइम नहीं
रहेगी, उस की जायदाद मुल्क में फैली नहीं रहेगी।

30 वह तारीकी से नहीं बचेगा। शोला उस की
कोंपलों को मुरझाने देगा, और अल्लाह उसे अपने मुँह
की एक फूँक से उड़ा कर तबाह कर देगा। 31 वह
धोके पर भरोसा न करे, वर्ना वह भटक जाएगा और
उस का अज्र धोका ही होगा। 32 वक़्त से पहले ही
उसे इस का पूरा मुआवज़ा मिलेगा, उस की कोंपल
कभी नहीं फले फूलेगी।

33 वह अंगूर की उस बेल की मानिन्द होगा जिस
का फल कच्ची हालत में ही गिर जाए, ज़ैतून के उस

दरख़्त की मानिन्द जिस के तमाम फूल झड़ जाएँ। 34 क्यूँकि बेदीनों का जथ्था बंजर रहेगा, और आग रिश्वतख़ोरों के ख़ैमों को भस्म करेगी। 35 उन के पाँओ दुख-दर्द से भारी हो जाते, और वह बुराई को जन्म देते हैं। उन का पेट धोका ही पैदा करता है।"

अय्यूब का जवाब : मैं बेगुनाह हूँ

16 1 अय्यूब ने जवाब दे कर कहा,

2 "इस तरह की मैं ने बहुत सी बातें सुनी हैं, तुम्हारी तसल्ली सिर्फ़ दुख-दर्द का बाइस है। 3 क्या तुम्हारी लफ़्फ़ाज़ी कभी ख़त्म नहीं होगी? तुझे क्या चीज़ बेचैन कर रही है कि तू मुझे जवाब देने पर मज्बूर है? 4 अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो मैं भी तुम्हारी जैसी बातें कर सकता। फिर मैं भी तुम्हारे ख़िलाफ़ पुरअल्फ़ाज़ तक़रीरें पेश करके तौबा तौबा कह सकता। 5 लेकिन मैं ऐसा न करता। मैं तुम्हें अपनी बातों से तक़वियत देता, अफ़्सोस के इज़्हार से तुम्हें तस्कीन देता। 6 लेकिन मेरे साथ ऐसा सुलूक नहीं हो रहा। अगर मैं बोलूँ तो मुझे सुकून नहीं मिलता, अगर चुप रहूँ तो मेरा दर्द दूर नहीं होता।

7 लेकिन अब अल्लाह ने मुझे थका दिया है, उस ने मेरे पूरे घराने को तबाह कर दिया है। 8 उस ने मुझे सुकड़ने दिया है, और यह बात मेरे ख़िलाफ़ गवाह बन गई है। मेरी दुबली-पतली हालत खड़ी हो कर मेरे ख़िलाफ़ गवाही देती है। 9 अल्लाह का ग़ज़ब मुझे फाड़ रहा है, वह मेरा दुश्मन और मेरा मुख़ालिफ़ बन गया है जो मेरे ख़िलाफ़ दाँत पीस पीस कर मुझे अपनी आँखों से छेद रहा है।[j] 10 लोग गला फाड़ कर मेरा मज़ाक़ उड़ाते, मेरे गाल पर थप्पड़ मार कर मेरी बेइज़्ज़ती करते हैं। सब के सब मेरे ख़िलाफ़ मुत्तहिद हो गए हैं। 11 अल्लाह ने मुझे शरीरों के हवाले कर दिया, मुझे बेदीनों के चंगुल में फंसा दिया है। 12 मैं सुकून से ज़िन्दगी गुज़ार रहा था कि उस ने मुझे पाश पाश कर दिया, मुझे गले से पकड़ कर ज़मीन पर पटख़ दिया। उस ने मुझे अपना निशाना बना लिया, 13 फिर उस के तीरअन्दाज़ों ने मुझे घेर लिया। उस ने बेरहमी से मेरे गुर्दों को चीर डाला, मेरा पित ज़मीन पर उंडेल दिया। 14 बार बार वह मेरी क़िलाबन्दी में रख़ना डालता रहा, पहलवान की तरह मुझ पर हम्ला करता रहा।

15 मैं ने टाँके लगा कर अपनी जिल्द के साथ टाट का लिबास जोड़ लिया है, अपनी शान-ओ-शौकत ख़ाक में मिलाई है। 16 रो रो कर मेरा चेहरा सूज गया है, मेरी पलकों पर घना अंधेरा छा गया है। 17 लेकिन वजह क्या है? मेरे हाथ तो ज़ुल्म से बरी रहे, मेरी दुआ पाक-साफ़ रही है। 18 ऐ ज़मीन, मेरे ख़ून को मत ढाँपना! मेरी आह-ओ-ज़ारी कभी आराम की जगह न पाए बल्कि गूँजती रहे। 19 अब भी मेरा गवाह आसमान पर है, मेरे हक़ में गवाही देने वाला बुलन्दियों पर है। 20 मेरी आह-ओ-ज़ारी मेरा तर्जुमान है, मैं बेख़्वाबी से अल्लाह के इन्तिज़ार में रहता हूँ। 21 मेरी आहें अल्लाह के सामने फ़ानी इन्सान के हक़ में बात करेंगी, उस तरह जिस तरह कोई अपने दोस्त के हक़ में बात करे। 22 क्यूँकि थोड़े ही सालों के बाद मैं उस रास्ते पर रवाना हो जाऊँगा जिस से वापस नहीं आऊँगा।

अल्लाह से इल्तिजा

17 1 मेरी रूह शिकस्ता हो गई, मेरे दिन बुझ गए हैं। क़ब्रिस्तान ही मेरे इन्तिज़ार में है। 2 मेरे चारों तरफ़ मज़ाक़ ही मज़ाक़ सुनाई देता, मेरी आँखें लोगों का हटधर्म रवय्या देखते देखते थक गई हैं। 3 ऐ अल्लाह, मेरी ज़मानत मेरे अपने हाथों से क़बूल फ़रमा, क्यूँकि और कोई नहीं जो उसे दे। 4 उन के ज़हनों को तू ने बन्द कर दिया, इस लिए तो उन से इज़्ज़त नहीं पाएगा। 5 वह उस आदमी की मानिन्द हैं जो अपने दोस्तों को ज़ियाफ़त की दावत दे, हालाँकि उस के अपने बच्चे भूके मर रहे हों।

[j] लफ़्ज़ी तर्जुमा : अपनी आँखें मेरे ख़िलाफ़ तेज़ करता है।

6 अल्लाह ने मुझे मज़ाक़ का यूँ निशाना बनाया है कि मैं क़ौमों में इब्रतअंगेज़ मिसाल बन गया हूँ। मुझे देखते ही लोग मेरे मुँह पर थूकते हैं। 7 मेरी आँखें ग़म खा खा कर धुन्दला गई हैं, मेरे आज़ा यहाँ तक सूख गए कि साया ही रह गया है। 8 यह देख कर सीधी राह पर चलने वालों के रोंगटे खड़े हो जाते और बेगुनाह बेदीनों के ख़िलाफ़ मुश्तइल हो जाते हैं। 9 रास्तबाज़ अपनी राह पर क़ाइम रहते, और जिन के हाथ पाक हैं वह तक़वियत पाते हैं। 10 लेकिन जहाँ तक तुम सब का ताल्लुक़ है, आओ दुबारा मुझ पर हम्ला करो! मुझे तुम में एक भी दाना आदमी नहीं मिलेगा।

11 मेरे दिन गुज़र गए हैं। मेरे वह मन्सूबे और दिल की आर्ज़ूएँ ख़ाक में मिल गई हैं 12 जिन से रात दिन में बदल गई और रौशनी अंधेरे को दूर करके क़रीब आई थी। 13 अगर मैं सिर्फ़ इतनी ही उम्मीद रखूँ कि पाताल मेरा घर होगा तो यह कैसी उम्मीद होगी? अगर मैं अपना बिस्तर तारीकी में बिछा कर 14 क़ब्र से कहूँ, 'तू मेरा बाप है' और कीड़े से, 'ऐ मेरी अम्मी, ऐ मेरी बहन' 15 तो फिर यह कैसी उम्मीद होगी? कौन कहेगा, 'मुझे तेरे लिए उम्मीद नज़र आती है'? 16 तब मेरी उम्मीद मेरे साथ पाताल में उतरेगी, और हम मिल कर ख़ाक में धँस जाएंगे।"

बिल्दद : अल्लाह बेदीनों को सज़ा देता है

18 1 बिल्दद सूख़ी ने जवाब दे कर कहा,

2 "तू कब तक ऐसी बातें करेगा? इन से बाज़ आ कर होश में आ! तब ही हम सहीह बात कर सकेंगे। 3 तू हमें डंगर जैसे अहमक़ क्यूँ समझता है? 4 गो तू आग-बगूला हो कर अपने आप को फाड़ रहा है, लेकिन क्या तेरे बाइस ज़मीन को वीरान होना चाहिए और चटानों को अपनी जगह से खिसक्ना चाहिए? हरगिज़ नहीं!

5 यक़ीनन बेदीन का चराग़ बुझ जाएगा, उस की आग का शोला आइन्दा नहीं चमकेगा। 6 उस के ख़ैमे में रौशनी अंधेरा हो जाएगी, उस के ऊपर की शमा बुझ जाएगी। 7 उस के लम्बे क़दम रुक रुक कर आगे बढ़ेंगे, और उस का अपना मन्सूबा उसे पटख़ देगा।

8 उस के अपने पाँओ उसे जाल में फंसा देते हैं, वह दाम पर ही चलता फिरता है। 9 फंदा उस की एड़ी पकड़ लेता, कमन्द उसे जकड़ लेती है। 10 उसे फंसाने का रस्सा ज़मीन में छुपा हुआ है, रास्ते में फंदा बिछा है।

11 वह ऐसी चीज़ों से घिरा रहता है जो उसे क़दम-ब-क़दम दहशत खिलाती और उस की नाक में दम करती हैं। 12 आफ़त उसे हड़प कर लेना चाहती है, तबाही तय्यार खड़ी है ताकि उसे गिरते वक़्त ही पकड़ ले। 13 बीमारी उस की जिल्द को खा जाती, मौत का पहलौठा उस के आज़ा को निगल लेता है। 14 उसे उस के ख़ैमे की हिफ़ाज़त से छीन लिया जाता और घसीट कर दहशतों के बादशाह के सामने लाया जाता है।

15 उस के ख़ैमे में आग बसती, उस के घर पर गंधक बिखर जाती है। 16 नीचे उस की जड़ें सूख जाती, ऊपर उस की शाख़ें मुरझा जाती हैं। 17 ज़मीन पर से उस की याद मिट जाती है, कहीं भी उस का नाम-ओ-निशान नहीं रहता।

18 उसे रौशनी से तारीकी में धकेला जाता, दुनिया से भगा कर ख़ारिज किया जाता है। 19 क़ौम में उस की न औलाद न नस्ल रहेगी, जहाँ पहले रहता था वहाँ कोई नहीं बचेगा। 20 उस का अन्जाम देख कर मग़रिब के बाशिन्दों के रोंगटे खड़े हो जाते और मशरिक़ के बाशिन्दे दहशतज़दा हो जाते हैं। 21 यही है बेदीन के घर का अन्जाम, उसी के मक़ाम का जो अल्लाह को नहीं जानता।"

अय्यूब : मैं जानता हूँ कि मेरा नजातदहिन्दा ज़िन्दा है

19 1 तब अय्यूब ने जवाब में कहा,

2 "तुम कब तक मुझ पर तशद्दुद करना चाहते हो, कब तक मुझे अल्फ़ाज़ से टुकड़े टुकड़े करना चाहते हो? 3 अब तुम ने दस बार मुझे मलामत की है, तुम ने शर्म किए बग़ैर मेरे साथ बदसुलूकी की

है। 4 अगर यह बात सहीह भी हो कि मैं ग़लत राह
पर आ गया हूँ तो मुझे ही इस का नतीजा भुगतना है।
5 लेकिन चूँकि तुम मुझ पर अपनी सब्क़त दिखाना
चाहते और मेरी रुस्वाई मुझे डाँटने के लिए इस्तेमाल
कर रहे हो 6 तो फिर जान लो, अल्लाह ने ख़ुद मुझे
ग़लत राह पर ला कर अपने दाम से घेर लिया है।

7 गो मैं चीख़ कर कहूँ, 'मुझ पर ज़ुल्म हो रहा है,'
लेकिन जवाब कोई नहीं मिलता। गो मैं मदद के लिए
पुकारूँ, लेकिन इन्साफ़ नहीं पाता। 8 उस ने मेरे रास्ते
में ऐसी दीवार खड़ी कर दी कि मैं गुज़र नहीं सकता,
उस ने मेरी राहों पर अंधेरा ही छा जाने दिया है। 9 उस
ने मेरी इज़्ज़त मुझ से छीन कर मेरे सर से ताज उतार
दिया है। 10 चारों तरफ़ से उस ने मुझे ढा दिया तो मैं
तबाह हुआ। उस ने मेरी उम्मीद को दरख़्त की तरह
जड़ से उखाड़ दिया है। 11 उस का क़हर मेरे ख़िलाफ़
भड़क उठा है, और वह मुझे अपने दुश्मनों में शुमार
करता है। 12 उस के दस्ते मिल कर मुझ पर हम्ला करने
आए हैं। उन्हों ने मेरी फ़सील के साथ मिट्टी का ढेर
लगाया है ताकि उस में रख़ना डालें। उन्हों ने चारों
तरफ़ से मेरे ख़ैमे का मुहासरा किया है।

13 मेरे भाइयों को उस ने मुझ से दूर कर दिया,
और मेरे जानने वालों ने मेरा हुक़्क़ा-पानी बन्द कर
दिया है। 14 मेरे रिश्तेदारों ने मुझे तर्क कर दिया, मेरे
क़रीबी दोस्त मुझे भूल गए हैं। 15 मेरे दामनगीर और
नौकरानियाँ मुझे अजनबी समझते हैं। उन की नज़र
में मैं अजनबी हूँ। 16 मैं अपने नौकर को बुलाता हूँ
तो वह जवाब नहीं देता। गो मैं अपने मुँह से उस से
इल्तिजा करूँ तो भी वह नहीं आता।

17 मेरी बीवी मेरी जान से घिन खाती है, मेरे सगे भाई
मुझे मकरूह समझते हैं। 18 यहाँ तक कि छोटे बच्चे
भी मुझे हक़ीर जानते हैं। अगर मैं उठने की कोशिश
करूँ तो वह अपना मुँह दूसरी तरफ़ फेर लेते हैं। 19 मेरे
दिली दोस्त मुझे कराहियत की निगाह से देखते हैं,
जो मुझे प्यारे थे वह मेरे मुख़ालिफ़ हो गए हैं। 20 मेरी
जिल्द सुकड़ कर मेरी हड्डियों के साथ जा लगी है।
मैं मौत से बाल बाल बच गया हूँ।[k]

21 मेरे दोस्तो, मुझ पर तरस खाओ, मुझ पर तरस
खाओ। क्यूँकि अल्लाह ही के हाथ ने मुझे मारा है।
22 तुम क्यूँ अल्लाह की तरह मेरे पीछे पड़ गए हो, क्यूँ
मेरा गोश्त खा खा कर सेर नहीं होते?

23 काश मेरी बातें क़लमबन्द हो जाएँ! काश वह
यादगार पर कन्दा की जाएँ, 24 लोहे की छैनी और
सीसे से हमेशा के लिए पत्थर में नक़्श की जाएँ!
25 लेकिन मैं जानता हूँ कि मेरा छुड़ाने वाला ज़िन्दा
है और आख़िरकार मेरे हक़ में ज़मीन पर खड़ा हो
जाएगा, 26 गो मेरी जिल्द यूँ उतारी भी गई हो। लेकिन
मेरी आर्ज़ू है कि जिस्म में होते हुए अल्लाह को देखूँ,
27 कि मैं ख़ुद ही उसे देखूँ, न कि अजनबी बल्कि
अपनी ही आँखों से उस पर निगाह करूँ। इस आर्ज़ू
की शिद्दत से मेरा दिल तबाह हो रहा है।

28 तुम कहते हो, 'हम कितनी सख़्ती से अय्यूब का
ताक़्क़ुब करेंगे' और मसले की जड़ तो उसी में पिनहाँ
है। 29 लेकिन तुम्हें ख़ुद तलवार से डरना चाहिए,
क्यूँकि तुम्हारा ग़ुस्सा तलवार की सज़ा के लाइक़
है, तुम्हें जानना चाहिए कि अदालत आने वाली है।"

ज़ूफ़र : ग़लत काम की मुन्सिफ़ाना सज़ा दी जाएगी

20 1 तब ज़ूफ़र नामाती ने जवाब दे कर कहा,
2 "यक़ीनन मेरे मुज़्तरिब ख़यालात और
वह एहसासात जो मेरे अन्दर से उभर रहे हैं मुझे
जवाब देने पर मज्बूर कर रहे हैं। 3 मुझे ऐसी नसीहत
सुननी पड़ी जो मेरी बेइज़्ज़ती का बाइस थी, लेकिन
मेरी समझ मुझे जवाब देने की तहरीक दे रही है।

4 क्या तुझे मालूम नहीं कि क़दीम ज़माने से यानी
जब से इन्सान को ज़मीन पर रखा गया 5 शरीर का
फ़त्हमन्द नारा आरिज़ी और बेदीन की ख़ुशी पल
भर की साबित हुई है? 6 गो उस का क़द-ओ-क़ामत
आसमान तक पहुँचे और उस का सर बादलों को छुए

[k] लफ़्ज़ी तर्जुमा : 'मेरे दाँतों की जिल्द ही बच गई है।' मतलब मुब्हम सा है।

7 ताहम वह अपने फ़ुज़्ले की तरह अबद तक तबाह हो जाएगा। जिन्हों ने उसे पहले देखा था वह पूछेंगे, ‘अब वह कहाँ है?’

8 वह ख़्वाब की तरह उड़ जाता और आइन्दा कहीं नहीं पाया जाएगा, उसे रात की रोया की तरह भुला दिया जाता है। 9 जिस आँख ने उसे देखा वह उसे आइन्दा कभी नहीं देखेगी। उस का घर दुबारा उस का मुशाहदा नहीं करेगा। 10 उस की औलाद को ग़रीबों से भीक माँगनी पड़ेगी, उस के अपने हाथों को दौलत वापस देनी पड़ेगी। 11 जवानी की जिस ताक़त से उस की हड्डियाँ भरी हैं वह उस के साथ ही ख़ाक में मिल जाएगी।

12 बुराई बेदीन के मुँह में मीठी है। वह उसे अपनी ज़बान तले छुपाए रखता, 13 उसे महफ़ूज़ रख कर जाने नहीं देता। 14 लेकिन उस की ख़ुराक पेट में आ कर ख़राब हो जाती बल्कि साँप का ज़हर बन जाती है। 15 जो दौलत उस ने निगल ली उसे वह उगल देगा, अल्लाह ही यह चीज़ें उस के पेट से ख़ारिज करेगा। 16 उस ने साँप का ज़हर चूस लिया, और साँप ही की ज़बान उसे मार डालेगी। 17 वह नदियों से लुत्फ़अन्दोज़ नहीं होगा, शहद और बालाई की नहरों से मज़ा नहीं लेगा। 18 जो कुछ उस ने हासिल किया उसे वह हज़्म नहीं करेगा बल्कि सब कुछ वापस करेगा। जो दौलत उस ने अपने कारोबार से कमाई उस से वह लुत्फ़ नहीं उठाएगा। 19 क्यूँकि उस ने पस्तहालों पर ज़ुल्म करके उन्हें तर्क किया है, उस ने ऐसे घरों को छीन लिया है जिन्हें उस ने तामीर नहीं किया था। 20 उस ने पेट में कभी सुकून महसूस नहीं किया बल्कि जो कुछ भी चाहता था उसे बचने नहीं दिया। 21 जब वह खाना खाता है तो कुछ नहीं बचता, इस लिए उस की ख़ुशहाली क़ाइम नहीं रहेगी। 22 जूँ ही उसे कस्रत की चीज़ें हासिल होंगी वह मुसीबत में फंस जाएगा। तब दुख-दर्द का पूरा ज़ोर उस पर आएगा। 23 काश अल्लाह बेदीन का पेट भर कर अपना भड़कता क़हर उस पर नाज़िल करे, काश वह अपना ग़ज़ब उस पर बरसाए।

24 गो वह लोहे के हथियार से भाग जाए, लेकिन पीतल का तीर उसे चीर डालेगा। 25 जब वह उसे अपनी पीठ से निकाले तो तीर की नोक उस के कलेजे में से निकलेगी। उसे दहशतनाक वाक़िआत पेश आएँगे। 26 गहरी तारीकी उस के ख़ज़ानों की ताक में बैठी रहेगी। ऐसी आग जो इन्सानों ने नहीं लगाई उसे भस्म करेगी। उस के ख़ैमे के जितने लोग बच निकले उन्हें वह खा जाएगी। 27 आसमान उसे मुजरिम ठहराएगा, ज़मीन उस के ख़िलाफ़ गवाही देने के लिए खड़ी हो जाएगी। 28 सैलाब उस का घर उड़ा ले जाएगा, ग़ज़ब के दिन शिद्दत से बहता हुआ पानी उस पर से गुज़रेगा। 29 यह है वह अज्र जो अल्लाह बेदीनों को देगा, वह विरासत जिसे अल्लाह ने उन के लिए मुक़र्रर की है।”

अय्यूब : बहुत दफ़ा बेदीनों को सज़ा नहीं मिलती

21 1 फिर अय्यूब ने जवाब में कहा,

2 “ध्यान से मेरे अल्फ़ाज़ सुनो! यही करने से मुझे तसल्ली दो! 3 जब तक मैं अपनी बात पेश न करूँ मुझे बर्दाश्त करो, इस के बाद अगर चाहो तो मेरा मज़ाक़ उड़ाओ। 4 क्या मैं किसी इन्सान से एहतिजाज कर रहा हूँ? हरगिज़ नहीं! तो फिर क्या अजब कि मेरी रूह इतनी तंग आ गई है। 5 मुझ पर नज़र डालो तो तुम्हारे रोंगटे खड़े हो जाएंगे और तुम हैरानी से अपना हाथ मुँह पर रखोगे।

6 जब कभी मुझे वह ख़याल याद आता है जो मैं पेश करना चाहता हूँ तो मैं दहशतज़दा हो जाता हूँ, मेरे जिस्म पर थरथराहट तारी हो जाती है। 7 ख़याल यह है कि बेदीन क्यूँ जीते रहते हैं? न सिर्फ़ वह उम्ररसीदा हो जाते बल्कि उन की ताक़त बढ़ती रहती है।

8 उन के बच्चे उन के सामने क़ाइम हो जाते, उन की औलाद उन की आँखों के सामने मज़बूत हो जाती है। 9 उन के घर महफ़ूज़ हैं। न कोई चीज़ उन्हें डराती, न अल्लाह की सज़ा उन पर नाज़िल होती है। 10 उन का साँड नस्ल बढ़ाने में कभी नाकाम नहीं होता, उन की

गाय वक़्त पर जन्म देती, और उस के बच्चे कभी ज़ाए
नहीं होते।

11 वह अपने बच्चों को बाहर खेलने के लिए भेजते
हैं तो वह भेड़-बकरियों के रेवड़ की तरह घर से
निकलते हैं। उन के लड़के कूदते फाँदते नज़र आते
हैं। 12 वह दफ़ और सरोद बजा कर गीत गाते और
बाँसरी की सुरीली आवाज़ निकाल कर अपना दिल
बहलाते हैं। 13 उन की ज़िन्दगी ख़ुशहाल रहती है,
वह हर दिन से पूरा लुत्फ़ उठाते और आख़िरकार
बड़े सुकून से पाताल में उतर जाते हैं।

14 और यह वह लोग हैं जो अल्लाह से कहते हैं,
‘हम से दूर हो जा, हम तेरी राहों को जानना नहीं
चाहते। 15 क़ादिर-ए-मुतलक़ कौन है कि हम उस की
ख़िदमत करें? उस से दुआ करने से हमें क्या फ़ाइदा
होगा?’ 16 क्या उन की ख़ुशहाली उन के अपने हाथ
में नहीं होती? क्या बेदीनों के मन्सूबे अल्लाह से दूर
नहीं रहते?

17 ऐसा लगता है कि बेदीनों का चराग़ कभी नहीं
बुझता। क्या उन पर कभी मुसीबत आती है? क्या
अल्लाह कभी क़हर में आ कर उन पर वह तबाही
नाज़िल करता है जो उन का मुनासिब हिस्सा है?
18 क्या हवा के झोंके कभी उन्हें भूसे की तरह
और आँधी कभी उन्हें तूड़ी की तरह उड़ा ले जाती
है? अफ़्सोस, ऐसा नहीं होता। 19 शायद तुम कहो,
‘अल्लाह उन्हें सज़ा देने के बजाए उन के बच्चों को सज़ा
देगा।’ लेकिन मैं कहता हूँ कि उसे बाप को ही सज़ा
देनी चाहिए ताकि वह अपने गुनाहों का नतीजा ख़ूब
जान ले। 20 उस की अपनी ही आँखें उस की तबाही
देखें, वह ख़ुद क़ादिर-ए-मुतलक़ के ग़ज़ब का प्याला
पी ले। 21 क्यूँकि जब उस की ज़िन्दगी के मुक़र्ररा दिन
इख़तिताम तक पहुँचें तो उसे क्या परवा होगी कि मेरे
बाद घर वालों के साथ क्या होगा।

22 लेकिन कौन अल्लाह को इल्म सिखा सकता है?
वह तो बुलन्दियों पर रहने वालों की भी अदालत
करता है। 23 एक शख़्स वफ़ात पाते वक़्त ख़ूब
तन्दुरुस्त होता है। जीते जी वह बड़े सुकून और
इत्मीनान से ज़िन्दगी गुज़ार सका। 24 उस के बर्तन
दूध से भरे रहे, उस की हड्डियों का गूदा तर-ओ-ताज़ा
रहा। 25 दूसरा शख़्स शिकस्ता हालत में मर जाता
है और उसे कभी ख़ुशहाली का लुत्फ़ नसीब नहीं
हुआ। 26 अब दोनों मिल कर ख़ाक में पड़े रहते हैं,
दोनों कीड़े-मकोड़ों से ढाँपे रहते हैं।

27 सुनो, मैं तुम्हारे ख़यालात और उन साज़िशों से
वाक़िफ़ हूँ जिन से तुम मुझ पर ज़ुल्म करना चाहते
हो। 28 क्यूँकि तुम कहते हो, ‘रईस का घर कहाँ
है? वह ख़ैमा किधर गया जिस में बेदीन बसते थे?
वह अपने गुनाहों के सबब से ही तबाह हो गए हैं।’
29 लेकिन उन से पूछ लो जो इधर उधर सफ़र करते
रहते हैं। तुम्हें उन की गवाही तस्लीम करनी चाहिए
30 कि आफ़त के दिन शरीर को सहीह-सलामत छोड़ा
जाता है, कि ग़ज़ब के दिन उसे रिहाई मिलती है।

31 कौन उस के रू-ब-रू उस के चाल-चलन की
मलामत करता, कौन उसे उस के ग़लत काम का
मुनासिब अज्र देता है? 32 लोग उस के जनाज़े में
शरीक हो कर उसे क़ब्र तक ले जाते हैं। उस की क़ब्र
पर चौकीदार लगाया जाता है। 33 वादी की मिट्टी के
ढेले उसे मीठे लगते हैं। जनाज़े के पीछे पीछे तमाम
दुनिया, उस के आगे आगे अनगिनत हुजूम चलता
है। 34 चुनाँचे तुम मुझे अबस बातों से क्यूँ तसल्ली दे
रहे हो? तुम्हारे जवाबों में तुम्हारी बेवफ़ाई ही नज़र
आती है।”

इलीफ़ज़ : अय्यूब शरीर है

22 1 फिर इलीफ़ज़ तेमानी ने जवाब दे कर
कहा,

2 “क्या अल्लाह इन्सान से फ़ाइदा उठा सकता है?
हरगिज़ नहीं! उस के लिए दानिशमन्द भी फ़ाइदे का
बाइस नहीं। 3 अगर तू रास्तबाज़ हो भी तो क्या वह
इस से अपने लिए नफ़ा उठा सकता है? हरगिज़ नहीं!
अगर तू बेइल्ज़ाम ज़िन्दगी गुज़ारे तो क्या उसे कुछ
हासिल होता है? 4 अल्लाह तुझे तेरी ख़ुदातरस ज़िन्दगी
के सबब से मलामत नहीं कर रहा। यह न सोच कि

वह इसी लिए अदालत में तुझ से जवाब तलब कर रहा है। 5 नहीं, वजह तेरी बड़ी बदकारी, तेरे ला-महदूद गुनाह हैं।

6 जब तेरे भाइयों ने तुझ से क़र्ज़ लिया तो तू ने बिलावजह वह चीज़ें अपना ली होंगी जो उन्हों ने तुझे ज़मानत के तौर पर दी थीं, तू ने उन्हें उन के कपड़ों से महरूम कर दिया होगा। 7 तू ने थकेमान्दों को पानी पिलाने से और भूके मरने वालों को खाना खिलाने से इन्कार किया होगा। 8 बेशक तेरा रवय्या इस ख़याल पर मब्नी था कि पूरा मुल्क ताक़तवरों की मिलकियत है, कि सिर्फ़ बड़े लोग उस में रह सकते हैं। 9 तू ने बेवाओं को ख़ाली हाथ मोड़ दिया होगा, यतीमों की ताक़त पाश पाश की होगी। 10 इसी लिए तू फंदों से घिरा रहता है, अचानक ही तुझे दहशतनाक वाक़िआत डराते हैं। 11 यही वजह है कि तुझ पर ऐसा अंधेरा छा गया है कि तू देख नहीं सकता, कि सैलाब ने तुझे डुबो दिया है।

12 क्या अल्लाह आसमान की बुलन्दियों पर नहीं होता? वह तो सितारों पर नज़र डालता है, ख़्वाह वह कितने ही ऊँचे क्यूँ न हों। 13 तो भी तू कहता है, 'अल्लाह क्या जानता है? क्या वह काले बादलों में से देख कर अदालत कर सकता है? 14 वह घने बादलों में छुपा रहता है, इस लिए जब वह आसमान के गुम्बद पर चलता है तो उसे कुछ नज़र नहीं आता।' 15 क्या तू उस क़दीम राह से बाज़ नहीं आएगा जिस पर बदकार चलते रहे हैं? 16 वह तो अपने मुक़र्ररा वक़्त से पहले ही सुकड़ गए, उन की बुन्यादें सैलाब से ही उड़ा ली गईं। 17 उन्हों ने अल्लाह से कहा, 'हम से दूर हो जा,' और 'क़ादिर-ए-मुतलक़ हमारे लिए क्या कुछ कर सकता है?' 18 लेकिन अल्लाह ही ने उन के घरों को भरपूर ख़ुशहाली से नवाज़ा, गो बेदीनों के बुरे मन्सूबे उस से दूर ही दूर रहते हैं। 19 रास्तबाज़ उन की तबाही देख कर ख़ुश हुए, बेक़ुसूरों ने उन की हंसी उड़ा कर कहा, 20 'लो, यह देखो, उन की जायदाद किस तरह मिट गई, उन की दौलत किस तरह भस्म हो गई है!'

21 ऐ अय्यूब, अल्लाह से सुलह करके सलामती हासिल कर, तब ही तू ख़ुशहाली पाएगा। 22 अल्लाह के मुँह की हिदायत अपना ले, उस के फ़रमान अपने दिल में महफ़ूज़ रख। 23 अगर तू क़ादिर-ए-मुतलक़ के पास वापस आए तो बहाल हो जाएगा, और तेरे ख़ैमे से बदी दूर ही रहेगी। 24 सोने को ख़ाक के बराबर, ओफ़ीर का ख़ालिस सोना वादी के पत्थर के बराबर समझ ले 25 तो क़ादिर-ए-मुतलक़ ख़ुद तेरा सोना होगा, वही तेरे लिए चाँदी का ढेर होगा। 26 तब तू क़ादिर-ए-मुतलक़ से लुत्फ़अन्दोज़ होगा और अल्लाह के हुज़ूर अपना सर उठा सकेगा। 27 तू उस से इल्तिजा करेगा तो वह तेरी सुनेगा और तू अपनी मन्नतें बढ़ा सकेगा। 28 जो कुछ भी तू करने का इरादा रखे उस में तुझे कामयाबी होगी, तेरी राहों पर रौशनी चमकेगी। 29 क्यूँकि जो शेख़ी बघारता है उसे अल्लाह पस्त करता जबकि जो पस्तहाल है उसे वह नजात देता है। 30 वह बेक़ुसूर को छुड़ाता है, चुनाँचे अगर तेरे हाथ पाक हों तो वह तुझे छुड़ाएगा।"

अय्यूब : काश मैं अल्लाह को कहीं पाता

23 1 अय्यूब ने जवाब में कहा,

2 "बेशक आज मेरी शिकायत सरकशी का इज़हार है, हालाँकि मैं अपनी आहों पर क़ाबू पाने की कोशिश कर रहा हूँ।

3 काश मैं उसे पाने का इल्म रखूँ ताकि उस की सुकूनतगाह तक पहुँच सकूँ। 4 फिर मैं अपना मुआमला तरतीबवार उस के सामने पेश करता, मैं अपना मुँह दलाइल से भर लेता। 5 तब मुझे उस के जवाबों का पता चलता, मैं उस के बयानात पर ग़ौर कर सकता। 6 क्या वह अपनी अज़ीम क़ुव्वत मुझ से लड़ने पर सर्फ़ करता? हरगिज़ नहीं! वह यक़ीनन मुझ पर तवज्जुह देता। 7 अगर मैं वहाँ उस के हुज़ूर आ सकता तो दियानतदार आदमी की तरह उस के साथ मुक़द्दमा लड़ता। तब मैं हमेशा के लिए अपने मुन्सिफ़ से बच निकलता!

8 लेकिन अफ़सोस, अगर मैं मशरिक़ की तरफ़ जाऊँ
तो वह वहाँ नहीं होता, मग़रिब की जानिब बढ़ूँ तो
वहाँ भी नहीं मिलता। 9 शिमाल में उसे ढूँडूँ तो वह
दिखाई नहीं देता, जुनूब की तरफ़ रुख़ करूँ तो वहाँ
भी पोशीदा रहता है। 10 क्यूँकि वह मेरी राह को
जानता है। अगर वह मेरी जाँच-पड़ताल करता तो
मैं ख़ालिस सोना साबित होता। 11 मेरे क़दम उस की
राह में रहे हैं, मैं राह से न बाईं, न दाईं तरफ़ हटा
बल्कि सीधा उस पर चलता रहा। 12 मैं उस के होंटों
के फ़रमान से बाज़ नहीं आया बल्कि अपने दिल में
ही उस के मुँह की बातें महफ़ूज़ रखी हैं।

13 अगर वह फ़ैसला करे तो कौन उसे रोक सकता
है? जो कुछ भी वह करना चाहे उसे अमल में लाता
है। 14 जो भी मन्सूबा उस ने मेरे लिए बांधा उसे
वह ज़रूर पूरा करेगा। और उस के ज़हन में मज़ीद
बहुत से ऐसे मन्सूबे हैं। 15 इसी लिए मैं उस के हुज़ूर
दहशतज़दा हूँ। जब भी मैं इन बातों पर ध्यान दूँ तो
उस से डरता हूँ। 16 अल्लाह ने ख़ुद मुझे शिकस्तादिल
किया, क़ादिर-ए-मुतलक़ ही ने मुझे दहशत खिलाई
है। 17 क्यूँकि न मैं तारीकी से तबाह हो रहा हूँ, न इस
लिए कि घने अंधेरे ने मेरे चेहरे को ढाँप दिया है।

ज़मीन पर कितनी नाइन्साफ़ी पाई जाती है

24 1 क़ादिर-ए-मुतलक़ अदालत के औक़ात
क्यूँ नहीं मुक़र्रर करता? जो उसे जानते हैं
वह ऐसे दिन क्यूँ नहीं देखते? 2 बेदीन अपनी ज़मीनों
की हुदूद को आगे पीछे करते और दूसरों के रेवड़
लूट कर अपनी चरागाहों में ले जाते हैं। 3 वह यतीमों
का गधा हाँक कर ले जाते और इस शर्त पर बेवा को
क़र्ज़ देते हैं कि वह उन्हें ज़मानत के तौर पर अपना
बैल दे। 4 वह ज़रूरतमन्दों को रास्ते से हटाते हैं,
चुनाँचे मुल्क के ग़रीबों को सरासर छुप जाना पड़ता
है।

5 ज़रूरतमन्द बयाबान में जंगली गधों की तरह
काम करने के लिए निकलते हैं। ख़ुराक का खोज
लगा लगा कर वह इधर उधर घूमते फिरते हैं बल्कि
रेगिस्तान ही उन्हें उन के बच्चों के लिए खाना मुहय्या
करता है। 6 जो खेत उन के अपने नहीं हैं उन में वह
फ़सल काटते हैं, और बेदीनों के अंगूर के बाग़ों में
जा कर वह दो चार अंगूर चुन लेते हैं जो फ़सल चुनने
के बाद बाक़ी रह गए थे। 7 कपड़ों से महरूम रह कर
वह रात को बरहना हालत में गुज़ारते हैं। सर्दी में उन
के पास कम्बल तक नहीं होता। 8 पहाड़ों की बारिश
से वह भीग जाते और पनाहगाह न होने के बाइस
पत्थरों के साथ लिपट जाते हैं।

9 बेदीन बाप से महरूम बच्चे को माँ की गोद से छीन
लेते हैं बल्कि इस शर्त पर मुसीबतज़दा को क़र्ज़ देते
हैं कि वह उन्हें ज़मानत के तौर पर अपना शीरख़्वार
बच्चा दे। 10 ग़रीब बरहना हालत में और कपड़े पहने
बग़ैर फिरते हैं, वह भूके होते हुए पूले उठाए चलते हैं।
11 ज़ैतून के जो दरख़्त बेदीनों ने सफ़-दर-सफ़ लगाए
थे उन के दरमियान ग़रीब ज़ैतून का तेल निकालते
हैं। प्यासी हालत में वह शरीरों के हौज़ों में अंगूर
को पाँओ तले कुचल कर उस का रस निकालते हैं।
12 शहर से मरने वालों की आहें निकलती हैं और
ज़ख़्मी लोग मदद के लिए चीख़ते चिल्लाते हैं। इस के
बावुजूद अल्लाह किसी को भी मुजरिम नहीं ठहराता।

13 यह बेदीन उन में से हैं जो नूर से सरकश हो
गए हैं। न वह उस की राहों से वाक़िफ़ हैं, न उन
में रहते हैं। 14 सुब्ह-सवेरे क़ातिल उठता है ताकि
मुसीबतज़दा और ज़रूरतमन्द को क़त्ल करे। रात
को चोर चक्कर काटता है। 15 ज़िनाकार की आँखें
शाम के धुन्दल्के के इन्तिज़ार में रहती हैं, यह सोच
कर कि उस वक़्त मैं किसी को नज़र नहीं आऊँगा।
निकलते वक़्त वह अपने मुँह को ढाँप लेता है।
16 डाकू अंधेरे में घरों में नक़ब लगाते जबकि दिन
के वक़्त वह छुप कर अपने पीछे कुंडी लगा लेते
हैं। नूर को वह जानते ही नहीं। 17 गहरी तारीकी ही
उन की सुब्ह होती है, क्यूँकि उन की घने अंधेरे की
दहशतों से दोस्ती हो गई है।

18 लेकिन बेदीन पानी की सतह पर झाग हैं, मुल्क
में उन का हिस्सा मलऊन है और उन के अंगूर के

बाग़ों की तरफ़ कोई रुजू नहीं करता। 19 जिस तरह
काल और झुलसती गर्मी बर्फ़ का पानी छीन लेती हैं
उसी तरह पाताल गुनाहगारों को छीन लेता है। 20 माँ
का रहम उन्हें भूल जाता, कीड़ा उन्हें चूस लेता और
उन की याद जाती रहती है। यक़ीनन बेदीनी लकड़ी
की तरह टूट जाती है। 21 बेदीन बाँझ औरत पर
ज़ुल्म और बेवाओं से बदसुलूकी करते हैं, 22 लेकिन
अल्लाह ज़बरदस्तों को अपनी क़ुदरत से घसीट कर
ले जाता है। वह मज़बूती से खड़े भी हों तो भी कोई
यक़ीन नहीं कि ज़िन्दा रहेंगे। 23 अल्लाह उन्हें हिफ़ाज़त
से आराम करने देता है, लेकिन उस की आँखें उन की
राहों की पहरादारी करती रहती हैं। 24 लम्हा भर के
लिए वह सरफ़राज़ होते, लेकिन फिर नेस्त-ओ-नाबूद
हो जाते हैं। उन्हें ख़ाक में मिला कर सब की तरह
जमा किया जाता है, वह गन्दुम की कटी हुई बालों
की तरह मुरझा जाते हैं।

25 क्या ऐसा नहीं है? अगर कोई मुत्तफ़िक़ नहीं तो
वह साबित करे कि मैं ग़लती पर हूँ, वह दिखाए कि
मेरे दलाइल बातिल हैं।”

बिल्दद : अल्लाह के सामने कोई रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता

25 1 फिर बिल्दद सूख़ी ने जवाब दे कर कहा,
2 “अल्लाह की हुकूमत दहशतनाक है।
वही अपनी बुलन्दियों पर सलामती क़ाइम रखता है।
3 क्या कोई उस के दस्तों की तादाद गिन सकता है?
उस का नूर किस पर नहीं चमकता? 4 तो फिर इन्सान
अल्लाह के सामने किस तरह रास्तबाज़ ठहर सकता
है? जो औरत से पैदा हुआ वह किस तरह पाक-साफ़
साबित हो सकता है? 5 उस की नज़र में न चाँद पुरनूर
है, न सितारे पाक हैं। 6 तो फिर इन्सान किस तरह
पाक ठहर सकता है जो कीड़ा ही है? आदमज़ाद तो
मकोड़ा ही है।”

अय्यूब : तू ने मुझे कितने अच्छे मश्वरे दिए हैं!

26 1 अय्यूब ने जवाब दे कर कहा,
2 “वाह जी वाह! तू ने क्या ख़ूब उसे
सहारा दिया जो बेबस है, क्या ख़ूब उस बाज़ू को
मज़बूत कर दिया जो बेताक़त है! 3 तू ने उसे कितने
अच्छे मश्वरे दिए जो हिक्मत से महरूम है, अपनी
समझ की कितनी गहरी बातें उस पर ज़ाहिर की हैं।
4 तू ने किस की मदद से यह कुछ पेश किया है? किस
ने तेरी रूह में वह बातें डालीं जो तेरे मुँह से निकल
आई हैं?

कौन अल्लाह की अज़मत का अन्दाज़ा लगा सकता है?

5 अल्लाह के सामने वह तमाम मुर्दा अर्वाह जो पानी
और उस में रहने वालों के नीचे बसती हैं डर के मारे
तड़प उठती हैं। 6 हाँ, उस के सामने पाताल बरहना
और उस की गहराइयाँ बेनिक़ाब हैं।

7 अल्लाह ही ने शिमाल को वीरान-ओ-सुन्सान जगह
के ऊपर तान लिया, उसी ने ज़मीन को यूँ लगा दिया
कि वह किसी चीज़ से लटकी हुई नहीं है। 8 उस ने
अपने बादलों में पानी लपेट लिया, लेकिन वह बोझ
तले न फटे। 9 उस ने अपना तख़्त नज़रों से छुपा कर
अपना बादल उस पर छा जाने दिया। 10 उस ने पानी
की सतह पर दाइरा बनाया जो रौशनी और अंधेरे के
दरमियान हद बन गया।

11 आसमान के सतून लरज़ उठे। उस की धमकी
पर वह दहशतज़दा हुए। 12 अपनी क़ुदरत से अल्लाह
ने समुन्दर को थमा दिया, अपनी हिक्मत से रहब
अज़दहे को टुकड़े टुकड़े कर दिया। 13 उस के रूह
ने आसमान को साफ़ किया, उस के हाथ ने फ़रार
होने वाले साँप को छेद डाला। 14 लेकिन ऐसे काम
उस की राहों के किनारे पर ही किए जाते हैं। जो कुछ
हम उस के बारे में सुनते हैं वह धीमी धीमी आवाज़
से हमारे कान तक पहुँचता है। तो फिर कौन उस की
क़ुदरत की कड़कती आवाज़ समझ सकता है?”

मैं बेक़ुसूर हूँ

27 1 फिर अय्यूब ने अपनी बात जारी रखी,
2 “अल्लाह की हयात की क़सम जिस
ने मेरा इन्साफ़ करने से इन्कार किया, क़ादिर-ए-
मुतलक़ की क़सम जिस ने मेरी ज़िन्दगी तल्ख़ कर
दी है, 3 मेरे जीते जी, हाँ जब तक अल्लाह का दम मेरी
नाक में है 4 मेरे होंट झूट नहीं बोलेंगे, मेरी ज़बान
धोका बयान नहीं करेगी। 5 मैं कभी तस्लीम नहीं
करूँगा कि तुम्हारी बात दुरुस्त है। मैं बेइल्ज़ाम हूँ
और मरते दम तक इस के उलट नहीं कहूँगा। 6 मैं
इसरार करता हूँ कि रास्तबाज़ हूँ और इस से कभी
बाज़ नहीं आऊँगा। मेरा दिल मेरे किसी भी दिन के
बारे में मुझे मलामत नहीं करता।

7 अल्लाह करे कि मेरे दुश्मन के साथ वही सुलूक
किया जाए जो बेदीनों के साथ किया जाएगा, कि मेरे
मुख़ालिफ़ का वह अन्जाम हो जो बदकारों को पेश
आएगा। 8 क्यूँकि उस वक़्त शरीर की क्या उम्मीद
रहेगी जब उसे इस ज़िन्दगी से मुन्क़ते किया जाएगा,
जब अल्लाह उस की जान उस से तलब करेगा? 9 क्या
अल्लाह उस की चीख़ें सुनेगा जब वह मुसीबत में
फंस कर मदद के लिए पुकारेगा? 10 या क्या वह
क़ादिर-ए-मुतलक़ से लुत्फ़अन्दोज़ होगा और हर
वक़्त अल्लाह को पुकारेगा?

11 अब मैं तुम्हें अल्लाह की क़ुदरत के बारे में
तालीम दूँगा, क़ादिर-ए-मुतलक़ का इरादा तुम से
नहीं छुपाऊँगा। 12 देखो, तुम सब ने इस का मुशाहदा
किया है। तो फिर इस क़िस्म की बातिल बातें क्यूँ
करते हो?

बेदीन ज़िन्दा नहीं रहेगा

13 बेदीन अल्लाह से क्या अज्र पाएगा, ज़ालिम को
क़ादिर-ए-मुतलक़ से मीरास में क्या मिलेगा? 14 गो
उस के बच्चे मुतअद्दिद हों, लेकिन आख़िरकार वह
तलवार की ज़द में आएँगे। उस की औलाद भूकी
रहेगी। 15 जो बच जाएँ उन्हें मोहलक बीमारी से क़ब्र
में पहुँचाया जाएगा, और उन की बेवाएँ मातम नहीं
कर पाएँगी। 16 बेशक वह ख़ाक की तरह चाँदी का
ढेर लगाए और मिट्टी की तरह नफ़ीस कपड़ों का तोदा
इकट्ठा करे, 17 लेकिन जो कपड़े वह जमा करे उन्हें
रास्तबाज़ पहन लेगा, और जो चाँदी वह इकट्ठी करे
उसे बेक़ुसूर तक़्सीम करेगा। 18 जो घर बेदीन बना ले
वह घोंसले की मानिन्द है, उस आरिज़ी झोंपड़ी की
मानिन्द जो चौकीदार अपने लिए बना लेता है। 19 वह
अमीर हालत में सो जाता है, लेकिन आख़िरी दफ़ा।
जब अपनी आँखें खोल लेता तो तमाम दौलत जाती
रही है। 20 उस पर हौलनाक वाक़िआत का सैलाब
टूट पड़ता, उसे रात के वक़्त आँधी छीन लेती है।
21 मशरिक़ी लू उसे उड़ा ले जाती, उसे उठा कर उस
के मक़ाम से दूर फैंक देती है। 22 बेरहमी से वह उस
पर यूँ झपट्टा मारती रहती है कि उसे बार बार भागना
पड़ता है। 23 वह तालियाँ बजा कर अपनी हिक़ारत
का इज़हार करती, अपनी जगह से आवाज़े कसती
है।

हिक्मत कहाँ पाई जाती है?

28 1 यक़ीनन चाँदी की कानें होती हैं और ऐसी
जगहें जहाँ सोना ख़ालिस किया जाता है।
2 लोहा ज़मीन से निकाला जाता और लोग पत्थर
पिघला कर ताँबा बना लेते हैं। 3 इन्सान अंधेरे को
ख़त्म करके ज़मीन की गहरी गहरी जगहों तक कच्ची
धात का खोज लगाता है, ख़्वाह वह कितने अंधेरे में
क्यूँ न हो। 4 एक अजनबी क़ौम सुरंग लगाती है। जब
रस्सों से लटके हुए काम करते और इन्सानों से दूर
कान में झूमते हैं तो ज़मीन पर गुज़रने वालों को उन
की याद ही नहीं रहती। 5 ज़मीन की सतह पर ख़ुराक
पैदा होती है जबकि उस की गहराइयाँ यूँ तब्दील हो
जाती हैं जैसे उस में आग लगी हो। 6 पत्थरों से संग-
ए-लाजवर्द निकाला जाता है जिस में सोने के ज़र्रे भी
पाए जाते हैं।

7 यह ऐसे रास्ते हैं जो कोई भी शिकारी परिन्दा नहीं
जानता, जो किसी भी बाज़ ने नहीं देखा। 8 जंगल के

रोबदार जानवरों में से कोई भी इन राहों पर नहीं चला, किसी भी शेरबबर ने इन पर क़दम नहीं रखा। 9इन्सान संग-ए-चक़्माक़ पर हाथ लगा कर पहाड़ों को जड़ से उलटा देता है। 10वह पत्थर में सुरंग लगा कर हर क़िस्म की क़ीमती चीज़ देख लेता 11और ज़मीनदोज़ नदियों को बन्द करके पोशीदा चीज़ें रौशनी में लाता है।

12लेकिन हिक्मत कहाँ पाई जाती है, समझ कहाँ से मिलती है? 13इन्सान उस तक जाने वाली राह नहीं जानता, क्यूँकि उसे मुल्क-ए-हयात में पाया नहीं जाता। 14समुन्दर कहता है, ‘हिक्मत मेरे पास नहीं है,’ और उस की गहराइयाँ बयान करती हैं, ‘यहाँ भी नहीं है।’

15हिक्मत को न ख़ालिस सोने, न चाँदी से ख़रीदा जा सकता है। 16उसे पाने के लिए न ओफ़ीर का सोना, न बेशक़ीमत अक़ीक़-ए-अह्मर [l]या संग-ए-लाजवर्द [m]काफ़ी हैं। 17सोना और शीशा उस का मुक़ाबला नहीं कर सकते, न वह सोने के ज़ेवरात के इवज़ मिल सकती है। 18उस की निस्बत मूँगा और बिल्लौर की क्या क़दर है? हिक्मत से भरी थैली मोतियों से कहीं ज़्यादा क़ीमती है। 19एथोपिया का ज़बर्जद [n]उस का मुक़ाबला नहीं कर सकता, उसे ख़ालिस सोने के लिए ख़रीदा नहीं जा सकता।

20हिक्मत कहाँ से आती, समझ कहाँ से मिल सकती है? 21वह तमाम जानदारों से पोशीदा रहती बल्कि परिन्दों से भी छुपी रहती है। 22पाताल और मौत उस के बारे में कहते हैं, ‘हम ने उस के बारे में सिर्फ़ अफ़्वाहें सुनी हैं।’

23लेकिन अल्लाह उस तक जाने वाली राह को जानता है, उसे मालूम है कि कहाँ मिल सकती है। 24क्यूँकि उसी ने ज़मीन की हुदूद तक देखा, आसमान तले सब कुछ पर नज़र डाली 25ताकि हवा का वज़न मुक़र्रर करे और पानी की पैमाइश करके उस की हुदूद मुतअय्यिन करे। 26उसी ने बारिश के लिए फ़रमान जारी किया और बादल की कड़कती बिजली के लिए रास्ता तय्यार किया। 27उसी वक़्त उस ने हिक्मत को देख कर उस की जाँच-पड़ताल की। उस ने उसे क़ाइम भी किया और उस की तह तक तहक़ीक़ भी की। 28इन्सान से उस ने कहा, ‘सुनो, अल्लाह का ख़ौफ़ मानना ही हिक्मत और बुराई से दूर रहना ही समझ है’।”

काश मेरी ज़िन्दगी पहले की तरह हो

29 1अय्यूब ने अपनी बात जारी रख कर कहा, 2“काश मैं दुबारा माज़ी के वह दिन गुज़ार सकूँ जब अल्लाह मेरी देख-भाल करता था, 3जब उस की शमा मेरे सर के ऊपर चमकती रही और मैं उस की रौशनी की मदद से अंधेरे में चलता था। 4उस वक़्त मेरी जवानी उरूज पर थी और मेरा ख़ैमा अल्लाह के साय में रहता था। 5क़ादिर-ए-मुतलक़ मेरे साथ था, और मैं अपने बेटों से घिरा रहता था। 6कस्रत के बाइस मेरे क़दम दही से धोए रहते और चटान से तेल की नदियाँ फूट कर निकलती थीं।

7जब कभी मैं शहर के दरवाज़े से निकल कर चौक में अपनी कुर्सी पर बैठ जाता 8तो जवान आदमी मुझे देख कर पीछे हट कर छुप जाते, बुज़ुर्ग उठ कर खड़े रहते, 9रईस बोलने से बाज़ आ कर मुँह पर हाथ रखते, 10शुरफ़ा की आवाज़ दब जाती और उन की ज़बान तालू से चिपक जाती थी।

11जिस कान ने मेरी बातें सुनीं उस ने मुझे मुबारक कहा, जिस आँख ने मुझे देखा उस ने मेरे हक़ में गवाही दी। 12क्यूँकि जो मुसीबत में आ कर आवाज़ देता उसे मैं बचाता, बेसहारा यतीम को छुटकारा देता था। 13तबाह होने वाले मुझे बरकत देते थे। मेरे बाइस बेवाओं के दिलों से ख़ुशी के नारे उभर आते थे। 14मैं रास्तबाज़ी से मुलब्बस और रास्तबाज़ी मुझ

[l]carnelian

[m]lapis lazuli

[n]peridot

से मुलब्बस रहती थी, इन्साफ़ मेरा चोग़ा और पगड़ी
था।
15 अंधों के लिए मैं आँखें, लंगड़ों के लिए पाँओ
बना रहता था। 16 मैं ग़रीबों का बाप था, और जब
कभी अजनबी को मुक़द्दमा लड़ना पड़ा तो मैं ग़ौर से
उस के मुआमले का मुआइना करता था ताकि उस
का हक़ मारा न जाए। 17 मैं ने बेदीन का जबड़ा तोड़
कर उस के दाँतों में से शिकार छुड़ाया।
18 उस वक़्त मेरा ख़याल था, 'मैं अपने ही घर में
वफ़ात पाऊँगा, सीमुर्ग़ की तरह अपनी ज़िन्दगी के
दिनों में इज़ाफ़ा करूँगा। 19 मेरी जड़ें पानी तक फैली
और मेरी शाख़ें ओस से तर रहेंगी। 20 मेरी इज़्ज़त हर
वक़्त ताज़ा रहेगी, और मेरे हाथ की कमान को नई
तक़वियत मिलती रहेगी।'
21 लोग मेरी सुन कर ख़ामोशी से मेरे मश्वरों के
इन्तिज़ार में रहते थे। 22 मेरे बात करने पर वह जवाब
में कुछ न कहते बल्कि मेरे अल्फ़ाज़ हल्की सी बूँदा-
बाँदी की तरह उन पर टपकते रहते। 23 जिस तरह
इन्सान शिद्दत से बारिश के इन्तिज़ार में रहता है उसी
तरह वह मेरे इन्तिज़ार में रहते थे। वह मुँह पसार कर
बहार की बारिश की तरह मेरे अल्फ़ाज़ को जज़्ब कर
लेते थे। 24 जब मैं उन से बात करते वक़्त मुस्कुराता
तो उन्हें यक़ीन नहीं आता था, मेरी उन पर मेहरबानी
उन के नज़्दीक निहायत क़ीमती थी। 25 मैं उन की
राह उन के लिए चुन कर उन की क़ियादत करता,
उन के दरमियान यूँ बसता था जिस तरह बादशाह
अपने दस्तों के दरमियान। मैं उस की मानिन्द था जो
मातम करने वालों को तसल्ली देता है।

मुझे रद्द किया गया है

30 1 लेकिन अब वह मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं,
हालाँकि उन की उम्र मुझ से कम है और
मैं उन के बापों को अपनी भेड़-बकरियों की देख-
भाल करने वाले कुत्तों के साथ काम पर लगाने के
भी लाइक़ नहीं समझता था। 2 मेरे लिए उन के हाथों
की मदद का क्या फ़ाइदा था? उन की पूरी ताक़त तो
जाती रही थी। 3 ख़ुराक की कमी और शदीद भूक के
मारे वह ख़ुश्क ज़मीन की थोड़ी बहुत पैदावार कतर
कतर कर खाते हैं। हर वक़्त वह तबाही और वीरानी
के दामन में रहते हैं। 4 वह झाड़ियों से ख़त्मी का फल
तोड़ कर खाते, झाड़ियों[o] की जड़ें आग तापने के लिए
इकट्ठी करते हैं। 5 उन्हें आबादियों से ख़ारिज किया
गया है, और लोग 'चोर चोर' चिल्ला कर उन्हें भगा
देते हैं। 6 उन्हें घाटियों की ढलानों पर बसना पड़ता,
वह ज़मीन के ग़ारों में और पत्थरों के दरमियान ही
रहते हैं। 7 झाड़ियों के दरमियान वह आवाज़ें देते और
मिल कर ऊँटकटारों तले दबक जाते हैं। 8 इन कमीने
और बेनाम लोगों को मार मार कर मुल्क से भगा
दिया गया है।
9 और अब मैं इन ही का निशाना बन गया हूँ। अपने
गीतों में वह मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं, मेरी बुरी हालत
उन के लिए मज़हकाख़ेज़ मिसाल बन गई है। 10 वह
घिन खा कर मुझ से दूर रहते और मेरे मुँह पर थूकने
से नहीं रुकते। 11 चूँकि अल्लाह ने मेरी कमान की
ताँत खोल कर मेरी रुस्वाई की है, इस लिए वह मेरी
मौजूदगी में बेलगाम हो गए हैं। 12 मेरे दहने हाथ हुजूम
खड़े हो कर मुझे ठोकर खिलाते और मेरी फ़सील
के साथ मिट्टी के ढेर लगाते हैं ताकि उस में रख़ना
डाल कर मुझे तबाह करें। 13 वह मेरी क़िलाबन्दियाँ
ढा कर मुझे ख़ाक में मिलाने में कामयाब हो जाते हैं।
किसी और की मदद दरकार ही नहीं। 14 वह रख़ने में
दाख़िल होते और जौक़-दर-जौक़ तबाहशुदा फ़सील
में से गुज़र कर आगे बढ़ते हैं। 15 हौलनाक वाक़िआत
मेरे ख़िलाफ़ खड़े हो गए हैं, और वह तेज़ हवा की
तरह मेरे वक़ार को उड़ा ले जा रहे हैं। मेरी सलामती
बादल की तरह ओझल हो गई है।
16 और अब मेरी जान निकल रही है, मैं मुसीबत के
दिनों के क़ाबू में आ गया हूँ। 17 रात को मेरी हड्डियों

[o]यानी झाड़ी बनाम broom, सींक क़िस्म की झाड़ी जिस के फूल ज़र्द होते हैं।

को छेदा जाता है, कतरने वाला दर्द मुझे कभी नहीं छोड़ता। 18 अल्लाह बड़े ज़ोर से मेरा कपड़ा पकड़ कर गरेबान की तरह मुझे अपनी सख़्त गिरिफ़्त में रखता है। 19 उस ने मुझे कीचड़ में फैंक दिया है, और देखने में मैं ख़ाक और मिट्टी ही बन गया हूँ। 20 मैं तुझे पुकारता, लेकिन तू जवाब नहीं देता। मैं खड़ा हो जाता, लेकिन तू मुझे घूरता ही रहता है। 21 तू मेरे साथ अपना सुलूक बदल कर मुझ पर ज़ुल्म करने लगा, अपने हाथ के पूरे ज़ोर से मुझे सताने लगा है। 22 तू मुझे उड़ा कर हवा पर सवार होने देता, गरजते तूफ़ान में घुलने देता है। 23 हाँ, अब मैं जानता हूँ कि तू मुझे मौत के हवाले करेगा, उस घर में पहुँचाएगा जहाँ एक दिन तमाम जानदार जमा हो जाते हैं।

24 यक़ीनन मैं ने कभी भी अपना हाथ किसी ज़रूरतमन्द के ख़िलाफ़ नहीं उठाया जब उस ने अपनी मुसीबत में आवाज़ दी। 25 बल्कि जब किसी का बुरा हाल था तो मैं हमदर्दी से रोने लगा, ग़रीबों की हालत देख कर मेरा दिल ग़म खाने लगा। 26 ताहम मुझ पर मुसीबत आई, अगरचे मैं भलाई की उम्मीद रख सकता था। मुझ पर घना अंधेरा छा गया, हालाँकि मैं रौशनी की तवक़्क़ो कर सकता था। 27 मेरे अन्दर सब कुछ मुज़्तरिब है और कभी आराम नहीं कर सकता, मेरा वास्ता तक्लीफ़दिह दिनों से पड़ता है। 28 मैं मातमी लिबास में फिरता हूँ और कोई मुझे तसल्ली नहीं देता, हालाँकि मैं जमाअत में खड़े हो कर मदद के लिए आवाज़ देता हूँ। 29 मैं गीदड़ों का भाई और उक़ाबी उल्लूओं का साथी बन गया हूँ। 30 मेरी जिल्द काली हो गई, मेरी हड्डियाँ तपती गर्मी के सबब से झुलस गई हैं। 31 अब मेरा सरोद सिर्फ़ मातम करने और मेरी बाँसरी सिर्फ़ रोने वालों के लिए इस्तेमाल होती है।

मेरी आख़िरी बात : मैं बेगुनाह हूँ

31 1 मैं ने अपनी आँखों से अह्द बांधा है। तो फिर मैं किस तरह किसी कुंवारी पर नज़र डाल सकता हूँ? 2 क्यूँकि इन्सान को आसमान पर रहने वाले ख़ुदा की तरफ़ से क्या नसीब है, उसे बुलन्दियों पर बसने वाले क़ादिर-ए-मुतलक़ से क्या विरासत पाना है? 3 क्या ऐसा नहीं है कि नारास्त शख़्स के लिए आफ़त और बदकार के लिए तबाही मुक़र्रर है? 4 मेरी राहें तो अल्लाह को नज़र आती हैं, वह मेरा हर क़दम गिन लेता है।

5 न मैं कभी धोके से चला, न मेरे पाँओ ने कभी फ़रेब देने के लिए फुरती की। अगर इस में ज़रा भी शक हो 6 तो अल्लाह मुझे इन्साफ़ के तराज़ू में तोल ले, अल्लाह मेरी बेइल्ज़ाम हालत मालूम करे। 7 अगर मेरे क़दम सहीह राह से हट गए, मेरी आँखें मेरे दिल को ग़लत राह पर ले गईं या मेरे हाथ दाग़दार हुए 8 तो फिर जो बीज मैं ने बोया उस की पैदावार कोई और खाए, जो फ़सलें मैं ने लगाईं उन्हें उखाड़ा जाए।

9 अगर मेरा दिल किसी औरत से नाजाइज़ ताल्लुक़ात रखने पर उकसाया गया और मैं इस मक़्सद से अपने पड़ोसी के दरवाज़े पर ताक लगाए बैठा 10 तो फिर अल्लाह करे कि मेरी बीवी किसी और आदमी की गन्दुम पीसे, कि कोई और उस पर झुक जाए। 11 क्यूँकि ऐसी हरकत शर्मनाक होती, ऐसा जुर्म सज़ा के लाइक़ होता है। 12 ऐसे गुनाह की आग पाताल तक सब कुछ भस्म कर देती है। अगर वह मुझ से सरज़द होता तो मेरी तमाम फ़सल जड़ों तक राख कर देता।

13 अगर मेरा नौकर-नौकरानियों के साथ झगड़ा था और मैं ने उन का हक़ मारा 14 तो मैं क्या करूँ जब अल्लाह अदालत में खड़ा हो जाए? जब वह मेरी पूछ-गछ करे तो मैं उसे क्या जवाब दूँ? 15 क्यूँकि जिस ने मुझे मेरी माँ के पेट में बनाया उस ने उन्हें भी बनाया। एक ही ने उन्हें भी और मुझे भी रहम में तश्कील दिया।

16 क्या मैं ने पस्तहालों की ज़रूरियात पूरी करने से इन्कार किया या बेवा की आँखों को बुझने दिया? हरगिज़ नहीं! 17 क्या मैं ने अपनी रोटी अकेले ही खाई और यतीम को उस में शरीक न किया? 18 हरगिज़ नहीं, बल्कि अपनी जवानी से ले कर मैं ने उस का

बाप बन कर उस की परवरिश की, अपनी पैदाइश
से ही बेवा की राहनुमाई की। 19 जब कभी मैं ने देखा
कि कोई कपड़ों की कमी के बाइस हलाक हो रहा
है, कि किसी ग़रीब के पास कम्बल तक नहीं 20 तो
मैं ने उसे अपनी भेड़ों की कुछ ऊन दी ताकि वह गर्म
हो सके। ऐसे लोग मुझे दुआ देते थे। 21 मैं ने कभी भी
यतीमों के ख़िलाफ़ हाथ नहीं उठाया, उस वक़्त भी
नहीं जब शहर के दरवाज़े में बैठे बुज़ुर्ग मेरे हक़ में थे।
22 अगर ऐसा न था तो अल्लाह करे कि मेरा शाना कंधे
से निकल कर गिर जाए, कि मेरा बाज़ू जोड़ से फाड़ा
जाए! 23 ऐसी हरकतें मेरे लिए नामुमकिन थीं, क्यूँकि
अगर मैं ऐसा करता तो मैं अल्लाह से दहशत खाता
रहता, मैं उस से डर के मारे क़ाइम न रह सकता।

24 क्या मैं ने सोने पर अपना पूरा भरोसा रखा या
ख़ालिस सोने से कहा, 'तुझ पर ही मेरा एतिमाद है'?
हरगिज़ नहीं! 25 क्या मैं इस लिए ख़ुश था कि मेरी
दौलत ज़्यादा है और मेरे हाथ ने बहुत कुछ हासिल
किया है? हरगिज़ नहीं! 26 क्या सूरज की चमक-
दमक और चाँद की पुरवक़ार रविश देख कर 27 मेरे
दिल को कभी चुपके से ग़लत राह पर लाया गया?
क्या मैं ने कभी उन का एहतिराम किया? [p]28 हरगिज़
नहीं, क्यूँकि यह भी सज़ा के लाइक़ जुर्म है। अगर
मैं ऐसा करता तो बुलन्दियों पर रहने वाले ख़ुदा का
इन्कार करता।

29 क्या मैं कभी ख़ुश हुआ जब मुझ से नफ़रत करने
वाला तबाह हुआ? क्या मैं बाग़ बाग़ हुआ जब उस
पर मुसीबत आई? हरगिज़ नहीं! 30 मैं ने अपने मुँह
को इजाज़त न दी कि गुनाह करके उस की जान
पर लानत भेजे। 31 बल्कि मेरे ख़ैमे के आदमियों को
तस्लीम करना पड़ा, 'कोई नहीं है जो अय्यूब के
गोश्त से सेर न हुआ।' 32 अजनबी को बाहर गली
में रात गुज़ारनी नहीं पड़ती थी बल्कि मेरा दरवाज़ा
मुसाफ़िरों के लिए खुला रहता था। 33 क्या मैं ने कभी
आदम की तरह अपना गुनाह छुपा कर अपना क़ुसूर
दिल में पोशीदा रखा, 34 इस लिए कि हुजूम से डरता
और अपने रिश्तेदारों से दहशत खाता था? हरगिज़
नहीं! मैं ने कभी भी ऐसा काम न किया जिस के बाइस
मुझे डर के मारे चुप रहना पड़ता और घर से निकल
नहीं सकता था।

35 काश कोई मेरी सुने! देखो, यहाँ मेरी बात पर मेरे
दस्तख़त हैं, अब क़ादिर-ए-मुतलक़ मुझे जवाब दे।
काश मेरे मुख़ालिफ़ लिख कर मुझे वह इल्ज़ामात
बताएँ जो उन्हों ने मुझ पर लगाए हैं! 36 अगर
इल्ज़ामात का काग़ज़ मिलता तो मैं उसे उठा कर
अपने कंधे पर रखता, उसे पगड़ी की तरह अपने सर
पर बांध लेता। 37 मैं अल्लाह को अपने क़दमों का पूरा
हिसाब-किताब दे कर रईस की तरह उस के क़रीब
पहुँचता।

38 क्या मेरी ज़मीन ने मदद के लिए पुकार कर मुझ
पर इल्ज़ाम लगाया है? क्या उस की रेघारयाँ मेरे
सबब से मिल कर रो पड़ी हैं? 39 क्या मैं ने उस
की पैदावार अज्र दिए बग़ैर खाई, उस पर मेहनत-
मशक़्क़त करने वालों के लिए आहें भरने का बाइस
बन गया? हरगिज़ नहीं! 40 अगर मैं इस में क़ुसूरवार
ठहरूँ तो गन्दुम के बजाए ख़ारदार झाड़ियाँ और
जौ के बजाए धतूरा [q]उगे।" यूँ अय्यूब की बातें
इख़तिताम को पहुँच गईं।

चौथे साथी इलीहू की तक़रीर

32 1 तब मज़कूरा तीनों आदमी अय्यूब को
जवाब देने से बाज़ आए, क्यूँकि वह अब
तक समझता था कि मैं रास्तबाज़ हूँ। 2 यह देख कर
इलीहू बिन बरकेल ग़ुस्से हो गया। बूज़ शहर के रहने
वाले इस आदमी का ख़ानदान राम था। एक तरफ़
तो वह अय्यूब से ख़फ़ा था, क्यूँकि यह अपने आप
को अल्लाह के सामने रास्तबाज़ ठहराता था। 3 दूसरी
तरफ़ वह तीनों दोस्तों से भी नाराज़ था, क्यूँकि न वह
अय्यूब को सहीह जवाब दे सके, न साबित कर सके

[p]लफ़्ज़ी तर्जुमा : हाथ से उन्हें बोसा दिया।

[q]एक बदबूदार पौदा।

कि मुजरिम है। [4] इलीहू ने अब तक अय्यूब से बात
नहीं की थी। जब तक दूसरों ने बात पूरी नहीं की
थी वह ख़ामोश रहा, क्यूँकि वह बुज़ुर्ग थे। [5] लेकिन
अब जब उस ने देखा कि तीनों आदमी मज़ीद कोई
जवाब नहीं दे सकते तो वह भड़क उठा [6] और जवाब
में कहा,

“मैं कमउम्र हूँ जबकि आप सब उम्ररसीदा हैं, इस
लिए मैं कुछ शर्मीला था, मैं आप को अपनी राय
बताने से डरता था। [7] मैं ने सोचा, चलो वह बोलें
जिन के ज़्यादा दिन गुज़रे हैं, वह तालीम दें जिन्हें
मुतअद्दिद सालों का तजरिबा हासिल है।

[8] लेकिन जो रूह इन्सान में है यानी जो दम क़ादिर-
ए-मुतलक़ ने उस में फूँक दिया वही इन्सान को समझ
अता करता है। [9] न सिर्फ़ बूढ़े लोग दानिशमन्द हैं, न
सिर्फ़ वह इन्साफ़ समझते हैं जिन के बाल सफ़ेद हैं।
[10] चुनाँचे मैं गुज़ारिश करता हूँ कि ज़रा मेरी बात सुनें,
मुझे भी अपनी राय पेश करने दीजिए।

[11] मैं आप के अल्फ़ाज़ के इन्तिज़ार में रहा। जब
आप मौज़ूँ जवाब तलाश कर रहे थे तो मैं आप की
दानिशमन्द बातों पर ग़ौर करता रहा। [12] मैं ने आप
पर पूरी तवज्जुह दी, लेकिन आप में से कोई अय्यूब
को ग़लत साबित न कर सका, कोई उस के दलाइल
का मुनासिब जवाब न दे पाया। [13] अब ऐसा न हो कि
आप कहें, ‘हम ने अय्यूब में हिक्मत पाई है, इन्सान
उसे शिकस्त दे कर भगा नहीं सकता बल्कि सिर्फ़
अल्लाह ही।’ [14] क्यूँकि अय्यूब ने अपने दलाइल की
तरतीब से मेरा मुक़ाबला नहीं किया, और जब मैं
जवाब दूँगा तो आप की बातें नहीं दोहराऊँगा।

[15] आप घबरा कर जवाब देने से बाज़ आए हैं,
अब आप कुछ नहीं कह सकते। [16] क्या मैं मज़ीद
इन्तिज़ार करूँ, गो आप ख़ामोश हो गए हैं, आप रुक
कर मज़ीद जवाब नहीं दे सकते? [17] मैं भी जवाब
देने में हिस्सा लेना चाहता हूँ, मैं भी अपनी राय पेश
करूँगा। [18] क्यूँकि मेरे अन्दर से अल्फ़ाज़ छलक रहे
हैं, मेरी रूह मेरे अन्दर मुझे मज्बूर कर रही है।

[19] हक़ीक़त में मैं अन्दर से उस नई मै की मानिन्द हूँ
जो बन्द रखी गई हो, मैं नई मै से भरी हुई नई मश्कों
की तरह फटने को हूँ। [20] मुझे बोलना है ताकि आराम
पाऊँ, लाज़िम ही है कि मैं अपने होंटों को खोल कर
जवाब दूँ। [21] यक़ीनन न मैं किसी की जानिबदारी, न
किसी की चापलूसी करूँगा। [22] क्यूँकि मैं ख़ुशामद
कर ही नहीं सकता, वर्ना मेरा ख़ालिक़ मुझे जल्द ही
उड़ा ले जाएगा।

अल्लाह कई तरीक़ों से इन्सान से हमकलाम होता है

33 [1] ऐ अय्यूब, मेरी तक़रीर सुनें, मेरी तमाम
बातों पर कान धरें! [2] अब मैं अपना मुँह
खोल देता हूँ, मेरी ज़बान बोलती है। [3] मेरे अल्फ़ाज़
सीधी राह पर चलने वाले दिल से उभर आते हैं, मेरे
होंट दयानतदारी से वह कुछ बयान करते हैं जो मैं
जानता हूँ। [4] अल्लाह के रूह ने मुझे बनाया, क़ादिर-
ए-मुतलक़ के दम ने मुझे ज़िन्दगी बख़्शी।

[5] अगर आप इस क़ाबिल हों तो मुझे जवाब दें और
अपनी बातें तर्तीत से पेश करके मेरा मुक़ाबला करें।
[6] अल्लाह की नज़र में मैं तो आप के बराबर हूँ, मुझे भी
मिट्टी से ले कर तश्कील दिया गया है। [7] चुनाँचे मुझे
आप के लिए दह्शत का बाइस नहीं होना चाहिए,
मेरी तरफ़ से आप पर भारी बोझ नहीं आएगा।

[8] आप ने मेरे सुनते ही कहा बल्कि आप के
अल्फ़ाज़ अभी तक मेरे कानों में गूँज रहे हैं, [9] ‘मैं पाक
हूँ, मुझ से जुर्म सरज़द नहीं हुआ, मैं बेगुनाह हूँ, मेरा
कोई क़ुसूर नहीं। [10] तो भी अल्लाह मुझ से झगड़ने के
मवाक़े ढूँडता और मुझे अपना दुश्मन समझता है।
[11] वह मेरे पाँओ को काठ में डाल कर मेरी तमाम
राहों की पहरादारी करता है।’

[12] लेकिन आप की यह बात दुरुस्त नहीं, क्यूँकि
अल्लाह इन्सान से आला है। [13] आप उस से झगड़
कर क्यूँ कहते हैं, ‘वह मेरी किसी भी बात का जवाब
नहीं देता’? [14] शायद इन्सान को अल्लाह नज़र न आए,
लेकिन वह ज़रूर कभी इस तरीक़े, कभी उस तरीक़े
से उस से हमकलाम होता है।

15 कभी वह ख़्वाब या रात की रोया में उस से बात
करता है। जब लोग बिस्तर पर लेट कर गहरी नींद
सो जाते हैं 16 तो अल्लाह उन के कान खोल कर अपनी
नसीहतों से उन्हें दह्शतज़दा कर देता है। 17 यूँ वह
इन्सान को ग़लत काम करने और मग़रूर होने से
बाज़ रख कर 18 उस की जान गढ़े में उतरने और
दरया-ए-मौत को उबूर करने से रोक देता है।

19 कभी अल्लाह इन्सान की बिस्तर पर दर्द के ज़रीए
तर्बियत करता है। तब उस की हड्डियों में लगातार जंग
होती है। 20 उस की जान को ख़ुराक से घिन आती
बल्कि उसे लज़ीज़तरीन खाने से भी नफ़रत होती है।
21 उस का गोश्त-पोस्त सुकड़ कर ग़ाइब हो जाता है
जबकि जो हड्डियाँ पहले छुपी हुई थीं वह नुमायाँ तौर
पर नज़र आती हैं। 22 उस की जान गढ़े के क़रीब, उस
की ज़िन्दगी हलाक करने वालों के नज़्दीक पहुँचती
है।

23 लेकिन अगर कोई फ़रिश्ता, हज़ारों में से कोई
सालिस उस के पास हो जो इन्सान को सीधी राह
दिखाए 24 और उस पर तरस खा कर कहे, 'उसे गढ़े
में उतरने से छुड़ा, मुझे फ़िद्या मिल गया है, 25 अब
उस का जिस्म जवानी की निस्बत ज़्यादा तर-ओ-
ताज़ा हो जाए और वह दुबारा जवानी की सी ताक़त
पाए' 26 तो फिर वह शख़्स अल्लाह से इल्तिजा करेगा,
और अल्लाह उस पर मेहरबान होगा। तब वह बड़ी
ख़ुशी से अल्लाह का चेहरा तकता रहेगा। इसी तरह
अल्लाह इन्सान की रास्तबाज़ी बहाल करता है।

27 ऐसा शख़्स लोगों के सामने गाएगा और कहेगा,
'मैं ने गुनाह करके सीधी राह टेढ़ी-मेढ़ी कर दी, और
मुझे कोई फ़ाइदा न हुआ। 28 लेकिन उस ने फ़िद्या दे
कर मेरी जान को मौत के गढ़े में उतरने से छुड़ाया।
अब मेरी ज़िन्दगी नूर से लुत्फ़अन्दोज़ होगी।'

29 अल्लाह इन्सान के साथ यह सब कुछ दो चार
मर्तबा करता है 30 ताकि उस की जान गढ़े से वापस
आए और वह ज़िन्दगी के नूर से रौशन हो जाए।

31 ऐ अय्यूब, ध्यान से मेरी बात सुनें, ख़ामोश हो
जाएँ ताकि मैं बात करूँ। 32 अगर आप जवाब में
कुछ बताना चाहें तो बताएँ। बोलें, क्यूँकि मैं आप
को रास्तबाज़ ठहराने की आर्ज़ू रखता हूँ। 33 लेकिन
अगर आप कुछ बयान नहीं कर सकते तो मेरी सुनें,
चुप रहें ताकि मैं आप को हिक्मत की तालीम दूँ।"

अल्लाह हर एक को मुनासिब अज्र देता है

34 1 फिर इलीहू ने बात जारी रख कर कहा,
2 "ऐ दानिशमन्दो, मेरे अल्फ़ाज़ सुनें!
ऐ आलिमो, मुझ पर कान धरें! 3 क्यूँकि कान यूँ
अल्फ़ाज़ की जाँच-पड़ताल करता है जिस तरह
ज़बान ख़ुराक को चख लेती है। 4 आएँ, हम अपने
लिए वह कुछ चुन लें जो दुरुस्त है, आपस में जान लें
कि क्या कुछ अच्छा है। 5 अय्यूब ने कहा है, 'गो मैं
बेगुनाह हूँ तो भी अल्लाह ने मुझे मेरे हुक़ूक़ से महरूम
कर रखा है। 6 जो फ़ैसला मेरे बारे में किया गया है उसे
मैं झूट क़रार देता हूँ। गो मैं बेक़ुसूर हूँ तो भी तीर ने
मुझे यूँ ज़ख़्मी कर दिया कि उस का इलाज मुमकिन
ही नहीं।' 7 अब मुझे बताएँ, क्या कोई अय्यूब जैसा
बुरा है? वह तो कुफ़्र की बातें पानी की तरह पीते,
8 बदकारों की सोह्बत में चलते और बेदीनों के साथ
अपना वक़्त गुज़ारते हैं। 9 क्यूँकि वह दावा करते
हैं कि अल्लाह से लुत्फ़अन्दोज़ होना इन्सान के लिए
बेफ़ाइदा है।

10 चुनाँचे ऐ समझदार मर्दो, मेरी बात सुनें! यह कैसे
हो सकता है कि अल्लाह शरीर काम करे? यह तो
मुमकिन ही नहीं कि क़ादिर-ए-मुतलक़ नाइन्साफ़ी
करे। 11 यक़ीनन वह इन्सान को उस के आमाल का
मुनासिब अज्र दे कर उस पर वह कुछ लाता है जिस
का तक़ाज़ा उस का चाल-चलन करता है। 12 यक़ीनन
अल्लाह बेदीन हरकतें नहीं करता, क़ादिर-ए-मुतलक़
इन्साफ़ का ख़ून नहीं करता। 13 किस ने ज़मीन को
अल्लाह के हवाले किया? किस ने उसे पूरी दुनिया
पर इख़तियार दिया? कोई नहीं! 14 अगर वह कभी
इरादा करे कि अपनी रूह और अपना दम इन्सान
से वापस ले 15 तो तमाम लोग दम छोड़ कर दुबारा
ख़ाक हो जाएंगे।

16 ऐ अय्यूब, अगर आप को समझ है तो सुनें, मेरी बातों पर ध्यान दें। 17 जो इन्साफ़ से नफ़रत करे क्या वह हुकूमत कर सकता है? क्या आप उसे मुजरिम ठहराना चाहते हैं जो रास्तबाज़ और क़ादिर-ए-मुतलक़ है, 18 जो बादशाह से कह सकता है, 'ऐ बदमआश!' और शुरफ़ा से, 'ऐ बेदीनो!'? 19 वह तो न रईसों की जानिबदारी करता, न उह्देदारों को पस्तहालों पर तर्जीह देता है, क्यूँकि सब ही को उस के हाथों ने बनाया है। 20 वह पल भर में, आधी रात ही मर जाते हैं। शुरफ़ा को हिलाया जाता है तो वह कूच कर जाते हैं, ताक़तवरों को बग़ैर किसी तग-ओ-दौ के हटाया जाता है।

21 क्यूँकि अल्लाह की आँखें इन्सान की राहों पर लगी रहती हैं, आदमज़ाद का हर क़दम उसे नज़र आता है। 22 कहीं इतनी तारीकी या घना अंधेरा नहीं होता कि बदकार उस में छुप सके। 23 और अल्लाह किसी भी इन्सान को उस वक़्त से आगाह नहीं करता जब उसे इलाही तख़्त-ए-अदालत के सामने आना है। 24 उसे तहक़ीक़ात की ज़रूरत ही नहीं बल्कि वह ज़ोर-आवरों को पाश पाश करके दूसरों को उन की जगह खड़ा कर देता है। 25 वह तो उन की हरकतों से वाक़िफ़ है और उन्हें रात के वक़्त यूँ तह-ओ-बाला कर सकता है कि चूर चूर हो जाएँ। 26 उन की बेदीनी के जवाब में वह उन्हें सब की नज़रों के सामने पटख़ देता है। 27 उस की पैरवी से हटने और उस की राहों का लिहाज़ न करने का यही नतीजा है। 28 क्यूँकि उन की हरकतों के बाइस पस्तहालों की चीख़ें अल्लाह के सामने और मुसीबतज़दों की इल्तिजाएँ उस के कान तक पहुँचीं। 29 लेकिन अगर वह ख़ामोश भी रहे तो कौन उसे मुजरिम क़रार दे सकता है? अगर वह अपने चेहरे को छुपाए रखे तो कौन उसे देख सकता है? वह तो क़ौम पर बल्कि हर फ़र्द पर हुकूमत करता है 30 ताकि शरीर हुकूमत न करें और क़ौम फंस न जाए।

31 बेहतर है कि आप अल्लाह से कहें, 'मुझे ग़लत राह पर लाया गया है, आइन्दा मैं दुबारा बुरा काम नहीं करूँगा। 32 जो कुछ मुझे नज़र नहीं आता वह मुझे सिखा, अगर मुझ से नाइन्साफ़ी हुई है तो आइन्दा ऐसा नहीं करूँगा।' 33 क्या अल्लाह को आप को वह अज्र देना चाहिए जो आप की नज़र में मुनासिब है, गो आप ने उसे रद्द कर दिया है? लाज़िम है कि आप ख़ुद ही फ़ैसला करें, न कि मैं। लेकिन ज़रा वह कुछ पेश करें जो कुछ आप सहीह समझते हैं। 34 समझदार लोग बल्कि हर दानिशमन्द जो मेरी बात सुने फ़रमाएगा, 35 'अय्यूब इल्म के साथ बात नहीं कर रहा, उस के अल्फ़ाज़ फ़हम से ख़ाली हैं। 36 काश अय्यूब की पूरी जाँच-पड़ताल की जाए, क्यूँकि वह शरीरों के से जवाब पेश करता, 37 वह अपने गुनाह में इज़ाफ़ा करके हमारे रू-ब-रू अपने जुर्म पर शक डालता और अल्लाह पर मुतअद्दिद इल्ज़ामात लगाता है'।"

अपने आप को रास्तबाज़ मत ठहराना

35 1 फिर इलीहू ने अपनी बात जारी रखी, 2 "आप कहते हैं, 'मैं अल्लाह से ज़्यादा रास्तबाज़ हूँ।' क्या आप यह बात दुरुस्त समझते हैं 3 या यह कि 'मुझे क्या फ़ाइदा है, गुनाह न करने से मुझे क्या नफ़ा होता है?' 4 मैं आप को और साथी दोस्तों को इस का जवाब बताता हूँ।

5 अपनी निगाह आसमान की तरफ़ उठाएँ, बुलन्दियों के बादलों पर ग़ौर करें। 6 अगर आप ने गुनाह किया तो अल्लाह को क्या नुक़्सान पहुँचा है? गो आप से मुतअद्दिद जराइम भी सरज़द हुए हों ताहम वह मुतअस्सिर नहीं होगा। 7 रास्तबाज़ ज़िन्दगी गुज़ारने से आप उसे क्या दे सकते हैं? आप के हाथों से अल्लाह को क्या हासिल हो सकता है? कुछ भी नहीं! 8 आप के हमजिन्स इन्सान ही आप की बेदीनी से मुतअस्सिर होते हैं, और आदमज़ाद ही आप की रास्तबाज़ी से फ़ाइदा उठाते हैं।

9 जब लोगों पर सख़्त ज़ुल्म होता है तो वह चीख़ते चिल्लाते और बड़ों की ज़ियादती के बाइस मदद के लिए आवाज़ देते हैं। 10 लेकिन कोई नहीं कहता, 'अल्लाह, मेरा ख़ालिक़ कहाँ है? वह कहाँ है जो

रात के दौरान नग़मे अता करता, 11 जो हमें ज़मीन
पर चलने वाले जानवरों की निस्बत ज़्यादा तालीम
देता, हमें परिन्दों से ज़्यादा दानिशमन्द बनाता है?’
12 उन की चीख़ों के बावुजूद अल्लाह जवाब नहीं देता,
क्यूँकि वह घमंडी और बुरे हैं।

13 यक़ीनन अल्लाह ऐसी बातिल फ़र्याद नहीं सुनता,
क़ादिर-ए-मुतलक़ उस पर ध्यान ही नहीं देता। 14 तो
फिर वह आप पर क्यूँ तवज्जुह दे जब आप दावा
करते हैं, ‘मैं उसे नहीं देख सकता,’ और ‘मेरा
मुआमला उस के सामने ही है, मैं अब तक उस का
इन्तिज़ार कर रहा हूँ’? 15 वह आप की क्यूँ सुने जब
आप कहते हैं, ‘अल्लाह का ग़ज़ब कभी सज़ा नहीं
देता, उसे बुराई की परवा ही नहीं’? 16 जब अय्यूब
मुँह खोलता है तो बेमानी बातें निकलती हैं। जो
मुतअद्दिद अल्फ़ाज़ वह पेश करता है वह इल्म से
ख़ाली हैं।”

अल्लाह कितना अज़ीम है

36 1 इलीहू ने अपनी बात जारी रखी,
2 “थोड़ी देर के लिए सब्र करके मुझे इस
की तश्रीह करने दें, क्यूँकि मज़ीद बहुत कुछ है जो
अल्लाह के हक़ में कहना है। 3 मैं दूर दूर तक फिरूँगा
ताकि वह इल्म हासिल करूँ जिस से मेरे ख़ालिक़ की
रास्ती साबित हो जाए। 4 यक़ीनन जो कुछ मैं कहूँगा
वह फ़रेबदिह नहीं होगा। एक ऐसा आदमी आप के
सामने खड़ा है जिस ने ख़ुलूसदिली से अपना इल्म
हासिल किया है।

5 गो अल्लाह अज़ीम क़ुदरत का मालिक है ताहम
वह ख़ुलूसदिलों को रद्द नहीं करता। 6 वह बेदीन को
ज़्यादा देर तक जीने नहीं देता, लेकिन मुसीबतज़दों
का इन्साफ़ करता है। 7 वह अपनी आँखों को
रास्तबाज़ों से नहीं फेरता बल्कि उन्हें बादशाहों
के साथ तख़्तनशीन करके बुलन्दियों पर सरफ़राज़
करता है।

8 फिर अगर उन्हें ज़न्जीरों में जकड़ा जाए, उन्हें
मुसीबत के रस्सों में गिरिफ़्तार किया जाए 9 तो वह
उन पर ज़ाहिर करता है कि उन से क्या कुछ सरज़द
हुआ है, वह उन्हें उन के जराइम पेश करके उन्हें
दिखाता है कि उन का तकब्बुर का रवय्या है। 10 वह
उन के कानों को तर्बियत के लिए खोल कर उन्हें
हुक्म देता है कि अपनी नाइन्साफ़ी से बाज़ आ कर
वापस आओ। 11 अगर वह मान कर उस की ख़िदमत
करने लगें तो फिर वह जीते जी अपने दिन ख़ुशहाली
में और अपने साल सुकून से गुज़ारेंगे। 12 लेकिन अगर
न मानें तो उन्हें दरया-ए-मौत को उबूर करना पड़ेगा,
वह इल्म से महरूम रह कर मर जाएंगे।

13 बेदीन अपनी हरकतों से अपने आप पर इलाही
ग़ज़ब लाते हैं। अल्लाह उन्हें बांध भी ले, लेकिन
वह मदद के लिए नहीं पुकारते। 14 जवानी में ही
उन की जान निकल जाती, उन की ज़िन्दगी मुक़द्दस
फ़रिश्तों के हाथों ख़त्म हो जाती है। 15 लेकिन अल्लाह
मुसीबतज़दा को उस की मुसीबत के ज़रीए नजात
देता, उस पर होने वाले ज़ुल्म की मारिफ़त उस का
कान खोल देता है।

16 वह आप को भी मुसीबत के मुँह से निकलने की
तरग़ीब दिला कर एक ऐसी खुली जगह पर लाना
चाहता है जहाँ रुकावट नहीं है, जहाँ आप की मेज़
उम्दा खानों से भरी रहेगी। 17 लेकिन इस वक़्त आप
अदालत का वह प्याला पी कर सेर हो गए हैं जो
बेदीनों के नसीब में है, इस वक़्त अदालत और
इन्साफ़ ने आप को अपनी सख़्त गिरिफ़्त में ले लिया
है। 18 ख़बरदार कि यह बात आप को कुफ़्र बकने पर
न उकसाए, ऐसा न हो कि तावान की बड़ी रक़म आप
को ग़लत राह पर ले जाए। 19 क्या आप की दौलत
आप का दिफ़ा करके आप को मुसीबत से बचाएगी?
या क्या आप की सिरतोड़ कोशिशें यह सरअन्जाम
दे सकती हैं? हरगिज़ नहीं! 20 रात की आर्ज़ू न करें,
उस वक़्त की जब क़ौमें जहाँ भी हों नेस्त-ओ-नाबूद
हो जाती हैं। 21 ख़बरदार रहें कि नाइन्साफ़ी की तरफ़
रुजू न करें, क्यूँकि आप को इसी लिए मुसीबत से
आज़माया जा रहा है।

22 अल्लाह अपनी क़ुदरत में सरफ़राज़ है। कौन उस जैसा उस्ताद है? 23 किस ने मुक़र्रर किया कि उसे किस राह पर चलना है? कौन कह सकता है, ‘तू ने ग़लत काम किया’? कोई नहीं! 24 उस के काम की तम्जीद करना न भूलें, उस सारे काम की जिस की लोगों ने अपने गीतों में हम्द-ओ-सना की है। 25 हर शख़्स ने यह काम देख लिया, इन्सान ने दूर दूर से उस का मुलाहज़ा किया है।

26 अल्लाह अज़ीम है और हम उसे नहीं जानते, उस के सालों की तादाद मालूम नहीं कर सकते। 27 क्यूँकि वह पानी के क़तरे ऊपर खैंच कर धुन्द से बारिश निकाल लेता है, 28 वह बारिश जो बादल ज़मीन पर बरसा देते और जिस की बौछाड़ें इन्सान पर पड़ती हैं। 29 कौन समझ सकता है कि बादल किस तरह छा जाते, कि अल्लाह के मस्कन से बिजलियाँ किस तरह कड़कती हैं? 30 वह अपने इर्दगिर्द रौशनी फैला कर समुन्दर की जड़ों तक सब कुछ रौशन करता है। 31 यूँ वह बादलों से क़ौमों की परवरिश करता, उन्हें कस्रत की ख़ुराक मुहय्या करता है। 32 वह अपनी मुट्ठियों को बादल की बिजलियों से भर कर हुक्म देता है कि क्या चीज़ अपना निशाना बनाएँ। 33 उस के बादलों की गरजती आवाज़ उस के ग़ज़ब का एलान करती, नाइन्साफ़ी पर उस के शदीद क़हर को ज़ाहिर करती है।

37 1 यह सोच कर मेरा दिल लरज़ कर अपनी जगह से उछल पड़ता है। 2 सुनें और उस की ग़ज़बनाक आवाज़ पर ग़ौर करें, उस ग़ुर्राती आवाज़ पर जो उस के मुँह से निकलती है। 3 आसमान तले हर मक़ाम पर बल्कि ज़मीन की इन्तिहा तक वह अपनी बिजली चमकने देता है। 4 इस के बाद कड़कती आवाज़ सुनाई देती, अल्लाह की रोबदार आवाज़ गरज उठती है। और जब उस की आवाज़ सुनाई देती है तो वह बिजलियों को नहीं रोकता।

5 अल्लाह अनोखे तरीक़े से अपनी आवाज़ गरजने देता है। साथ साथ वह ऐसे अज़ीम काम करता है जो हमारी समझ से बाहर हैं। 6 क्यूँकि वह बर्फ़ को फ़रमाता है, ‘ज़मीन पर पड़ जा’ और मूसलाधार बारिश को, ‘अपना पूरा ज़ोर दिखा।’ 7 यूँ वह हर इन्सान को उस के घर में रहने पर मज्बूर करता है ताकि सब जान लें कि अल्लाह काम में मसरूफ़ है। 8 तब जंगली जानवर भी अपने भटों में छुप जाते, अपने घरों में पनाह लेते हैं।

9 तूफ़ान अपने कमरे से निकल आता, शिमाली हवा मुल्क में ठंड फैला देती है। 10 अल्लाह फूँक मारता तो पानी जम जाता, उस की सतह दूर दूर तक मुन्जमिद हो जाती है। 11 अल्लाह बादलों को नमी से बोझल करके उन के ज़रीए दूर तक अपनी बिजली चमकाता है। 12 उस की हिदायत पर वह मंडलाते हुए उस का हर हुक्म तक्मील तक पहुँचाते हैं। 13 यूँ वह उन्हें लोगों की तर्बियत करने, अपनी ज़मीन को बरकत देने या अपनी शफ़्क़त दिखाने के लिए भेज देता है।

14 ऐ अय्यूब, मेरी इस बात पर ध्यान दें, रुक कर अल्लाह के अज़ीम कामों पर ग़ौर करें। 15 क्या आप को मालूम है कि अल्लाह अपने कामों को कैसे तरतीब देता है, कि वह अपने बादलों से बिजली किस तरह चमकने देता है? 16 क्या आप बादलों की नक़ल-ओ-हरकत जानते हैं? क्या आप को उस के अनोखे कामों की समझ आती है जो कामिल इल्म रखता है? 17 जब ज़मीन जुनूबी लू की ज़द में आ कर चुप हो जाती और आप के कपड़े तपने लगते हैं 18 तो क्या आप अल्लाह के साथ मिल कर आसमान को ठोंक ठोंक कर पीतल के आईने की मानिन्द सख़्त बना सकते हैं? हरगिज़ नहीं!

19 हमें बताएँ कि अल्लाह से क्या कहें! अफ़्सोस, अंधेरे के बाइस हम अपने ख़यालात को तरतीब नहीं दे सकते। 20 अगर मैं अपनी बात पेश करूँ तो क्या उसे कुछ मालूम हो जाएगा जिस का पहले इल्म न था? क्या कोई भी कुछ बयान कर सकता है जो उसे पहले मालूम न हो? कभी नहीं! 21 एक वक़्त धूप नज़र नहीं आती और बादल ज़मीन पर साया डालते हैं, फिर हवा चलने लगती और मौसम साफ़

हो जाता है। 22 शिमाल से सुनहरी चमक क़रीब आती
और अल्लाह रोबदार शान-ओ-शौकत से घिरा हुआ
आ पहुँचता है। 23 हम तो क़ादिर-ए-मुतलक़ तक नहीं
पहुँच सकते। उस की क़ुदरत आला और रास्ती ज़ोर-
आवर है, वह कभी इन्साफ़ का ख़ून नहीं करता।
24 इस लिए आदमज़ाद उस से डरते और दिल के
दानिशमन्द उस का ख़ौफ़ मानते हैं।”

अल्लाह का जवाब

38 1 फिर अल्लाह ख़ुद अय्यूब से हमकलाम
हुआ। तूफ़ान में से उस ने उसे जवाब दिया,
2 “यह कौन है जो समझ से ख़ाली बातें करने से मेरे
मन्सूबे के सहीह मतलब पर पर्दा डालता है? 3 मर्द
की तरह कमरबस्ता हो जा! मैं तुझ से सवाल करता
हूँ, और तू मुझे तालीम दे।

4 तू कहाँ था जब मैं ने ज़मीन की बुन्याद रखी?
अगर तुझे इस का इल्म हो तो मुझे बता! 5 किस ने
उस की लम्बाई और चौड़ाई मुक़र्रर की? क्या तुझे
मालूम है? किस ने नाप कर उस की पैमाइश की?
6 उस के सतून किस चीज़ पर लगाए गए? किस ने
उस के कोने का बुन्यादी पत्थर रखा, 7 उस वक़्त
जब सुब्ह के सितारे मिल कर शादियाना बजा रहे,
तमाम फ़रिश्ते ख़ुशी के नारे लगा रहे थे?

8 जब समुन्दर रहम से फूट निकला तो किस ने
दरवाज़े बन्द करके उस पर क़ाबू पाया? 9 उस वक़्त
मैं ने बादलों को उस का लिबास बनाया और उसे घने
अंधेरे में यूँ लपेटा जिस तरह नौज़ाद को पोतड़ों में
लपेटा जाता है। 10 उस की हुदूद मुक़र्रर करके मैं ने
उसे रोकने के दरवाज़े और कुंडे लगाए। 11 मैं बोला,
‘तुझे यहाँ तक आना है, इस से आगे न बढ़ना, तेरी
रोबदार लहरों को यहीं रुकना है।’

12 क्या तू ने कभी सुब्ह को हुक्म दिया या उसे तुलू
होने की जगह दिखाई 13 ताकि वह ज़मीन के किनारों
को पकड़ कर बेदीनों को उस से झाड़ दे? 14 उस की
रौशनी में ज़मीन यूँ तश्कील पाती है जिस तरह मिट्टी
जिस पर मुहर लगाई जाए। सब कुछ रंगदार लिबास
पहने नज़र आता है। 15 तब बेदीनों की रौशनी रोकी
जाती, उन का उठाया हुआ बाज़ू तोड़ा जाता है।

16 क्या तू समुन्दर के सरचश्मों तक पहुँच कर उस
की गहराइयों में से गुज़रा है? 17 क्या मौत के दरवाज़े
तुझ पर ज़ाहिर हुए, तुझे घने अंधेरे के दरवाज़े नज़र
आए हैं? 18 क्या तुझे ज़मीन के वसी मैदानों की पूरी
समझ आई है? मुझे बता अगर यह सब कुछ जानता
है!

19 रौशनी के मम्बा तक ले जाने वाला रास्ता कहाँ
है? अंधेरे की रिहाइशगाह कहाँ है? 20 क्या तू उन्हें
उन के मक़ामों तक पहुँचा सकता है? क्या तू उन के
घरों तक ले जाने वाली राहों से वाक़िफ़ है? 21 बेशक
तू इस का इल्म रखता है, क्यूँकि तू उस वक़्त जन्म
ले चुका था जब यह पैदा हुए। तू तो क़दीम ज़माने से
ही ज़िन्दा है!

22 क्या तू वहाँ तक पहुँच गया है जहाँ बर्फ़ के
ज़ख़ीरे जमा होते हैं? क्या तू ने ओलों के गोदामों को
देख लिया है? 23 मैं उन्हें मुसीबत के वक़्त के लिए
महफ़ूज़ रखता हूँ, ऐसे दिनों के लिए जब लड़ाई और
जंग छिड़ जाए। 24 मुझे बता, उस जगह तक किस
तरह पहुँचना है जहाँ रौशनी तक़सीम होती है, या उस
जगह जहाँ से मशरिक़ी हवा निकल कर ज़मीन पर
बिखर जाती है?

25 किस ने मूसलाधार बारिश के लिए रास्ता और
गरजते तूफ़ान के लिए राह बनाई 26 ताकि इन्सान से
ख़ाली ज़मीन और ग़ैरआबाद रेगिस्तान की आबपाशी
हो जाए, 27 ताकि वीरान-ओ-सुन्सान बयाबान की
प्यास बुझ जाए और उस से हरियाली फूट निकले?
28 क्या बारिश का बाप है? कौन शबनम के क़तरों
का वालिद है?

29 बर्फ़ किस माँ के पेट से पैदा हुई? जो पाला
आसमान से आ कर ज़मीन पर पड़ता है किस ने
उसे जन्म दिया? 30 जब पानी पत्थर की तरह सख़्त
हो जाए बल्कि गहरे समुन्दर की सतह भी जम जाए
तो कौन यह सरअन्जाम देता है? 31 क्या तू ख़ोशा-ए-
पर्वीन को बांध सकता या जौज़े की ज़न्जीरों को खोल

सकता है? 32 क्या तू करवा सकता है कि सितारों के
मुख़्तलिफ़ झुर्मट उन के मुक़र्ररा औक़ात के मुताबिक़
निकल आएँ? क्या तू दुब्ब-ए-अक्बर की उस के
बच्चों समेत क़ियादत करने के क़ाबिल है? 33 क्या
तू आसमान के क़वानीन जानता या उस की ज़मीन
पर हुकूमत मुतअय्यिन करता है?

34 क्या जब तू बुलन्द आवाज़ से बादलों को हुक्म
दे तो वह तुझ पर मूसलाधार बारिश बरसाते हैं?
35 क्या तू बादल की बिजली ज़मीन पर भेज सकता
है? क्या वह तेरे पास आ कर कहती है, ‘मैं ख़िदमत
के लिए हाज़िर हूँ’? 36 किस ने मिस्र के लक़्लक़ को
हिक्मत दी, मुर्ग़ को समझ अता की? 37 किस को
इतनी दानाई हासिल है कि वह बादलों को गिन
सके? कौन आसमान के इन घड़ों को उस वक़्त
उंडेल सकता है 38 जब मिट्टी ढाले हुए लोहे की तरह
सख़्त हो जाए और ढेले एक दूसरे के साथ चिपक
जाएँ? कोई नहीं!

39 क्या तू ही शेरनी के लिए शिकार करता या शेरों
को सेर करता है 40 जब वह अपनी छुपने की जगहों
में दबक जाएँ या गुंजान जंगल में कहीं ताक लगाए
बैठे हों? 41 कौन कव्वे को ख़ुराक मुहय्या करता है
जब उस के बच्चे भूक के बाइस अल्लाह को आवाज़
दें और मारे मारे फिरें?

39 1 क्या तुझे मालूम है कि पहाड़ी बकरियों के
बच्चे कब पैदा होते हैं? जब हिरनी अपना
बच्चा जन्म देती है तो क्या तू इस को मुलाहज़ा करता
है? 2 क्या तू वह महीने गिनता रहता है जब बच्चे
हिरनियों के पेट में हों? क्या तू जानता है कि किस
वक़्त बच्चे जन्म देती हैं? 3 उस दिन वह दबक जाती,
बच्चे निकल आते और दर्द-ए-ज़ह ख़त्म हो जाता है।
4 उन के बच्चे ताक़तवर हो कर खुले मैदान में फलते
फूलते, फिर एक दिन चले जाते हैं और अपनी माँ के
पास वापस नहीं आते।

5 किस ने जंगली गधे को खुला छोड़ दिया? किस
ने उस के रस्से खोल दिए? 6 मैं ही ने बयाबान उस
का घर बना दिया, मैं ही ने मुक़र्रर किया कि बंजर
ज़मीन उस की रिहाइशगाह हो। 7 वह शहर का शोर-
शराबा देख कर हंस उठता, और उसे हाँकने वाले
की आवाज़ सुननी नहीं पड़ती। 8 वह चरने के लिए
पहाड़ी इलाक़े में इधर उधर घूमता और हरियाली
का खोज लगाता रहता है।

9 क्या जंगली बैल तेरी ख़िदमत करने के लिए
तय्यार होगा? क्या वह कभी रात को तेरी चरनी के
पास गुज़ारेगा? 10 क्या तू उसे बांध कर हल चला
सकता है? क्या वह वादी में तेरे पीछे चल कर सुहागा
फेरेगा? 11 क्या तू उस की बड़ी ताक़त देख कर उस
पर एतिमाद करेगा? क्या तू अपना सख़्त काम उस
के सपुर्द करेगा? 12 क्या तू भरोसा कर सकता है कि
वह तेरा अनाज जमा करके गाहने की जगह पर ले
आए? हरगिज़ नहीं!

13 शुतुरमुर्ग़ ख़ुशी से अपने परों को फड़फड़ाता है।
लेकिन क्या उस का शाहपर लक़्लक़ या बाज़ के
शाहपर की मानिन्द है? 14 वह तो अपने अंडे ज़मीन
पर अकेले छोड़ता है, और वह मिट्टी ही पर पकते हैं।
15 शुतुरमुर्ग़ को ख़याल तक नहीं आता कि कोई उन्हें
पाँओ तले कुचल सकता या कोई जंगली जानवर
उन्हें रौंद सकता है। 16 लगता नहीं कि उस के अपने
बच्चे हैं, क्यूँकि उस का उन के साथ सुलूक इतना
सख़्त है। अगर उस की मेहनत नाकाम निकले तो
उसे परवा ही नहीं, 17 क्यूँकि अल्लाह ने उसे हिक्मत
से महरूम रख कर उसे समझ से न नवाज़ा। 18 तो भी
वह इतनी तेज़ी से उछल कर भाग जाता है कि घोड़े
और घुड़सवार की दौड़ देख कर हँसने लगता है।

19 क्या तू घोड़े को उस की ताक़त दे कर उस की
गर्दन को अयाल से आरास्ता करता है? 20 क्या तू ही
उसे टिड्डी की तरह फलाँगने देता है? जब वह ज़ोर से
अपने नथनों को फुला कर आवाज़ निकालता है तो
कितना रोबदार लगता है! 21 वह वादी में सुम मार
मार कर अपनी ताक़त की ख़ुशी मनाता, फिर भाग
कर मैदान-ए-जंग में आ जाता है। 22 वह ख़ौफ़ का
मज़ाक़ उड़ाता और किसी से भी नहीं डरता, तलवार
के रू-ब-रू भी पीछे नहीं हटता। 23 उस के ऊपर

तर्कश खड़खड़ाता, नेज़ा और शम्शीर चमकती है। [24] वह बड़ा शोर मचा कर इतनी तेज़ी और जोश-ओ-ख़ुरोश से दुश्मन पर हम्ला करता है कि बिगुल बजते वक़्त भी रोका नहीं जाता। [25] जब भी बिगुल बजे वह ज़ोर से हिनहिनाता और दूर ही से मैदान-ए-जंग, कमाँडरों का शोर और जंग के नारे सूँघ लेता है।

[26] क्या बाज़ तेरी ही हिक्मत के ज़रीए हवा में उड़ कर अपने परों को जुनूब की जानिब फैला देता है? [27] क्या उक़ाब तेरे ही हुक्म पर बुलन्दियों पर मंडलाता और ऊँची ऊँची जगहों पर अपना घोंसला बना लेता है? [28] वह चटान पर रहता, उस के टूटे-फूटे किनारों और क़िलाबन्द जगहों पर बसेरा करता है। [29] वहाँ से वह अपने शिकार का खोज लगाता है, उस की आँखें दूर दूर तक देखती हैं। [30] उस के बच्चे ख़ून के लालच में रहते, और जहाँ भी लाश हो वहाँ वह हाज़िर होता है।"

अय्यूब रब को जवाब नहीं दे सकता

40 [1] रब ने अय्यूब से पूछा,

[2] "क्या मलामत करने वाला अदालत में क़ादिर-ए-मुतलक़ से झगड़ना चाहता है? अल्लाह की सरज़निश करने वाला उसे जवाब दे!"

[3] तब अय्यूब ने जवाब दे कर रब से कहा,

[4] "मैं तो नालाइक़ हूँ, मैं किस तरह तुझे जवाब दूँ? मैं अपने मुँह पर हाथ रख कर ख़ामोश रहूँगा। [5] एक बार मैं ने बात की और इस के बाद मज़ीद एक दफ़ा, लेकिन अब से मैं जवाब में कुछ नहीं कहूँगा।"

अल्लाह का जवाब : क्या तुझे मेरी जैसी क़ुदरत हासिल है?

[6] तब अल्लाह तूफ़ान में से अय्यूब से हमकलाम हुआ,

[7] "मर्द की तरह कमरबस्ता हो जा! मैं तुझ से सवाल करूँ और तू मुझे तालीम दे। [8] क्या तू वाक़ई मेरा इन्साफ़ मन्सूख़ करके मुझे मुजरिम ठहराना चाहता है ताकि ख़ुद रास्तबाज़ ठहरे? [9] क्या तेरा बाज़ू अल्लाह के बाज़ू जैसा ज़ोर-आवर है? क्या तेरी आवाज़ उस की आवाज़ की तरह कड़कती है। [10] आ, अपने आप को शान-ओ-शौकत से आरास्ता कर, इज़्ज़त-ओ-जलाल से मुलब्बस हो जा! [11] ब-यक-वक़्त अपना शदीद क़हर मुख़्तलिफ़ जगहों पर नाज़िल कर, हर मग़रूर को अपना निशाना बना कर उसे ख़ाक में मिला दे। [12] हर मुतकब्बिर पर ग़ौर करके उसे पस्त कर। जहाँ भी बेदीन हो वहीं उसे कुचल दे। [13] उन सब को मिट्टी में छुपा दे, उन्हें रस्सों में जकड़ कर किसी ख़ुफ़िया जगह गिरिफ़्तार कर। [14] तब ही मैं तेरी तारीफ़ करके मान जाऊँगा कि तेरा दहना हाथ तुझे नजात दे सकता है।

अल्लाह की क़ुदरत और हिक्मत की दो मिसालें

[15] बहेमोत [r] पर ग़ौर कर जिसे मैं ने तुझे ख़ल्क़ करते वक़्त बनाया और जो बैल की तरह घास खाता है। [16] उस की कमर में कितनी ताक़त, उस के पेट के पट्ठों में कितनी क़ुव्वत है। [17] वह अपनी दुम को देवदार के दरख़्त की तरह लटकने देता है, उस की रानों की नसें मज़बूती से एक दूसरी से जुड़ी हुई हैं। [18] उस की हड्डियाँ पीतल के से पाइप, लोहे के से सरीए हैं। [19] वह अल्लाह के कामों में से अव्वल है, उस के ख़ालिक़ ही ने उसे उस की तलवार दी। [20] पहाड़ियाँ उसे अपनी पैदावार पेश करती, खुले मैदान के तमाम जानवर वहाँ खेलते कूदते हैं। [21] वह काँटेदार झाड़ियों के नीचे आराम करता, सरकंडों और दलदल में छुपा रहता है। [22] ख़ारदार झाड़ियाँ उस पर साया डालती और नदी के सफ़ेदा के दरख़्त उसे घेरे रखते हैं। [23] जब दरया सैलाब की सूरत इख़तियार करे तो वह नहीं भागता। गो दरया-ए-यर्दन उस के मुँह पर फूट पड़े तो भी वह अपने आप को महफ़ूज़ समझता है। [24] क्या कोई उस की आँखों में

---

[r] साईन्सदान मुत्तफ़िक़ नहीं कि यह कौन सा जानवर था।

उंगलियाँ डाल कर उसे पकड़ सकता है? अगर उसे फंदे में पकड़ा भी जाए तो क्या कोई उस की नाक को छेद सकता है? हरगिज़ नहीं!

41 1 क्या तू लिवियातान [s]अज़दहे को मछली के काँटे से पकड़ सकता या उस की ज़बान को रस्से से बांध सकता है? 2 क्या तू उस की नाक छेद कर उस में से रस्सा गुज़ार सकता या उस के जबड़े को काँटे से चीर सकता है? 3 क्या वह कभी तुझ से बार बार रहम माँगेगा या नर्म नर्म अल्फ़ाज़ से तेरी ख़ुशामद करेगा? 4 क्या वह कभी तेरे साथ अह्द करेगा कि तू उसे अपना ग़ुलाम बनाए रखे? हरगिज़ नहीं! 5 क्या तू परिन्दे की तरह उस के साथ खेल सकता या उसे बांध कर अपनी लड़कियों को दे सकता है ताकि वह उस के साथ खेलें? 6 क्या सौदागर कभी उस का सौदा करेंगे या उसे ताजिरों में तक़्सीम करेंगे? कभी नहीं! 7 क्या तू उस की खाल को भालों से या उस के सर को हार्पूनों से भर सकता है? 8 एक दफ़ा उसे हाथ लगाया तो यह लड़ाई तुझे हमेशा याद रहेगी, और तू आइन्दा ऐसी हरकत कभी नहीं करेगा!

9 यक़ीनन उस पर क़ाबू पाने की हर उम्मीद फ़रेबदिह साबित होगी, क्यूँकि उसे देखते ही इन्सान गिर जाता है। 10 कोई इतना बेधड़क नहीं है कि उसे मुश्तइल करे। तो फिर कौन मेरा सामना कर सकता है? 11 किस ने मुझे कुछ दिया है कि मैं उस का मुआवज़ा दूँ। आसमान तले हर चीज़ मेरी ही है!

12 मैं तुझे उस के आज़ा के बयान से महरूम नहीं रखूँगा, कि वह कितना बड़ा, ताक़तवर और ख़ूबसूरत है। 13 कौन उस की खाल [t]उतार सकता, कौन उस के ज़िराबक्तर की दो तहों के अन्दर तक पहुँच सकता है? 14 कौन उस के मुँह का दरवाज़ा खोलने की जुरअत करे? उस के हौलनाक दाँत देख कर इन्सान के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। 15 उस की पीठ पर एक दूसरी से ख़ूब जुड़ी हुई ढालों की क़तारें होती हैं। 16 वह इतनी मज़बूती से एक दूसरी से लगी होती हैं कि उन के दरमियान से हवा भी नहीं गुज़र सकती, 17 बल्कि यूँ एक दूसरी से चिमटी और लिपटी रहती हैं कि उन्हें एक दूसरी से अलग नहीं किया जा सकता।

18 जब छींकें मारे तो बिजली चमक उठती है। उस की आँखें तुलू-ए-सुब्ह की पलकों की मानिन्द हैं। 19 उस के मुँह से मशअलें और चिंगारियाँ ख़ारिज होती हैं, 20 उस के नथनों से धुआँ यूँ निकलता है जिस तरह भड़कती और दहकती आग पर रखी गई देग से। 21 जब फूँक मारे तो कोएले दहक उठते और उस के मुँह से शोले निकलते हैं।

22 उस की गर्दन में इतनी ताक़त है कि जहाँ भी जाए वहाँ उस के आगे आगे मायूसी फैल जाती है। 23 उस के गोश्त-पोस्त की तहें एक दूसरी से ख़ूब जुड़ी हुई हैं, वह ढाले हुए लोहे की तरह मज़बूत और बेलचक हैं। 24 उस का दिल पत्थर जैसा सख़्त, चक्की के निचले पाट जैसा मुस्तहकम है।

25 जब उठे तो ज़ोर-आवर डर जाते और दह्शत खा कर पीछे हट जाते हैं। 26 हथियारों का उस पर कोई असर नहीं होता, ख़्वाह कोई तलवार, नेज़े, बरछी या तीर से उस पर हम्ला क्यूँ न करे। 27 वह लोहे को भूसा और पीतल को गली सड़ी लकड़ी समझता है। 28 तीर उसे नहीं भगा सकते, और अगर ग़ुलेल के पत्थर उस पर चलाओ तो उन का असर भूसे के बराबर है। 29 डंडा उसे तिनका सा लगता है, और वह शम्शीर का शोर-शराबा सुन कर हंस उठता है। 30 उस के पेट पर तेज़ ठीकरे से लगे हैं, और जिस तरह अनाज पर गाहने का आला चलाया जाता है उसी तरह वह कीचड़ पर चलता है। 31 जब समुन्दर की गहराइयों में से गुज़रे तो पानी उबलती देग की तरह खौलने लगता है। वह मर्हम के मुख़्तलिफ़ अजज़ा को मिला मिला कर तय्यार करने वाले अत्तार की तरह समुन्दर को हरकत में लाता है। 32 अपने पीछे वह चमकता

[s]साईन्सदान मुत्तफ़िक़ नहीं कि यह कौन सा जानवर था।

[t]लफ़्ज़ी तर्जुमा : बैरूनी लिबास।

दमकता रास्ता छोड़ता है। तब लगता है कि समुन्दर की गहराइयों के सफ़ेद बाल हैं। 33 दुनिया में उस जैसा कोई मख़्लूक़ नहीं, ऐसा बनाया गया है कि कभी न डरे। 34 जो भी आला हो उस पर वह हिक़ारत की निगाह से देखता है, वह तमाम रोबदार जानवरों का बादशाह है।"

अय्यूब की आख़िरी बात

42 1 तब अय्यूब ने जवाब में रब से कहा,
2 "मैं ने जान लिया है कि तू सब कुछ कर पाता है, कि तेरा कोई भी मन्सूबा रोका नहीं जा सकता। 3 तू ने फ़रमाया, 'यह कौन है जो समझ से ख़ाली बातें करने से मेरे मन्सूबे के सहीह मतलब पर पर्दा डालता है?' यक़ीनन मैं ने ऐसी बातें बयान कीं जो मेरी समझ से बाहर हैं, ऐसी बातें जो इतनी अनोखी हैं कि मैं उन का इल्म रख ही नहीं सकता।
4 तू ने फ़रमाया, 'सुन मेरी बात तो मैं बोलूँगा। मैं तुझ से सवाल करता हूँ, और तू मुझे तालीम दे।' 5 पहले मैं ने तेरे बारे में सिर्फ़ सुना था, लेकिन अब मेरी अपनी आँखों ने तुझे देखा है। 6 इस लिए मैं अपनी बातें मुस्तरद करता, अपने आप पर ख़ाक और राख डाल कर तौबा करता हूँ।"

अय्यूब अपने दोस्तों की शफ़ाअत करता है

7 अय्यूब से यह तमाम बातें कहने के बाद रब इलीफ़ज़ तेमानी से हमकलाम हुआ, "मैं तुझ से और तेरे दो दोस्तों से ग़ुस्से हूँ, क्यूँकि गो मेरे बन्दे अय्यूब ने मेरे बारे में दुरुस्त बातें कीं मगर तुम ने ऐसा नहीं किया। 8 चुनाँचे अब सात जवान बैल और सात मेंढे ले कर मेरे बन्दे अय्यूब के पास जाओ और अपनी ख़ातिर भस्म होने वाली क़ुर्बानी पेश करो। लाज़िम है कि अय्यूब तुम्हारी शफ़ाअत करे, वर्ना मैं तुम्हें तुम्हारी हमाक़त का पूरा अज्र दूँगा। लेकिन उस की शफ़ाअत पर मैं तुम्हें मुआफ़ करूँगा, क्यूँकि मेरे बन्दे अय्यूब ने मेरे बारे में वह कुछ बयान किया जो सहीह है जबकि तुम ने ऐसा नहीं किया।"

9 इलीफ़ज़ तेमानी, बिल्दद सूख़ी और ज़ूफ़र नामाती ने वह कुछ किया जो रब ने उन्हें करने को कहा था तो रब ने अय्यूब की सुनी।

10 और जब अय्यूब ने दोस्तों की शफ़ाअत की तो रब ने उसे इतनी बरकत दी कि आख़िरकार उसे पहले की निस्बत दुगनी दौलत हासिल हुई। 11 तब उस के तमाम भाई-बहनें और पुराने जानने वाले उस के पास आए और घर में उस के साथ खाना खा कर उस आफ़त पर अफ़सोस किया जो रब अय्यूब पर लाया था। हर एक ने उसे तसल्ली दे कर उसे एक सिक्का और सोने का एक छल्ला दे दिया।

12 अब से रब ने अय्यूब को पहले की निस्बत कहीं ज़्यादा बरकत दी। उसे 14,000 बकरियाँ, 6,000 ऊँट, बैलों की 1,000 जोड़ियाँ और 1,000 गधियाँ हासिल हुईं। 13 नीज़, उस के मज़ीद सात बेटे और तीन बेटियाँ पैदा हुईं। 14 उस ने बेटियों के यह नाम रखे : पहली का नाम यमीमा, दूसरी का क़सीअह और तीसरी का क़रन-हप्पूक। 15 तमाम मुल्क में अय्यूब की बेटियों जैसी ख़ूबसूरत ख़वातीन पाई नहीं जाती थीं। अय्यूब ने उन्हें भी मीरास में मिलकियत दी, ऐसी मिलकियत जो उन के भाइयों के दरमियान ही थी।

16 अय्यूब मज़ीद 140 साल ज़िन्दा रहा, इस लिए वह अपनी औलाद को चौथी पुश्त तक देख सका।
17 फिर वह दराज़ ज़िन्दगी से आसूदा हो कर इन्तिक़ाल कर गया।

ज़बूर

पहली किताब : 1-41

दो राहें

1 [1]मुबारक है वह जो न बेदीनों के मश्वरे पर चलता, न गुनाहगारों की राह पर क़दम रखता, और न तानाज़नों के साथ बैठता है
[2]बल्कि रब की शरीअत से लुत्फ़अन्दोज़ होता और दिन रात उसी पर ग़ौर-ओ-ख़ौज़ करता रहता है।
[3]वह नहरों के किनारे पर लगे दरख़्त की मानिन्द है। वक़्त पर वह फल लाता, और उस के पत्ते नहीं मुरझाते। जो कुछ भी करे उस में वह कामयाब है।

[4]बेदीनों का यह हाल नहीं होता। वह भूसे की मानिन्द हैं जिसे हवा उड़ा ले जाती है।
[5]इस लिए बेदीन अदालत में क़ाइम नहीं रहेंगे, और गुनाहगार का रास्तबाज़ों की मजलिस में मक़ाम नहीं होगा।
[6]क्यूँकि रब रास्तबाज़ों की राह की पहरादारी करता है जबकि बेदीनों की राह तबाह हो जाएगी।

अल्लाह का मसीह

2 [1]अक़्वाम क्यूँ तैश में आ गई हैं? उम्मतें क्यूँ बेकार साज़िशें कर रही हैं?
[2]दुनिया के बादशाह उठ खड़े हुए, हुक्मरान रब और उस के मसीह के ख़िलाफ़ जमा हो गए हैं।
[3]वह कहते हैं, “आओ, हम उन की ज़न्जीरों को तोड़ कर आज़ाद हो जाएँ, उन के रस्सों को दूर तक फैंक दें।”
[4]लेकिन जो आसमान पर तख़्तनशीन है वह हँसता है, रब उन का मज़ाक़ उड़ाता है।
[5]फिर वह ग़ुस्से से उन्हें डाँटता, अपना शदीद ग़ज़ब उन पर नाज़िल करके उन्हें डराता है।
[6]वह फ़रमाता है, “मैं ने ख़ुद अपने बादशाह को अपने मुक़द्दस पहाड़ सिय्यून पर मुक़र्रर किया है!”

[7]आओ, मैं रब का फ़रमान सुनाऊँ। उस ने मुझ से कहा, “तू मेरा बेटा है, आज मैं तेरा बाप बन गया हूँ।
[8]मुझ से माँग तो मैं तुझे मीरास में तमाम अक़्वाम अता करूँगा, दुनिया की इन्तिहा तक सब कुछ बख़्श दूँगा।
[9]तू उन्हें लोहे के शाही असा से पाश पाश करेगा, उन्हें मिट्टी के बर्तनों की तरह चकनाचूर करेगा।”
[10]चुनाँचे ऐ बादशाहो, समझ से काम लो! ऐ दुनिया के हुक्मरानो, तर्बियत क़बूल करो!
[11]ख़ौफ़ करते हुए रब की ख़िदमत करो, लरज़ते हुए ख़ुशी मनाओ।
[12]बेटे को बोसा दो, ऐसा न हो कि वह ग़ुस्से हो जाए और तुम रास्ते में ही हलाक हो जाओ। क्यूँकि वह एक दम तैश में आ जाता है। मुबारक हैं वह सब जो उस में पनाह लेते हैं।

सुब्ह को मदद के लिए दुआ

3 [1]दाऊद का ज़बूर। उस वक़्त जब उसे अपने बेटे अबीसलूम से भागना पड़ा।
ऐ रब, मेरे दुश्मन कितने ज़्यादा हैं, कितने लोग मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं!
[2]मेरे बारे में बहुतेरे कह रहे हैं, “अल्लाह इसे छुटकारा नहीं देगा।” (सिलाह) [u]

---

[u]सिलाह ग़ालिबन गाने बजाने के बारे में कोई हिदायत है। मुफ़स्सिरीन में इस के मतलब के बारे में इत्तिफ़ाक़-ए-राय नहीं होती।

3 लेकिन तू ऐ रब, चारों तरफ़ मेरी हिफ़ाज़त करने वाली ढाल है। तू मेरी इज़्ज़त है जो मेरे सर को उठाए रखता है।

4 मैं बुलन्द आवाज़ से रब को पुकारता हूँ, और वह अपने मुक़द्दस पहाड़ से मेरी सुनता है। (सिलाह)

5 मैं आराम से लेट कर सो गया, फिर जाग उठा, क्यूँकि रब ख़ुद मुझे सँभाले रखता है।

6 उन हज़ारों से मैं नहीं डरता जो मुझे घेरे रखते हैं।

7 ऐ रब, उठ! ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे रिहा कर! क्यूँकि तू ने मेरे तमाम दुश्मनों के मुँह पर थप्पड़ मारा, तू ने बेदीनों के दाँतों को तोड़ दिया है।

8 रब के पास नजात है। तेरी बरकत तेरी क़ौम पर आए। (सिलाह)

शाम को मदद के लिए दुआ

4 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तारदार साज़ों के साथ गाना है।

ऐ मेरी रास्ती के ख़ुदा, मेरी सुन जब मैं तुझे पुकारता हूँ। ऐ तू जो मुसीबत में मेरी मख़्लसी रहा है मुझ पर मेहरबानी करके मेरी इल्तिजा सुन!

2 ऐ आदमज़ादो, मेरी इज़्ज़त कब तक ख़ाक में मिलाई जाती रहेगी? तुम कब तक बातिल चीज़ों से लिपटे रहोगे, कब तक झूट की तलाश में रहोगे? (सिलाह)

3 जान लो कि रब ने ईमानदार को अपने लिए अलग कर रखा है। रब मेरी सुनेगा जब मैं उसे पुकारूँगा।

4 ग़ुस्से में आते वक़्त गुनाह मत करना। अपने बिस्तर पर लेट कर मुआमले पर सोच-बिचार करो, लेकिन दिल में, ख़ामोशी से। (सिलाह)

5 रास्ती की क़ुर्बानियाँ पेश करो, और रब पर भरोसा रखो।

6 बहुतेरे शक कर रहे हैं, "कौन हमारे हालात ठीक करेगा?" ऐ रब, अपने चेहरे का नूर हम पर चमका!

7 तू ने मेरे दिल को ख़ुशी से भर दिया है, ऐसी ख़ुशी से जो उन के पास भी नहीं होती जिन के पास कस्रत का अनाज और अंगूर है।

8 मैं आराम से लेट कर सो जाता हूँ, क्यूँकि तू ही ऐ रब मुझे हिफ़ाज़त से बसने देता है।

हिफ़ाज़त के लिए दुआ

5 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। इसे बाँसरी के साथ गाना है।

ऐ रब, मेरी बातें सुन, मेरी आहों पर ध्यान दे!

2 ऐ मेरे बादशाह, मेरे ख़ुदा, मदद के लिए मेरी चीख़ें सुन, क्यूँकि मैं तुझ ही से दुआ करता हूँ।

3 ऐ रब, सुब्ह को तू मेरी आवाज़ सुनता है, सुब्ह को मैं तुझे सब कुछ तरतीब से पेश करके जवाब का इन्तिज़ार करने लगता हूँ।

4 क्यूँकि तू ऐसा ख़ुदा नहीं है जो बेदीनी से ख़ुश हो। जो बुरा है वह तेरे हुज़ूर नहीं ठहर सकता।

5 मग़रूर तेरे हुज़ूर खड़े नहीं हो सकते, बदकार से तू नफ़रत करता है।

6 झूट बोलने वालों को तू तबाह करता, ख़ूँख़ार और धोकेबाज़ से रब घिन खाता है।

7 लेकिन मुझ पर तू ने बड़ी मेहरबानी की है, इस लिए मैं तेरे घर में दाख़िल हो सकता, मैं तेरा ख़ौफ़ मान कर तेरी मुक़द्दस सुकूनतगाह के सामने सिज्दा करता हूँ।

8 ऐ रब, अपनी रास्त राह पर मेरी राहनुमाई कर ताकि मेरे दुश्मन मुझ पर ग़ालिब न आएँ। अपनी राह को मेरे आगे हमवार कर।

9 क्यूँकि उन के मुँह से एक भी क़ाबिल-ए-एतिमाद बात नहीं निकलती। उन का दिल तबाही से भरा रहता, उन का गला खुली क़ब्र है, और उन की ज़बान चिकनी-चुपड़ी बातें उगलती रहती है।

[10] ऐ रब, उन्हें उन के ग़लत काम का अज्र दे। उन की साज़िशें उन की अपनी तबाही का बाइस बनें। उन्हें उन के मुतअद्दिद गुनाहों के बाइस निकाल कर मुन्तशिर कर दे, क्यूँकि वह तुझ से सरकश हो गए हैं।

[11] लेकिन जो तुझ में पनाह लेते हैं वह सब ख़ुश हों, वह अबद तक शादियाना बजाएँ, क्यूँकि तू उन्हें महफ़ूज़ रखता है। तेरे नाम को प्यार करने वाले तेरा जश्न मनाएँ।
[12] क्यूँकि तू ऐ रब, रास्तबाज़ को बरकत देता है, तू अपनी मेहरबानी की ढाल से उस की चारों तरफ़ हिफ़ाज़त करता है।

मुसीबत में दुआ (तौबा का पहला ज़बूर)

6 [1] दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तारदार साज़ों के साथ गाना है।
ऐ रब, ग़ुस्से में मुझे सज़ा न दे, तैश में मुझे तम्बीह न कर।
[2] ऐ रब, मुझ पर रहम कर, क्यूँकि मैं निढाल हूँ। ऐ रब, मुझे शिफ़ा दे, क्यूँकि मेरे आज़ा दहशतज़दा हैं।
[3] मेरी जान निहायत ख़ौफ़ज़दा है। ऐ रब, तू कब तक देर करेगा?
[4] ऐ रब, वापस आ कर मेरी जान को बचा। अपनी शफ़क़त की ख़ातिर मुझे छुटकारा दे।
[5] क्यूँकि मुर्दा तुझे याद नहीं करता। पाताल में कौन तेरी सताइश करेगा?

[6] मैं कराहते कराहते थक गया हूँ। पूरी रात रोने से बिस्तर भीग गया है, मेरे आँसूओं से पलंग गल गया है।
[7] ग़म के मारे मेरी आँखें सूज गई हैं, मेरे मुख़ालिफ़ों के हम्लों से वह ज़ाए होती जा रही हैं।
[8] ऐ बदकारो, मुझ से दूर हो जाओ, क्यूँकि रब ने मेरी आह-ओ-बुका सुनी है।
[9] रब ने मेरी इल्तिजाओं को सुन लिया है, मेरी दुआ रब को क़बूल है।
[10] मेरे तमाम दुश्मनों की रुस्वाई हो जाएगी, और वह सख़्त घबरा जाएंगे। वह मुड़ कर अचानक ही शर्मिन्दा हो जाएंगे।

इन्साफ़ के लिए दुआ

7 [1] दाऊद का वह मातमी गीत जो उस ने कूश बिनयमीनी की बातों पर रब की तम्जीद में गाया।
ऐ रब मेरे ख़ुदा, मैं तुझ में पनाह लेता हूँ। मुझे उन सब से बचा कर छुटकारा दे जो मेरा ताक़्क़ुब कर रहे हैं,
[2] वर्ना वह शेरबबर की तरह मुझे फाड़ कर टुकड़े टुकड़े कर देंगे, और बचाने वाला कोई नहीं होगा।

[3] ऐ रब मेरे ख़ुदा, अगर मुझ से यह कुछ सरज़द हुआ और मेरे हाथ क़ुसूरवार हों,
[4] अगर मैं ने उस से बुरा सुलूक किया जिस का मेरे साथ झगड़ा नहीं था या अपने दुश्मन को ख़्वाह-म-ख़्वाह लूट लिया हो
[5] तो फिर मेरा दुश्मन मेरे पीछे पड़ कर मुझे पकड़ ले। वह मेरी जान को मिट्टी में कुचल दे, मेरी इज़्ज़त को ख़ाक में मिलाए। (सिलाह)

[6] ऐ रब, उठ और अपना ग़ज़ब दिखा! मेरे दुश्मनों के तैश के ख़िलाफ़ खड़ा हो जा। मेरी मदद करने के लिए जाग उठ! तू ने ख़ुद अदालत का हुक्म दिया है।
[7] अक़्वाम तेरे इर्दगिर्द जमा हो जाएँ जब तू उन के ऊपर बुलन्दियों पर तख़्तनशीन हो जाए।
[8] रब अक़्वाम की अदालत करता है। ऐ रब, मेरी रास्तबाज़ी और बेगुनाही का लिहाज़ करके मेरा इन्साफ़ कर।
[9] ऐ रास्त ख़ुदा, जो दिल की गहराइयों को तह तक जाँच लेता है, बेदीनों की शरारतें ख़त्म कर और रास्तबाज़ को क़ाइम रख।

10 अल्लाह मेरी ढाल है। जो दिल से सीधी राह पर चलते हैं उन्हें वह रिहाई देता है।

11 अल्लाह आदिल मुन्सिफ़ है, ऐसा ख़ुदा जो रोज़ाना लोगों की सरज़निश करता है।

12 यक़ीनन इस वक़्त भी दुश्मन अपनी तलवार को तेज़ कर रहा, अपनी कमान को तान कर निशाना बांध रहा है।

13 लेकिन जो मोहलक हथियार और जलते हुए तीर उस ने तय्यार कर रखे हैं उन की ज़द में वह ख़ुद ही आ जाएगा।

14 देख, बुराई का बीज उस में उग आया है। अब वह शरारत से हामिला हो कर फिरता और झूट के बच्चे जन्म देता है।

15 लेकिन जो गढ़ा उस ने दूसरों को फंसाने के लिए खोद खोद कर तय्यार किया उस में ख़ुद गिर पड़ा है।

16 वह ख़ुद अपनी शरारत की ज़द में आएगा, उस का ज़ुल्म उस के अपने सर पर नाज़िल होगा।

17 मैं रब की सताइश करूँगा, क्यूँकि वह रास्त है। मैं रब तआला के नाम की तारीफ़ में गीत गाऊँगा।

मख़्लूक़ात का ताज

8 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : गित्तीत।

ऐ रब हमारे आक़ा, तेरा नाम पूरी दुनिया में कितना शानदार है! तू ने आसमान पर ही अपना जलाल ज़ाहिर कर दिया है।

2 अपने मुख़ालिफ़ों के जवाब में तू ने छोटे बच्चों और शीरख़्वारों की ज़बान को तय्यार किया है ताकि वह तेरी क़ुव्वत से दुश्मन और कीनापर्वर को ख़त्म करें।

3 जब मैं तेरे आसमान का मुलाहज़ा करता हूँ जो तेरी उंगलियों का काम है, चाँद और सितारों पर ग़ौर करता हूँ जिन को तू ने अपनी अपनी जगह पर क़ाइम किया

4 तो इन्सान कौन है कि तू उसे याद करे या आदमज़ाद कि तू उस का ख़याल रखे?

5 तू ने उसे फ़रिश्तों से कुछ ही कम बनाया, [v]तू ने उसे जलाल और इज़्ज़त का ताज पहनाया।

6 तू ने उसे अपने हाथों के कामों पर मुक़र्रर किया, सब कुछ उस के पाँओ के नीचे कर दिया,

7 ख़्वाह भेड़-बकरियाँ हों ख़्वाह गाय-बैल, जंगली जानवर,

8 परिन्दे, मछलियाँ या समुन्दरी राहों पर चलने वाले बाक़ी तमाम जानवर।

9 ऐ रब हमारे आक़ा, पूरी दुनिया में तेरा नाम कितना शानदार है!

अल्लाह की क़ुदरत और इन्साफ़

9 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : अलामूत-लब्बीन।

ऐ रब, मैं पूरे दिल से तेरी सताइश करूँगा, तेरे तमाम मोजिज़ात का बयान करूँगा।

2 मैं शादमान हो कर तेरी ख़ुशी मनाऊँगा। ऐ अल्लाह तआला, मैं तेरे नाम की तम्जीद में गीत गाऊँगा।

3 जब मेरे दुश्मन पीछे हट जाएंगे तो वह ठोकर खा कर तेरे हुज़ूर तबाह हो जाएंगे।

4 क्यूँकि तू ने मेरा इन्साफ़ किया है, तू तख़्त पर बैठ कर रास्त मुन्सिफ़ साबित हुआ है।

5 तू ने अक़्वाम को मलामत करके बेदीनों को हलाक कर दिया, उन का नाम-ओ-निशान हमेशा के लिए मिटा दिया है।

---

[v]एक और मुमकिना तर्जुमा : तू ने उसे थोड़ी देर के लिए फ़रिश्तों से कम कर दिया (देखिए इब्रानियों 2:7,9)।

[6]दुश्मन तबाह हो गया, अबद तक मल्बे का ढेर बन गया है। तू ने शहरों को जड़ से उखाड़ दिया है, और उन की याद तक बाक़ी नहीं रहेगी।

[7]लेकिन रब हमेशा तक तख़्तनशीन रहेगा, और उस ने अपने तख़्त को अदालत करने के लिए खड़ा किया है।

[8]वह रास्ती से दुनिया की अदालत करेगा, इन्साफ़ से उम्मतों का फ़ैसला करेगा।

[9]रब मज़्लूमों की पनाहगाह है, एक क़िला जिस में वह मुसीबत के वक़्त महफ़ूज़ रहते हैं।

[10]ऐ रब, जो तेरा नाम जानते वह तुझ पर भरोसा रखते हैं। क्यूँकि जो तेरे तालिब हैं उन्हें तू ने कभी तर्क नहीं किया।

[11]रब की तम्जीद में गीत गाओ जो सिय्यून पहाड़ पर तख़्तनशीन है, उम्मतों में वह कुछ सुनाओ जो उस ने किया है।

[12]क्यूँकि जो मक़्तूलों का इन्तिक़ाम लेता है वह मुसीबतज़दों की चीख़ें नज़रअन्दाज़ नहीं करता।

[13]ऐ रब, मुझ पर रहम कर! मेरी उस तक्लीफ़ पर ग़ौर कर जो नफ़रत करने वाले मुझे पहुँचा रहे हैं। मुझे मौत के दरवाज़ों में से निकाल कर उठा ले

[14]ताकि मैं सिय्यून बेटी के दरवाज़ों में तेरी सताइश करके वह कुछ सुनाऊँ जो तू ने मेरे लिए किया है, ताकि मैं तेरी नजात की ख़ुशी मनाऊँ।

[15]अक़्वाम उस गढ़े में ख़ुद गिर गई हैं जो उन्हों ने दूसरों को पकड़ने के लिए खोदा था। उन के अपने पाँओ उस जाल में फंस गए हैं जो उन्हों ने दूसरों को फंसाने के लिए बिछा दिया था।

[16]रब ने इन्साफ़ करके अपना इज़हार किया तो बेदीन अपने हाथ के फंदे में उलझ गया। (हिग्गायून का तर्ज़। सिलाह)

[17]बेदीन पाताल में उतरेंगे, जो उम्मतें अल्लाह को भूल गई हैं वह सब वहाँ जाएँगी।

[18]क्यूँकि वह ज़रूरतमन्दों को हमेशा तक नहीं भूलेगा, मुसीबतज़दों की उम्मीद अबद तक जाती नहीं रहेगी।

[19]ऐ रब, उठ खड़ा हो ताकि इन्सान ग़ालिब न आए। बख़्श दे कि तेरे हुज़ूर अक़्वाम की अदालत की जाए।

[20]ऐ रब, उन्हें दहशतज़दा कर ताकि अक़्वाम जान लें कि इन्सान ही हैं। (सिलाह)

इन्साफ़ के लिए दुआ

10 [1]ऐ रब, तू इतना दूर क्यूँ खड़ा है? मुसीबत के वक़्त तू अपने आप को पोशीदा क्यूँ रखता है?

[2]बेदीन तकब्बुर से मुसीबतज़दों के पीछे लग गए हैं, और अब बेचारे उन के जालों में उलझने लगे हैं।

[3]क्यूँकि बेदीन अपनी दिली आर्ज़ूओं पर शेख़ी मारता है, और नाजाइज़ नफ़ा कमाने वाला लानत करके रब को हक़ीर जानता है।

[4]बेदीन ग़ुरूर से फूल कर कहता है, “अल्लाह मुझ से जवाबतलबी नहीं करेगा।” उस के तमाम ख़यालात इस बात पर मब्नी हैं कि कोई ख़ुदा नहीं है।

[5]जो कुछ भी करे उस में वह कामयाब है। तेरी अदालतें उसे बुलन्दियों में कहीं दूर लगती हैं जबकि वह अपने तमाम मुख़ालिफ़ों के ख़िलाफ़ फुंकारता है।

[6]दिल में वह सोचता है, “मैं कभी नहीं डगमगाऊँगा, नस्ल-दर-नस्ल मुसीबत के पंजों से बचा रहूँगा।”

[7]उस का मुँह लानतों, फ़रेब और ज़ुल्म से भरा रहता, उस की ज़बान नुक़्सान और आफ़त पहुँचाने के लिए तय्यार रहती है।

[8]वह आबादियों के क़रीब ताक में बैठ कर चुपके से बेगुनाहों को मार डालता है, उस की आँखें बदक़िस्मतों की घात में रहती हैं।

[9]जंगल में बैठे शेरबबर की तरह ताक में रह कर वह मुसीबतज़दा पर हम्ला करने का मौक़ा ढूँडता है। जब उसे पकड़ ले तो उसे अपने जाल में घसीट कर ले जाता है।

[10]उस के शिकार पाश पाश हो कर झुक जाते हैं, बेचारे उस की ज़बरदस्त ताक़त की ज़द में आ कर गिर जाते हैं।

[11]तब वह दिल में कहता है, "अल्लाह भूल गया है, उस ने अपना चेहरा छुपा लिया है, उसे यह कभी नज़र नहीं आएगा।"

[12]ऐ रब, उठ! ऐ अल्लाह, अपना हाथ उठा कर नाचारों की मदद कर और उन्हें न भूल।

[13]बेदीन अल्लाह की तहक़ीर क्यूँ करे, वह दिल में क्यूँ कहे, "अल्लाह मुझ से जवाब तलब नहीं करेगा"?

[14]ऐ अल्लाह, हक़ीक़त में तू यह सब कुछ देखता है। तू हमारी तक्लीफ़ और परेशानी पर ध्यान दे कर मुनासिब जवाब देगा। नाचार अपना मुआमला तुझ पर छोड़ देता है, क्यूँकि तू यतीमों का मददगार है।

[15]शरीर और बेदीन आदमी का बाज़ू तोड़ दे! उस से उस की शरारतों की जवाबतलबी कर ताकि उस का पूरा असर मिट जाए।

[16]रब अबद तक बादशाह है। उस के मुल्क से दीगर अक़्वाम ग़ाइब हो गई हैं।

[17]ऐ रब, तू ने नाचारों की आर्ज़ू सुन ली है। तू उन के दिलों को मज़बूत करेगा और उन पर ध्यान दे कर

[18]यतीमों और मज़्लूमों का इन्साफ़ करेगा ताकि आइन्दा कोई भी इन्सान मुल्क में दहशत न फैलाए।

रब पर भरोसा

11 [1]दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

मैं ने रब में पनाह ली है। तो फिर तुम किस तरह मुझ से कहते हो, "चल, परिन्दे की तरह फड़फड़ा कर पहाड़ों में भाग जा"?

[2]क्यूँकि देखो, बेदीन कमान तान कर तीर को ताँत पर लगा चुके हैं। अब वह अंधेरे में बैठ कर इस इन्तिज़ार में हैं कि दिल से सीधी राह पर चलने वालों पर चलाएँ।

[3]रास्तबाज़ क्या करे? उन्हों ने तो बुन्याद को ही तबाह कर दिया है।

[4]लेकिन रब अपनी मुक़द्दस सुकूनतगाह में है, रब का तख़्त आसमान पर है। वहाँ से वह देखता है, वहाँ से उस की आँखें आदमज़ादों को परखती हैं।

[5]रब रास्तबाज़ को परखता तो है, लेकिन बेदीन और ज़ालिम से नफ़रत ही करता है।

[6]बेदीनों पर वह जलते हुए कोएले और शोलाज़न गंधक बरसा देगा। झुलसने वाली आँधी उन का हिस्सा होगी।

[7]क्यूँकि रब रास्त है, और उसे इन्साफ़ प्यारा है। सिर्फ़ सीधी राह पर चलने वाले उस का चेहरा देखेंगे।

मदद के लिए दुआ

12 [1]दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : शमीनीत।

ऐ रब, मदद फ़रमा! क्यूँकि ईमानदार ख़त्म हो गए हैं। दियानतदार इन्सानों में से मिट गए हैं।

[2]आपस में सब झूट बोलते हैं। उन की ज़बान पर चिकनी-चुपड़ी बातें होती हैं जबकि दिल में कुछ और ही होता है।

[3]रब तमाम चिकनी-चुपड़ी और शेख़ीबाज़ ज़बानों को काट डाले!

[4]वह उन सब को मिटा दे जो कहते हैं, "हम अपनी लाइक़ ज़बान के बाइस ताक़तवर हैं। हमारे होंट हमें सहारा देते हैं तो कौन हमारा मालिक होगा? कोई नहीं!"

[5] लेकिन रब फ़रमाता है, "नाचारों पर तुम्हारे ज़ुल्म की ख़बर और ज़रूरतमन्दों की कराहती आवाज़ें मेरे सामने आई हैं। अब मैं उठ कर उन्हें उन से छुटकारा दूँगा जो उन के ख़िलाफ़ फुंकारते हैं।"

[6] रब के फ़रमान पाक हैं, वह भट्टी में सात बार साफ़ की गई चाँदी की मानिन्द ख़ालिस हैं।
[7] ऐ रब, तू ही उन्हें महफ़ूज़ रखेगा, तू ही उन्हें अबद तक इस नस्ल से बचाए रखेगा,
[8] गो बेदीन आज़ादी से इधर उधर फिरते हैं, और इन्सानों के दरमियान कमीनापन का राज है।

मदद के लिए दुआ

13 [1] दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
ऐ रब, कब तक? क्या तू मुझे अबद तक भूला रहेगा? तू कब तक अपना चेहरा मुझ से छुपाए रखेगा?
[2] मेरी जान कब तक परेशानियों में मुब्तला रहे, मेरा दिल कब तक रोज़-ब-रोज़ दुख उठाता रहे? मेरा दुश्मन कब तक मुझ पर ग़ालिब रहेगा?

[3] ऐ रब मेरे ख़ुदा, मुझ पर नज़र डाल कर मेरी सुन! मेरी आँखों को रौशन कर, वर्ना मैं मौत की नींद सो जाऊँगा।
[4] तब मेरा दुश्मन कहेगा, "मैं उस पर ग़ालिब आ गया हूँ!" और मेरे मुख़ालिफ़ शादियाना बजाएंगे कि मैं हिल गया हूँ।

[5] लेकिन मैं तेरी शफ़क़त पर भरोसा रखता हूँ, मेरा दिल तेरी नजात देख कर ख़ुशी मनाएगा।
[6] मैं रब की तम्जीद में गीत गाऊँगा, क्यूँकि उस ने मुझ पर एहसान किया है।

बेदीन की हमाक़त

14 [1] दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
अहमक़ दिल में कहता है, "अल्लाह है ही नहीं!" ऐसे लोग बदचलन हैं, उन की हरकतें क़ाबिल-ए-घिन हैं। एक भी नहीं है जो अच्छा काम करे।
[2] रब ने आसमान से इन्सान पर नज़र डाली ताकि देखे कि क्या कोई समझदार है? क्या कोई अल्लाह का तालिब है?
[3] अफ़्सोस, सब सहीह राह से भटक गए, सब के सब बिगड़ गए हैं। कोई नहीं जो भलाई करता हो, एक भी नहीं।

[4] क्या जो बदी करके मेरी क़ौम को रोटी की तरह खा लेते हैं उन में से एक को भी समझ नहीं आती? वह तो रब को पुकारते ही नहीं।

[5] तब उन पर सख़्त दहशत छा गई, क्यूँकि अल्लाह रास्तबाज़ की नस्ल के साथ है।
[6] तुम नाचार के मन्सूबों को ख़ाक में मिलाना चाहते हो, लेकिन रब ख़ुद उस की पनाहगाह है।

[7] काश कोह-ए-सिय्यून से इस्राईल की नजात निकले! जब रब अपनी क़ौम को बहाल करेगा तो याक़ूब ख़ुशी के नारे लगाएगा, इस्राईल बाग़ बाग़ होगा।

कौन अल्लाह के हुज़ूर क़ाइम रह सकता है?

15 [1] दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, कौन तेरे ख़ैमे में ठहर सकता है? किस को तेरे मुक़द्दस पहाड़ पर रहने की इजाज़त है?
[2] वह जिस का चाल-चलन बेगुनाह है, जो रास्तबाज़ ज़िन्दगी गुज़ार कर दिल से सच बोलता है।

3 ऐसा शख़्स अपनी ज़बान से किसी पर तोहमत नहीं लगाता। न वह अपने पड़ोसी पर ज़ियादती करता, न उस की बेइज़्ज़ती करता है।

4 वह मर्दूद को हक़ीर जानता लेकिन ख़ुदातरस की इज़्ज़त करता है। जो वादा उस ने क़सम खा कर किया उसे पूरा करता है, ख़्वाह उसे कितना ही नुक़्सान क्यूँ न पहुँचे।

5 वह सूद लिए बग़ैर उधार देता है और उस की रिश्वत क़बूल नहीं करता जो बेगुनाह का हक़ मारना चाहता है। ऐसा शख़्स कभी डाँवाँडोल नहीं होगा।

एतिमाद की दुआ

16 1 दाऊद का एक सुनहरा ज़बूर।

ऐ अल्लाह, मुझे महफ़ूज़ रख, क्यूँकि तुझ में मैं पनाह लेता हूँ।

2 मैं ने रब से कहा, "तू मेरा आक़ा है, तू ही मेरी ख़ुशहाली का वाहिद सरचश्मा है।"

3 मुल्क में जो मुक़द्दसीन हैं वही मेरे सूरमे हैं, उन ही को मैं पसन्द करता हूँ।

4 लेकिन जो दीगर माबूदों के पीछे भागे रहते हैं उन की तक्लीफ़ बढ़ती जाएगी। न मैं उन की ख़ून की क़ुर्बानियों को पेश करूँगा, न उन के नामों का ज़िक्र तक करूँगा।

5 ऐ रब, तू मेरी मीरास और मेरा हिस्सा है। मेरा नसीब तेरे हाथ में है।

6 जब क़ुरआ डाला गया तो मुझे ख़ुशगवार ज़मीन मिल गई। यक़ीनन मेरी मीरास मुझे बहुत पसन्द है।

7 मैं रब की सताइश करूँगा जिस ने मुझे मश्वरा दिया है। रात को भी मेरा दिल मेरी हिदायत करता है।

8 रब हर वक़्त मेरी आँखों के सामने रहता है। वह मेरे दहने हाथ रहता है, इस लिए मैं नहीं डगमगाऊँगा।

9 इस लिए मेरा दिल शादमान है, मेरी जान ख़ुशी के नारे लगाती है। हाँ, मेरा बदन पुरसुकून ज़िन्दगी गुज़ारेगा।

10 क्यूँकि तू मेरी जान को पाताल में नहीं छोड़ेगा, और न अपने मुक़द्दस को गलने सड़ने की नौबत तक पहुँचने देगा।

11 तू मुझे ज़िन्दगी की राह से आगाह करता है। तेरे हुज़ूर से भरपूर ख़ुशियाँ, तेरे दहने हाथ से अबदी मसर्रतें हासिल होती हैं।

बेगुनाह शख़्स की दुआ

17 1 दाऊद की दुआ।

ऐ रब, इन्साफ़ के लिए मेरी फ़र्याद सुन, मेरी आह-ओ-ज़ारी पर ध्यान दे। मेरी दुआ पर ग़ौर कर, क्यूँकि वह फ़रेबदिह होंटों से नहीं निकलती।

2 तेरे हुज़ूर मेरा इन्साफ़ किया जाए, तेरी आँखें उन बातों का मुशाहदा करें जो सच हैं।

3 तू ने मेरे दिल को जाँच लिया, रात को मेरा मुआइना किया है। तू ने मुझे भट्टी में डाल दिया ताकि नापाक चीज़ें दूर करे, गो ऐसी कोई चीज़ नहीं मिली। क्यूँकि मैं ने पूरा इरादा कर लिया है कि मेरे मुँह से बुरी बात नहीं निकलेगी।

4 जो कुछ भी दूसरे करते हैं मैं ने ख़ुद तेरे मुँह के फ़रमान के ताबे रह कर अपने आप को ज़ालिमों की राहों से दूर रखा है।

5 मैं क़दम-ब-क़दम तेरी राहों में रहा, मेरे पाँओ कभी न डगमगाए।

6 ऐ अल्लाह, मैं तुझे पुकारता हूँ, क्यूँकि तू मेरी सुनेगा। कान लगा कर मेरी दुआ को सुन।

7 तू जो अपने दहने हाथ से उन्हें रिहाई देता है जो अपने मुख़ालिफ़ों से तुझ में पनाह लेते हैं, मोजिज़ाना तौर पर अपनी शफ़्क़त का इज़्हार कर।

8 आँख की पुतली की तरह मेरी हिफ़ाज़त कर, अपने परों के साय में मुझे छुपा ले।

9 उन बेदीनों से मुझे महफ़ूज़ रख जो मुझ पर तबाहकुन हमले कर रहे हैं, उन दुश्मनों से जो मुझे घेर कर मार डालने की कोशिश कर रहे हैं।

10 वह सरकश हो गए हैं, उन के मुँह घमंड की बातें करते हैं।

[11] जिधर भी हम क़दम उठाएँ वहाँ वह भी पहुँच जाते हैं। अब उन्हों ने हमें घेर लिया है, वह घूर घूर कर हमें ज़मीन पर पटख़ने का मौक़ा ढूँड रहे हैं।

[12] वह उस शेरबबर की मानिन्द हैं जो शिकार को फाड़ने के लिए तड़पता है, उस जवान शेर की मानिन्द जो ताक में बैठा है।

[13] ऐ रब, उठ और उन का सामना कर, उन्हें ज़मीन पर पटख़ दे! अपनी तलवार से मेरी जान को बेदीनों से बचा।

[14] ऐ रब, अपने हाथ से मुझे इन से छुटकारा दे। उन्हें तो इस दुनिया में अपना हिस्सा मिल चुका है। क्यूँकि तू ने उन के पेट को अपने माल से भर दिया, बल्कि उन के बेटे भी सेर हो गए हैं और इतना बाक़ी है कि वह अपनी औलाद के लिए भी काफ़ी कुछ छोड़ जाएंगे।

[15] लेकिन मैं ख़ुद रास्तबाज़ साबित हो कर तेरे चेहरे का मुशाहदा करूँगा, मैं जाग कर तेरी सूरत से सेर हो जाऊँगा।

दाऊद का फ़त्ह का गीत

18 [1] रब के ख़ादिम दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। दाऊद ने रब के लिए यह गीत गाया जब रब ने उसे तमाम दुश्मनों और साऊल से बचाया। वह बोला,

ऐ रब मेरी क़ुव्वत, मैं तुझे प्यार करता हूँ।

[2] रब मेरी चटान, मेरा क़िला और मेरा नजातदहिन्दा है। मेरा ख़ुदा मेरी चटान है जिस में मैं पनाह लेता हूँ। वह मेरी ढाल, मेरी नजात का पहाड़, मेरा बुलन्द हिसार है।

[3] मैं रब को पुकारता हूँ, उस की तम्जीद हो! तब वह मुझे दुश्मनों से छुटकारा देता है।

[4] मौत के रस्सों ने मुझे घेर लिया, हलाकत के सैलाब ने मेरे दिल पर दहशत तारी की।

[5] पाताल के रस्सों ने मुझे जकड़ लिया, मौत ने मेरे रास्ते में अपने फंदे डाल दिए।

[6] जब मैं मुसीबत में फंस गया तो मैं ने रब को पुकारा। मैं ने मदद के लिए अपने ख़ुदा से फ़र्याद की तो उस ने अपनी सुकूनतगाह से मेरी आवाज़ सुनी, मेरी चीख़ें उस के कान तक पहुँच गईं।

[7] तब ज़मीन लरज़ उठी और थरथराने लगी, पहाड़ों की बुन्यादें रब के ग़ज़ब के सामने काँपने और झूलने लगीं।

[8] उस की नाक से धुआँ निकल आया, उस के मुँह से भस्म करने वाले शोले और दहकते कोएले भड़क उठे।

[9] आसमान को झुका कर वह नाज़िल हुआ। जब उतर आया तो उस के पाँओ के नीचे अंधेरा ही अंधेरा था।

[10] वह करूबी फ़रिश्ते पर सवार हुआ और उड़ कर हवा के परों पर मंडलाने लगा।

[11] उस ने अंधेरे को अपनी छुपने की जगह बनाया, बारिश के काले और घने बादल ख़ैमे की तरह अपने गिर्दागिर्द लगाए।

[12] उस के हुज़ूर की तेज़ रौशनी से उस के बादल ओले और शोलाज़न कोएले ले कर निकल आए।

[13] रब आसमान से कड़कने लगा, अल्लाह तआला की आवाज़ गूँज उठी। तब ओले और शोलाज़न कोएले बरसने लगे।

[14] उस ने अपने तीर चलाए तो दुश्मन तित्तर-बित्तर हो गए। उस की तेज़ बिजली इधर उधर गिरती गई तो उन में हलचल मच गई।

[15] ऐ रब, तू ने डाँटा तो समुन्दर की वादियाँ ज़ाहिर हुईं, जब तू ग़ुस्से में गरजा तो तेरे दम के झोंकों से ज़मीन की बुन्यादें नज़र आईं।

[16] बुलन्दियों पर से अपना हाथ बढ़ा कर उस ने मुझे पकड़ लिया, मुझे गहरे पानी में से खैंच कर निकाल लाया।

17 उस ने मुझे मेरे ज़बरदस्त दुश्मन से बचाया, उन से जो मुझ से नफ़रत करते हैं, जिन पर मैं ग़ालिब न आ सका।

18 जिस दिन मैं मुसीबत में फंस गया उस दिन उन्हों ने मुझ पर हम्ला किया, लेकिन रब मेरा सहारा बना रहा।

19 उस ने मुझे तंग जगह से निकाल कर छुटकारा दिया, क्यूँकि वह मुझ से ख़ुश था।

20 रब मुझे मेरी रास्तबाज़ी का अज्र देता है। मेरे हाथ साफ़ हैं, इस लिए वह मुझे बरकत देता है।

21 क्यूँकि मैं रब की राहों पर चलता रहा हूँ, मैं बदी करने से अपने ख़ुदा से दूर नहीं हुआ।

22 उस के तमाम अह्काम मेरे सामने रहे हैं, मैं ने उस के फ़रमानों को रद्द नहीं किया।

23 उस के सामने ही मैं बेइल्ज़ाम रहा, गुनाह करने से बाज़ रहा हूँ।

24 इस लिए रब ने मुझे मेरी रास्तबाज़ी का अज्र दिया, क्यूँकि उस की आँखों के सामने ही में पाक-साफ़ साबित हुआ।

25 ऐ अल्लाह, जो वफ़ादार है उस के साथ तेरा सुलूक वफ़ादारी का है, जो बेइल्ज़ाम है उस के साथ तेरा सुलूक बेइल्ज़ाम है।

26 जो पाक है उस के साथ तेरा सुलूक पाक है। लेकिन जो कजरौ है उस के साथ तेरा सुलूक भी कजरवी का है।

27 क्यूँकि तू पस्तहालों को नजात देता और मग़रूर आँखों को पस्त करता है।

28 ऐ रब, तू ही मेरा चराग़ जलाता, मेरा ख़ुदा ही मेरे अंधेरे को रौशन करता है।

29 क्यूँकि तेरे साथ मैं फ़ौजी दस्ते पर हम्ला कर सकता, अपने ख़ुदा के साथ दीवार को फलाँग सकता हूँ।

30 अल्लाह की राह कामिल है, रब का फ़रमान ख़ालिस है। जो भी उस में पनाह ले उस की वह ढाल है।

31 क्यूँकि रब के सिवा कौन ख़ुदा है? हमारे ख़ुदा के सिवा कौन चटान है?

32 अल्लाह मुझे क़ुव्वत से कमरबस्ता करता, वह मेरी राह को कामिल कर देता है।

33 वह मेरे पाँओ को हिरन की सी फुरती अता करता, मुझे मज़बूती से मेरी बुलन्दियों पर खड़ा करता है।

34 वह मेरे हाथों को जंग करने की तर्बियत देता है। अब मेरे बाज़ू पीतल की कमान को भी तान लेते हैं।

35 ऐ रब, तू ने मुझे अपनी नजात की ढाल बख़्श दी है। तेरे दहने हाथ ने मुझे क़ाइम रखा, तेरी नर्मी ने मुझे बड़ा बना दिया है।

36 तू मेरे क़दमों के लिए रास्ता बना देता है, इस लिए मेरे टख़ने नहीं डगमगाते।

37 मैं ने अपने दुश्मनों का ताक़्क़ुब करके उन्हें पकड़ लिया, मैं बाज़ न आया जब तक वह ख़त्म न हो गए।

38 मैं ने उन्हें यूँ पाश पाश कर दिया कि दुबारा उठ न सके बल्कि गिर कर मेरे पाँओ तले पड़े रहे।

39 क्यूँकि तू ने मुझे जंग करने के लिए क़ुव्वत से कमरबस्ता कर दिया, तू ने मेरे मुख़ालिफ़ों को मेरे सामने झुका दिया।

40 तू ने मेरे दुश्मनों को मेरे सामने से भगा दिया, और मैं ने नफ़रत करने वालों को तबाह कर दिया।

41 वह मदद के लिए चीख़ते चिल्लाते रहे, लेकिन बचाने वाला कोई नहीं था। वह रब को पुकारते रहे, लेकिन उस ने जवाब न दिया।

42 मैं ने उन्हें चूर चूर करके गर्द की तरह हवा में उड़ा दिया। मैं ने उन्हें कचरे की तरह गली में फैंक दिया।

43 तू ने मुझे क़ौम के झगड़ों से बचा कर अक़्वाम का सरदार बना दिया है। जिस क़ौम से मैं नावाक़िफ़ था वह मेरी ख़िदमत करती है।
44 जूँ ही मैं बात करता हूँ तो लोग मेरी सुनते हैं। परदेसी दबक कर मेरी ख़ुशामद करते हैं।
45 वह हिम्मत हार कर काँपते हुए अपने क़िलों से निकल आते हैं।

46 रब ज़िन्दा है! मेरी चटान की तम्जीद हो! मेरी नजात के ख़ुदा की ताज़ीम हो!
47 वही ख़ुदा है जो मेरा इन्तिक़ाम लेता, अक़्वाम को मेरे ताबे कर देता
48 और मुझे मेरे दुश्मनों से छुटकारा देता है। यक़ीनन तू मुझे मेरे मुख़ालिफ़ों पर सरफ़राज़ करता, मुझे ज़ालिमों से बचाए रखता है।
49 ऐ रब, इस लिए मैं अक़्वाम में तेरी हम्द-ओ-सना करूँगा, तेरे नाम की तारीफ़ में गीत गाऊँगा।
50 क्यूँकि रब अपने बादशाह को बड़ी नजात देता है, वह अपने मसह किए हुए बादशाह दाऊद और उस की औलाद पर हमेशा तक मेहरबान रहेगा।

मख़्लूक़ात में अल्लाह का जलाल

19 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

आसमान अल्लाह के जलाल का एलान करते हैं, आसमानी गुम्बद उस के हाथों का काम बयान करता है।
2 एक दिन दूसरे को इत्तिला देता, एक रात दूसरी को ख़बर पहुँचाती है,
3 लेकिन ज़बान से नहीं। गो उन की आवाज़ सुनाई नहीं देती,
4 तो भी उन की आवाज़ निकल कर पूरी दुनिया में सुनाई देती, उन के अल्फ़ाज़ दुनिया की इन्तिहा तक पहुँच जाते हैं। वहाँ अल्लाह ने आफ़ताब के लिए ख़ैमा लगाया है।
5 जिस तरह दूल्हा अपनी ख़्वाबगाह से निकलता है उसी तरह सूरज निकल कर पहलवान की तरह अपनी दौड़ दौड़ने पर ख़ुशी मनाता है।
6 आसमान के एक सिरे से चढ़ कर उस का चक्कर दूसरे सिरे तक लगता है। उस की तपती गर्मी से कोई भी चीज़ पोशीदा नहीं रहती।

7 रब की शरीअत कामिल है, उस से जान में जान आ जाती है। रब के अह्काम क़ाबिल-ए-एतिमाद हैं, उन से सादालौह दानिशमन्द हो जाता है।
8 रब की हिदायात बा-इन्साफ़ हैं, उन से दिल बाग़ बाग़ हो जाता है। रब के अह्काम पाक हैं, उन से आँखें चमक उठती हैं।
9 रब का ख़ौफ़ पाक है और अबद तक क़ाइम रहेगा। रब के फ़रमान सच्चे और सब के सब रास्त हैं।
10 वह सोने बल्कि ख़ालिस सोने के ढेर से ज़्यादा मर्ग़ूब हैं। वह शहद बल्कि छत्ते के ताज़ा शहद से ज़्यादा मीठे हैं।

11 उन से तेरे ख़ादिम को आगाह किया जाता है, उन पर अमल करने से बड़ा अज्र मिलता है।
12 जो ख़ताएँ बेख़बरी में सरज़द हुईं कौन उन्हें जानता है? मेरे पोशीदा गुनाहों को मुआफ़ कर!
13 अपने ख़ादिम को गुस्ताख़ों से महफ़ूज़ रख ताकि वह मुझ पर हुकूमत न करें। तब मैं बेइल्ज़ाम हो कर संगीन गुनाह से पाक रहूँगा।

14 ऐ रब, बख़्श दे कि मेरे मुँह की बातें और मेरे दिल की सोच-बिचार तुझे पसन्द आए। तू ही मेरी चटान और मेरा छुड़ाने वाला है।

फ़त्ह के लिए दुआ

20 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

मुसीबत के दिन रब तेरी सुने, याक़ूब के ख़ुदा का
नाम तुझे महफ़ूज़ रखे।
2 वह मक़्दिस से तेरी मदद भेजे, वह सिय्यून से तेरा
सहारा बने।
3 वह तेरी ग़ल्ला की नज़रें याद करे, तेरी भस्म होने
वाली क़ुर्बानियाँ क़बूल फ़रमाए। (सिलाह)
4 वह तेरे दिल की आर्ज़ू पूरी करे, तेरे तमाम मन्सूबों
को कामयाबी बख़्शे।
5 तब हम तेरी नजात की ख़ुशी मनाएँगे, हम अपने
ख़ुदा के नाम में फ़त्ह का झंडा गाड़ेंगे। रब तेरी तमाम
गुज़ारिशें पूरी करे।

6 अब मैं ने जान लिया है कि रब अपने मसह किए
हुए बादशाह की मदद करता है। वह अपने मुक़द्दस
आसमान से उस की सुन कर अपने दहने हाथ की
क़ुदरत से उसे छुटकारा देगा।
7 बाज़ अपने रथों पर, बाज़ अपने घोड़ों पर फ़ख़र
करते हैं, लेकिन हम रब अपने ख़ुदा के नाम पर फ़ख़र
करेंगे।
8 हमारे दुश्मन झुक कर गिर जाएंगे, लेकिन हम उठ
कर मज़बूती से खड़े रहेंगे।

9 ऐ रब, हमारी मदद फ़रमा! बादशाह हमारी सुने
जब हम मदद के लिए पुकारें।

बादशाह के लिए अल्लाह की मदद

21 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए।
ऐ रब, बादशाह तेरी क़ुव्वत देख कर शादमान है,
वह तेरी नजात की कितनी बड़ी ख़ुशी मनाता है।
2 तू ने उस की दिली ख़्वाहिश पूरी की और इन्कार
न किया जब उस की आर्ज़ू ने होंटों पर अल्फ़ाज़ का
रूप धारा। (सिलाह)
3 क्यूँकि तू अच्छी अच्छी बरकतें अपने साथ ले
कर उस से मिलने आया, तू ने उसे ख़ालिस सोने का
ताज पहनाया।
4 उस ने तुझ से ज़िन्दगी पाने की आर्ज़ू की तो तू ने
उसे उम्र की दराज़ी बख़्शी, मज़ीद इतने दिन कि उन
की इन्तिहा नहीं।
5 तेरी नजात से उसे बड़ी इज़्ज़त हासिल हुई, तू ने
उसे शान-ओ-शौकत से आरास्ता किया।
6 क्यूँकि तू उसे अबद तक बरकत देता, उसे अपने
चेहरे के हुज़ूर ला कर निहायत ख़ुश कर देता है।
7 क्यूँकि बादशाह रब पर एतिमाद करता है, अल्लाह
तआला की शफ़क़त उसे डगमगाने से बचाएगी।

8 तेरे दुश्मन तेरे क़ब्ज़े में आ जाएंगे, जो तुझ से
नफ़रत करते हैं उन्हें तेरा दहना हाथ पकड़ लेगा।
9 जब तू उन पर ज़ाहिर होगा तो वह भड़कती भट्टी
की सी मुसीबत में फंस जाएंगे। रब अपने ग़ज़ब में
उन्हें हड़प कर लेगा, और आग उन्हें खा जाएगी।
10 तू उन की औलाद को रू-ए-ज़मीन पर से मिटा
डालेगा, इन्सानों में उन का नाम-ओ-निशान तक नहीं
रहेगा।
11 गो वह तेरे ख़िलाफ़ साज़िशें करते हैं तो भी उन
के बुरे मन्सूबे नाकाम रहेंगे।
12 क्यूँकि तू उन्हें भगा कर उन के चेहरों को अपने
तीरों का निशाना बना देगा।
13 ऐ रब, उठ और अपनी क़ुदरत का इज़्हार कर
ताकि हम तेरी क़ुदरत की तम्जीद में साज़ बजा कर
गीत गाएँ।

रास्तबाज़ का दुख

22 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। तर्ज़ : तुलू-ए-सुब्ह की हिरनी।
ऐ मेरे ख़ुदा, ऐ मेरे ख़ुदा, तू ने मुझे क्यूँ तर्क कर
दिया है? मैं चीख़ रहा हूँ, लेकिन मेरी नजात नज़र
नहीं आती।
2 ऐ मेरे ख़ुदा, दिन को मैं चिल्लाता हूँ, लेकिन तू
जवाब नहीं देता। रात को पुकारता हूँ, लेकिन आराम
नहीं पाता।

3 लेकिन तू क़ुद्दूस है, तू जो इस्राईल की मद्हसराई
पर तख़्तनशीन होता है।
4 तुझ पर हमारे बापदादा ने भरोसा रखा, और जब
भरोसा रखा तो तू ने उन्हें रिहाई दी।
5 जब उन्हों ने मदद के लिए तुझे पुकारा तो बचने
का रास्ता खुल गया। जब उन्हों ने तुझ पर एतिमाद
किया तो शर्मिन्दा न हुए।

6 लेकिन मैं कीड़ा हूँ, मुझे इन्सान नहीं समझा
जाता। लोग मेरी बेइज़्ज़ती करते, मुझे हक़ीर जानते
हैं।
7 सब मुझे देख कर मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं। वह मुँह
बना कर तौबा तौबा करते और कहते हैं,
8 "उस ने अपना मुआमला रब के सपुर्द किया है।
अब रब ही उसे बचाए। वही उसे छुटकारा दे, क्यूँकि
वही उस से ख़ुश है।"

9 यक़ीनन तू मुझे माँ के पेट से निकाल लाया। मैं
अभी माँ का दूध पीता था कि तू ने मेरे दिल में भरोसा
पैदा किया।
10 जूँ ही मैं पैदा हुआ मुझे तुझ पर छोड़ दिया गया।
माँ के पेट से ही तू मेरा ख़ुदा रहा है।
11 मुझ से दूर न रह। क्यूँकि मुसीबत ने मेरा दामन
पकड़ लिया है, और कोई नहीं जो मेरी मदद करे।
12 मुतअद्दिद बैलों ने मुझे घेर लिया, बसन के
ताक़तवर साँड चारों तरफ़ जमा हो गए हैं।
13 मेरे ख़िलाफ़ उन्हों ने अपने मुँह खोल दिए हैं, उस
दहाड़ते हुए शेरबबर की तरह जो शिकार को फाड़ने
के जोश में आ गया है।
14 मुझे पानी की तरह ज़मीन पर उंडेला गया है,
मेरी तमाम हड्डियाँ अलग अलग हो गई हैं, जिस्म के
अन्दर मेरा दिल मोम की तरह पिघल गया है।
15 मेरी ताक़त ठीकरे की तरह ख़ुश्क हो गई, मेरी
ज़बान तालू से चिपक गई है। हाँ, तू ने मुझे मौत की
ख़ाक में लिटा दिया है।
16 कुत्तों ने मुझे घेर रखा, शरीरों के जथ्थे ने मेरा
इहाता किया है। उन्हों ने मेरे हाथों और पाँओ को
छेद डाला है।
17 मैं अपनी हड्डियों को गिन सकता हूँ। लोग घूर
घूर कर मेरी मुसीबत से ख़ुश होते हैं।
18 वह आपस में मेरे कपड़े बाँट लेते और मेरे
लिबास पर क़ुरआ डालते हैं।

19 लेकिन तू ऐ रब, दूर न रह! ऐ मेरी क़ुव्वत, मेरी
मदद करने के लिए जल्दी कर!
20 मेरी जान को तलवार से बचा, मेरी ज़िन्दगी को
कुत्ते के पंजे से छुड़ा।
21 शेर के मुँह से मुझे मख़्लसी दे, जंगली बैलों के
सींगों से रिहाई अता कर।

ऐ रब, तू ने मेरी सुनी है!
22 मैं अपने भाइयों के सामने तेरे नाम का एलान
करूँगा, जमाअत के दरमियान तेरी मद्हसराई
करूँगा।
23 तुम जो रब का ख़ौफ़ मानते हो, उस की तम्जीद
करो! ऐ याक़ूब की तमाम औलाद, उस का एहतिराम
कर! ऐ इस्राईल के तमाम फ़र्ज़न्दो, उस से ख़ौफ़
खाओ!
24 क्यूँकि न उस ने मुसीबतज़दा का दुख हक़ीर
जाना, न उस की तक्लीफ़ से घिन खाई। उस ने अपना
मुँह उस से न छुपाया बल्कि उस की सुनी जब वह
मदद के लिए चीख़ने-चिल्लाने लगा।
25 ऐ ख़ुदा, बड़े इजतिमा में मैं तेरी सताइश करूँगा,
ख़ुदातरसों के सामने अपनी मन्नत पूरी करूँगा।
26 नाचार जी भर कर खाएँगे, रब के तालिब उस की
हम्द-ओ-सना करेंगे। तुम्हारे दिल अबद तक ज़िन्दा
रहें!
27 लोग दुनिया की इन्तिहा तक रब को याद करके
उस की तरफ़ रुजू करेंगे। ग़ैरअक़्वाम के तमाम
ख़ानदान उसे सिज्दा करेंगे।

28 क्यूँकि रब को ही बादशाही का इख़तियार
हासिल है, वही अक़्वाम पर हुकूमत करता है।

29 दुनिया के तमाम बड़े लोग उस के हुज़ूर खाएँगे
और सिज्दा करेंगे। ख़ाक में उतरने वाले सब उस के
सामने झुक जाएंगे, वह सब जो अपनी ज़िन्दगी को
ख़ुद क़ाइम नहीं रख सकते।
30 उस के फ़र्ज़न्द उस की ख़िदमत करेंगे। एक आने
वाली नस्ल को रब के बारे में सुनाया जाएगा।
31 हाँ, वह आ कर उस की रास्ती एक क़ौम को
सुनाएँगे जो अभी पैदा नहीं हुई, क्यूँकि उस ने यह
कुछ किया है।

अच्छा चरवाहा

23 1 दाऊद का ज़बूर।
रब मेरा चरवाहा है, मुझे कमी न होगी।
2 वह मुझे शादाब चरागाहों में चराता और पुरसुकून
चश्मों के पास ले जाता है।
3 वह मेरी जान को ताज़ादम करता और अपने नाम
की ख़ातिर रास्ती की राहों पर मेरी क़ियादत करता
है।
4 गो मैं तारीकतरीन वादी में से गुज़रूँ मैं मुसीबत
से नहीं डरूँगा, क्यूँकि तू मेरे साथ है, तेरी लाठी और
तेरा असा मुझे तसल्ली देते हैं।

5 तू मेरे दुश्मनों के रू-ब-रू मेरे सामने मेज़ बिछा
कर मेरे सर को तेल से तर-ओ-ताज़ा करता है। मेरा
प्याला तेरी बरकत से छलक उठता है।
6 यक़ीनन भलाई और शफ़क़त उम्र भर मेरे साथ
साथ रहेंगी, और मैं जीते जी रब के घर में सुकूनत
करूँगा।

बादशाह का इस्तिक़्बाल

24 1 दाऊद का ज़बूर।
ज़मीन और जो कुछ उस पर है रब का
है, दुनिया और उस के बाशिन्दे उसी के हैं। 2 क्यूँकि
उस ने ज़मीन की बुन्याद समुन्दरों पर रखी और उसे
दरयाओं पर क़ाइम किया।

3 किस को रब के पहाड़ पर चढ़ने की इजाज़त है?
कौन उस के मुक़द्दस मक़ाम में खड़ा हो सकता है?
4 वह जिस के हाथ पाक और दिल साफ़ हैं, जो न
फ़रेब का इरादा रखता, न क़सम खा कर झूट बोलता
है।
5 वह रब से बरकत पाएगा, उसे अपनी नजात के
ख़ुदा से रास्ती मिलेगी।
6 यह होगा उन लोगों का हाल जो अल्लाह की मर्ज़ी
दरयाफ़्त करते, जो तेरे चेहरे के तालिब होते हैं, ऐ
याक़ूब के ख़ुदा। (सिलाह)

7 ऐ फाटको, खुल जाओ! ऐ क़दीम दरवाज़ो, पूरे
तौर पर खुल जाओ ताकि जलाल का बादशाह
दाख़िल हो जाए।
8 जलाल का बादशाह कौन है? रब जो क़वी और
क़ादिर है, रब जो जंग में ज़ोर-आवर है।
9 ऐ फाटको, खुल जाओ! ऐ क़दीम दरवाज़ो, पूरे
तौर पर खुल जाओ ताकि जलाल का बादशाह
दाख़िल हो जाए।
10 जलाल का बादशाह कौन है? रब्ब-उल-
अफ़्वाज, वही जलाल का बादशाह है। (सिलाह)

मुआफ़ी और राहनुमाई के लिए दुआ

25 1 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मैं तेरा आरज़ूमन्द हूँ।
2 ऐ मेरे ख़ुदा, तुझ पर मैं भरोसा रखता हूँ। मुझे
शर्मिन्दा न होने दे कि मेरे दुश्मन मुझ पर शादियाना
बजाएँ।
3 क्यूँकि जो भी तुझ पर उम्मीद रखे वह शर्मिन्दा
नहीं होगा जबकि जो बिलावजह बेवफ़ा होते हैं वही
शर्मिन्दा हो जाएंगे।

[4]ऐ रब, अपनी राहें मुझे दिखा, मुझे अपने रास्तों की तालीम दे।
[5]अपनी सच्चाई के मुताबिक़ मेरी राहनुमाई कर, मुझे तालीम दे। क्यूँकि तू मेरी नजात का ख़ुदा है। दिन भर मैं तेरे इन्तिज़ार में रहता हूँ।
[6]ऐ रब, अपना वह रहम और मेहरबानी याद कर जो तू क़दीम ज़माने से करता आया है।
[7]ऐ रब, मेरी जवानी के गुनाहों और मेरी बेवफ़ा हरकतों को याद न कर बल्कि अपनी भलाई की ख़ातिर और अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मेरा ख़याल रख।

[8]रब भला और आदिल है, इस लिए वह गुनाहगारों को सहीह राह पर चलने की तल्क़ीन करता है।
[9]वह फ़रोतनों की इन्साफ़ की राह पर राहनुमाई करता, हलीमों को अपनी राह की तालीम देता है।
[10]जो रब के अह्द और अह्काम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारें उन्हें रब मेहरबानी और वफ़ादारी की राहों पर ले चलता है।
[11]ऐ रब, मेरा क़ुसूर संगीन है, लेकिन अपने नाम की ख़ातिर उसे मुआफ़ कर।
[12]रब का ख़ौफ़ मानने वाला कहाँ है? रब ख़ुद उसे उस राह की तालीम देगा जो उसे चुनना है।
[13]तब वह ख़ुशहाल रहेगा, और उस की औलाद मुल्क को मीरास में पाएगी।
[14]जो रब का ख़ौफ़ मानें उन्हें वह अपने हमराज़ बना कर अपने अह्द की तालीम देता है।

[15]मेरी आँखें रब को तकती रहती हैं, क्यूँकि वही मेरे पाँओ को जाल से निकाल लेता है।
[16]मेरी तरफ़ माइल हो जा, मुझ पर मेहरबानी कर! क्यूँकि मैं तन्हा और मुसीबतज़दा हूँ।
[17]मेरे दिल की परेशानियाँ दूर कर, मुझे मेरी तकालीफ़ से रिहाई दे।
[18]मेरी मुसीबत और तंगी पर नज़र डाल कर मेरी ख़ताओं को मुआफ़ कर।
[19]देख, मेरे दुश्मन कितने ज़्यादा हैं, वह कितना ज़ुल्म करके मुझ से नफ़रत करते हैं।
[20]मेरी जान को महफ़ूज़ रख, मुझे बचा! मुझे शर्मिन्दा न होने दे, क्यूँकि मैं तुझ में पनाह लेता हूँ।
[21]बेगुनाही और दयानतदारी मेरी पहरादारी करें, क्यूँकि मैं तेरे इन्तिज़ार में रहता हूँ।
[22]ऐ अल्लाह, फ़िद्या दे कर इस्राईल को उस की तमाम तकालीफ़ से आज़ाद कर!

बेगुनाह का इक़रार और इल्तिजा

26 [1]दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मेरा इन्साफ़ कर, क्यूँकि मेरा चाल-चलन बेक़ुसूर है। मैं ने रब पर भरोसा रखा है, और मैं डाँवाँडोल नहीं हो जाऊँगा।

[2]ऐ रब, मुझे जाँच ले, मुझे आज़मा कर दिल की तह तक मेरा मुआइना कर।
[3]क्यूँकि तेरी शफ़क़त मेरी आँखों के सामने रही है, मैं तेरी सच्ची राह पर चलता रहा हूँ।
[4]न मैं धोकेबाज़ों की मजलिस में बैठता, न चालाक लोगों से रिफ़ाक़त रखता हूँ।
[5]मुझे शरीरों के इजतिमाओं से नफ़रत है, बेदीनों के साथ मैं बैठता भी नहीं।
[6]ऐ रब, मैं अपने हाथ धो कर अपनी बेगुनाही का इज़हार करता हूँ। मैं तेरी क़ुर्बानगाह के गिर्द फिर कर
[7]बुलन्द आवाज़ से तेरी हम्द-ओ-सना करता, तेरे तमाम मोजिज़ात का एलान करता हूँ।
[8]ऐ रब, तेरी सुकूनतगाह मुझे प्यारी है, जिस जगह तेरा जलाल ठहरता है वह मुझे अज़ीज़ है।

[9]मेरी जान को मुझ से छीन कर मुझे गुनाहगारों में शामिल न कर! मेरी ज़िन्दगी को मिटा कर मुझे ख़ूँख़्वारों में शुमार न कर,
[10]ऐसे लोगों में जिन के हाथ शर्मनाक हरकतों से आलूदा हैं, जो हर वक़्त रिश्वत खाते हैं।

[11] क्यूँकि मैं बेगुनाह ज़िन्दगी गुज़ारता हूँ। फ़िद्या दे कर मुझे छुटकारा दे! मुझ पर मेहरबानी कर!

[12] मेरे पाँओ हमवार ज़मीन पर क़ाइम हो गए हैं, और मैं इजतिमाओं में रब की सताइश करूँगा।

अल्लाह से रिफ़ाक़त

27 [1] दाऊद का ज़बूर।
रब मेरी रौशनी और मेरी नजात है, मैं किस से डरूँ? रब मेरी जान की पनाहगाह है, मैं किस से दहशत खाऊँ?
[2] जब शरीर मुझ पर हम्ला करें ताकि मुझे हड़प कर लें, जब मेरे मुख़ालिफ़ और दुश्मन मुझ पर टूट पड़ें तो वह ठोकर खा कर गिर जाएंगे।
[3] गो फ़ौज मुझे घेर ले मेरा दिल ख़ौफ़ नहीं खाएगा, गो मेरे ख़िलाफ़ जंग छिड़ जाए मेरा भरोसा क़ाइम रहेगा।

[4] रब से मेरी एक गुज़ारिश है, मैं एक ही बात चाहता हूँ। यह कि जीते जी रब के घर में रह कर उस की शफ़क़त से लुत्फ़अन्दोज़ हो सकूँ, कि उस की सुकूनतगाह में ठहर कर महव-ए-ख़याल रह सकूँ।
[5] क्यूँकि मुसीबत के दिन वह मुझे अपनी सुकूनतगाह में पनाह देगा, मुझे अपने ख़ैमे में छुपा लेगा, मुझे उठा कर ऊँची चटान पर रखेगा।
[6] अब मैं अपने दुश्मनों पर सरबुलन्द हूँगा, अगरचे उन्हों ने मुझे घेर रखा है। मैं उस के ख़ैमे में ख़ुशी के नारे लगा कर क़ुर्बानियाँ पेश करूँगा, साज़ बजा कर रब की मद्हसराई करूँगा।

[7] ऐ रब, मेरी आवाज़ सुन जब मैं तुझे पुकारूँ, मुझ पर मेहरबानी करके मेरी सुन।
[8] मेरा दिल तुझे याद दिलाता है कि तू ने ख़ुद फ़रमाया, “मेरे चेहरे के तालिब रहो!” ऐ रब, मैं तेरे ही चेहरे का तालिब रहा हूँ।
[9] अपने चेहरे को मुझ से छुपाए न रख, अपने ख़ादिम को ग़ुस्से से अपने हुज़ूर से न निकाल। क्यूँकि तू ही मेरा सहारा रहा है। ऐ मेरी नजात के ख़ुदा, मुझे न छोड़, मुझे तर्क न कर।
[10] क्यूँकि मेरे माँ-बाप ने मुझे तर्क कर दिया है, लेकिन रब मुझे क़बूल करके अपने घर में लाएगा।
[11] ऐ रब, मुझे अपनी राह की तर्बियत दे, हमवार रास्ते पर मेरी राहनुमाई कर ताकि अपने दुश्मनों से महफ़ूज़ रहूँ।
[12] मुझे मुख़ालिफ़ों के लालच में न आने दे, क्यूँकि झूटे गवाह मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं जो तशद्दुद करने के लिए तय्यार हैं।
[13] लेकिन मेरा पूरा ईमान यह है कि मैं ज़िन्दों के मुल्क में रह कर रब की भलाई देखूँगा।

[14] रब के इन्तिज़ार में रह! मज़बूत और दिलेर हो, और रब के इन्तिज़ार में रह!

मदद के लिए दुआ और जवाब के लिए शुक्रगुज़ारी

28 [1] दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मैं तुझे पुकारता हूँ। ऐ मेरी चटान, ख़ामोशी से अपना मुँह मुझ से न फेर। क्यूँकि अगर तू चुप रहे तो मैं मौत के गढ़े में उतरने वालों की मानिन्द हो जाऊँगा।
[2] मेरी इल्तिजाएँ सुन जब मैं चीख़ते चिल्लाते तुझ से मदद माँगता हूँ, जब मैं अपने हाथ तेरी सुकूनतगाह के मुक़द्दसतरीन कमरे की तरफ़ उठाता हूँ।
[3] मुझे उन बेदीनों के साथ घसीट कर सज़ा न दे जो ग़लत काम करते हैं, जो अपने पड़ोसियों से बज़ाहिर दोस्ताना बातें करते, लेकिन दिल में उन के ख़िलाफ़ बुरे मन्सूबे बांधते हैं।
[4] उन्हें उन की हरकतों और बुरे कामों का बदला दे। जो कुछ उन के हाथों से सरज़द हुआ है उस की पूरी सज़ा दे। उन्हें उतना ही नुक़सान पहुँचा दे जितना उन्हों ने दूसरों को पहुँचाया है।

[5]क्यूँकि न वह रब के आमाल पर, न उस के हाथों
के काम पर तवज्जुह देते हैं। अल्लाह उन्हें ढा देगा
और दुबारा कभी तामीर नहीं करेगा।

[6]रब की तम्जीद हो, क्यूँकि उस ने मेरी इल्तिजा
सुन ली।
[7]रब मेरी क़ुव्वत और मेरी ढाल है। उस पर मेरे
दिल ने भरोसा रखा, उस से मुझे मदद मिली है। मेरा
दिल शादियाना बजाता है, मैं गीत गा कर उस की
सताइश करता हूँ।
[8]रब अपनी क़ौम की क़ुव्वत और अपने मसह
किए हुए ख़ादिम का नजातबख़्श क़िला है।
[9]ऐ रब, अपनी क़ौम को नजात दे! अपनी मीरास
को बरकत दे! उन की गल्लाबानी करके उन्हें हमेशा
तक उठाए रख।

रब के जलाल की तम्जीद

29 [1]दाऊद का ज़बूर।
ऐ अल्लाह के फ़र्ज़न्दो, रब की तम्जीद
करो! रब के जलाल और क़ुदरत की सताइश करो!
[2]रब के नाम को जलाल दो। मुक़द्दस लिबास से
आरास्ता हो कर रब को सिज्दा करो।
[3]रब की आवाज़ समुन्दर के ऊपर गूँजती है।
जलाल का ख़ुदा गरजता है, रब गहरे पानी के ऊपर
गरजता है।
[4]रब की आवाज़ ज़ोरदार है, रब की आवाज़
पुरजलाल है।
[5]रब की आवाज़ देवदार के दरख़्तों को तोड़
डालती है, रब लुबनान के देवदार के दरख़्तों को
टुकड़े टुकड़े कर देता है।
[6]वह लुबनान को बछड़े और कोह-ए-सिर्यून [w]को
जंगली बैल के बच्चे की तरह कूदने फाँदने देता है।
[7]रब की आवाज़ आग के शोले भड़का देती है।
[8]रब की आवाज़ रेगिस्तान को हिला देती है, रब
दश्त-ए-क़ादिस को काँपने देता है।
[9]रब की आवाज़ सुन कर हिरनी दर्द-ए-ज़ह में
मुब्तला हो जाती और जंगलों के पत्ते झड़ जाते
हैं। लेकिन उस की सुकूनतगाह में सब पुकारते हैं,
"जलाल!"
[10]रब सैलाब के ऊपर तख़्तनशीन है, रब बादशाह
की हैसियत से अबद तक तख़्तनशीन है।
[11]रब अपनी क़ौम को तक़वियत देगा, रब अपने
लोगों को सलामती की बरकत देगा।

मौत से छुटकारे पर शुक्रगुज़ारी

30 [1]दाऊद का ज़बूर। रब के घर की
मख़्सूसियत के मौक़े पर गीत।
ऐ रब, मैं तेरी सताइश करता हूँ, क्यूँकि तू ने मुझे
गहराइयों में से खैंच निकाला। तू ने मेरे दुश्मनों को
मुझ पर बग़लें बजाने का मौक़ा नहीं दिया।
[2]ऐ रब मेरे ख़ुदा, मैं ने चीख़ते चिल्लाते हुए तुझ से
मदद माँगी, और तू ने मुझे शिफ़ा दी।
[3]ऐ रब, तू मेरी जान को पाताल से निकाल लाया,
तू ने मेरी जान को मौत के गढ़े में उतरने से बचाया
है।
[4]ऐ ईमानदारो, साज़ बजा कर रब की तारीफ़ में
गीत गाओ। उस के मुक़द्दस नाम की हम्द-ओ-सना
करो।
[5]क्यूँकि वह लम्हा भर के लिए ग़ुस्से होता, लेकिन
ज़िन्दगी भर के लिए मेहरबानी करता है। गो शाम को
रोना पड़े, लेकिन सुब्ह को हम ख़ुशी मनाएँगे।

[6]जब हालात पुरसुकून थे तो मैं बोला, "मैं कभी
नहीं डगमगाऊँगा।"
[7]ऐ रब, जब तू मुझ से ख़ुश था तो तू ने मुझे मज़बूत
पहाड़ पर रख दिया। लेकिन जब तू ने अपना चेहरा
मुझ से छुपा लिया तो मैं सख़्त घबरा गया।

---
[w]सिर्यून हर्मून का दूसरा नाम है।

8 ऐ रब, मैं ने तुझे पुकारा, हाँ ख़ुदावन्द से मैं ने
इल्तिजा की,
9 "क्या फ़ाइदा है अगर मैं हलाक हो कर मौत के
गढ़े में उतर जाऊँ? क्या ख़ाक तेरी सताइश करेगी?
क्या वह लोगों को तेरी वफ़ादारी के बारे में बताएगी?
10 ऐ रब, मेरी सुन, मुझ पर मेहरबानी कर। ऐ रब,
मेरी मदद करने के लिए आ!"

11 तू ने मेरा मातम ख़ुशी के नाच में बदल दिया,
तू ने मेरे मातमी कपड़े उतार कर मुझे शादमानी से
मुलब्बस किया।
12 क्यूँकि तू चाहता है कि मेरी जान ख़ामोश न हो
बल्कि गीत गा कर तेरी तम्जीद करती रहे। ऐ रब मेरे
ख़ुदा, मैं अबद तक तेरी हम्द-ओ-सना करूँगा।

हिफ़ाज़त के लिए दुआ

31 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए।
ऐ रब, मैं ने तुझ में पनाह ली है। मुझे कभी शर्मिन्दा
न होने दे बल्कि अपनी रास्ती के मुताबिक़ मुझे बचा!
2 अपना कान मेरी तरफ़ झुका, जल्द ही मुझे
छुटकारा दे। चटान का मेरा बुर्ज हो, पहाड़ का क़िला
जिस में मैं पनाह ले कर नजात पा सकूँ।

3 क्यूँकि तू मेरी चटान, मेरा क़िला है, अपने नाम
की ख़ातिर मेरी राहनुमाई, मेरी क़ियादत कर।
4 मुझे उस जाल से निकाल दे जो मुझे पकड़ने के
लिए चुपके से बिछाया गया है। क्यूँकि तू ही मेरी
पनाहगाह है।
5 मैं अपनी रूह तेरे हाथों में सौंपता हूँ। ऐ रब, ऐ
वफ़ादार ख़ुदा, तू ने फ़िद्या दे कर मुझे छुड़ाया है!

6 मैं उन से नफ़रत रखता हूँ जो बेकार बुतों से लिपटे
रहते हैं। मैं तो रब पर भरोसा रखता हूँ।
7 मैं बाग़ बाग़ हूँगा और तेरी शफ़क़त की ख़ुशी
मनाऊँगा, क्यूँकि तू ने मेरी मुसीबत देख कर मेरी
जान की परेशानी का ख़याल किया है।
8 तू ने मुझे दुश्मन के हवाले नहीं किया बल्कि मेरे
पाँओ को खुले मैदान में क़ाइम कर दिया है।

9 ऐ रब, मुझ पर मेहरबानी कर, क्यूँकि मैं मुसीबत
में हूँ। ग़म के मारे मेरी आँखें सूज गई हैं, मेरी जान
और जिस्म गल रहे हैं।
10 मेरी ज़िन्दगी दुख की चक्की में पिस रही है, मेरे
साल आहें भरते भरते ज़ाए हो रहे हैं। मेरे क़ुसूर की
वजह से मेरी ताक़त जवाब दे गई, मेरी हड्डियाँ गलने
सड़ने लगी हैं।
11 मैं अपने दुश्मनों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन
गया हूँ बल्कि मेरे हमसाय भी मुझे लान-तान करते,
मेरे जानने वाले मुझ से दहशत खाते हैं। गली में जो
भी मुझे देखे मुझ से भाग जाता है।
12 मैं मुर्दों की मानिन्द उन की याददाश्त से मिट
गया हूँ, मुझे ठीकरे की तरह फैंक दिया गया है।
13 बहुतों की अफ़्वाहें मुझ तक पहुँच गई हैं, चारों
तरफ़ से हौलनाक ख़बरें मिल रही हैं। वह मिल कर
मेरे ख़िलाफ़ साज़िशें कर रहे, मुझे क़त्ल करने के
मन्सूबे बांध रहे हैं।

14 लेकिन मैं ऐ रब, तुझ पर भरोसा रखता हूँ। मैं
कहता हूँ, "तू मेरा ख़ुदा है!"
15 मेरी तक़्दीर [x]तेरे हाथ में है। मुझे मेरे दुश्मनों के
हाथ से बचा, उन से जो मेरे पीछे पड़ गए हैं।
16 अपने चेहरे का नूर अपने ख़ादिम पर चमका,
अपनी मेहरबानी से मुझे नजात दे।
17 ऐ रब, मुझे शर्मिन्दा न होने दे, क्यूँकि मैं ने तुझे
पुकारा है। मेरे बजाए बेदीनों के मुँह काले हो जाएँ,
वह पाताल में उतर कर चुप हो जाएँ।

[x]लफ़्ज़ी तर्जुमा : मेरे औक़ात।

18 उन के फ़रेबदिह होंट बन्द हो जाएँ, क्यूँकि वह
तकब्बुर और हिक़ारत से रास्तबाज़ के ख़िलाफ़ कुफ़्र
बकते हैं।

19 तेरी भलाई कितनी अज़ीम है! तू उसे उन के लिए
तय्यार रखता है जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं, उसे उन्हें
दिखाता है जो इन्सानों के सामने से तुझ में पनाह
लेते हैं।
20 तू उन्हें अपने चेहरे की आड़ में लोगों के हम्लों से
छुपा लेता, उन्हें ख़ैमे में ला कर इल्ज़ामतराश ज़बानों
से महफ़ूज़ रखता है।
21 रब की तम्जीद हो, क्यूँकि जब शहर का मुहासरा
हो रहा था तो उस ने मोजिज़ाना तौर पर मुझ पर
मेहरबानी की।
22 उस वक़्त मैं घबरा कर बोला, "हाय, मैं तेरे हुज़ूर
से मुन्क़ते हो गया हूँ!" लेकिन जब मैं ने चीख़ते
चिल्लाते हुए तुझ से मदद माँगी तो तू ने मेरी इल्तिजा
सुन ली।

23 ऐ रब के तमाम ईमानदारो, उस से मुहब्बत रखो!
रब वफ़ादारों को महफ़ूज़ रखता, लेकिन मग़रूरों को
उन के रवय्ये का पूरा अज्र देगा।
24 चुनाँचे मज़बूत और दिलेर हो, तुम सब जो रब
के इन्तिज़ार में हो।

मुआफ़ी की बरकत (तौबा का दूसरा ज़बूर)

32 1 दाऊद का ज़बूर। हिक्मत का गीत।
मुबारक है वह जिस के जराइम मुआफ़
किए गए, जिस के गुनाह ढाँपे गए हैं।
2 मुबारक है वह जिस का गुनाह रब हिसाब में नहीं
लाएगा और जिस की रूह में फ़रेब नहीं है।

3 जब मैं चुप रहा तो दिन भर आहें भरने से मेरी
हड्डियाँ गलने लगीं।
4 क्यूँकि दिन रात मैं तेरे हाथ के बोझ तले पिसता
रहा, मेरी ताक़त गोया मौसम-ए-गर्मा की झुलसती
तपिश में जाती रही। (सिलाह)
5 तब मैं ने तेरे सामने अपना गुनाह तस्लीम किया,
मैं अपना गुनाह छुपाने से बाज़ आया। मैं बोला, "मैं
रब के सामने अपने जराइम का इक़्रार करूँगा।" तब
तू ने मेरे गुनाह को मुआफ़ कर दिया। (सिलाह)

6 इस लिए तमाम ईमानदार उस वक़्त तुझ से दुआ
करें जब तू मिल सकता है। यक़ीनन जब बड़ा सैलाब
आए तो उन तक नहीं पहुँचेगा।

7 तू मेरी छुपने की जगह है, तू मुझे परेशानी से
महफ़ूज़ रखता, मुझे नजात के नग़्मों से घेर लेता है।
(सिलाह)
8 "मैं तुझे तालीम दूँगा, तुझे वह राह दिखाऊँगा
जिस पर तुझे जाना है। मैं तुझे मश्वरा दे कर तेरी देख-
भाल करूँगा।
9 नासमझ घोड़े या ख़च्चर की मानिन्द न हो, जिन
पर क़ाबू पाने के लिए लगाम और दहाने की ज़रूरत
है, वर्ना वह तेरे पास नहीं आएँगे।"

10 बेदीन की मुतअद्दिद परेशानियाँ होती हैं, लेकिन
जो रब पर भरोसा रखे उसे वह अपनी शफ़्क़त से घेरे
रखता है।
11 ऐ रास्तबाज़ो, रब की ख़ुशी में जश्न मनाओ! ऐ
तमाम दियानतदारो, शादमानी के नारे लगाओ!

अल्लाह की हुकूमत और मदद की तारीफ़

33 1 ऐ रास्तबाज़ो, रब की ख़ुशी मनाओ!
क्यूँकि मुनासिब है कि सीधी राह पर चलने
वाले उस की सताइश करें।
2 सरोद बजा कर रब की हम्द-ओ-सना करो। उस
की तम्जीद में दस तारों वाला साज़ बजाओ।
3 उस की तम्जीद में नया गीत गाओ, महारत से
साज़ बजा कर ख़ुशी के नारे लगाओ।

4 क्यूँकि रब का कलाम सच्चा है, और वह हर काम वफ़ादारी से करता है।
5 उसे रास्तबाज़ी और इन्साफ़ प्यारे हैं, दुनिया रब की शफ़क़त से भरी हुई है।
6 रब के कहने पर आसमान ख़ल्क़ हुआ, उस के मुँह के दम से सितारों का पूरा लश्कर वुजूद में आया।
7 वह समुन्दर के पानी का बड़ा ढेर जमा करता, पानी की गहराइयों को गोदामों में महफ़ूज़ रखता है।
8 कुल दुनिया रब का ख़ौफ़ माने, ज़मीन के तमाम बाशिन्दे उस से दहशत खाएँ।
9 क्यूँकि उस ने फ़रमाया तो फ़ौरन वुजूद में आया, उस ने हुक्म दिया तो उसी वक़्त क़ाइम हुआ।
10 रब अक़्वाम का मन्सूबा नाकाम होने देता, वह उम्मतों के इरादों को शिकस्त देता है।
11 लेकिन रब का मन्सूबा हमेशा तक कामयाब रहता, उस के दिल के इरादे पुश्त-दर-पुश्त क़ाइम रहते हैं।

12 मुबारक है वह क़ौम जिस का ख़ुदा रब है, वह क़ौम जिसे उस ने चुन कर अपनी मीरास बना लिया है।

13 रब आसमान से नज़र डाल कर तमाम इन्सानों का मुलाहज़ा करता है।
14 अपने तख़्त से वह ज़मीन के तमाम बाशिन्दों का मुआइना करता है।
15 जिस ने उन सब के दिलों को तश्कील दिया वह उन के तमाम कामों पर ध्यान देता है।

16 बादशाह की बड़ी फ़ौज उसे नहीं छुड़ाती, और सूरमे की बड़ी ताक़त उसे नहीं बचाती।
17 घोड़ा भी मदद नहीं कर सकता। जो उस पर उम्मीद रखे वह धोका खाएगा। उस की बड़ी ताक़त छुटकारा नहीं देती।
18 यक़ीनन रब की आँख उन पर लगी रहती है जो उस का ख़ौफ़ मानते और उस की मेहरबानी के इन्तिज़ार में रहते हैं,
19 कि वह उन की जान मौत से बचाए और काल में महफ़ूज़ रखे।

20 हमारी जान रब के इन्तिज़ार में है। वही हमारा सहारा, हमारी ढाल है।
21 हमारा दिल उस में ख़ुश है, क्यूँकि हम उस के मुक़द्दस नाम पर भरोसा रखते हैं।

22 ऐ रब, तेरी मेहरबानी हम पर रहे, क्यूँकि हम तुझ पर उम्मीद रखते हैं।

अल्लाह की हिफ़ाज़त

34 1 दाऊद का यह ज़बूर उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब उस ने फ़िलिस्ती बादशाह अबीमलिक के सामने पागल बनने का रूप भर लिया। यह देख कर बादशाह ने उसे भगा दिया। चले जाने के बाद दाऊद ने यह गीत गाया।
हर वक़्त मैं रब की तम्जीद करूँगा, उस की हम्द-ओ-सना हमेशा ही मेरे होंटों पर रहेगी।
2 मेरी जान रब पर फ़ख़र करेगी। मुसीबतज़दा यह सुन कर ख़ुश हो जाएँ।
3 आओ, मेरे साथ रब की ताज़ीम करो। आओ, हम मिल कर उस का नाम सरबुलन्द करें।

4 मैं ने रब को तलाश किया तो उस ने मेरी सुनी। जिन चीज़ों से मैं दहशत खा रहा था उन सब से उस ने मुझे रिहाई दी।
5 जिन की आँखें उस पर लगी रहें वह ख़ुशी से चमकेंगे, और उन के मुँह शर्मिन्दा नहीं होंगे।
6 इस नाचार ने पुकारा तो रब ने उस की सुनी, उस ने उसे उस की तमाम मुसीबतों से नजात दी।

7 जो रब का ख़ौफ़ मानें उन के इर्दगिर्द उस का फ़रिश्ता ख़ैमाज़न हो कर उन को बचाए रखता है।

8 रब की भलाई का तजरिबा करो। मुबारक है वह जो उस में पनाह ले।

9 ऐ रब के मुक़द्दसीन, उस का ख़ौफ़ मानो, क्यूँकि जो उस का ख़ौफ़ मानें उन्हें कमी नहीं।

10 जवान शेरबबर कभी ज़रूरतमन्द और भूके होते हैं, लेकिन रब के तालिबों को किसी भी अच्छी चीज़ की कमी नहीं होगी।

11 ऐ बच्चो, आओ, मेरी बातें सुनो! मैं तुम्हें रब के ख़ौफ़ की तालीम दूँगा।

12 कौन मज़े से ज़िन्दगी गुज़ारना और अच्छे दिन देखना चाहता है?

13 वह अपनी ज़बान को शरीर बातें करने से रोके और अपने होंटों को झूट बोलने से।

14 वह बुराई से मुँह फेर कर नेक काम करे, सुलह-सलामती का तालिब हो कर उस के पीछे लगा रहे।

15 रब की आँखें रास्तबाज़ों पर लगी रहती हैं, और उस के कान उन की इल्तिजाओं की तरफ़ माइल हैं।

16 लेकिन रब का चेहरा उन के ख़िलाफ़ है जो ग़लत काम करते हैं। उन का ज़मीन पर नाम-ओ-निशान तक नहीं रहेगा।

17 जब रास्तबाज़ फ़र्याद करें तो रब उन की सुनता, वह उन्हें उन की तमाम मुसीबत से छुटकारा देता है।

18 रब शिकस्तादिलों के क़रीब होता है, वह उन्हें रिहाई देता है जिन की रूह को ख़ाक में कुचला गया हो।

19 रास्तबाज़ की मुतअद्दिद तकालीफ़ होती हैं, लेकिन रब उसे उन सब से बचा लेता है।

20 वह उस की तमाम हड्डियों की हिफ़ाज़त करता है, एक भी नहीं तोड़ी जाएगी।

21 बुराई बेदीन को मार डालेगी, और जो रास्तबाज़ से नफ़रत करे उसे मुनासिब अज्र मिलेगा।

22 लेकिन रब अपने ख़ादिमों की जान का फ़िद्या देगा। जो भी उस में पनाह ले उसे सज़ा नहीं मिलेगी।

शरीरों के हम्लों से रिहाई के लिए दुआ

35 1 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, उन से झगड़ जो मेरे साथ झगड़ते हैं, उन से लड़ जो मेरे साथ लड़ते हैं।

2 लम्बी और छोटी ढाल पकड़ ले और उठ कर मेरी मदद करने आ।

3 नेज़े और बरछी को निकाल कर उन्हें रोक दे जो मेरा ताक़्क़ुब कर रहे हैं! मेरी जान से फ़रमा, "मैं तेरी नजात हूँ!"

4 जो मेरी जान के लिए कोशाँ हैं उन का मुँह काला हो जाए, वह रुसवा हो जाएँ। जो मुझे मुसीबत में डालने के मन्सूबे बांध रहे हैं वह पीछे हट कर शर्मिन्दा हों।

5 वह हवा में भूसे की तरह उड़ जाएँ जब रब का फ़रिश्ता उन्हें भगा दे।

6 उन का रास्ता तारीक और फिसलना हो जब रब का फ़रिश्ता उन के पीछे पड़ जाए।

7 क्यूँकि उन्हों ने बेसबब और चुपके से मेरे रास्ते में जाल बिछाया, बिलावजह मुझे पकड़ने का गढ़ा खोदा है।

8 इस लिए तबाही अचानक ही उन पर आ पड़े, पहले उन्हें पता ही न चले। जो जाल उन्हों ने चुपके से बिछाया उस में वह ख़ुद उलझ जाएँ, जिस गढ़े को उन्हों ने खोदा उस में वह ख़ुद गिर कर तबाह हो जाएँ।

9 तब मेरी जान रब की ख़ुशी मनाएगी और उस की नजात के बाइस शादमान होगी।

10 मेरे तमाम आज़ा कह उठेंगे, "ऐ रब, कौन तेरी मानिन्द है? कोई भी नहीं! क्यूँकि तू ही मुसीबतज़दा को ज़बरदस्त आदमी से छुटकारा देता, तू ही नाचार और ग़रीब को लूटने वाले के हाथ से बचा लेता है।"

11 ज़ालिम गवाह मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हो रहे हैं। वह ऐसी बातों के बारे में मेरी पूछ-गछ कर रहे हैं जिन से मैं वाक़िफ़ ही नहीं।

12 वह मेरी नेकी के इवज़ मुझे नुक़्सान पहुँचा रहे हैं। अब मेरी जान तन-ए-तनहा है।

13 जब वह बीमार हुए तो मैं ने टाट ओढ़ कर और रोज़ा रख कर अपनी जान को दुख दिया। काश मेरी दुआ मेरी गोद में वापस आए!

14 मैं ने यूँ मातम किया जैसे मेरा कोई दोस्त या भाई हो। मैं मातमी लिबास पहन कर यूँ ख़ाक में झुक गया जैसे अपनी माँ का जनाज़ा हो।

15 लेकिन जब मैं ख़ुद ठोकर खाने लगा तो वह ख़ुश हो कर मेरे ख़िलाफ़ जमा हुए। वह मुझ पर हम्ला करने के लिए इकट्ठे हुए, और मुझे मालूम ही नहीं था। वह मुझे फाड़ते रहे और बाज़ न आए।

16 मुसलसल कुफ़्र बक बक कर वह मेरा मज़ाक़ उड़ाते, मेरे ख़िलाफ़ दाँत पीसते थे।

17 ऐ रब, तू कब तक ख़ामोशी से देखता रहेगा? मेरी जान को उन की तबाहकुन हरकतों से बचा, मेरी ज़िन्दगी को जवान शेरों से छुटकारा दे।

18 तब मैं बड़ी जमाअत में तेरी सताइश और बड़े हुजूम में तेरी तारीफ़ करूँगा।

19 उन्हें मुझ पर बग़लें बजाने न दे जो बेसबब मेरे दुश्मन हैं। उन्हें मुझ पर नाक-भौं चढ़ाने न दे जो बिलावजह मुझ से कीना रखते हैं।

20 क्यूँकि वह ख़ैर और सलामती की बातें नहीं करते बल्कि उन के ख़िलाफ़ फ़रेबदिह मन्सूबे बांधते हैं जो अम्न और सुकून से मुल्क में रहते हैं।

21 वह मुँह फाड़ कर कहते हैं, "लो जी, हम ने अपनी आँखों से उस की हरकतें देखी हैं!"

22 ऐ रब, तुझे सब कुछ नज़र आया है। ख़ामोश न रह! ऐ रब, मुझ से दूर न हो।

23 ऐ रब मेरे ख़ुदा, जाग उठ! मेरे दिफ़ा में उठ कर उन से लड़!

24 ऐ रब मेरे ख़ुदा, अपनी रास्ती के मुताबिक़ मेरा इन्साफ़ कर। उन्हें मुझ पर बग़लें बजाने न दे।

25 वह दिल में न सोचें, "लो जी, हमारा इरादा पूरा हुआ है!" वह न बोलें, "हम ने उसे हड़प कर लिया है।"

26 जो मेरा नुक़्सान देख कर ख़ुश हुए उन सब का मुँह काला हो जाए, वह शर्मिन्दा हो जाएँ। जो मुझे दबा कर अपने आप पर फ़ख़र करते हैं वह शर्मिन्दगी और रुस्वाई से मुलब्बस हो जाएँ।

27 लेकिन जो मेरे इन्साफ़ के आरज़ूमन्द हैं वह ख़ुश हों और शादियाना बजाएँ। वह कहें, "रब की बड़ी तारीफ़ हो, जो अपने ख़ादिम की ख़ैरियत चाहता है।"

28 तब मेरी ज़बान तेरी रास्ती बयान करेगी, वह सारा दिन तेरी तम्जीद करती रहेगी।

अल्लाह की मेहरबानी की तारीफ़

36 1 रब के ख़ादिम दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

बदकारी बेदीन के दिल ही में उस से बात करती है। उस की आँखों के सामने अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं होता,

2 क्यूँकि उस की नज़र में यह बात फ़ख़र का बाइस है कि उसे क़ुसूरवार पाया गया, कि वह नफ़रत करता है।

3 उस के मुँह से शरारत और फ़रेब निकलता है, वह समझदार होने और नेक काम करने से बाज़ आया है।

4 अपने बिस्तर पर भी वह शरारत के मन्सूबे बांधता है। वह मज़बूती से बुरी राह पर खड़ा रहता और बुराई को मुस्तरद नहीं करता।

5 ऐ रब, तेरी शफ़क़त आसमान तक, तेरी वफ़ादारी बादलों तक पहुँचती है।

6 तेरी रास्ती बुलन्दतरीन पहाड़ों की मानिन्द, तेरा इन्साफ़ समुन्दर की गहराइयों जैसा है। ऐ रब, तू इन्सान-ओ-हैवान की मदद करता है।

7 ऐ अल्लाह, तेरी शफ़क़त कितनी बेशक़ीमत है! आदमज़ाद तेरे परों के साय में पनाह लेते हैं।
8 वह तेरे घर के उम्दा खाने से तर-ओ-ताज़ा हो जाते हैं, और तू उन्हें अपनी ख़ुशियों की नदी में से पिलाता है।
9 क्यूँकि ज़िन्दगी का सरचश्मा तेरे ही पास है, और हम तेरे नूर में रह कर नूर का मुशाहदा करते हैं।
10 अपनी शफ़क़त उन पर फैलाए रख जो तुझे जानते हैं, अपनी रास्ती उन पर जो दिल से दियानतदार हैं।
11 मग़रूरों का पाँओ मुझ तक न पहुँचे, बेदीनों का हाथ मुझे बेघर न बनाए।
12 देखो, बदकार गिर गए हैं! उन्हें ज़मीन पर पटख़ दिया गया है, और वह दुबारा कभी नहीं उठेंगे।

बेदीनों की बज़ाहिर ख़ुशहाली

37 1 दाऊद का ज़बूर।
शरीरों के बाइस बेचैन न हो जा, बदकारों पर रश्क न कर।
2 क्यूँकि वह घास की तरह जल्द ही मुरझा जाएंगे, हरियाली की तरह जल्द ही सूख जाएंगे।
3 रब पर भरोसा रख कर भलाई कर, मुल्क में रह कर वफ़ादारी की परवरिश कर।
4 रब से लुत्फ़अन्दोज़ हो तो जो तेरा दिल चाहे वह तुझे देगा।
5 अपनी राह रब के सपुर्द कर। उस पर भरोसा रख तो वह तुझे कामयाबी बख़्शेगा।
6 तब वह तेरी रास्तबाज़ी सूरज की तरह तुलू होने देगा और तेरा इन्साफ़ दोपहर की रौशनी की तरह चमकने देगा।
7 रब के हुज़ूर चुप हो कर सब्र से उस का इन्तिज़ार कर। बेक़रार न हो अगर साज़िशें करने वाला कामयाब हो।
8 ख़फ़ा होने से बाज़ आ, ग़ुस्से को छोड़ दे। रंजीदा न हो, वर्ना बुरा ही नतीजा निकलेगा।
9 क्यूँकि शरीर मिट जाएंगे जबकि रब से उम्मीद रखने वाले मुल्क को मीरास में पाएँगे।
10 मज़ीद थोड़ी देर सब्र कर तो बेदीन का नाम-ओ-निशान मिट जाएगा। तू उस का खोज लगाएगा, लेकिन कहीं नहीं पाएगा।
11 लेकिन हलीम मुल्क को मीरास में पा कर बड़े अम्न और सुकून से लुत्फ़अन्दोज़ होंगे।
12 बेशक बेदीन दाँत पीस पीस कर रास्तबाज़ के ख़िलाफ़ साज़िशें करता रहे।
13 लेकिन रब उस पर हँसता है, क्यूँकि वह जानता है कि उस का अन्जाम क़रीब ही है।
14 बेदीनों ने तलवार को खैंचा और कमान को तान लिया है ताकि नाचारों और ज़रूरतमन्दों को गिरा दें और सीधी राह पर चलने वालों को क़त्ल करें।
15 लेकिन उन की तलवार उन के अपने दिल में घोंपी जाएगी, उन की कमान टूट जाएगी।

16 रास्तबाज़ को जो थोड़ा बहुत हासिल है वह बहुत बेदीनों की दौलत से बेहतर है।
17 क्यूँकि बेदीनों का बाज़ू टूट जाएगा जबकि रब रास्तबाज़ों को सँभालता है।
18 रब बेइल्ज़ामों के दिन जानता है, और उन की मौरूसी मिलकियत हमेशा के लिए क़ाइम रहेगी।
19 मुसीबत के वक़्त वह शर्मसार नहीं होंगे, काल भी पड़े तो सेर होंगे।
20 लेकिन बेदीन हलाक हो जाएंगे, और रब के दुश्मन चरागाहों की शान की तरह नेस्त हो जाएंगे, धुएँ की तरह ग़ाइब हो जाएंगे।
21 बेदीन क़र्ज़ लेता और उसे नहीं उतारता, लेकिन रास्तबाज़ मेहरबान है और फ़य्याज़ी से देता है।
22 क्यूँकि जिन्हें रब बरकत दे वह मुल्क को मीरास में पाएँगे, लेकिन जिन पर वह लानत भेजे उन का नाम-ओ-निशान तक नहीं रहेगा।
23 अगर किसी के पाँओ जम जाएँ तो यह रब की तरफ़ से है। ऐसे शख़्स की राह को वह पसन्द करता है।

24 अगर गिर भी जाए तो पड़ा नहीं रहेगा, क्यूँकि रब उस के हाथ का सहारा बना रहेगा।

25 मैं जवान था और अब बूढ़ा हो गया हूँ। लेकिन मैं ने कभी नहीं देखा कि रास्तबाज़ को तर्क किया गया या उस के बच्चों को भीक माँगनी पड़ी।

26 वह हमेशा मेहरबान और क़र्ज़ देने के लिए तय्यार है। उस की औलाद बरकत का बाइस होगी।

27 बुराई से बाज़ आ कर भलाई कर। तब तू हमेशा के लिए मुल्क में आबाद रहेगा,

28 क्यूँकि रब को इन्साफ़ प्यारा है, और वह अपने ईमानदारों को कभी तर्क नहीं करेगा। वह अबद तक महफ़ूज़ रहेंगे जबकि बेदीनों की औलाद का नाम-ओ-निशान तक नहीं रहेगा।

29 रास्तबाज़ मुल्क को मीरास में पा कर उस में हमेशा बसेंगे।

30 रास्तबाज़ का मुँह हिक्मत बयान करता और उस की ज़बान से इन्साफ़ निकलता है।

31 अल्लाह की शरीअत उस के दिल में है, और उस के क़दम कभी नहीं डगमगाएँगे।

32 बेदीन रास्तबाज़ की ताक में बैठ कर उसे मार डालने का मौक़ा ढूँडता है।

33 लेकिन रब रास्तबाज़ को उस के हाथ में नहीं छोड़ेगा, वह उसे अदालत में मुजरिम नहीं ठहरने देगा।

34 रब के इन्तिज़ार में रह और उस की राह पर चलता रह। तब वह तुझे सरफ़राज़ करके मुल्क का वारिस बनाएगा, और तू बेदीनों की हलाकत देखेगा।

35 मैं ने एक बेदीन और ज़ालिम आदमी को देखा जो फलते फूलते देवदार के दरख़्त की तरह आसमान से बातें करने लगा।

36 लेकिन थोड़ी देर के बाद जब मैं दुबारा वहाँ से गुज़रा तो वह था नहीं। मैं ने उस का खोज लगाया, लेकिन कहीं न मिला।

37 बेइल्ज़ाम पर ध्यान दे और दियानतदार पर ग़ौर कर, क्यूँकि आख़िरकार उसे अम्न और सुकून हासिल होगा।

38 लेकिन मुजरिम मिल कर तबाह हो जाएंगे, और बेदीनों को आख़िरकार रू-ए-ज़मीन पर से मिटाया जाएगा।

39 रास्तबाज़ों की नजात रब की तरफ़ से है, मुसीबत के वक़्त वही उन का क़िला है।

40 रब ही उन की मदद करके उन्हें छुटकारा देगा, वही उन्हें बेदीनों से बचा कर नजात देगा। क्यूँकि उन्हों ने उस में पनाह ली है।

सज़ा से बचने की इल्तिजा (तौबा का तीसरा ज़बूर)

38 1 दाऊद का ज़बूर। याददाश्त के लिए।
ऐ रब, अपने ग़ज़ब में मुझे सज़ा न दे, क़हर में मुझे तम्बीह न कर!

2 क्यूँकि तेरे तीर मेरे जिस्म में लग गए हैं, तेरा हाथ मुझ पर भारी है।

3 तेरी लानत के बाइस मेरा पूरा जिस्म बीमार है, मेरे गुनाह के बाइस मेरी तमाम हड्डियाँ गलने लगी हैं।

4 क्यूँकि मैं अपने गुनाहों के सैलाब में डूब गया हूँ, वह नाक़ाबिल-ए-बर्दाश्त बोझ बन गए हैं।

5 मेरी हमाक़त के बाइस मेरे ज़ख़्मों से बदबू आने लगी, वह गलने लगे हैं।

6 मैं कुबड़ा बन कर ख़ाक में दब गया हूँ, पूरा दिन मातमी लिबास पहने फिरता हूँ।

7 मेरी कमर में शदीद सोज़िश है, पूरा जिस्म बीमार है।

8 मैं निढाल और पाश पाश हो गया हूँ। दिल के अज़ाब के बाइस मैं चीख़ता चिल्लाता हूँ।

9 ऐ रब, मेरी तमाम आर्ज़ू तेरे सामने है, मेरी आहें तुझ से पोशीदा नहीं रहतीं।

10 मेरा दिल ज़ोर से धड़कता, मेरी ताक़त जवाब दे गई बल्कि मेरी आँखों की रौशनी भी जाती रही है।

11 मेरे दोस्त और साथी मेरी मुसीबत देख कर मुझ
से गुरेज़ करते, मेरे क़रीब के रिश्तेदार दूर खड़े रहते
हैं।
12 मेरे जानी दुश्मन फंदे बिछा रहे हैं, जो मुझे
नुक़्सान पहुँचाना चाहते हैं वह धमकियाँ दे रहे और
सारा सारा दिन फ़रेबदिह मन्सूबे बांध रहे हैं।
13 और मैं? मैं तो गोया बहरा हूँ, मैं नहीं सुनता। मैं
गूँगे की मानिन्द हूँ जो अपना मुँह नहीं खोलता।
14 मैं ऐसा शख़्स बन गया हूँ जो न सुनता, न जवाब
में एतिराज़ करता है।

15 क्यूँकि ऐ रब, मैं तेरे इन्तिज़ार में हूँ। ऐ रब मेरे
ख़ुदा, तू ही मेरी सुनेगा।
16 मैं बोला, "ऐसा न हो कि वह मेरा नुक़्सान देख
कर बग़लें बजाएँ, वह मेरे पाँओ के डगमगाने पर मुझे
दबा कर अपने आप पर फ़ख़र करें।"
17 क्यूँकि मैं लड़खड़ाने को हूँ, मेरी अज़ियत
मुतवातिर मेरे सामने रहती है।
18 चुनाँचे मैं अपना क़ुसूर तस्लीम करता हूँ, मैं
अपने गुनाह के बाइस ग़मगीन हूँ।
19 मेरे दुश्मन ज़िन्दा और ताक़तवर हैं, और जो
बिलावजह मुझ से नफ़रत करते हैं वह बहुत हैं।
20 वह नेकी के बदले बदी करते हैं। वह इस लिए
मेरे दुश्मन हैं कि मैं भलाई के पीछे लगा रहता हूँ।

21 ऐ रब, मुझे तर्क न कर! ऐ अल्लाह, मुझ से दूर न
रह!
22 ऐ रब मेरी नजात, मेरी मदद करने में जल्दी कर!

इन्सान के फ़ानी होने के पेश-ए-नज़र इल्तिजा

39 1 दाऊद का ज़बूर। यदूतून के लिए।
मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
मैं बोला, "मैं अपनी राहों पर ध्यान दूँगा ताकि
अपनी ज़बान से गुनाह न करूँ। जब तक बेदीन मेरे
सामने रहे उस वक़्त तक अपने मुँह को लगाम दिए
रहूँगा।"
2 मैं चुप-चाप हो गया और अच्छी चीज़ों से दूर रह
कर ख़ामोश रहा। तब मेरी अज़ियत बढ़ गई।
3 मेरा दिल परेशानी से तपने लगा, मेरे कराहते
कराहते मेरे अन्दर बेचैनी की आग सी भड़क उठी।
तब बात ज़बान पर आ गई,
4 "ऐ रब, मुझे मेरा अन्जाम और मेरी उम्र की हद
दिखा ताकि मैं जान लूँ कि कितना फ़ानी हूँ।
5 देख, मेरी ज़िन्दगी का दौरानिया तेरे सामने लम्हा
भर का है। मेरी पूरी उम्र तेरे नज़्दीक कुछ भी नहीं है।
हर इन्सान दम भर का ही है, ख़्वाह वह कितनी ही
मज़बूती से खड़ा क्यूँ न हो। (सिलाह)
6 जब वह इधर उधर घूमे फिरे तो साया ही है। उस
का शोर-शराबा बातिल है, और गो वह दौलत जमा
करने में मसरूफ़ रहे तो भी उसे मालूम नहीं कि बाद
में किस के क़ब्ज़े में आएगी।"

7 चुनाँचे ऐ रब, मैं किस के इन्तिज़ार में रहूँ? तू ही
मेरी वाहिद उम्मीद है!
8 मेरे तमाम गुनाहों से मुझे छुटकारा दे। अहमक़
को मेरी रुस्वाई करने न दे।
9 मैं ख़ामोश हो गया हूँ और कभी अपना मुँह नहीं
खोलता, क्यूँकि यह सब कुछ तेरे ही हाथ से हुआ
है।
10 अपना अज़ाब मुझ से दूर कर! तेरे हाथ की ज़र्बों
से मैं हलाक हो रहा हूँ।
11 जब तू इन्सान को उस के क़ुसूर की मुनासिब
सज़ा दे कर उस को तम्बीह करता है तो उस की
ख़ूबसूरती कीड़ा लगे कपड़े की तरह जाती रहती है।
हर इन्सान दम भर का ही है। (सिलाह)

12 ऐ रब, मेरी दुआ सुन और मदद के लिए मेरी
आहों पर तवज्जुह दे। मेरे आँसूओं को देख कर
ख़ामोश न रह। क्यूँकि मैं तेरे हुज़ूर रहने वाला परदेसी,
अपने तमाम बापदादा की तरह तेरे हुज़ूर बसने वाला
ग़ैरशहरी हूँ।

[13] मुझ से बाज़ आ ताकि मैं कूच करके नेस्त हो जाने से पहले एक बार फिर हश्शाश-बश्शाश हो जाऊँ।

शुक्र और दरख़्वास्त

40 [1] दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

मैं सब्र से रब के इन्तिज़ार में रहा तो वह मेरी तरफ़ माइल हुआ और मदद के लिए मेरी चीख़ों पर तवज्जुह दी।

[2] वह मुझे तबाही के गढ़े से खैंच लाया, दलदल और कीचड़ से निकाल लाया। उस ने मेरे पाँओ को चटान पर रख दिया, और अब मैं मज़बूती से चल फिर सकता हूँ।

[3] उस ने मेरे मुँह में नया गीत डाल दिया, हमारे ख़ुदा की हम्द-ओ-सना का गीत उभरने दिया। बहुत से लोग यह देखेंगे और ख़ौफ़ खा कर रब पर भरोसा रखेंगे।

[4] मुबारक है वह जो रब पर पूरा भरोसा रखता है, जो तंग करने वालों और फ़रेब में उलझे हुओं की तरफ़ रुख़ नहीं करता।

[5] ऐ रब मेरे ख़ुदा, बार बार तू ने हमें अपने मोजिज़े दिखाए, जगह-ब-जगह अपने मन्सूबे वुजूद में ला कर हमारी मदद की। तुझ जैसा कोई नहीं है। तेरे अज़ीम काम बेशुमार हैं, मैं उन की पूरी फ़हरिस्त बता भी नहीं सकता।

[6] तू क़ुर्बानियाँ और नज़रें नहीं चाहता था, लेकिन तू ने मेरे कानों को खोल दिया। तू ने भस्म होने वाली क़ुर्बानियों और गुनाह की क़ुर्बानियों का तक़ाज़ा न किया।

[7] फिर मैं बोल उठा, "मैं हाज़िर हूँ जिस तरह मेरे बारे में कलाम-ए-मुक़द्दस [y] में लिखा है।

[8] ऐ मेरे ख़ुदा, मैं ख़ुशी से तेरी मर्ज़ी पूरी करता हूँ, तेरी शरीअत मेरे दिल में टिक गई है।"

[9] मैं ने बड़े इजतिमा में रास्ती की ख़ुशख़बरी सुनाई है। ऐ रब, यक़ीनन तू जानता है कि मैं ने अपने होंटों को बन्द न रखा।

[10] मैं ने तेरी रास्ती अपने दिल में छुपाए न रखी बल्कि तेरी वफ़ादारी और नजात बयान की। मैं ने बड़े इजतिमा में तेरी शफ़क़त और सदाक़त की एक बात भी पोशीदा न रखी।

[11] ऐ रब, तू मुझे अपने रहम से महरूम नहीं रखेगा, तेरी मेहरबानी और वफ़ादारी मुसलसल मेरी निगहबानी करेंगी।

[12] क्यूँकि बेशुमार तकलीफ़ों ने मुझे घेर रखा है, मेरे गुनाहों ने आख़िरकार मुझे आ पकड़ा है। अब मैं नज़र भी नहीं उठा सकता। वह मेरे सर के बालों से ज़्यादा हैं, इस लिए मैं हिम्मत हार गया हूँ।

[13] ऐ रब, मेहरबानी करके मुझे बचा! ऐ रब, मेरी मदद करने में जल्दी कर!

[14] मेरे जानी दुश्मन सब शर्मिन्दा हो जाएँ, उन की सख़्त रुस्वाई हो जाए। जो मेरी मुसीबत देखने से लुत्फ़ उठाते हैं वह पीछे हट जाएँ, उन का मुँह काला हो जाए।

[15] जो मेरी मुसीबत देख कर क़हक़हा लगाते हैं वह शर्म के मारे तबाह हो जाएँ।

[16] लेकिन तेरे तालिब शादमान हो कर तेरी ख़ुशी मनाएँ। जिन्हें तेरी नजात प्यारी है वह हमेशा कहें, "रब अज़ीम है!"

[17] मैं नाचार और ज़रूरतमन्द हूँ, लेकिन रब मेरा ख़याल रखता है। तू ही मेरा सहारा और मेरा नजातदहिन्दा है। ऐ मेरे ख़ुदा, देर न कर!

---

[y] लफ़्ज़ी तर्जुमा : किताब के तूमार में।

मरीज़ की दुआ

41 [1]दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

मुबारक है वह जो पस्तहाल का ख़याल रखता है। मुसीबत के दिन रब उसे छुटकारा देगा।

[2]रब उस की हिफ़ाज़त करके उस की ज़िन्दगी को महफ़ूज़ रखेगा, वह मुल्क में उसे बरकत दे कर उसे उस के दुश्मनों के लालच के हवाले नहीं करेगा।

[3]बीमारी के वक़्त रब उस को बिस्तर पर सँभालेगा। तू उस की सेहत पूरी तरह बहाल करेगा।

[4]मैं बोला, "ऐ रब, मुझ पर रहम कर! मुझे शिफ़ा दे, क्यूँकि मैं ने तेरा ही गुनाह किया है।"

[5]मेरे दुश्मन मेरे बारे में ग़लत बातें करके कहते हैं, "वह कब मरेगा? उस का नाम-ओ-निशान कब मिटेगा?"

[6]जब कभी कोई मुझ से मिलने आए तो उस का दिल झूट बोलता है। पस-ए-पर्दा वह ऐसी नुक़्सानदेह मालूमात जमा करता है जिन्हें बाद में बाहर जा कर गलियों में फैला सके।

[7]मुझ से नफ़रत करने वाले सब आपस में मेरे ख़िलाफ़ फुसफुसाते हैं। वह मेरे ख़िलाफ़ बुरे मन्सूबे बांध कर कहते हैं,

[8]"उसे मोहलक मर्ज़ लग गया है। वह कभी अपने बिस्तर पर से दुबारा नहीं उठेगा।"

[9]मेरा दोस्त भी मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़ा हुआ है। जिस पर मैं एतिमाद करता था और जो मेरी रोटी खाता था, उस ने मुझ पर लात उठाई है।

[10]लेकिन तू ऐ रब, मुझ पर मेहरबानी कर! मुझे दुबारा उठा खड़ा कर ताकि उन्हें उन के सुलूक का बदला दे सकूँ।

[11]इस से मैं जानता हूँ कि तू मुझ से ख़ुश है कि मेरा दुश्मन मुझ पर फ़त्ह के नारे नहीं लगाता।

[12]तू ने मुझे मेरी दयानतदारी के बाइस क़ाइम रखा और हमेशा के लिए अपने हुज़ूर खड़ा किया है।

[13]रब की हम्द हो जो इस्राईल का ख़ुदा है। अज़ल से अबद तक उस की तम्जीद हो। आमीन, फिर आमीन।

दूसरी किताब 42-72

परदेस में अल्लाह का आरज़ूमन्द

42 [1]क़ोरह की औलाद का ज़बूर। हिक्मत का गीत। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

ऐ अल्लाह, जिस तरह हिरनी नदियों के ताज़ा पानी के लिए तड़पती है उसी तरह मेरी जान तेरे लिए तड़पती है।

[2]मेरी जान ख़ुदा, हाँ ज़िन्दा ख़ुदा की प्यासी है। मैं कब जा कर अल्लाह का चेहरा देखूँगा?

[3]दिन रात मेरे आँसू मेरी ग़िज़ा रहे हैं। क्यूँकि पूरा दिन मुझ से कहा जाता है, "तेरा ख़ुदा कहाँ है?"

[4]पहले हालात याद करके मैं अपने सामने अपने दिल की आह-ओ-ज़ारी उंडेल देता हूँ।[z] कितना मज़ा आता था जब हमारा जुलूस निकलता था, जब मैं हुजूम के बीच में ख़ुशी और शुक्रगुज़ारी के नारे लगाते हुए अल्लाह की सुकूनतगाह की जानिब बढ़ता जाता था। कितना शोर मच जाता था जब हम जश्न मनाते हुए घूमते फिरते थे।

[5]ऐ मेरी जान, तू ग़म क्यूँ खा रही है, बेचैनी से क्यूँ तड़प रही है? अल्लाह के इन्तिज़ार में रह, क्यूँकि मैं दुबारा उस की सताइश करूँगा जो मेरा ख़ुदा है और मेरे देखते देखते मुझे नजात देता है।

---

[z]लफ़्ज़ी तर्जुमा : अपनी जान उंडेल देता हूँ।

6 मेरी जान ग़म के मारे पिघल रही है। इस लिए मैं
तुझे यर्दन के मुल्क, हर्मून के पहाड़ी सिलसिले और
कोह-ए-मिसआर से याद करता हूँ।
7 जब से तेरे आबशारों की आवाज़ बुलन्द हुई तो
एक सैलाब दूसरे को पुकारने लगा है। तेरी तमाम
मौजें और लहरें मुझ पर से गुज़र गई हैं।
8 दिन के वक़्त रब अपनी शफ़क़त भेजेगा, और रात
के वक़्त उस का गीत मेरे साथ होगा, मैं अपनी हयात
के ख़ुदा से दुआ करूँगा।
9 मैं अल्लाह अपनी चटान से कहूँगा, "तू मुझे क्यूँ
भूल गया है? मैं अपने दुश्मन के ज़ुल्म के बाइस क्यूँ
मातमी लिबास पहने फिरूँ?"
10 मेरे दुश्मनों की लान-तान से मेरी हड्डियाँ टूट रही
हैं, क्यूँकि पूरा दिन वह कहते हैं, "तेरा ख़ुदा कहाँ
है?"

11 ऐ मेरी जान, तू ग़म क्यूँ खा रही है, बेचैनी से क्यूँ
तड़प रही है? अल्लाह के इन्तिज़ार में रह, क्यूँकि मैं
दुबारा उस की सताइश करूँगा जो मेरा ख़ुदा है और
मेरे देखते देखते मुझे नजात देता है।

43 1 ऐ अल्लाह, मेरा इन्साफ़ कर! मेरे लिए
ग़ैरईमानदार क़ौम से लड़, मुझे धोकेबाज़
और शरीर आदमियों से बचा।
2 क्यूँकि तू मेरी पनाह का ख़ुदा है। तू ने मुझे क्यूँ
रद्द किया है? मैं अपने दुश्मन के ज़ुल्म के बाइस क्यूँ
मातमी लिबास पहने फिरूँ?
3 अपनी रौशनी और सच्चाई को भेज ताकि वह मेरी
राहनुमाई करके मुझे तेरे मुक़द्दस पहाड़ और तेरी
सुकूनतगाह के पास पहुँचाएँ।
4 तब मैं अल्लाह की क़ुर्बानगाह के पास आऊँगा,
उस ख़ुदा के पास जो मेरी ख़ुशी और फ़र्हत है। ऐ
अल्लाह मेरे ख़ुदा, वहाँ मैं सरोद बजा कर तेरी सताइश
करूँगा।

5 ऐ मेरी जान, तू ग़म क्यूँ खा रही है, बेचैनी से क्यूँ
तड़प रही है? अल्लाह के इन्तिज़ार में रह, क्यूँकि मैं
दुबारा उस की सताइश करूँगा जो मेरा ख़ुदा है और
मेरे देखते देखते मुझे नजात देता है।

क्या अल्लाह ने अपनी क़ौम को रद्द किया है?

44 1 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। हिक्मत का
गीत। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
ऐ अल्लाह, जो कुछ तू ने हमारे बापदादा के अय्याम
में यानी क़दीम ज़माने में किया वह हम ने अपने कानों
से उन से सुना है।
2 तू ने ख़ुद अपने हाथ से दीगर क़ौमों को निकाल
कर हमारे बापदादा को मुल्क में पौदे की तरह लगा
दिया। तू ने ख़ुद दीगर उम्मतों को शिकस्त दे कर
हमारे बापदादा को मुल्क में फलने फूलने दिया।
3 उन्हों ने अपनी ही तलवार के ज़रीए मुल्क पर
क़ब्ज़ा नहीं किया, अपने ही बाज़ू से फ़त्ह नहीं पाई
बल्कि तेरे दहने हाथ, तेरे बाज़ू और तेरे चेहरे के नूर
ने यह सब कुछ किया। क्यूँकि वह तुझे पसन्द थे।
4 तू मेरा बादशाह, मेरा ख़ुदा है। तेरे ही हुक्म पर
याक़ूब को मदद हासिल होती है।
5 तेरी मदद से हम अपने दुश्मनों को ज़मीन पर
पटख़ देते, तेरा नाम ले कर अपने मुख़ालिफ़ों को
कुचल देते हैं।
6 क्यूँकि मैं अपनी कमान पर एतिमाद नहीं करता,
और मेरी तलवार मुझे नहीं बचाएगी
7 बल्कि तू ही हमें दुश्मन से बचाता, तू ही उन्हें
शर्मिन्दा होने देता है जो हम से नफ़रत करते हैं।
8 पूरा दिन हम अल्लाह पर फ़ख़र करते हैं, और हम
हमेशा तक तेरे नाम की तम्जीद करेंगे। (सिलाह)

9 लेकिन अब तू ने हमें रद्द कर दिया, हमें शर्मिन्दा
होने दिया है। जब हमारी फ़ौजें लड़ने के लिए
निकलती हैं तो तू उन का साथ नहीं देता।
10 तू ने हमें दुश्मन के सामने पसपा होने दिया, और
जो हम से नफ़रत करते हैं उन्हों ने हमें लूट लिया है।

11 तू ने हमें भेड़-बकरियों की तरह क़स्साब के हाथ में छोड़ दिया, हमें मुख़्तलिफ़ क़ौमों में मुन्तशिर कर दिया है।

12 तू ने अपनी क़ौम को ख़फ़ीफ़ सी रक़म के लिए बेच डाला, उसे फ़रोख़्त करने से नफ़ा हासिल न हुआ।

13 यह तेरी तरफ़ से हुआ कि हमारे पड़ोसी हमें रुसवा करते, गिर्द-ओ-नवाह के लोग हमें लान-तान करते हैं।

14 हम अक़्वाम में इब्रतअंगेज़ मिसाल बन गए हैं। लोग हमें देख कर तौबा तौबा कहते हैं।

15 दिन भर मेरी रुस्वाई मेरी आँखों के सामने रहती है। मेरा चेहरा शर्मसार ही रहता है,

16 क्यूँकि मुझे उन की गालियाँ और कुफ़्र सुनना पड़ता है, दुश्मन और इन्तिक़ाम लेने पर तुले हुए को बर्दाश्त करना पड़ता है।

17 यह सब कुछ हम पर आ गया है, हालाँकि न हम तुझे भूल गए और न तेरे अह्द से बेवफ़ा हुए हैं।

18 न हमारा दिल बाग़ी हो गया, न हमारे क़दम तेरी राह से भटक गए हैं।

19 ताहम तू ने हमें चूर चूर करके गीदड़ों के दरमियान छोड़ दिया, तू ने हमें गहरी तारीकी में डूबने दिया है।

20 अगर हम अपने ख़ुदा का नाम भूल कर अपने हाथ किसी और माबूद की तरफ़ उठाते

21 तो क्या अल्लाह को यह बात मालूम न हो जाती? ज़रूर! वह तो दिल के राज़ों से वाक़िफ़ होता है।

22 लेकिन तेरी ख़ातिर हमें दिन भर मौत का सामना करना पड़ता है, लोग हमें ज़बह होने वाली भेड़ों के बराबर समझते हैं।

23 ऐ रब, जाग उठ! तू क्यूँ सोया हुआ है? हमें हमेशा के लिए रद्द न कर बल्कि हमारी मदद करने के लिए खड़ा हो जा।

24 तू अपना चेहरा हम से पोशीदा क्यूँ रखता है, हमारी मुसीबत और हम पर होने वाले ज़ुल्म को नज़रअन्दाज़ क्यूँ करता है?

25 हमारी जान ख़ाक में दब गई, हमारा बदन मिट्टी से चिमट गया है।

26 उठ कर हमारी मदद कर! अपनी शफ़क़त की ख़ातिर फ़िद्या दे कर हमें छुड़ा!

बादशाह की शादी

45 1 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। हिक्मत और मुहब्बत का गीत। तर्ज़ : सोसन के फूल। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

मेरे दिल से ख़ूबसूरत गीत छलक रहा है, मैं उसे बादशाह को पेश करूँगा। मेरी ज़बान माहिर कातिब के क़लम की मानिन्द हो!

2 तू आदमियों में सब से ख़ूबसूरत है! तेरे होंट शफ़क़त से मसह किए हुए हैं, इस लिए अल्लाह ने तुझे अबदी बरकत दी है।

3 ऐ सूरमे, अपनी तलवार से कमरबस्ता हो, अपनी शान-ओ-शौकत से मुलब्बस हो जा!

4 ग़ल्बा और कामयाबी हासिल कर। सच्चाई, इनकिसारी और रास्ती की ख़ातिर लड़ने के लिए निकल आ। तेरा दहना हाथ तुझे हैरतअंगेज़ काम दिखाए।

5 तेरे तेज़ तीर बादशाह के दुश्मनों के दिलों को छेद डालें। क़ौमें तेरे पाँओ में गिर जाएँ।

6 ऐ अल्लाह, तेरा तख़्त अज़ल से अबद तक क़ाइम-ओ-दाइम रहेगा, और इन्साफ़ का शाही असा तेरी बादशाही पर हुकूमत करेगा।

7 तू ने रास्तबाज़ी से मुहब्बत और बेदीनी से नफ़रत की, इस लिए अल्लाह तेरे ख़ुदा ने तुझे ख़ुशी के तेल से मसह करके तुझे तेरे साथियों से कहीं ज़्यादा सरफ़राज़ कर दिया।

[8] मुर, ऊद और अमलतास की बेशक़ीमत ख़ुश्बू
तेरे तमाम कपड़ों से फैलती है। हाथीदाँत के महलों
में तारदार मौसीक़ी तेरा दिल बहलाती है।
[9] बादशाहों की बेटियाँ तेरे ज़ेवरात से सजी फिरती
हैं। मलिका ओफ़ीर का सोना पहने हुए तेरे दहने हाथ
खड़ी है।

[10] ऐ बेटी, सुन मेरी बात! ग़ौर कर और कान लगा।
अपनी क़ौम और अपने बाप का घर भूल जा।
[11] बादशाह तेरे हुस्न का आरज़ूमन्द है, क्यूँकि वह
तेरा आक़ा है। चुनाँचे झुक कर उस का एहतिराम
कर।
[12] सूर की बेटी तोहफ़ा ले कर आएगी, क़ौम के
अमीर तेरी नज़र-ए-करम हासिल करने की कोशिश
करेंगे।
[13] बादशाह की बेटी कितनी शानदार चीज़ों से
आरास्ता है। उस का लिबास सोने के धागों से बुना
हुआ है।
[14] उसे नफ़ीस रंगदार कपड़े पहने बादशाह के पास
लाया जाता है। जो कुंवारी सहेलियाँ उस के पीछे
चलती हैं उन्हें भी तेरे सामने लाया जाता है।
[15] लोग शादमान हो कर और ख़ुशी मनाते हुए उन्हें
वहाँ पहुँचाते हैं, और वह शाही महल में दाख़िल होती
हैं।

[16] ऐ बादशाह, तेरे बेटे तेरे बापदादा की जगह खड़े
हो जाएंगे, और तू उन्हें रईस बना कर पूरी दुनिया में
ज़िम्मादारियाँ देगा।
[17] पुश्त-दर-पुश्त मैं तेरे नाम की तम्जीद करूँगा,
इस लिए क़ौमें हमेशा तक तेरी सताइश करेंगी।

अल्लाह हमारी क़ुव्वत है

46 [1] क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए। गीत का तर्ज़ : कुंवारियाँ।
अल्लाह हमारी पनाहगाह और क़ुव्वत है। मुसीबत
के वक़्त वह हमारा मज़बूत सहारा साबित हुआ है।
[2] इस लिए हम ख़ौफ़ नहीं खाएँगे, गो ज़मीन लरज़
उठे और पहाड़ झूम कर समुन्दर की गहराइयों में गिर
जाएँ,
[3] गो समुन्दर शोर मचा कर ठाठें मारे और पहाड़
उस की दहाड़ों से काँप उठें। (सिलाह)

[4] दरया की शाख़ें अल्लाह के शहर को ख़ुश करती
हैं, उस शहर को जो अल्लाह तआला की मुक़द्दस
सुकूनतगाह है।
[5] अल्लाह उस के बीच में है, इस लिए शहर नहीं
डगमगाएगा। सुब्ह-सवेरे ही अल्लाह उस की मदद
करेगा।
[6] क़ौमें शोर मचाने, सल्तनतें लड़खड़ाने लगीं।
अल्लाह ने आवाज़ दी तो ज़मीन लरज़ उठी।

[7] रब्ब-उल-अफ़्वाज हमारे साथ है, याक़ूब का ख़ुदा
हमारा क़िला है। (सिलाह)

[8] आओ, रब के अज़ीम कामों पर नज़र डालो! उसी
ने ज़मीन पर हौलनाक तबाही नाज़िल की है।
[9] वही दुनिया की इन्तिहा तक जंगें रोक देता, वही
कमान को तोड़ देता, नेज़े को टुकड़े टुकड़े करता
और ढाल को जला देता है।
[10] वह फ़रमाता है, "अपनी हरकतों से बाज़ आओ!
जान लो कि मैं ख़ुदा हूँ। मैं अक़्वाम में सरबुलन्द और
दुनिया में सरफ़राज़ हूँगा।"

[11] रब्ब-उल-अफ़्वाज हमारे साथ है। याक़ूब का
ख़ुदा हमारा क़िला है। (सिलाह)

अल्लाह तमाम क़ौमों का बादशाह है

47 [1] क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए।
ऐ तमाम क़ौमो, ताली बजाओ! ख़ुशी के नारे लगा
कर अल्लाह की मद्हसराई करो!

2 क्यूँकि रब तआला पुरजलाल है, वह पूरी दुनिया का अज़ीम बादशाह है।

3 उस ने क़ौमों को हमारे तहत कर दिया, उम्मतों को हमारे पाँओ तले रख दिया।

4 उस ने हमारे लिए हमारी मीरास को चुन लिया, उसी को जो उस के प्यारे बन्दे याक़ूब के लिए फ़ख़र का बाइस था। (सिलाह)

5 अल्लाह ने सऊद फ़रमाया तो साथ साथ ख़ुशी का नारा बुलन्द हुआ, रब बुलन्दी पर चढ़ गया तो साथ साथ नरसिंगा बजता रहा।

6 मद्हसराई करो, अल्लाह की मद्हसराई करो! मद्हसराई करो, हमारे बादशाह की मद्हसराई करो!

7 क्यूँकि अल्लाह पूरी दुनिया का बादशाह है। हिक्मत का गीत गा कर उस की सताइश करो।

8 अल्लाह क़ौमों पर हुकूमत करता है, अल्लाह अपने मुक़द्दस तख़्त पर बैठा है।

9 दीगर क़ौमों के शुरफ़ा इब्राहीम के ख़ुदा की क़ौम के साथ जमा हो गए हैं, क्यूँकि वह दुनिया के हुक्मरानों का मालिक है। वह निहायत ही सरबुलन्द है।

अल्लाह का शहर यरूशलम

48 1 गीत। क़ोरह की औलाद का ज़बूर।
रब अज़ीम और बड़ी तारीफ़ के लाइक़ है। उस का मुक़द्दस पहाड़ हमारे ख़ुदा के शहर में है।

2 कोह-ए-सिय्यून की बुलन्दी ख़ूबसूरत है, पूरी दुनिया उस से ख़ुश होती है। कोह-ए-सिय्यून दूरतरीन शिमाल का इलाही पहाड़ ही है, वह अज़ीम बादशाह का शहर है।

3 अल्लाह उस के महलों में है, वह उस की पनाहगाह साबित हुआ है।

4 क्यूँकि देखो, बादशाह जमा हो कर यरूशलम से लड़ने आए।

5 लेकिन उसे देखते ही वह हैरान हुए, वह दहशत खा कर भाग गए।

6 वहाँ उन पर कपकपी तारी हुई, और वह दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह पेच-ओ-ताब खाने लगे।

7 जिस तरह मशरिक़ी आँधी तरसीस के शानदार जहाज़ों को टुकड़े टुकड़े कर देती है उसी तरह तू ने उन्हें तबाह कर दिया।

8 जो कुछ हम ने सुना है वह हमारे देखते देखते रब्ब-उल-अफ़्वाज हमारे ख़ुदा के शहर पर सादिक़ आया है, अल्लाह उसे अबद तक क़ाइम रखेगा। (सिलाह)

9 ऐ अल्लाह, हम ने तेरी सुकूनतगाह में तेरी शफ़क़त पर ग़ौर-ओ-ख़ौज़ किया है।

10 ऐ अल्लाह, तेरा नाम इस लाइक़ है कि तेरी तारीफ़ दुनिया की इन्तिहा तक की जाए। तेरा दहना हाथ रास्ती से भरा रहता है।

11 कोह-ए-सिय्यून शादमान हो, यहूदाह की बेटियाँ [a]तेरे मुन्सिफ़ाना फ़ैसलों के बाइस ख़ुशी मनाएँ।

12 सिय्यून के इर्दगिर्द घूमो फिरो, उस की फ़सील के साथ साथ चल कर उस के बुर्ज गिन लो।

13 उस की क़िलाबन्दी पर ख़ूब ध्यान दो, उस के महलों का मुआइना करो ताकि आने वाली नस्ल को सब कुछ सुना सको।

14 यक़ीनन अल्लाह हमारा ख़ुदा हमेशा तक ऐसा ही है। वह अबद तक हमारी राहनुमाई करेगा।

अमीरों की शान सराब ही है

49 1 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
ऐ तमाम क़ौमो, सुनो! दुनिया के तमाम बाशिन्दो, ध्यान दो!

---

[a]यहाँ यहूदाह की बेटियों से मुराद उस के शहर भी हो सकते हैं।

[2] छोटे और बड़े, अमीर और ग़रीब सब तवज्जुह दें।

[3] मेरा मुँह हिक्मत बयान करेगा और मेरे दिल का ग़ौर-ओ-ख़ौज़ समझ अता करेगा।

[4] मैं अपना कान एक कहावत की तरफ़ झुकाऊँगा, सरोद बजा कर अपनी पहेली का हल बताऊँगा।

[5] मैं ख़ौफ़ क्यूँ खाऊँ जब मुसीबत के दिन आएँ और मक्कारों का बुरा काम मुझे घेर ले?

[6] ऐसे लोग अपनी मिलकियत पर एतिमाद और अपनी बड़ी दौलत पर फ़ख़र करते हैं।

[7] कोई भी फ़िद्या दे कर अपने भाई की जान को नहीं छुड़ा सकता। वह अल्लाह को इस क़िस्म का तावान नहीं दे सकता।

[8] क्यूँकि इतनी बड़ी रक़म देना उस के बस की बात नहीं। आख़िरकार उसे हमेशा के लिए ऐसी कोशिशों से बाज़ आना पड़ेगा।

[9] चुनाँचे कोई भी हमेशा के लिए ज़िन्दा नहीं रह सकता, आख़िरकार हर एक मौत के गढ़े में उतरेगा।

[10] क्यूँकि हर एक देख सकता है कि दानिशमन्द भी वफ़ात पाते और अहमक़ और नासमझ भी मिल कर हलाक हो जाते हैं। सब को अपनी दौलत दूसरों के लिए छोड़नी पड़ती है।

[11] उन की क़ब्रें अबद तक उन के घर बनी रहेंगी, पुश्त-दर-पुश्त वह उन में बसे रहेंगे, गो उन्हें ज़मीनें हासिल थीं जो उन के नाम पर थीं।

[12] इन्सान अपनी शान-ओ-शौकत के बावुजूद क़ाइम नहीं रहता, उसे जानवरों की तरह हलाक होना है।

[13] यह उन सब की तक़्दीर है जो अपने आप पर एतिमाद रखते हैं, और उन सब का अन्जाम जो उन की बातें पसन्द करते हैं। (सिलाह)

[14] उन्हें भेड़-बकरियों की तरह पाताल में लाया जाएगा, और मौत उन्हें चराएगी। क्यूँकि सुबह के वक़्त दियानतदार उन पर हुकूमत करेंगे। तब उन की शक्ल-ओ-सूरत घिसे फटे कपड़े की तरह गल सड़ जाएगी, पाताल ही उन की रिहाइशगाह होगा।

[15] लेकिन अल्लाह मेरी जान का फ़िद्या देगा, वह मुझे पकड़ कर पाताल की गिरिफ़्त से छुड़ाएगा। (सिलाह)

[16] मत घबरा जब कोई अमीर हो जाए, जब उस के घर की शान-ओ-शौकत बढ़ती जाए।

[17] मरते वक़्त तो वह अपने साथ कुछ नहीं ले जाएगा, उस की शान-ओ-शौकत उस के साथ पाताल में नहीं उतरेगी।

[18] बेशक वह जीते जी अपने आप को मुबारक कहेगा, और दूसरे भी खाते-पीते आदमी की तारीफ़ करेंगे।

[19] फिर भी वह आख़िरकार अपने बापदादा की नस्ल के पास उतरेगा, उन के पास जो दुबारा कभी रौशनी नहीं देखेंगे।

[20] जो इन्सान अपनी शान-ओ-शौकत के बावुजूद नासमझ है, उसे जानवरों की तरह हलाक होना है।

सहीह इबादत

50 [1] आसफ़ का ज़बूर।
रब क़ादिर-ए-मुतलक़ ख़ुदा बोल उठा है, उस ने तुलू-ए-सुब्ह से ले कर ग़ुरूब-ए-आफ़ताब तक पूरी दुनिया को बुलाया है।

[2] अल्लाह का नूर सिय्यून से चमक उठा है, उस पहाड़ से जो कामिल हुस्न का इज़हार है।

[3] हमारा ख़ुदा आ रहा है, वह ख़ामोश नहीं रहेगा। उस के आगे आगे सब कुछ भस्म हो रहा है, उस के इर्दगिर्द तेज़ आँधी चल रही है।

[4] वह आसमान-ओ-ज़मीन को आवाज़ देता है, “अब मैं अपनी क़ौम की अदालत करूँगा।

[5] मेरे ईमानदारों को मेरे हुज़ूर जमा करो, उन्हें जिन्हों ने क़ुर्बानियाँ पेश करके मेरे साथ अह्द बांधा है।”

6 आसमान उस की रास्ती का एलान करेंगे, क्यूँकि अल्लाह ख़ुद इन्साफ़ करने वाला है। (सिलाह)

7 "ऐ मेरी क़ौम, सुन! मुझे बात करने दे। ऐ इस्राईल, मैं तेरे ख़िलाफ़ गवाही दूँगा। मैं अल्लाह तेरा ख़ुदा हूँ।

8 मैं तुझे तेरी ज़बह की क़ुर्बानियों के बाइस मलामत नहीं कर रहा। तेरी भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ तो मुसलसल मेरे सामने हैं।

9 न मैं तेरे घर से बैल लूँगा, न तेरे बाड़ों से बकरे।

10 क्यूँकि जंगल के तमाम जानदार मेरे ही हैं, हज़ारों पहाड़ियों पर बसने वाले जानवर मेरे ही हैं।

11 मैं पहाड़ों के हर परिन्दे को जानता हूँ, और जो भी मैदानों में हरकत करता है वह मेरा है।

12 अगर मुझे भूक लगती तो मैं तुझे न बताता, क्यूँकि ज़मीन और जो कुछ उस पर है मेरा है।

13 क्या तू समझता है कि मैं साँडों का गोश्त खाना या बकरों का ख़ून पीना चाहता हूँ?

14 अल्लाह को शुक्रगुज़ारी की क़ुर्बानी पेश कर, और वह मन्नत पूरी कर जो तू ने अल्लाह तआला के हुज़ूर मानी है।

15 मुसीबत के दिन मुझे पुकार। तब मैं तुझे नजात दूँगा और तू मेरी तम्जीद करेगा।"

16 लेकिन बेदीन से अल्लाह फ़रमाता है, "मेरे अह्काम सुनाने और मेरे अह्द का ज़िक्र करने का तेरा क्या हक़ है?

17 तू तो तर्बियत से नफ़रत करता और मेरे फ़रमान कचरे की तरह अपने पीछे फैंक देता है।

18 किसी चोर को देखते ही तू उस का साथ देता है, तू ज़िनाकारों से रिफ़ाक़त रखता है।

19 तू अपने मुँह को बुरे काम के लिए इस्तेमाल करता, अपनी ज़बान को धोका देने के लिए तय्यार रखता है।

20 तू दूसरों के पास बैठ कर अपने भाई के ख़िलाफ़ बोलता है, अपनी ही माँ के बेटे पर तोहमत लगाता है।

21 यह कुछ तू ने किया है, और मैं ख़ामोश रहा। तब तू समझा कि मैं बिलकुल तुझ जैसा हूँ। लेकिन मैं तुझे मलामत करूँगा, तेरे सामने ही मुआमला तरतीब से सुनाऊँगा।

22 तुम जो अल्लाह को भूले हुए हो, बात समझ लो, वर्ना मैं तुम्हें फाड़ डालूँगा। उस वक़्त कोई नहीं होगा जो तुम्हें बचाए।

23 जो शुक्रगुज़ारी की क़ुर्बानी पेश करे वह मेरी ताज़ीम करता है। जो मुसम्मम इरादे से ऐसी राह पर चले उसे मैं अल्लाह की नजात दिखाऊँगा।"

मुझ जैसे गुनाहगार पर रहम कर! (तौबा का चौथा ज़बूर)

51 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। यह गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब दाऊद के बत-सबा के साथ ज़िना करने के बाद नातन नबी उस के पास आया।

ऐ अल्लाह, अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मुझ पर मेहरबानी कर, अपने बड़े रहम के मुताबिक़ मेरी सरकशी के दाग़ मिटा दे।

2 मुझे धो दे ताकि मेरा क़ुसूर दूर हो जाए, जो गुनाह मुझ से सरज़द हुआ है उस से मुझे पाक कर।

3 क्यूँकि मैं अपनी सरकशी को मानता हूँ, और मेरा गुनाह हमेशा मेरे सामने रहता है।

4 मैं ने तेरे, सिर्फ़ तेरे ही ख़िलाफ़ गुनाह किया, मैं ने वह कुछ किया जो तेरी नज़र में बुरा है। क्यूँकि लाज़िम है कि तू बोलते वक़्त रास्त ठहरे और अदालत करते वक़्त पाकीज़ा साबित हो जाए।

5 यक़ीनन मैं गुनाहआलूदा हालत में पैदा हुआ। जूँ ही मैं माँ के पेट में वुजूद में आया तो गुनाहगार था।

6 यक़ीनन तू बातिन की सच्चाई पसन्द करता और पोशीदगी में मुझे हिक्मत की तालीम देता है।

7 ज़ूफ़ा ले कर मुझ से गुनाह दूर कर ताकि पाक-साफ़ हो जाऊँ। मुझे धो दे ताकि बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद हो जाऊँ।

8 मुझे दुबारा ख़ुशी और शादमानी सुनने दे ताकि जिन हड्डियों को तू ने कुचल दिया वह शादियाना बजाएँ।

9 अपने चेहरे को मेरे गुनाहों से फेर ले, मेरा तमाम क़ुसूर मिटा दे।

10 ऐ अल्लाह, मेरे अन्दर पाक दिल पैदा कर, मुझ में नए सिरे से साबितक़दम रूह क़ाइम कर।

11 मुझे अपने हुज़ूर से ख़ारिज न कर, न अपने मुक़द्दस रूह को मुझ से दूर कर।

12 मुझे दुबारा अपनी नजात की ख़ुशी दिला, मुझे मुस्तइद रूह अता करके सँभाले रख।

13 तब मैं उन्हें तेरी राहों की तालीम दूँगा जो तुझ से बेवफ़ा हो गए हैं, और गुनाहगार तेरे पास वापस आएँगे।

14 ऐ अल्लाह, मेरी नजात के ख़ुदा, क़त्ल का क़ुसूर मुझ से दूर करके मुझे बचा। तब मेरी ज़बान तेरी रास्ती की हम्द-ओ-सना करेगी।

15 ऐ रब, मेरे होंटों को खोल ताकि मेरा मुँह तेरी सताइश करे।

16 क्यूँकि तू ज़बह की क़ुर्बानी नहीं चाहता, वर्ना मैं वह पेश करता। भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ तुझे पसन्द नहीं।

17 अल्लाह को मन्ज़ूर क़ुर्बानी शिकस्ता रूह है। ऐ अल्लाह, तू शिकस्ता और कुचले हुए दिल को हक़ीर नहीं जानेगा।

18 अपनी मेहरबानी का इज़हार करके सिय्यून को ख़ुशहाली बख़्श, यरूशलम की फ़सील तामीर कर।

19 तब तुझे हमारी सहीह क़ुर्बानियाँ, हमारी भस्म होने वाली और मुकम्मल क़ुर्बानियाँ पसन्द आएँगी। तब तेरी क़ुर्बानगाह पर बैल चढ़ाए जाएंगे।

ज़ुल्म के बावुजूद तसल्ली

52 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। हिक्मत का यह गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब दोएग अदोमी साऊल बादशाह के पास गया और उसे बताया, "दाऊद अख़ीमलिक इमाम के घर में गया है।"

ऐ सूरमे, तू अपनी बदी पर क्यूँ फ़ख़र करता है? अल्लाह की शफ़क़त दिन भर क़ाइम रहती है।

2 ऐ धोकेबाज़, तेरी ज़बान तेज़ उस्तरे की तरह चलती हुई तबाही के मन्सूबे बांधती है।

3 तुझे भलाई की निस्बत बुराई ज़्यादा प्यारी है, सच बोलने की निस्बत झूट ज़्यादा पसन्द है। (सिलाह)

4 ऐ फ़रेबदिह ज़बान, तू हर तबाहकुन बात से प्यार करती है।

5 लेकिन अल्लाह तुझे हमेशा के लिए ख़ाक में मिलाएगा। वह तुझे मार मार कर तेरे ख़ैमे से निकाल देगा, तुझे जड़ से उखाड़ कर ज़िन्दों के मुल्क से ख़ारिज कर देगा। (सिलाह)

6 रास्तबाज़ यह देख कर ख़ौफ़ खाएँगे। वह उस पर हंस कर कहेंगे,

7 "लो, यह वह आदमी है जिस ने अल्लाह में पनाह न ली बल्कि अपनी बड़ी दौलत पर एतिमाद किया, जो अपने तबाहकुन मन्सूबों से ताक़तवर हो गया था।"

8 लेकिन मैं अल्लाह के घर में ज़ैतून के फलते फूलते दरख़्त की मानिन्द हूँ। मैं हमेशा के लिए अल्लाह की शफ़क़त पर भरोसा रखूँगा।

9 मैं अबद तक उस के लिए तेरी सताइश करूँगा जो तू ने किया है। मैं तेरे ईमानदारों के सामने ही तेरे नाम के इन्तिज़ार में रहूँगा, क्यूँकि वह भला है।

बेदीन की हमाक़त

53 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। हिक्मत का गीत। तर्ज़ : महलत।

अहमक़ दिल में कहता है, “अल्लाह है ही नहीं!” ऐसे लोग बदचलन हैं, उन की हरकतें क़ाबिल-ए-घिन हैं। एक भी नहीं है जो अच्छा काम करे।

2 अल्लाह ने आसमान से इन्सान पर नज़र डाली ताकि देखे कि क्या कोई समझदार है? क्या कोई अल्लाह का तालिब है?

3 अफ़्सोस, सब सहीह राह से भटक गए, सब के सब बिगड़ गए हैं। कोई नहीं जो भलाई करता हो, एक भी नहीं।

4 क्या जो बदी करके मेरी क़ौम को रोटी की तरह खा लेते हैं उन्हें समझ नहीं आती? वह तो अल्लाह को पुकारते ही नहीं।

5 तब उन पर सख़्त दहशत वहाँ छा गई जहाँ पहले दहशत का सबब नहीं था। जिन्हों ने तुझे घेर रखा था अल्लाह ने उन की हड्डियाँ बिखेर दीं। तू ने उन को रुसवा किया, क्यूँकि अल्लाह ने उन्हें रद्द किया है।

6 काश कोह-ए-सिय्यून से इस्राईल की नजात निकले! जब रब अपनी क़ौम को बहाल करेगा तो याक़ूब ख़ुशी के नारे लगाएगा, इस्राईल बाग़ बाग़ होगा।

ख़तरे में फंसे हुए शख़्स की इल्तिजा

54 1 दाऊद का ज़बूर। हिक्मत का यह गीत तारदार साज़ों के साथ गाना है। यह उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब ज़ीफ़ के बाशिन्दों ने साऊल के पास जा कर कहा, “दाऊद हमारे पास छुपा हुआ है।”

ऐ अल्लाह, अपने नाम के ज़रीए से मुझे छुटकारा दे! अपनी क़ुदरत के ज़रीए से मेरा इन्साफ़ कर!

2 ऐ अल्लाह, मेरी इल्तिजा सुन, मेरे मुँह के अल्फ़ाज़ पर ध्यान दे।

3 क्यूँकि परदेसी मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं, ज़ालिम जो अल्लाह का लिहाज़ नहीं करते मेरी जान लेने के दरपै हैं। (सिलाह)

4 लेकिन अल्लाह मेरा सहारा है, रब मेरी ज़िन्दगी क़ाइम रखता है।

5 वह मेरे दुश्मनों की शरारत उन पर वापस लाएगा। चुनाँचे अपनी वफ़ादारी दिखा कर उन्हें तबाह कर दे!

6 मैं तुझे रज़ाकाराना क़ुर्बानी पेश करूँगा। ऐ रब, मैं तेरे नाम की सताइश करूँगा, क्यूँकि वह भला है।

7 क्यूँकि उस ने मुझे सारी मुसीबत से रिहाई दी, और अब मैं अपने दुश्मनों की शिकस्त देख कर ख़ुश हूँगा।

झूटे भाइयों पर शिकायत

55 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। हिक्मत का यह गीत तारदार साज़ों के साथ गाना है।

ऐ अल्लाह, मेरी दुआ पर ध्यान दे, अपने आप को मेरी इल्तिजा से छुपाए न रख।

2 मुझ पर ग़ौर कर, मेरी सुन। मैं बेचैनी से इधर उधर घूमते हुए आहें भर रहा हूँ।

3 क्यूँकि दुश्मन शोर मचा रहा, बेदीन मुझे तंग कर रहा है। वह मुझ पर आफ़त लाने पर तुले हुए हैं, ग़ुस्से में मेरी मुख़ालफ़त कर रहे हैं।

4 मेरा दिल मेरे अन्दर तड़प रहा है, मौत की दहशत मुझ पर छा गई है।

5 ख़ौफ़ और लरज़िश मुझ पर तारी हुई, हैबत मुझ पर ग़ालिब आ गई है।

6 मैं बोला, “काश मेरे कबूतर के से पर हों ताकि उड़ कर आराम-ओ-सुकून पा सकूँ!

7 तब मैं दूर तक भाग कर रेगिस्तान में बसेरा करता,

8 मैं जल्दी से कहीं पनाह लेता जहाँ तेज़ आँधी और तूफ़ान से महफ़ूज़ रहता।” (सिलाह)

9 ऐ रब, उन में अब्तरी पैदा कर, उन की ज़बान में इख़्तिलाफ़ डाल! क्यूँकि मुझे शहर में हर तरफ़ ज़ुल्म और झगड़े नज़र आते हैं।

10 दिन रात वह फ़सील पर चक्कर काटते हैं, और शहर फ़साद और ख़राबी से भरा रहता है।
11 उस के बीच में तबाही की हुकूमत है, और ज़ुल्म और फ़रेब उस के चौक को नहीं छोड़ते।

12 अगर कोई दुश्मन मेरी रुस्वाई करता तो क़ाबिल-ए-बर्दाश्त होता। अगर मुझ से नफ़रत करने वाला मुझे दबा कर अपने आप को सरफ़राज़ करता तो मैं उस से छुप जाता।
13 लेकिन तू ही ने यह किया, तू जो मुझ जैसा है, जो मेरा क़रीबी दोस्त और हमराज़ है।
14 मेरी तेरे साथ कितनी अच्छी रिफ़ाक़त थी जब हम हुजूम के साथ अल्लाह के घर की तरफ़ चलते गए!

15 मौत अचानक ही उन्हें अपनी गिरिफ़्त में ले ले। ज़िन्दा ही वह पाताल में उतर जाएँ, क्यूँकि बुराई ने उन में अपना घर बना लिया है।
16 लेकिन मैं पुकार कर अल्लाह से मदद माँगता हूँ, और रब मुझे नजात देगा।
17 मैं हर वक़्त आह-ओ-ज़ारी करता और कराहता रहता हूँ, ख़्वाह सुब्ह हो, ख़्वाह दोपहर या शाम। और वह मेरी सुनेगा।
18 वह फ़िद्या दे कर मेरी जान को उन से छुड़ाएगा जो मेरे ख़िलाफ़ लड़ रहे हैं। गो उन की तादाद बड़ी है वह मुझे आराम-ओ-सुकून देगा।
19 अल्लाह जो अज़ल से तख़्तनशीन है मेरी सुन कर उन्हें मुनासिब जवाब देगा। (सिलाह) क्यूँकि न वह तब्दील हो जाएंगे, न कभी अल्लाह का ख़ौफ़ मानेंगे।

20 उस शख़्स ने अपना हाथ अपने दोस्तों के ख़िलाफ़ उठाया, उस ने अपना अह्द तोड़ लिया है।
21 उस की ज़बान पर मक्खन की सी चिकनी-चुपड़ी बातें और दिल में जंग है। उस के तेल से ज़्यादा नर्म अल्फ़ाज़ हक़ीक़त में खैंची हुई तलवारें हैं।

22 अपना बोझ रब पर डाल तो वह तुझे सँभालेगा। वह रास्तबाज़ को कभी डगमगाने नहीं देगा।
23 लेकिन ऐ अल्लाह, तू उन्हें तबाही के गढ़े में उतरने देगा। ख़ूँख़ार और धोकेबाज़ आधी उम्र भी नहीं पाएँगे बल्कि जल्दी मरेंगे। लेकिन मैं तुझ पर भरोसा रखता हूँ।

मुसीबत में भरोसा

56 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : दूरदराज़ जज़ीरों का कबूतर। यह सुनहरा गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब फ़िलिस्तियों ने उसे जात में पकड़ लिया।
ऐ अल्लाह, मुझ पर मेहरबानी कर! क्यूँकि लोग मुझे तंग कर रहे हैं, लड़ने वाला दिन भर मुझे सता रहा है।
2 दिन भर मेरे दुश्मन मेरे पीछे लगे हैं, क्यूँकि वह बहुत हैं और ग़ुरूर से मुझ से लड़ रहे हैं।
3 लेकिन जब ख़ौफ़ मुझे अपनी गिरिफ़्त में ले ले तो मैं तुझ पर ही भरोसा रखता हूँ।

4 अल्लाह के कलाम पर मेरा फ़ख़र है, अल्लाह पर मेरा भरोसा है। मैं डरूँगा नहीं, क्यूँकि फ़ानी इन्सान मुझे क्या नुक़सान पहुँचा सकता है?

5 दिन भर वह मेरे अल्फ़ाज़ को तोड़-मरोड़ कर ग़लत मानी निकालते, अपने तमाम मन्सूबों से मुझे ज़रर पहुँचाना चाहते हैं।
6 वह हम्लाआवर हो कर ताक में बैठ जाते और मेरे हर क़दम पर ग़ौर करते हैं। क्यूँकि वह मुझे मार डालने पर तुले हुए हैं।
7 जो ऐसी शरीर हरकतें करते हैं, क्या उन्हें बचना चाहिए? हरगिज़ नहीं! ऐ अल्लाह, अक़्वाम को ग़ुस्से में ख़ाक में मिला दे।
8 जितने भी दिन मैं बेघर फिरा हूँ उन का तू ने पूरा हिसाब रखा है। ऐ अल्लाह, मेरे आँसू अपने मश्कीज़े में

डाल ले! क्या वह पहले से तेरी किताब में क़लमबन्द
नहीं हैं? ज़रूर!
9 फिर जब मैं तुझे पुकारूँगा तो मेरे दुश्मन मुझ से
बाज़ आएँगे। यह मैं ने जान लिया है कि अल्लाह मेरे
साथ है!
10 अल्लाह के कलाम पर मेरा फ़ख़र है, रब के
कलाम पर मेरा फ़ख़र है।
11 अल्लाह पर मेरा भरोसा है। मैं डरूँगा नहीं, क्यूँकि
फ़ानी इन्सान मुझे क्या नुक़सान पहुँचा सकता है?

12 ऐ अल्लाह, तेरे हुज़ूर मैं ने मन्नतें मानी हैं, और अब
मैं तुझे शुक्रगुज़ारी की क़ुर्बानियाँ पेश करूँगा।
13 क्यूँकि तू ने मेरी जान को मौत से बचाया और मेरे
पाँओ को ठोकर खाने से महफ़ूज़ रखा ताकि ज़िन्दगी
की रौशनी में अल्लाह के हुज़ूर चलूँ।

आज़माइश में अल्लाह पर एतिमाद

57 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। तर्ज़ : तबाह न कर। यह सुनहरा गीत
उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब वह साऊल से भाग
कर ग़ार में छुप गया।
ऐ अल्लाह, मुझ पर मेहरबानी कर, मुझ पर मेहरबानी
कर! क्यूँकि मेरी जान तुझ में पनाह लेती है। जब तक
आफ़त मुझ पर से गुज़र न जाए मैं तेरे परों के साय
में पनाह लूँगा।
2 मैं अल्लाह तआला को पुकारता हूँ, अल्लाह से जो
मेरा मुआमला ठीक करेगा।
3 वह आसमान से मदद भेज कर मुझे छुटकारा देगा
और उन की रुस्वाई करेगा जो मुझे तंग कर रहे हैं।
(सिलाह) अल्लाह अपना करम और वफ़ादारी भेजेगा।
4 मैं इन्सान को हड़प करने वाले शेरबबरों के बीच
में लेटा हुआ हूँ, उन के दरमियान जिन के दाँत नेज़े
और तीर हैं और जिन की ज़बान तेज़ तलवार है।

5 ऐ अल्लाह, आसमान पर सरबुलन्द हो जा! तेरा
जलाल पूरी दुनिया पर छा जाए!
6 उन्हों ने मेरे क़दमों के आगे फंदा बिछा दिया,
और मेरी जान ख़ाक में दब गई है। उन्हों ने मेरे सामने
गढ़ा खोद लिया, लेकिन वह ख़ुद उस में गिर गए हैं।
(सिलाह)

7 ऐ अल्लाह, मेरा दिल मज़बूत, मेरा दिल
साबितक़दम है। मैं साज़ बजा कर तेरी मद्हसराई
करूँगा।
8 ऐ मेरी जान, जाग उठ! ऐ सितार और सरोद, जाग
उठो! आओ, मैं तुलू-ए-सुब्ह को जगाऊँ।
9 ऐ रब, क़ौमों में मैं तेरी सताइश, उम्मतों में तेरी
मद्हसराई करूँगा।
10 क्यूँकि तेरी अज़ीम शफ़क़त आसमान जितनी
बुलन्द है, तेरी वफ़ादारी बादलों तक पहुँचती है।
11 ऐ अल्लाह, आसमान पर सरफ़राज़ हो! तेरा
जलाल पूरी दुनिया पर छा जाए।

इन्तिक़ाम की दुआ

58 1 दाऊद का सुनहरा गीत। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए। तर्ज़ : तबाह न कर।
ए हुक्मरानो, क्या तुम वाक़ई मुन्सिफ़ाना फ़ैसला
करते, क्या दयानतदारी से आदमज़ादों की अदालत
करते हो?
2 हरगिज़ नहीं, तुम दिल में बदी करते और मुल्क
में अपने ज़ालिम हाथों के लिए रास्ता बनाते हो।
3 बेदीन पैदाइश से ही सहीह राह से दूर हो गए हैं,
झूट बोलने वाले माँ के पेट से ही भटक गए हैं।
4 वह साँप की तरह ज़हर उगलते हैं, उस बहरे नाग
की तरह जो अपने कानों को बन्द कर रखता है
5 ताकि न जादूगर की आवाज़ सुने, न माहिर सपेरे
के मंत्र।

6 ऐ अल्लाह, उन के मुँह के दाँत तोड़ डाल! ऐ रब,
जवान शेरबबरों के जबड़े को पाश पाश कर!

[7] वह उस पानी की तरह ज़ाए हो जाएँ जो बह कर ग़ाइब हो जाता है। उन के चलाए हुए तीर बेअसर रहें।

[8] वह धूप में घोंगे की मानिन्द हों जो चलता चलता पिघल जाता है। उन का अन्जाम उस बच्चे का सा हो जो माँ के पेट में ज़ाए हो कर कभी सूरज नहीं देखेगा।

[9] इस से पहले कि तुम्हारी देगें काँटेदार टहनियों की आग महसूस करें अल्लाह उन सब को आँधी में उड़ा कर ले जाएगा।

[10] आख़िरकार दुश्मन को सज़ा मिलेगी। यह देख कर रास्तबाज़ ख़ुश होगा, और वह अपने पाँओ को बेदीनों के ख़ून में धो लेगा।

[11] तब लोग कहेंगे, "वाक़ई रास्तबाज़ को अज्र मिलता है, वाक़ई अल्लाह है जो दुनिया में लोगों की अदालत करता है!"

दुश्मन के दरमियान दुआ

59 [1] दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : तबाह न कर। यह सुनहरा गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब साऊल ने अपने आदमियों को दाऊद के घर की पहरादारी करने के लिए भेजा ताकि जब मौक़ा मिले उसे क़त्ल करें।

ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे मेरे दुश्मनों से बचा। उन से मेरी हिफ़ाज़त कर जो मेरे ख़िलाफ़ उठे हैं।

[2] मुझे बदकारों से छुटकारा दे, ख़ूँख़्वारों से रिहा कर।

[3] देख, वह मेरी ताक में बैठे हैं। ऐ रब, ज़बरदस्त आदमी मुझ पर हम्लाआवर हैं, हालाँकि मुझ से न ख़ता हुई न गुनाह।

[4] मैं बेक़ुसूर हूँ, ताहम वह दौड़ दौड़ कर मुझ से लड़ने की तय्यारियाँ कर रहे हैं। चुनाँचे जाग उठ, मेरी मदद करने आ, जो कुछ हो रहा है उस पर नज़र डाल।

[5] ऐ रब, लश्करों और इस्राईल के ख़ुदा, दीगर तमाम क़ौमों को सज़ा देने के लिए जाग उठ! उन सब पर करम न फ़रमा जो शरीर और ग़द्दार हैं। (सिलाह)

[6] हर शाम को वह वापस आ जाते और कुत्तों की तरह भौंकते हुए शहर की गलियों में घूमते फिरते हैं।

[7] देख, उन के मुँह से राल टपक रही है, उन के होंटों से तलवारें निकल रही हैं। क्यूँकि वह समझते हैं, "कौन सुनेगा?"

[8] लेकिन तू ऐ रब, उन पर हँसता है, तू तमाम क़ौमों का मज़ाक़ उड़ाता है।

[9] ऐ मेरी क़ुव्वत, मेरी आँखें तुझ पर लगी रहेंगी, क्यूँकि अल्लाह मेरा क़िला है।

[10] मेरा ख़ुदा अपनी मेहरबानी के साथ मुझ से मिलने आएगा, अल्लाह बख़्श देगा कि मैं अपने दुश्मनों की शिकस्त देख कर ख़ुश हूँगा।

[11] ऐ अल्लाह हमारी ढाल, उन्हें हलाक न कर, वर्ना मेरी क़ौम तेरा काम भूल जाएगी। अपनी क़ुदरत का इज़्हार यूँ कर कि वह इधर उधर लड़खड़ा कर गिर जाएँ।

[12] जो कुछ भी उन के मुँह से निकलता है वह गुनाह है, वह लानतें और झूट ही सुनाते हैं। चुनाँचे उन्हें उन के तकब्बुर के जाल में फंसने दे।

[13] ग़ुस्से में उन्हें तबाह कर! उन्हें यूँ तबाह कर कि उन का नाम-ओ-निशान तक न रहे। तब लोग दुनिया की इन्तिहा तक जान लेंगे कि अल्लाह याक़ूब की औलाद पर हुकूमत करता है। (सिलाह)

[14] हर शाम को वह वापस आ जाते और कुत्तों की तरह भौंकते हुए शहर की गलियों में घूमते फिरते हैं।

[15] वह इधर उधर गश्त लगा कर खाने की चीज़ें ढूँडते हैं। अगर पेट न भरे तो ग़ुर्राते रहते हैं।

16 लेकिन मैं तेरी क़ुदरत की मद्हसराई करूँगा, सुब्ह को ख़ुशी के नारे लगा कर तेरी शफ़क़त की सताइश करूँगा। क्यूँकि तू मेरा क़िला और मुसीबत के वक़्त मेरी पनाहगाह है।

17 ऐ मेरी क़ुव्वत, मैं तेरी मद्हसराई करूँगा, क्यूँकि अल्लाह मेरा क़िला और मेरा मेहरबान ख़ुदा है।

मर्दूद क़ौम की दुआ

60 1 दाऊद का ज़बूर। तर्ज़ : अह्द का सोसन। तालीम के लिए यह सुनहरा गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब दाऊद ने मसोपुतामिया के अरामियों और ज़ोबाह के अरामियों से जंग की। वापसी पर योआब ने नमक की वादी में 12,000 अदोमियों को मार डाला।

ऐ अल्लाह, तू ने हमें रद्द किया, हमारी क़िलाबन्दी में रख़ना डाल दिया है। लेकिन अब अपने ग़ज़ब से बाज़ आ कर हमें बहाल कर।

2 तू ने ज़मीन को ऐसे झटके दिए कि उस में दराड़ें पड़ गईं। अब उस के शिगाफ़ों को शिफ़ा दे, क्यूँकि वह अभी तक थरथरा रही है।

3 तू ने अपनी क़ौम को तल्ख़ तजरिबों से दोचार होने दिया, हमें ऐसी तेज़ मै पिला दी कि हम डगमगाने लगे हैं।

4 लेकिन जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं उन के लिए तू ने झंडा गाड़ दिया जिस के इर्दगिर्द वह जमा हो कर तीरों से पनाह ले सकते हैं। (सिलाह)

5 अपने दहने हाथ से मदद करके मेरी सुन ताकि जो तुझे प्यारे हैं वह नजात पाएँ।

6 अल्लाह ने अपने मक़्दिस में फ़रमाया है, "मैं फ़त्ह मनाते हुए सिकम को तक़्सीम करूँगा और वादी-ए-सुक्कात को नाप कर बाँट दूँगा।

7 जिलिआद मेरा है और मनस्सी मेरा है। इफ़्राईम मेरा ख़ोद और यहूदाह मेरा शाही असा है।

8 मोआब मेरा ग़ुसल का बर्तन है, और अदोम पर मैं अपना जूता फैंक दूँगा। ऐ फ़िलिस्ती मुल्क, मुझे देख कर ज़ोरदार नारे लगा!"

9 कौन मुझे क़िलाबन्द शहर में लाएगा? कौन मेरी राहनुमाई करके मुझे अदोम तक पहुँचाएगा?

10 ऐ अल्लाह, तू ही यह कर सकता है, गो तू ने हमें रद्द किया है। ऐ अल्लाह, तू हमारी फ़ौजों का साथ नहीं देता जब वह लड़ने के लिए निकलती हैं।

11 मुसीबत में हमें सहारा दे, क्यूँकि इस वक़्त इन्सानी मदद बेकार है।

12 अल्लाह के साथ हम ज़बरदस्त काम करेंगे, क्यूँकि वही हमारे दुश्मनों को कुचल देगा।

दूर से दरख़्वास्त

61 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तारदार साज़ के साथ गाना है।

ऐ अल्लाह, मेरी आह-ओ-ज़ारी सुन, मेरी दुआ पर तवज्जुह दे।

2 मैं तुझे दुनिया की इन्तिहा से पुकार रहा हूँ, क्यूँकि मेरा दिल निढाल हो गया है। मेरी राहनुमाई करके मुझे उस चटान पर पहुँचा दे जो मुझ से बुलन्द है।

3 क्यूँकि तू मेरी पनाहगाह रहा है, एक मज़बूत बुर्ज जिस में मैं दुश्मन से महफ़ूज़ हूँ।

4 मैं हमेशा के लिए तेरे ख़ैमे में रहना, तेरे परों तले पनाह लेना चाहता हूँ। (सिलाह)

5 क्यूँकि ऐ अल्लाह, तू ने मेरी मन्नतों पर ध्यान दिया, तू ने मुझे वह मीरास बख़्शी जो उन सब को मिलती है जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं।

6 बादशाह को उम्र की दराज़ी बख़्श दे। वह पुश्त-दर-पुश्त जीता रहे।

7 वह हमेशा तक अल्लाह के हुज़ूर तख़्तनशीन रहे। शफ़क़त और वफ़ादारी उस की हिफ़ाज़त करें।

8 तब मैं हमेशा तक तेरे नाम की मद्‌हसराई करूँगा,
रोज़-ब-रोज़ अपनी मन्नतें पूरी करूँगा।

ख़ामोशी से अल्लाह का इन्तिज़ार कर

62 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। यदूतून के लिए।
मेरी जान ख़ामोशी से अल्लाह ही के इन्तिज़ार में है।
उसी से मुझे मदद मिलती है।
2 वही मेरी चटान, मेरी नजात और मेरा क़िला है,
इस लिए मैं ज़्यादा नहीं डगमगाऊँगा।

3 तुम कब तक उस पर हम्ला करोगे जो पहले ही
झुकी हुई दीवार की मानिन्द है? तुम सब कब तक
उसे क़त्ल करने पर तुले रहोगे जो पहले ही गिरने
वाली चारदीवारी जैसा है?
4 उन के मन्सूबों का एक ही मक़्सद है, कि उसे
उस के ऊँचे उह्दे से उतारें। उन्हें झूट से मज़ा आता
है। मुँह से वह बरकत देते, लेकिन अन्दर ही अन्दर
लानत करते हैं। (सिलाह)

5 लेकिन तू ऐ मेरी जान, ख़ामोशी से अल्लाह ही के
इन्तिज़ार में रह। क्यूँकि उसी से मुझे उम्मीद है।
6 सिर्फ़ वही मेरी जान की चटान, मेरी नजात और
मेरा क़िला है, इस लिए मैं नहीं डगमगाऊँगा।

7 मेरी नजात और इज़्ज़त अल्लाह पर मब्नी है, वही
मेरी महफ़ूज़ चटान है। अल्लाह में मैं पनाह लेता हूँ।
8 ऐ उम्मत, हर वक़्त उस पर भरोसा रख! उस के
हुज़ूर अपने दिल का रंज-ओ-अलम पानी की तरह
उंडेल दे। अल्लाह ही हमारी पनाहगाह है। (सिलाह)

9 इन्सान दम भर का ही है, और बड़े लोग फ़रेब ही
हैं। अगर उन्हें तराज़ू में तोला जाए तो मिल कर उन
का वज़न एक फूँक से भी कम है।

10 ज़ुल्म पर एतिमाद न करो, चोरी करने पर फ़ुज़ूल
उम्मीद न रखो। और अगर दौलत बढ़ जाए तो तुम्हारा
दिल उस से लिपट न जाए।
11 अल्लाह ने एक बात फ़रमाई बल्कि दो बार मैं ने
सुनी है कि अल्लाह ही क़ादिर है।
12 ऐ रब, यक़ीनन तू मेहरबान है, क्यूँकि तू हर एक
को उस के आमाल का बदला देता है।

अल्लाह के लिए आर्ज़ू

63 1 दाऊद का ज़बूर। यह उस वक़्त से
मुताल्लिक़ है जब वह यहूदाह के रेगिस्तान
में था।
ऐ अल्लाह, तू मेरा ख़ुदा है जिसे मैं ढूँडता हूँ। मेरी
जान तेरी प्यासी है, मेरा पूरा जिस्म तेरे लिए तरसता
है। मैं उस ख़ुश्क और निढाल मुल्क की मानिन्द हूँ
जिस में पानी नहीं है।
2 चुनाँचे मैं मक़्दिस में तुझे देखने के इन्तिज़ार में रहा
ताकि तेरी क़ुदरत और जलाल का मुशाहदा करूँ।
3 क्यूँकि तेरी शफ़क़त ज़िन्दगी से कहीं बेहतर है,
मेरे होंट तेरी मद्‌हसराई करेंगे।
4 चुनाँचे मैं जीते जी तेरी सताइश करूँगा, तेरा नाम
ले कर अपने हाथ उठाऊँगा।
5 मेरी जान उम्दा ग़िज़ा से सेर हो जाएगी, मेरा मुँह
ख़ुशी के नारे लगा कर तेरी हम्द-ओ-सना करेगा।
6 बिस्तर पर मैं तुझे याद करता, पूरी रात के दौरान
तेरे बारे में सोचता रहता हूँ।
7 क्यूँकि तू मेरी मदद करने आया, और मैं तेरे परों
के साय में ख़ुशी के नारे लगाता हूँ।
8 मेरी जान तेरे साथ लिपटी रहती, और तेरा दहना
हाथ मुझे सँभालता है।

9 लेकिन जो मेरी जान लेने पर तुले हुए हैं वह तबाह
हो जाएंगे, वह ज़मीन की गहराइयों में उतर जाएंगे।
10 उन्हें तलवार के हवाले किया जाएगा, और वह
गीदड़ों की ख़ुराक बन जाएंगे।

11 लेकिन बादशाह अल्लाह की ख़ुशी मनाएगा। जो भी अल्लाह की क़सम खाता है वह फ़ख़र करेगा, क्यूँकि झूट बोलने वालों के मुँह बन्द हो जाएंगे।

शरीअत के पोशीदा हम्लों से हिफ़ाज़त की दुआ

64 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

ऐ अल्लाह, सुन जब मैं अपनी आह-ओ-ज़ारी पेश करता हूँ। मेरी ज़िन्दगी दुश्मन की दह्शत से मह्फ़ूज़ रख।

2 मुझे बदमआशों की साज़िशों से छुपाए रख, उन की हलचल से जो ग़लत काम करते हैं।

3 वह अपनी ज़बान को तलवार की तरह तेज़ करते और अपने ज़हरीले अल्फ़ाज़ को तीरों की तरह तय्यार रखते हैं

4 ताकि ताक में बैठ कर उन्हें बेक़ुसूर पर चलाएँ। वह अचानक और बेबाकी से उन्हें उस पर बरसा देते हैं।

5 वह बुरा काम करने में एक दूसरे की हौसलाअफ़्ज़ाई करते, एक दूसरे से मश्वरा लेते हैं कि हम अपने फंदे किस तरह छुपा कर लगाएँ? वह कहते हैं, "यह किसी को भी नज़र नहीं आएँगे।"

6 वह बड़ी बारीकी से बुरे मन्सूबों की तय्यारियाँ करते, फिर कहते हैं, "चलो, बात बन गई है, मन्सूबा सोच-बिचार के बाद तय्यार हुआ है।" यक़ीनन इन्सान के बातिन और दिल की तह तक पहुँचना मुश्किल ही है।

7 लेकिन अल्लाह उन पर तीर बरसाएगा, और अचानक ही वह ज़ख़्मी हो जाएंगे।

8 वह अपनी ही ज़बान से ठोकर खा कर गिर जाएंगे। जो भी उन्हें देखेगा वह "तौबा तौबा" कहेगा।

9 तब तमाम लोग ख़ौफ़ खा कर कहेंगे, "अल्लाह ही ने यह किया!" उन्हें समझ आएगी कि यह उसी का काम है।

10 रास्तबाज़ अल्लाह की ख़ुशी मना कर उस में पनाह लेगा, और जो दिल से दियानतदार हैं वह सब फ़ख़र करेंगे।

रुहानी और जिस्मानी बरकतों के लिए शुक्रगुज़ारी

65 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए गीत।

ऐ अल्लाह, तू ही इस लाइक़ है कि इन्सान कोह-ए-सिय्यून पर ख़ामोशी से तेरे इन्तिज़ार में रहे, तेरी तम्जीद करे और तेरे हुज़ूर अपनी मन्नतें पूरी करे।

2 तू दुआओं को सुनता है, इस लिए तमाम इन्सान तेरे हुज़ूर आते हैं।

3 गुनाह मुझ पर ग़ालिब आ गए हैं, तू ही हमारी सरकश हरकतों को मुआफ़ कर।

4 मुबारक है वह जिसे तू चुन कर क़रीब आने देता है, जो तेरी बारगाहों में बस सकता है। बख़्श दे कि हम तेरे घर, तेरी मुक़द्दस सुकूनतगाह की अच्छी चीज़ों से सेर हो जाएँ।

5 ऐ हमारी नजात के ख़ुदा, हैबतनाक कामों से अपनी रास्ती क़ाइम करके हमारी सुन! क्यूँकि तू ज़मीन की तमाम हुदूद और दूरदराज़ समुन्दरों तक सब की उम्मीद है।

6 तू अपनी क़ुदरत से पहाड़ों की मज़बूत बुन्यादें डालता और क़ुव्वत से कमरबस्ता रहता है।

7 तू मुतलातिम समुन्दरों को थमा देता है, तू उन की गरजती लहरों और उम्मतों का शोर-शराबा ख़त्म कर देता है।

8 दुनिया की इन्तिहा के बाशिन्दे तेरे निशानात से ख़ौफ़ खाते हैं, और तू तुलू-ए-सुब्ह और ग़ुरूब-ए-आफ़ताब को ख़ुशी मनाने देता है।

9 तू ज़मीन की देख-भाल करके उसे पानी की कस्रत और ज़रख़ेज़ी से नवाज़ता है, चुनाँचे अल्लाह की नदी पानी से भरी रहती है। ज़मीन को यूँ तय्यार करके तू

इन्सान को अनाज की अच्छी फ़सल मुहय्या करता है।

10 तू खेत की रेघारियों को शराबोर करके उस के ढेलों को हमवार करता है। तू बारिश की बौछाड़ों से ज़मीन को नर्म करके उस की फ़सलों को बरकत देता है।

11 तू साल को अपनी भलाई का ताज पहना देता है, और तेरे नक़्श-ए-क़दम तेल की फ़रावानी से टपकते हैं।

12 बयाबान की चरागाहें तेल [b]की कस्रत से टपकती हैं, और पहाड़ियाँ भरपूर ख़ुशी से मुलब्बस हो जाती हैं।

13 सब्ज़ाज़ार भेड़-बकरियों से आरास्ता हैं, वादियाँ अनाज से ढकी हुई हैं। सब ख़ुशी के नारे लगा रहे हैं, सब गीत गा रहे हैं!

अल्लाह की मोजिज़ाना मदद की तारीफ़

66 1 मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। ज़बूर। गीत।

ऐ सारी ज़मीन, ख़ुशी के नारे लगा कर अल्लाह की मद्हसराई कर!

2 उस के नाम के जलाल की तम्जीद करो, उस की सताइश उरूज तक ले जाओ!

3 अल्लाह से कहो, "तेरे काम कितने पुरजलाल हैं। तेरी बड़ी क़ुदरत के सामने तेरे दुश्मन दबक कर तेरी ख़ुशामद करने लगते हैं।

4 तमाम दुनिया तुझे सिज्दा करे! वह तेरी तारीफ़ में गीत गाए, तेरे नाम की सताइश करे।" (सिलाह)

5 आओ, अल्लाह के काम देखो! आदमज़ाद की ख़ातिर उस ने कितने पुरजलाल मोजिज़े किए हैं!

6 उस ने समुन्दर को ख़ुश्क ज़मीन में बदल दिया। जहाँ पहले पानी का तेज़ बहाओ था वहाँ से लोग पैदल ही गुज़रे। चुनाँचे आओ, हम उस की ख़ुशी मनाएँ।

7 अपनी क़ुदरत से वह अबद तक हुकूमत करता है। उस की आँखें क़ौमों पर लगी रहती हैं ताकि सरकश उस के ख़िलाफ़ न उठें। (सिलाह)

8 ऐ उम्मतो, हमारे ख़ुदा की हम्द करो। उस की सताइश दूर तक सुनाई दे।

9 क्यूँकि वह हमारी ज़िन्दगी क़ाइम रखता, हमारे पाँओ को डगमगाने नहीं देता।

10 क्यूँकि ऐ अल्लाह, तू ने हमें आज़माया। जिस तरह चाँदी को पिघला कर साफ़ किया जाता है उसी तरह तू ने हमें पाक-साफ़ कर दिया है।

11 तू ने हमें जाल में फंसा दिया, हमारी कमर पर अज़ियतनाक बोझ डाल दिया।

12 तू ने लोगों के रथों को हमारे सरों पर से गुज़रने दिया, और हम आग और पानी की ज़द में आ गए। लेकिन फिर तू ने हमें मुसीबत से निकाल कर फ़रावानी की जगह पहुँचाया।

13 मैं भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ ले कर तेरे घर में आऊँगा और तेरे हुज़ूर अपनी मन्नतें पूरी करूँगा,

14 वह मन्नतें जो मेरे मुँह ने मुसीबत के वक़्त मानी थीं।

15 भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर मैं तुझे मोटी-ताज़ी भेड़ें और मेंढों का धुआँ पेश करूँगा, साथ साथ बैल और बकरे भी चढ़ाऊँगा। (सिलाह)

16 ऐ अल्लाह का ख़ौफ़ मानने वालो, आओ और सुनो! जो कुछ अल्लाह ने मेरी जान के लिए किया वह तुम्हें सुनाऊँगा।

17 मैं ने अपने मुँह से उसे पुकारा, लेकिन मेरी ज़बान उस की तारीफ़ करने के लिए तय्यार थी।

[b]लफ़्ज़ी तर्जुमा : 'चर्बी,' जो फ़रावानी का निशान था।

18 अगर मैं दिल में गुनाह की परवरिश करता तो
रब मेरी न सुनता।
19 लेकिन यक़ीनन रब ने मेरी सुनी, उस ने मेरी
इल्तिजा पर तवज्जुह दी।
20 अल्लाह की हम्द हो, जिस ने न मेरी दुआ रद्द की,
न अपनी शफ़क़त मुझ से बाज़ रखी।

तमाम क़ौमें अल्लाह की तारीफ़ करें

67 1 ज़बूर। तारदार साज़ों के साथ गाना है।
मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
अल्लाह हम पर मेहरबानी करे और हमें बरकत दे।
वह अपने चेहरे का नूर हम पर चमकाए (सिलाह)
2 ताकि ज़मीन पर तेरी राह और तमाम क़ौमों में तेरी
नजात मालूम हो जाए।

3 ऐ अल्लाह, क़ौमें तेरी सताइश करें, तमाम क़ौमें
तेरी सताइश करें।

4 उम्मतें शादमान हो कर ख़ुशी के नारे लगाएँ,
क्यूँकि तू इन्साफ़ से क़ौमों की अदालत करेगा और
ज़मीन पर उम्मतों की क़ियादत करेगा। (सिलाह)

5 ऐ अल्लाह, क़ौमें तेरी सताइश करें, तमाम क़ौमें
तेरी सताइश करें।

6 ज़मीन अपनी फ़सलें देती है। अल्लाह हमारा ख़ुदा
हमें बरकत दे!
7 अल्लाह हमें बरकत दे, और दुनिया की इन्तिहाएँ
सब उस का ख़ौफ़ मानें।

अल्लाह की फ़त्ह

68 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए गीत।
अल्लाह उठे तो उस के दुश्मन तित्तर-बित्तर हो
जाएंगे, उस से नफ़रत करने वाले उस के सामने से
भाग जाएंगे।
2 वह धुएँ की तरह बिखर जाएंगे। जिस तरह मोम
आग के सामने पिघल जाता है उसी तरह बेदीन
अल्लाह के हुज़ूर हलाक हो जाएंगे।
3 लेकिन रास्तबाज़ ख़ुश-ओ-ख़ुर्रम होंगे, वह अल्लाह
के हुज़ूर जश्न मना कर फूले न समाएँगे।

4 अल्लाह की ताज़ीम में गीत गाओ, उस के नाम की
मद्हसराई करो! जो रथ पर सवार बयाबान में से
गुज़र रहा है उस के लिए रास्ता तय्यार करो। रब उस
का नाम है, उस के हुज़ूर ख़ुशी मनाओ!
5 अल्लाह अपनी मुक़द्दस सुकूनतगाह में यतीमों का
बाप और बेवाओं का हामी है।
6 अल्लाह बेघरों को घरों में बसा देता और क़ैदियों
को क़ैद से निकाल कर ख़ुशहाली अता करता है।
लेकिन जो सरकश हैं वह झुलसे हुए मुल्क में रहेंगे।

7 ऐ अल्लाह, जब तू अपनी क़ौम के आगे आगे
निकला, जब तू रेगिस्तान में क़दम-ब-क़दम आगे
बढ़ा (सिलाह)
8 तो ज़मीन लरज़ उठी और आसमान से बारिश
टपकने लगी। हाँ, अल्लाह के हुज़ूर जो कोह-ए-सीना
और इस्राईल का ख़ुदा है ऐसा ही हुआ।
9 ऐ अल्लाह, तू ने कस्रत की बारिश बरसने दी। जब
कभी तेरा मौरूसी मुल्क निढाल हुआ तो तू ने उसे
ताज़ादम किया।
10 यूँ तेरी क़ौम उस में आबाद हुई। ऐ अल्लाह, अपनी
भलाई से तू ने उसे ज़रूरतमन्दों के लिए तय्यार
किया।

11 रब फ़रमान सादिर करता है तो ख़ुशख़बरी सुनाने
वाली औरतों का बड़ा लश्कर निकलता है,
12 “फ़ौजों के बादशाह भाग रहे हैं। वह भाग रहे हैं
और औरतें लूट का माल तक़्सीम कर रही हैं।
13 तुम क्यूँ अपने ज़ीन के दो बोरों के दरमियान बैठे
रहते हो? देखो, कबूतर के परों पर चाँदी और उस
के शाहपरों पर पीला सोना चढ़ाया गया है।”

14 जब क़ादिर-ए-मुतलक़ ने वहाँ के बादशाहों को
मुन्तशिर कर दिया तो कोह-ए-ज़ल्मोन पर बर्फ़ पड़ी।

15 कोह-ए-बसन इलाही पहाड़ है, कोह-ए-बसन की
मुतअद्दिद चोटियाँ हैं।
16 ऐ पहाड़ की मुतअद्दिद चोटियो, तुम उस पहाड़
को क्यूँ रश्क की निगाह से देखती हो जिसे अल्लाह ने
अपनी सुकूनतगाह के लिए पसन्द किया है? यक़ीनन
रब वहाँ हमेशा के लिए सुकूनत करेगा।
17 अल्लाह के बेशुमार रथ और अनगिनत फ़ौजी हैं।
ख़ुदावन्द उन के दरमियान है, सीना का ख़ुदा मक़्दिस
में है।
18 तू ने बुलन्दी पर चढ़ कर क़ैदियों का हुजूम
गिरिफ़्तार कर लिया, तुझे इन्सानों से तोहफ़े मिले,
उन से भी जो सरकश हो गए थे। यूँ ही रब ख़ुदा वहाँ
सुकूनतपज़ीर हुआ।

19 रब की तम्जीद हो जो रोज़-ब-रोज़ हमारा बोझ
उठाए चलता है। अल्लाह हमारी नजात है। (सिलाह)
20 हमारा ख़ुदा वह ख़ुदा है जो हमें बार बार नजात
देता है, रब क़ादिर-ए-मुतलक़ हमें बार बार मौत से
बचने के रास्ते मुहय्या करता है।
21 यक़ीनन अल्लाह अपने दुश्मनों के सरों को कुचल
देगा। जो अपने गुनाहों से बाज़ नहीं आता उस की
खोपड़ी वह पाश पाश करेगा।
22 रब ने फ़रमाया, "मैं उन्हें बसन से वापस
लाऊँगा, समुन्दर की गहराइयों से वापस पहुँचाऊँगा।
23 तब तू अपने पाँओ को दुश्मन के ख़ून में धो
लेगा, और तेरे कुत्ते उसे चाट लेंगे।"

24 ऐ अल्लाह, तेरे जुलूस नज़र आ गए हैं, मेरे ख़ुदा
और बादशाह के जुलूस मक़्दिस में दाख़िल होते हुए
नज़र आ गए हैं।
25 आगे गुलूकार, फिर साज़ बजाने वाले चल रहे
हैं। उन के आस-पास कुंवारियाँ दफ़ बजाते हुए फिर
रही हैं।
26 "जमाअतों में अल्लाह की सताइश करो! जितने
भी इस्राईल के सरचश्मे से निकले हुए हो रब की
तम्जीद करो!"
27 वहाँ सब से छोटा भाई बिनयमीन आगे चल रहा
है, फिर यहूदाह के बुज़ुर्गों का पुरशोर हुजूम ज़बूलून
और नफ़्ताली के बुज़ुर्गों के साथ चल रहा है।

28 ऐ अल्लाह, अपनी क़ुदरत ब-रू-ए कार ला! ऐ
अल्लाह, जो क़ुदरत तू ने पहले भी हमारी ख़ातिर
दिखाई उसे दुबारा दिखा!
29 उसे यरूशलम के ऊपर अपनी सुकूनतगाह से
दिखा। तब बादशाह तेरे हुज़ूर तोहफ़े लाएँगे।
30 सरकंडों में छुपे हुए दरिन्दे को मलामत कर!
साँडों का जो ग़ोल बछड़ों जैसी क़ौमों में रहता है उसे
डाँट! उन्हें कुचल दे जो चाँदी को प्यार करते हैं। उन
क़ौमों को मुन्तशिर कर जो जंग करने से लुत्फ़अन्दोज़
होती हैं।
31 मिस्र से सफ़ीर आएँगे, एथोपिया अपने हाथ
अल्लाह की तरफ़ उठाएगा।

32 ऐ दुनिया की सल्तनतो, अल्लाह की ताज़ीम में
गीत गाओ! रब की मद्हसराई करो (सिलाह)
33 जो अपने रथ पर सवार हो कर क़दीम ज़माने के
बुलन्दतरीन आसमानों में से गुज़रता है। सुनो उस की
आवाज़ जो ज़ोर से गरज रहा है।
34 अल्लाह की क़ुदरत को तस्लीम करो! उस की
अज़मत इस्राईल पर छाई रहती और उस की क़ुदरत
आसमान पर है।
35 ऐ अल्लाह, तू अपने मक़्दिस से ज़ाहिर होते वक़्त
कितना महीब है। इस्राईल का ख़ुदा ही क़ौम को
क़ुव्वत और ताक़त अता करता है। अल्लाह की
तम्जीद हो!

आज़माइश से नजात की दुआ

69 1 दाऊद का ज़बूर। तर्ज़ : सोसन के फूल।
मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

ऐ अल्लाह, मुझे बचा! क्यूँकि पानी मेरे गले तक पहुँच गया है।

2 मैं गहरी दलदल में धँस गया हूँ, कहीं पाँओ जमाने की जगह नहीं मिलती। मैं पानी की गहराइयों में आ गया हूँ, सैलाब मुझ पर ग़ालिब आ गया है।

3 मैं चिल्लाते चिल्लाते थक गया हूँ। मेरा गला बैठ गया है। अपने ख़ुदा का इन्तिज़ार करते करते मेरी आँखें धुन्दला गईं।

4 जो बिलावजह मुझ से कीना रखते हैं वह मेरे सर के बालों से ज़्यादा हैं, जो बेसबब मेरे दुश्मन हैं और मुझे तबाह करना चाहते हैं वह ताक़तवर हैं। जो कुछ मैं ने नहीं लूटा उसे मुझ से तलब किया जाता है।

5 ऐ अल्लाह, तू मेरी हमाक़त से वाक़िफ़ है, मेरा क़ुसूर तुझ से पोशीदा नहीं है।

6 ऐ क़ादिर-ए-मुतलक़ रब्ब-उल-अफ़्वाज, जो तेरे इन्तिज़ार में रहते हैं वह मेरे बाइस शर्मिन्दा न हों। ऐ इस्राईल के ख़ुदा, मेरे बाइस तेरे तालिब की रुस्वाई न हो।

7 क्यूँकि तेरी ख़ातिर मैं शर्मिन्दगी बर्दाश्त कर रहा हूँ, तेरी ख़ातिर मेरा चेहरा शर्मसार ही रहता है।

8 मैं अपने सगे भाइयों के नज़्दीक अजनबी और अपनी माँ के बेटों के नज़्दीक परदेसी बन गया हूँ।

9 क्यूँकि तेरे घर की ग़ैरत मुझे खा गई है, जो तुझे गालियाँ देते हैं उन की गालियाँ मुझ पर आ गई हैं।

10 जब मैं रोज़ा रख कर रोता था तो लोग मेरा मज़ाक़ उड़ाते थे।

11 जब मातमी लिबास पहने फिरता था तो उन के लिए इब्रतअंगेज़ मिसाल बन गया।

12 जो बुज़ुर्ग शहर के दरवाज़े पर बैठे हैं वह मेरे बारे में गप्पें हाँकते हैं। शराबी मुझे अपने तन्ज़ भरे गीतों का निशाना बनाते हैं।

13 लेकिन ऐ रब, मेरी तुझ से दुआ है कि मैं तुझे दुबारा मन्ज़ूर हो जाऊँ। ऐ अल्लाह, अपनी अज़ीम शफ़्क़त के मुताबिक़ मेरी सुन, अपनी यक़ीनी नजात के मुताबिक़ मुझे बचा।

14 मुझे दलदल से निकाल ताकि ग़र्क़ न हो जाऊँ। मुझे उन से छुटकारा दे जो मुझ से नफ़रत करते हैं। पानी की गहराइयों से मुझे बचा।

15 सैलाब मुझ पर ग़ालिब न आए, समुन्दर की गहराई मुझे हड़प न कर ले, गढ़ा मेरे ऊपर अपना मुँह बन्द न कर ले।

16 ऐ रब, मेरी सुन, क्यूँकि तेरी शफ़्क़त भली है। अपने अज़ीम रहम के मुताबिक़ मेरी तरफ़ रुजू कर।

17 अपना चेहरा अपने ख़ादिम से छुपाए न रख, क्यूँकि मैं मुसीबत में हूँ। जल्दी से मेरी सुन!

18 क़रीब आ कर मेरी जान का फ़िद्या दे, मेरे दुश्मनों के सबब से इवज़ाना दे कर मुझे छुड़ा।

19 तू मेरी रुस्वाई, मेरी शर्मिन्दगी और तज़्लील से वाक़िफ़ है। तेरी आँखें मेरे तमाम दुश्मनों पर लगी रहती हैं।

20 उन के तानों से मेरा दिल टूट गया है, मैं बीमार पड़ गया हूँ। मैं हमदर्दी के इन्तिज़ार में रहा, लेकिन बेफ़ाइदा। मैं ने तवक़्क़ो की कि कोई मुझे दिलासा दे, लेकिन एक भी न मिला।

21 उन्हों ने मेरी ख़ुराक में कड़वा ज़हर मिलाया, मुझे सिरका पिलाया जब प्यासा था।

22 उन की मेज़ उन के लिए फंदा और उन के साथियों के लिए जाल बन जाए।

23 उन की आँखें तारीक हो जाएँ ताकि वह देख न सकें। उन की कमर हमेशा तक डगमगाती रहे।

24 अपना पूरा ग़ुस्सा उन पर उतार, तेरा सख़्त ग़ज़ब उन पर आ पड़े।

25 उन की रिहाइशगाह सुन्सान हो जाए और कोई उन के ख़ैमों में आबाद न हो,

26 क्यूँकि जिसे तू ही ने सज़ा दी उसे वह सताते हैं, जिसे तू ही ने ज़ख़्मी किया उस का दुख दूसरों को सुना कर ख़ुश होते हैं।

27 उन के क़ुसूर का सख़्ती से हिसाब-किताब कर,
वह तेरे सामने रास्तबाज़ न ठहरें।
28 उन्हें किताब-ए-हयात से मिटाया जाए, उन का
नाम रास्तबाज़ों की फ़हरिस्त में दर्ज न हो।

29 हाय, मैं मुसीबत में फंसा हुआ हूँ, मुझे बहुत दर्द
है। ऐ अल्लाह, तेरी नजात मुझे महफ़ूज़ रखे।
30 मैं अल्लाह के नाम की मद्हसराई करूँगा,
शुक्रगुज़ारी से उस की ताज़ीम करूँगा।
31 यह रब को बैल या सींग और खुर रखने वाले
साँड से कहीं ज़्यादा पसन्द आएगा।
32 हलीम अल्लाह का काम देख कर ख़ुश हो जाएंगे।
ऐ अल्लाह के तालिबो, तसल्ली पाओ!
33 क्यूँकि रब मुह्ताजों की सुनता और अपने
क़ैदियों को हक़ीर नहीं जानता।

34 आसमान-ओ-ज़मीन उस की तम्जीद करें,
समुन्दर और जो कुछ उस में हरकत करता है उस
की सताइश करे।
35 क्यूँकि अल्लाह सिय्यून को नजात दे कर यहूदाह
के शहरों को तामीर करेगा, और उस के ख़ादिम उन
पर क़ब्ज़ा करके उन में आबाद हो जाएंगे।
36 उन की औलाद मुल्क को मीरास में पाएगी, और
उस के नाम से मुहब्बत रखने वाले उस में बसे रहेंगे।

दुश्मन से नजात की दुआ

70 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के
लिए। याददाश्त के लिए।
ऐ अल्लाह, जल्दी से आ कर मुझे बचा! ऐ रब, मेरी
मदद करने में जल्दी कर!
2 मेरे जानी दुश्मन शर्मिन्दा हो जाएँ, उन की सख़्त
रुस्वाई हो जाए। जो मेरी मुसीबत देखने से लुत्फ़
उठाते हैं वह पीछे हट जाएँ, उन का मुँह काला हो
जाए।
3 जो मेरी मुसीबत देख कर क़हक़हा लगाते हैं वह
शर्म के मारे पुश्त दिखाएँ।
4 लेकिन तेरे तालिब शादमान हो कर तेरी ख़ुशी
मनाएँ। जिन्हें तेरी नजात प्यारी है वह हमेशा कहें,
“अल्लाह अज़ीम है!”
5 लेकिन मैं नाचार और मुह्ताज हूँ। ऐ अल्लाह,
जल्दी से मेरे पास आ! तू ही मेरा सहारा और मेरा
नजातदहिन्दा है। ऐ रब, देर न कर!

हिफ़ाज़त के लिए दुआ

71 1 ऐ रब, मैं ने तुझ में पनाह ली है। मुझे कभी
शर्मिन्दा न होने दे।
2 अपनी रास्ती से मुझे बचा कर छुटकारा दे। अपना
कान मेरी तरफ़ झुका कर मुझे नजात दे।
3 मेरे लिए चटान पर महफ़ूज़ घर हो जिस में मैं हर
वक़्त पनाह ले सकूँ। तू ने फ़रमाया है कि मुझे नजात
देगा, क्यूँकि तू ही मेरी चटान और मेरा क़िला है।

4 ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे बेदीन के हाथ से बचा, उस के
क़ब्ज़े से जो बेइन्साफ़ और ज़ालिम है।

5 क्यूँकि तू ही मेरी उम्मीद है। ऐ रब क़ादिर-ए-
मुतलक़, तू मेरी जवानी ही से मेरा भरोसा रहा है।
6 पैदाइश से ही मैं ने तुझ पर तकिया किया है, माँ
के पेट से तू ने मुझे सँभाला है। मैं हमेशा तेरी हम्द-
ओ-सना करूँगा।

7 बहुतों के नज़्दीक मैं बदशुगूनी हूँ, लेकिन तू मेरी
मज़बूत पनाहगाह है।
8 दिन भर मेरा मुँह तेरी तम्जीद और ताज़ीम से
लबरेज़ रहता है।

9 बुढ़ापे में मुझे रद्द न कर, ताक़त के ख़त्म होने पर
मुझे तर्क न कर।
10 क्यूँकि मेरे दुश्मन मेरे बारे में बातें कर रहे हैं, जो
मेरी जान की ताक लगाए बैठे हैं वह एक दूसरे से
सलाह-मश्वरा कर रहे हैं।

11 वह कहते हैं, “अल्लाह ने उसे तर्क कर दिया है। उस के पीछे पड़ कर उसे पकड़ो, क्यूँकि कोई नहीं जो उसे बचाए।”

12 ऐ अल्लाह, मुझ से दूर न हो। ऐ मेरे ख़ुदा, मेरी मदद करने में जल्दी कर।

13 मेरे हरीफ़ शर्मिन्दा हो कर फ़ना हो जाएँ, जो मुझे नुक़सान पहुँचाने के दरपै हैं वह लान-तान और रुस्वाई तले दब जाएँ।

14 लेकिन मैं हमेशा तेरे इन्तिज़ार में रहूँगा, हमेशा तेरी सताइश करता रहूँगा।

15 मेरा मुँह तेरी रास्ती सुनाता रहेगा, सारा दिन तेरे नजातबख़्श कामों का ज़िक्र करता रहेगा, गो मैं उन की पूरी तादाद गिन भी नहीं सकता।

16 मैं रब क़ादिर-ए-मुतलक़ के अज़ीम काम सुनाते हुए आऊँगा, मैं तेरी, सिर्फ़ तेरी ही रास्ती याद करूँगा।

17 ऐ अल्लाह, तू मेरी जवानी से मुझे तालीम देता रहा है, और आज तक मैं तेरे मोजिज़ात का एलान करता आया हूँ।

18 ऐ अल्लाह, ख़्वाह मैं बूढ़ा हो जाऊँ और मेरे बाल सफ़ेद हो जाएँ मुझे तर्क न कर जब तक मैं आने वाली पुश्त के तमाम लोगों को तेरी क़ुव्वत और क़ुदरत के बारे में बता न लूँ।

19 ऐ अल्लाह, तेरी रास्ती आसमान से बातें करती है। ऐ अल्लाह, तुझ जैसा कौन है जिस ने इतने अज़ीम काम किए हैं?

20 तू ने मुझे मुतअद्दिद तल्ख़ तजरिबों में से गुज़रने दिया है, लेकिन तू मुझे दुबारा ज़िन्दा भी करेगा, तू मुझे ज़मीन की गहराइयों में से वापस लाएगा।

21 मेरा रुतबा बढ़ा दे, मुझे दुबारा तसल्ली दे।

22 ऐ मेरे ख़ुदा, मैं सितार बजा कर तेरी सताइश और तेरी वफ़ादारी की तम्जीद करूँगा। ऐ इस्राईल के क़ुद्दूस, मैं सरोद बजा कर तेरी तारीफ़ में गीत गाऊँगा।

23 जब मैं तेरी मद्हसराई करूँगा तो मेरे होंट ख़ुशी के नारे लगाएँगे, और मेरी जान जिसे तू ने फ़िद्या दे कर छुड़ाया है शादियाना बजाए गी।

24 मेरी ज़बान भी दिन भर तेरी रास्ती बयान करेगी, क्यूँकि जो मुझे नुक़सान पहुँचाना चाहते थे वह शर्मसार और रुसवा हो गए हैं।

सलामती का बादशाह

72 1 सुलेमान का ज़बूर।

ऐ अल्लाह, बादशाह को अपना इन्साफ़ अता कर, बादशाह के बेटे को अपनी रास्ती बख़्श दे

2 ताकि वह रास्ती से तेरी क़ौम और इन्साफ़ से तेरे मुसीबतज़दों की अदालत करे।

3 पहाड़ क़ौम को सलामती और पहाड़ियाँ रास्ती पहुँचाएँ।

4 वह क़ौम के मुसीबतज़दों का इन्साफ़ करे और मुह्ताजों की मदद करके ज़ालिमों को कुचल दे।

5 तब लोग पुश्त-दर-पुश्त तेरा ख़ौफ़ मानेंगे जब तक सूरज चमके और चाँद रौशनी दे।

6 वह कटी हुई घास के खेत पर बरसने वाली बारिश की तरह उतर आए, ज़मीन को तर करने वाली बौछाड़ों की तरह नाज़िल हो जाए।

7 उस के दौर-ए-हुकूमत में रास्तबाज़ फले फूलेगा, और जब तक चाँद नेस्त न हो जाए सलामती का ग़ल्बा होगा।

8 वह एक समुन्दर से दूसरे समुन्दर तक और दरया-ए-फ़ुरात से दुनिया की इन्तिहा तक हुकूमत करे।

9 रेगिस्तान के बाशिन्दे उस के सामने झुक जाएँ, उस के दुश्मन ख़ाक चाटें।

10 तरसीस और साहिली इलाक़ों के बादशाह उसे ख़राज पहुँचाएँ, सबा और सिबा उसे बाज पेश करें।

11 तमाम बादशाह उसे सिज्दा करें, सब अक़्वाम उस की ख़िदमत करें।

[12] क्यूँकि जो ज़रूरतमन्द मदद के लिए पुकारे उसे वह छुटकारा देगा, जो मुसीबत में है और जिस की मदद कोई नहीं करता उसे वह रिहाई देगा।

[13] वह पस्तहालों और ग़रीबों पर तरस खाएगा, मुह्ताजों की जान को बचाएगा।

[14] वह इवज़ाना दे कर उन्हें ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद से छुड़ाएगा, क्यूँकि उन का ख़ून उस की नज़र में क़ीमती है।

[15] बादशाह ज़िन्दाबाद! सबा का सोना उसे दिया जाए। लोग हमेशा उस के लिए दुआ करें, दिन भर उस के लिए बरकत चाहें।

[16] मुल्क में अनाज की कस्रत हो, पहाड़ों की चोटियों पर भी उस की फ़सलें लहलहाएँ। उस का फल लुबनान के फल जैसा उम्दा हो, शहरों के बाशिन्दे हरियाली की तरह फलें फूलें।

[17] बादशाह का नाम अबद तक क़ाइम रहे, जब तक सूरज चमके उस का नाम फले फूले। तमाम अक़्वाम उस से बरकत पाएँ, और वह उसे मुबारक कहें।

[18] रब ख़ुदा की तम्जीद हो जो इस्राईल का ख़ुदा है। सिर्फ़ वही मोजिज़े करता है!

[19] उस के जलाली नाम की अबद तक तम्जीद हो, पूरी दुनिया उस के जलाल से भर जाए। आमीन, फिर आमीन।

[20] यहाँ दाऊद बिन यस्सी की दुआएँ ख़त्म होती हैं।

तीसरी किताब 73-89

बेदीनों की कामयाबी के बावुजूद तसल्ली

73 [1] आसफ़ का ज़बूर।
यक़ीनन अल्लाह इस्राईल पर मेहरबान है, उन पर जिन के दिल पाक हैं।

[2] लेकिन मैं फिसलने को था, मेरे क़दम लग़्ज़िश खाने को थे।

[3] क्यूँकि शेख़ीबाज़ों को देख कर मैं बेचैन हो गया, इस लिए कि बेदीन इतने ख़ुशहाल हैं।

[4] मरते वक़्त उन को कोई तक्लीफ़ नहीं होती, और उन के जिस्म मोटे-ताज़े रहते हैं।

[5] आम लोगों के मसाइल से उन का वास्ता नहीं पड़ता। जिस दर्द-ओ-करब में दूसरे मुब्तला रहते हैं उस से वह आज़ाद होते हैं।

[6] इस लिए उन के गले में तकब्बुर का हार है, वह ज़ुल्म का लिबास पहने फिरते हैं।

[7] चर्बी के बाइस उन की आँखें उभर आई हैं। उन के दिल बेलगाम वहमों की गिरिफ़्त में रहते हैं।

[8] वह मज़ाक़ उड़ा कर बुरी बातें करते हैं, अपने ग़ुरूर में ज़ुल्म की धमकियाँ देते हैं।

[9] वह समझते हैं कि जो कुछ हमारे मुँह से निकलता है वह आसमान से है, जो बात हमारी ज़बान पर आ जाती है वह पूरी ज़मीन के लिए अहमियत रखती है।

[10] चुनाँचे अवाम उन की तरफ़ रुजू होते हैं, क्यूँकि उन के हाँ कस्रत का पानी पिया जाता है।

[11] वह कहते हैं, “अल्लाह को क्या पता है? अल्लाह तआला को इल्म ही नहीं।”

[12] देखो, यही है बेदीनों का हाल। वह हमेशा सुकून से रहते, हमेशा अपनी दौलत में इज़ाफ़ा करते हैं।

[13] यक़ीनन मैं ने बेफ़ाइदा अपना दिल पाक रखा और अबस अपने हाथ ग़लत काम करने से बाज़ रखे।

[14] क्यूँकि दिन भर मैं दर्द-ओ-करब में मुब्तला रहता हूँ, हर सुबह मुझे सज़ा दी जाती है।

[15] अगर मैं कहता, “मैं भी उन की तरह बोलूँगा,” तो तेरे फ़र्ज़न्दों की नस्ल से ग़द्दारी करता।

[16] मैं सोच-बिचार में पड़ गया ताकि बात समझूँ, लेकिन सोचते सोचते थक गया, अज़ियत में सिर्फ़ इज़ाफ़ा हुआ।

17 तब मैं अल्लाह के मक़्दिस में दाख़िल हो कर
समझ गया कि उन का अन्जाम क्या होगा।
18 यक़ीनन तू उन्हें फिसलनी जगह पर रखेगा, उन्हें
फ़रेब में फंसा कर ज़मीन पर पटख़ देगा।
19 अचानक ही वह तबाह हो जाएंगे, दहशतनाक
मुसीबत में फंस कर मुकम्मल तौर पर फ़ना हो जाएंगे।
20 ऐ रब, जिस तरह ख़्वाब जाग उठते वक़्त
ग़ैरहक़ीक़ी साबित होता है उसी तरह तू उठते वक़्त
उन्हें वहम क़रार दे कर हक़ीर जानेगा।

21 जब मेरे दिल में तल्ख़ी पैदा हुई और मेरे बातिन
में सख़्त दर्द था
22 तो मैं अहमक़ था। मैं कुछ नहीं समझता था
बल्कि तेरे सामने मवेशी की मानिन्द था।
23 तो भी मैं हमेशा तेरे साथ लिपटा रहूँगा, क्यूँकि
तू मेरा दहना हाथ थामे रखता है।
24 तू अपने मश्वरे से मेरी क़ियादत करके आख़िर में
इज़्ज़त के साथ मेरा ख़ैरमक़्दम करेगा।
25 जब तू मेरे साथ है तो मुझे आसमान पर क्या
कमी होगी? जब तू मेरे साथ है तो मैं ज़मीन की कोई
भी चीज़ नहीं चाहूँगा।
26 ख़्वाह मेरा जिस्म और मेरा दिल जवाब दे जाएँ,
लेकिन अल्लाह हमेशा तक मेरे दिल की चटान और
मेरी मीरास है।

27 यक़ीनन जो तुझ से दूर हैं वह हलाक हो जाएंगे,
जो तुझ से बेवफ़ा हैं उन्हें तू तबाह कर देगा।
28 लेकिन मेरे लिए अल्लाह की क़ुर्बत सब कुछ है। मैं
ने रब क़ादिर-ए-मुतलक़ को अपनी पनाहगाह बनाया
है, और मैं लोगों को तेरे तमाम काम सुनाऊँगा।

रब के घर की बेहुरमती पर अफ़सोस

74 1 आसफ़ का ज़बूर। हिक्मत का गीत।
ऐ अल्लाह, तू ने हमें हमेशा के लिए क्यूँ
रद्द किया है? अपनी चरागाह की भेड़ों पर तेरा क़हर
क्यूँ भड़कता रहता है?
2 अपनी जमाअत को याद कर जिसे तू ने क़दीम
ज़माने में ख़रीदा और इवज़ाना दे कर छुड़ाया ताकि
तेरी मीरास का क़बीला हो। कोह-ए-सिय्यून को याद
कर जिस पर तू सुकूनतपज़ीर रहा है।
3 अपने क़दम इन दाइमी खंडरात की तरफ़ बढ़ा।
दुश्मन ने मक़्दिस में सब कुछ तबाह कर दिया है।
4 तेरे मुख़ालिफ़ों ने गरजते हुए तेरी जल्सागाह में
अपने निशान गाड़ दिए हैं।
5 उन्हों ने गुंजान जंगल में लक्कड़हारों की तरह अपने
कुल्हाड़े चलाए,
6 अपने कुल्हाड़ों और कुदालों से उस की तमाम
कन्दाकारी को टुकड़े टुकड़े कर दिया है।
7 उन्हों ने तेरे मक़्दिस को भस्म कर दिया, फ़र्श तक
तेरे नाम की सुकूनतगाह की बेहुरमती की है।
8 अपने दिल में वह बोले, "आओ, हम उन सब को
ख़ाक में मिलाएँ!" उन्हों ने मुल्क में अल्लाह की हर
इबादतगाह नज़र-ए-आतिश कर दी है।
9 अब हम पर कोई इलाही निशान ज़ाहिर नहीं
होता। न कोई नबी हमारे पास रह गया, न कोई और
मौजूद है जो जानता हो कि ऐसे हालात कब तक
रहेंगे।
10 ऐ अल्लाह, हरीफ़ कब तक लान-तान करेगा,
दुश्मन कब तक तेरे नाम की तक्फ़ीर करेगा?
11 तू अपना हाथ क्यूँ हटाता, अपना दहना हाथ दूर
क्यूँ रखता है? उसे अपनी चादर से निकाल कर उन्हें
तबाह कर दे!

12 अल्लाह क़दीम ज़माने से मेरा बादशाह है, वही
दुनिया में नजातबख़्श काम अन्जाम देता है।
13 तू ही ने अपनी क़ुदरत से समुन्दर को चीर कर
पानी में अज़दहाओं के सरों को तोड़ डाला।
14 तू ही ने लिवियातान के सरों को चूर चूर करके
उसे जंगली जानवरों को खिला दिया।
15 एक जगह तू ने चश्मे और नदियाँ फूटने दीं, दूसरी
जगह कभी न सूखने वाले दरया सूखने दिए।

[16]दिन भी तेरा है, रात भी तेरी ही है। चाँद और
सूरज तेरे ही हाथ से क़ाइम हुए।
[17]तू ही ने ज़मीन की हुदूद मुक़र्रर कीं, तू ही ने
गर्मियों और सर्दियों के मौसम बनाए।

[18]ऐ रब, दुश्मन की लान-तान याद कर। ख़याल
कर कि अहमक़ क़ौम तेरे नाम पर कुफ़्र बकती है।
[19]अपने कबूतर की जान को वहशी जानवरों के
हवाले न कर, हमेशा तक अपने मुसीबतज़दों की
ज़िन्दगी को न भूल।
[20]अपने अह्द का लिहाज़ कर, क्यूँकि मुल्क के
तारीक कोने ज़ुल्म के मैदानों से भर गए हैं।
[21]होने न दे कि मज़्लूमों को शर्मिन्दा हो कर पीछे
हटना पड़े बल्कि बख़्श दे कि मुसीबतज़दा और
ग़रीब तेरे नाम पर फ़ख़र कर सकें।
[22]ऐ अल्लाह, उठ कर अदालत में अपने मुआमले
का दिफ़ा कर। याद रहे कि अहमक़ दिन भर तुझे
लान-तान करता है।
[23]अपने दुश्मनों के नारे न भूल बल्कि अपने
मुख़ालिफ़ों का मुसलसल बढ़ता हुआ शोर-शराबा
याद कर।

अल्लाह मग़रूरों की अदालत करता है

75 [1]आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा
के लिए। तर्ज़ : तबाह न कर।
ऐ अल्लाह, तेरा शुक्र हो, तेरा शुक्र! तेरा नाम उन के
क़रीब है जो तेरे मोजिज़े बयान करते हैं।

[2]अल्लाह फ़रमाता है, “जब मेरा वक़्त आएगा तो मैं
इन्साफ़ से अदालत करूँगा।
[3]गो ज़मीन अपने बाशिन्दों समेत डगमगाने लगे,
लेकिन मैं ही ने उस के सतूनों को मज़बूत कर दिया
है। (सिलाह)
[4]शेख़ीबाज़ों से मैं ने कहा, ‘डींगें मत मारो,’ और
बेदीनों से, ‘अपने आप पर फ़ख़र मत करो। [c]
[5]न अपनी ताक़त पर शेख़ी मारो, [d]न अकड़ कर
कुफ़्र बको’।”
[6]क्यूँकि सरफ़राज़ी न मशरिक़ से, न मग़रिब से और
न बयाबान से आती है
[7]बल्कि अल्लाह से जो मुन्सिफ़ है। वही एक को
पस्त कर देता है और दूसरे को सरफ़राज़।
[8]क्यूँकि रब के हाथ में झागदार और मसालेदार
मै का प्याला है जिसे वह लोगों को पिला देता है।
यक़ीनन दुनिया के तमाम बेदीनों को इसे आख़िरी
क़तरे तक पीना है।

[9]लेकिन मैं हमेशा अल्लाह के अज़ीम काम
सुनाऊँगा, हमेशा याक़ूब के ख़ुदा की मद्हसराई
करूँगा।

[10]अल्लाह फ़रमाता है, “मैं तमाम बेदीनों की कमर
तोड़ दूँगा जबकि रास्तबाज़ सरफ़राज़ होगा।” [e]

अल्लाह मुन्सिफ़ है

76 [1]आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा
के लिए। तारदार साज़ों के साथ गाना है।
अल्लाह यहूदाह में मशहूर है, उस का नाम इस्राईल
में अज़ीम है।
[2]उस ने अपनी मान्द सालिम [f]में और अपना भट
कोह-ए-सिय्यून पर बना लिया है।

---

[c]लफ़्ज़ी तर्जुमा : सींग मत उठाओ।

[d]लफ़्ज़ी मतलब : न अपना सींग उठाओ।

[e]लफ़्ज़ी तर्जुमा : बेदीनों के तमाम सींगों को काट डालूँगा जबकि रास्तबाज़ों का सींग सरफ़राज़ हो जाएगा।

[f]सालिम से मुराद यरूशलम है।

3 वहाँ उस ने जलते हुए तीरों को तोड़ डाला और ढाल, तलवार और जंग के हथियारों को चूर चूर कर दिया है। (सिलाह)

4 ऐ अल्लाह, तू दरख़्शाँ है, तू शिकार के पहाड़ों से आया हुआ अज़ीमु-श्शान सूरमा है।

5 बहादुरों को लूट लिया गया है, वह मौत की नींद सो गए हैं। फ़ौजियों में से एक भी हाथ नहीं उठा सकता।

6 ऐ याक़ूब के ख़ुदा, तेरे डाँटने पर घोड़े और रथबान बेहिस्स-ओ-हरकत हो गए हैं।

7 तू ही महीब है। जब तू झिड़के तो कौन तेरे हुज़ूर क़ाइम रहेगा?

8 तू ने आसमान से फ़ैसले का एलान किया। ज़मीन सहम कर चुप हो गई

9 जब अल्लाह अदालत करने के लिए उठा, जब वह तमाम मुसीबतज़दों को नजात देने के लिए आया। (सिलाह)

10 क्यूँकि इन्सान का तैश भी तेरी तम्जीद का बाइस है। उस के तैश का आख़िरी नतीजा तेरा जलाल ही है। [g]

11 रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर मन्नतें मान कर उन्हें पूरा करो। जितने भी उस के इर्दगिर्द हैं वह पुरजलाल ख़ुदा के हुज़ूर हदिए लाएँ।

12 वह हुक्मरानों को शिकस्ता रूह कर देता है, उसी से दुनिया के बादशाह दहशत खाते हैं।

अल्लाह के अज़ीम कामों से तसल्ली मिलती है

77 1 आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। यदूतून के लिए।

मैं अल्लाह से फ़र्याद करके मदद के लिए चिल्लाता हूँ, मैं अल्लाह को पुकारता हूँ कि मुझ पर ध्यान दे।

2 अपनी मुसीबत में मैं ने रब को तलाश किया। रात के वक़्त मेरे हाथ बिलानाग़ा उस की तरफ़ उठे रहे। मेरी जान ने तसल्ली पाने से इन्कार किया।

3 मैं अल्लाह को याद करता हूँ तो आहें भरने लगता हूँ, मैं सोच-बिचार में पड़ जाता हूँ तो रूह निढाल हो जाती है। (सिलाह)

4 तू मेरी आँखों को बन्द होने नहीं देता। मैं इतना बेचैन हूँ कि बोल भी नहीं सकता।

5 मैं क़दीम ज़माने पर ग़ौर करता हूँ, उन सालों पर जो बड़ी देर हुए गुज़र गए हैं।

6 रात को मैं अपना गीत याद करता हूँ। मेरा दिल महव-ए-ख़याल रहता और मेरी रूह तफ़्तीश करती रहती है।

7 "क्या रब हमेशा के लिए रद्द करेगा, क्या आइन्दा हमें कभी पसन्द नहीं करेगा?

8 क्या उस की शफ़क़त हमेशा के लिए जाती रही है? क्या उस के वादे अब से जवाब दे गए हैं?

9 क्या अल्लाह मेहरबानी करना भूल गया है? क्या उस ने ग़ुस्से में अपना रहम बाज़ रखा है?" (सिलाह)

10 मैं बोला, "इस से मुझे दुख है कि अल्लाह तआला का दहना हाथ बदल गया है।"

11 मैं रब के काम याद करूँगा, हाँ क़दीम ज़माने के तेरे मोजिज़े याद करूँगा।

12 जो कुछ तू ने किया उस के हर पहलू पर ग़ौर-ओ-ख़ौज़ करूँगा, तेरे अज़ीम कामों में महव-ए-ख़याल रहूँगा।

13 ऐ अल्लाह, तेरी राह क़ुद्दूस है। कौन सा माबूद हमारे ख़ुदा जैसा अज़ीम है?

14 तू ही मोजिज़े करने वाला ख़ुदा है। अक़्वाम के दरमियान तू ने अपनी क़ुदरत का इज़्हार किया है।

---

[g] लफ़्ज़ी तर्जुमा : तू बचे हुए तैश से कमरबस्ता हो जाता है।

15बड़ी क़ुव्वत से तू ने इवज़ाना दे कर अपनी क़ौम, याक़ूब और यूसुफ़ की औलाद को रिहा कर दिया है। (सिलाह)

16ऐ अल्लाह, पानी ने तुझे देखा, पानी ने तुझे देखा तो तड़पने लगा, गहराइयों तक लरज़ने लगा।

17मूसलाधार बारिश बरसी, बादल गरज उठे और तेरे तीर इधर उधर चलने लगे।

18आँधी में तेरी आवाज़ कड़कती रही, दुनिया बिजलियों से रौशन हुई, ज़मीन काँपती काँपती उछल पड़ी।

19तेरी राह समुन्दर में से, तेरा रास्ता गहरे पानी में से गुज़रा, तो भी तेरे नक़्श-ए-क़दम किसी को नज़र न आए।

20मूसा और हारून के हाथ से तू ने रेवड़ की तरह अपनी क़ौम की राहनुमाई की।

इस्राईल की तारीख़ में इलाही सज़ा और रहम

78 1आसफ़ का ज़बूर। हिक्मत का गीत।
ऐ मेरी क़ौम, मेरी हिदायत पर ध्यान दे, मेरे मुँह की बातों पर कान लगा।

2मैं तम्सीलों में बात करूँगा, क़दीम ज़माने के मुअम्मे बयान करूँगा।

3जो कुछ हम ने सुन लिया और हमें मालूम हुआ है, जो कुछ हमारे बापदादा ने हमें सुनाया है

4उसे हम उन की औलाद से नहीं छुपाएँगे। हम आने वाली पुश्त को रब के क़ाबिल-ए-तारीफ़ काम बताएँगे, उस की क़ुदरत और मोजिज़ात बयान करेंगे।

5क्यूँकि उस ने याक़ूब की औलाद को शरीअत दी, इस्राईल में अह्काम क़ाइम किए। उस ने फ़रमाया कि हमारे बापदादा यह अह्काम अपनी औलाद को सिखाएँ

6ताकि आने वाली पुश्त भी उन्हें अपनाए, वह बच्चे जो अभी पैदा नहीं हुए थे। फिर उन्हें भी अपने बच्चों को सुनाना था।

7क्यूँकि अल्लाह की मर्ज़ी है कि इस तरह हर पुश्त अल्लाह पर एतिमाद रख कर उस के अज़ीम काम न भूले बल्कि उस के अह्काम पर अमल करे।

8वह नहीं चाहता कि वह अपने बापदादा की मानिन्द हों जो ज़िद्दी और सरकश नस्ल थे, ऐसी नस्ल जिस का दिल साबितक़दम नहीं था और जिस की रूह वफ़ादारी से अल्लाह से लिपटी न रही।

9चुनाँचे इफ़्राईम के मर्द गो कमानों से लेस थे जंग के वक़्त फ़रार हुए।

10वह अल्लाह के अह्द के वफ़ादार न रहे, उस की शरीअत पर अमल करने के लिए तय्यार नहीं थे।

11जो कुछ उस ने किया था, जो मोजिज़े उस ने उन्हें दिखाए थे, इफ़्राईमी वह सब कुछ भूल गए।

12मुल्क-ए-मिस्र के इलाक़े ज़ुअन में उस ने उन के बापदादा के देखते देखते मोजिज़े किए थे।

13समुन्दर को चीर कर उस ने उन्हें उस में से गुज़रने दिया, और दोनों तरफ़ पानी मज़बूत दीवार की तरह खड़ा रहा।

14दिन को उस ने बादल के ज़रीए और रात भर चमकदार आग से उन की क़ियादत की।

15रेगिस्तान में उस ने पत्थरों को चाक करके उन्हें समुन्दर की सी कस्रत का पानी पिलाया।

16उस ने होने दिया कि चटान से नदियाँ फूट निकलें और पानी दरयाओं की तरह बहने लगे।

17लेकिन वह उस का गुनाह करने से बाज़ न आए बल्कि रेगिस्तान में अल्लाह तआला से सरकश रहे।

18जान-बूझ कर उन्हों ने अल्लाह को आज़मा कर वह ख़ुराक माँगी जिस का लालच करते थे।

19अल्लाह के ख़िलाफ़ कुफ़्र बक कर वह बोले, “क्या अल्लाह रेगिस्तान में हमारे लिए मेज़ बिछा सकता है?

20बेशक जब उस ने चटान को मारा तो पानी फूट निकला और नदियाँ बहने लगीं। लेकिन क्या वह

रोटी भी दे सकता है, अपनी क़ौम को गोश्त भी
मुहय्या कर सकता है? यह तो नामुमकिन है।”
21 यह सुन कर रब तैश में आ गया। याक़ूब के
ख़िलाफ़ आग भड़क उठी, और उस का ग़ज़ब
इस्राईल पर नाज़िल हुआ।
22 क्यूँ? इस लिए कि उन्हें अल्लाह पर यक़ीन नहीं
था, वह उस की नजात पर भरोसा नहीं रखते थे।

23 इस के बावुजूद अल्लाह ने उन के ऊपर बादलों
को हुक्म दे कर आसमान के दरवाज़े खोल दिए।
24 उस ने खाने के लिए उन पर मन बरसाया, उन्हें
आसमान से रोटी खिलाई।
25 हर एक ने फ़रिश्तों की यह रोटी खाई बल्कि
अल्लाह ने इतना खाना भेजा कि उन के पेट भर गए।
26 फिर उस ने आसमान पर मशरिक़ी हवा चलाई
और अपनी क़ुदरत से जुनूबी हवा पहुँचाई।
27 उस ने गर्द की तरह उन पर गोश्त बरसाया,
समुन्दर की रेत जैसे बेशुमार परिन्दे उन पर गिरने
दिए।
28 ख़ैमागाह के बीच में ही वह गिर पड़े, उन के घरों
के इर्दगिर्द ही ज़मीन पर आ गिरे।
29 तब वह खा खा कर ख़ूब सेर हो गए, क्यूँकि
जिस का लालच वह करते थे वह अल्लाह ने उन्हें
मुहय्या किया था।
30 लेकिन उन का लालच अभी पूरा नहीं हुआ था
और गोश्त अभी उन के मुँह में था
31 कि अल्लाह का ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ। क़ौम
के खाते-पीते लोग हलाक हुए, इस्राईल के जवान
ख़ाक में मिल गए।

32 इन तमाम बातों के बावुजूद वह अपने गुनाहों में
इज़ाफ़ा करते गए और उस के मोजिज़ात पर ईमान न
लाए।
33 इस लिए उस ने उन के दिन नाकामी में गुज़रने
दिए, और उन के साल दहशत की हालत में
इख़्तितामपज़ीर हुए।
34 जब कभी अल्लाह ने उन में क़त्ल-ओ-ग़ारत होने
दी तो वह उसे ढूँडने लगे, वह मुड़ कर अल्लाह को
तलाश करने लगे।
35 तब उन्हें याद आया कि अल्लाह हमारी चटान,
अल्लाह तआला हमारा छुड़ाने वाला है।
36 लेकिन वह मुँह से उसे धोका देते, ज़बान से उसे
झूट पेश करते थे।
37 न उन के दिल साबितक़दमी से उस के साथ
लिपटे रहे, न वह उस के अह्द के वफ़ादार रहे।

38 तो भी अल्लाह रहमदिल रहा। उस ने उन्हें तबाह
न किया बल्कि उन का क़ुसूर मुआफ़ करता रहा।
बार बार वह अपने ग़ज़ब से बाज़ आया, बार बार
अपना पूरा क़हर उन पर उतारने से गुरेज़ किया।
39 क्यूँकि उसे याद रहा कि वह फ़ानी इन्सान हैं,
हवा का एक झोंका जो गुज़र कर कभी वापस नहीं
आता।

40 रेगिस्तान में वह कितनी दफ़ा उस से सरकश
हुए, कितनी मर्तबा उसे दुख पहुँचाया।
41 बार बार उन्हों ने अल्लाह को आज़माया, बार बार
इस्राईल के क़ुद्दूस को रंजीदा किया।
42 उन्हें उस की क़ुदरत याद न रही, वह दिन जब
उस ने फ़िद्या दे कर उन्हें दुश्मन से छुड़ाया,

43 वह दिन जब उस ने मिस्र में अपने इलाही निशान
दिखाए, ज़ुअन के इलाक़े में अपने मोजिज़े किए।
44 उस ने उन की नहरों का पानी ख़ून में बदल दिया,
और वह अपनी नदियों का पानी पी न सके।
45 उस ने उन के दरमियान जूओं के ग़ोल भेजे जो
उन्हें खा गईं, मेंढक जो उन पर तबाही लाए।
46 उन की पैदावार उस ने जवान टिड्डियों के हवाले
की, उन की मेहनत का फल बालिग़ टिड्डियों के सपुर्द
किया।
47 उन की अंगूर की बेलें उस ने ओलों से, उन के
अन्जीर-तूत के दरख़्त सैलाब से तबाह कर दिए।

48 उन के मवेशी उस ने ओलों के हवाले किए, उन
के रेवड़ बिजली के सपुर्द किए।
49 उस ने उन पर अपना शोलाज़न ग़ज़ब नाज़िल
किया। क़हर, ख़फ़गी और मुसीबत यानी तबाही लाने
वाले फ़रिश्तों का पूरा दस्ता उन पर हम्लाआवर हुआ।
50 उस ने अपने ग़ज़ब के लिए रास्ता तय्यार करके
उन्हें मौत से न बचाया बल्कि मोहलक वबा की ज़द
में आने दिया।
51 मिस्र में उस ने तमाम पहलौठों को मार डाला
और हाम के ख़ैमों में मर्दानगी का पहला फल तमाम
कर दिया।
52 फिर वह अपनी क़ौम को भेड़-बकरियों की तरह
मिस्र से बाहर ला कर रेगिस्तान में रेवड़ की तरह लिए
फिरा।
53 वह हिफ़ाज़त से उन की क़ियादत करता रहा।
उन्हें कोई डर नहीं था जबकि उन के दुश्मन समुन्दर
में डूब गए।
54 यूँ अल्लाह ने उन्हें मुक़द्दस मुल्क तक पहुँचाया,
उस पहाड़ तक जिसे उस के दहने हाथ ने हासिल
किया था।
55 उन के आगे आगे वह दीगर क़ौमें निकालता
गया। उन की ज़मीन उस ने तक़सीम करके
इस्राईलियों को मीरास में दी, और उन के ख़ैमों में
उस ने इस्राईली क़बीले बसाए।

56 इस के बावुजूद वह अल्लाह तआला को आज़माने
से बाज़ न आए बल्कि उस से सरकश हुए और उस
के अह्काम के ताबे न रहे।
57 अपने बापदादा की तरह वह ग़द्दार बन कर
बेवफ़ा हुए। वह ढीली कमान की तरह नाकाम हो
गए।
58 उन्हों ने ऊँची जगहों की ग़लत क़ुर्बानगाहों से
अल्लाह को ग़ुस्सा दिलाया और अपने बुतों से उसे
रंजीदा किया।
59 जब अल्लाह को ख़बर मिली तो वह ग़ज़बनाक
हुआ और इस्राईल को मुकम्मल तौर पर मुस्तरद कर
दिया।
60 उस ने सैला में अपनी सुकूनतगाह छोड़ दी, वह
ख़ैमा जिस में वह इन्सान के दरमियान सुकूनत करता
था।
61 अह्द का सन्दूक़ उस की क़ुदरत और जलाल
का निशान था, लेकिन उस ने उसे दुश्मन के हवाले
करके जिलावतनी में जाने दिया।
62 अपनी क़ौम को उस ने तलवार की ज़द में
आने दिया, क्यूँकि वह अपनी मौरूसी मिलकियत
से निहायत नाराज़ था।
63 क़ौम के जवान नज़र-ए-आतिश हुए, और उस
की कुंवारियों के लिए शादी के गीत गाए न गए।
64 उस के इमाम तलवार से क़त्ल हुए, और उस की
बेवाओं ने मातम न किया।

65 तब रब जाग उठा, उस आदमी की तरह जिस की
नींद उचाट हो गई हो, उस सूरमे की मानिन्द जिस से
नशे का असर उतर गया हो।
66 उस ने अपने दुश्मनों को मार मार कर भगा दिया
और उन्हें हमेशा के लिए शर्मिन्दा कर दिया।
67 उस वक़्त उस ने यूसुफ़ का ख़ैमा रद्द किया और
इफ़्राईम के क़बीले को न चुना
68 बल्कि यहूदाह के क़बीले और कोह-ए-सिय्यून
को चुन लिया जो उसे प्यारा था।
69 उस ने अपना मक़्दिस बुलन्दियों की मानिन्द
बनाया, ज़मीन की मानिन्द जिसे उस ने हमेशा के
लिए क़ाइम किया है।
70 उस ने अपने ख़ादिम दाऊद को चुन कर भेड़-
बकरियों के बाड़ों से बुलाया।
71 हाँ, उस ने उसे भेड़ों [h]की देख-भाल से बुलाया
ताकि वह उस की क़ौम याक़ूब, उस की मीरास
इस्राईल की गल्लाबानी करे।

[h]इब्रानी मतन से मुराद वह भेड़ है जो अभी अपने बच्चों को दूध पिलाती है।

72 दाऊद ने ख़ुलूसदिली से उन की गल्लाबानी की,
बड़ी महारत से उस ने उन की राहनुमाई की।

जंग की मुसीबत में क़ौम की दुआ

79 1 आसफ़ का ज़बूर।
ऐ अल्लाह, अजनबी क़ौमें तेरी मौरूसी
ज़मीन में घुस आई हैं। उन्हों ने तेरी मुक़द्दस
सुकूनतगाह की बेहुरमती करके यरूशलम को मल्बे
का ढेर बना दिया है।
2 उन्हों ने तेरे ख़ादिमों की लाशें परिन्दों को और
तेरे ईमानदारों का गोश्त जंगली जानवरों को खिला
दिया है।
3 यरूशलम के चारों तरफ़ उन्हों ने ख़ून की नदियाँ
बहाईं, और कोई बाक़ी न रहा जो मुर्दों को दफ़नाता।
4 हमारे पड़ोसियों ने हमें मज़ाक़ का निशाना बना
लिया है, इर्दगिर्द की क़ौमें हमारी हंसी उड़ाती और
लान-तान करती हैं।

5 ऐ रब, कब तक? क्या तू हमेशा तक ग़ुस्से होगा?
तेरी ग़ैरत कब तक आग की तरह भड़कती रहेगी?
6 अपना ग़ज़ब उन अक़्वाम पर नाज़िल कर जो तुझे
तस्लीम नहीं करतीं, उन सल्तनतों पर जो तेरे नाम को
नहीं पुकारतीं।
7 क्यूँकि उन्हों ने याक़ूब को हड़प करके उस की
रिहाइशगाह तबाह कर दी है।
8 हमें उन गुनाहों के क़ुसूरवार न ठहरा जो हमारे
बापदादा से सरज़द हुए। हम पर रहम करने में जल्दी
कर, क्यूँकि हम बहुत पस्तहाल हो गए हैं।
9 ऐ हमारी नजात के ख़ुदा, हमारी मदद कर ताकि
तेरे नाम को जलाल मिले। हमें बचा, अपने नाम की
ख़ातिर हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर।
10 दीगर अक़्वाम क्यूँ कहें, "उन का ख़ुदा कहाँ
है?" हमारे देखते देखते उन्हें दिखा कि तू अपने
ख़ादिमों के ख़ून का बदला लेता है।
11 क़ैदियों की आहें तुझ तक पहुँचीं, जो मरने को
हैं उन्हें अपनी अज़ीम क़ुदरत से महफ़ूज़ रख।
12 ऐ रब, जो लान-तान हमारे पड़ोसियों ने तुझ पर
बरसाई है उसे सात गुना उन के सरों पर वापस ला।
13 तब हम जो तेरी क़ौम और तेरी चरागाह की भेड़ें
हैं अबद तक तेरी सताइश करेंगे, पुश्त-दर-पुश्त तेरी
हम्द-ओ-सना करेंगे।

अंगूर की बेल की बहाली के लिए दुआ

80 1 आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा
के लिए। तर्ज़ : अह्द के सोसन।
ऐ इस्राईल के गल्लाबान, हम पर ध्यान दे! तू जो
यूसुफ़ की रेवड़ की तरह राहनुमाई करता है, हम पर
तवज्जुह कर! तू जो करूबी फ़रिश्तों के दरमियान
तख़्तनशीन है, अपना नूर चमका!
2 इफ़्राईम, बिनयमीन और मनस्सी के सामने अपनी
क़ुदरत को हरकत में ला। हमें बचाने आ!

3 ऐ अल्लाह, हमें बहाल कर। अपने चेहरे का नूर
चमका तो हम नजात पाएँगे।

4 ऐ रब, लश्करों के ख़ुदा, तेरा ग़ज़ब कब तक
भड़कता रहेगा, हालाँकि तेरी क़ौम तुझ से इल्तिजा
कर रही है?
5 तू ने उन्हें आँसूओं की रोटी खिलाई और आँसूओं
का प्याला ख़ूब पिलाया।
6 तू ने हमें पड़ोसियों के झगड़ों का निशाना बनाया।
हमारे दुश्मन हमारा मज़ाक़ उड़ाते हैं।

7 ऐ लश्करों के ख़ुदा, हमें बहाल कर। अपने चेहरे
का नूर चमका तो हम नजात पाएँगे।

8 अंगूर की जो बेल मिस्र में उग रही थी उसे तू
उखाड़ कर मुल्क-ए-कनआन लाया। तू ने वहाँ की
अक़्वाम को भगा कर यह बेल उन की जगह लगाई।
9 तू ने उस के लिए ज़मीन तय्यार की तो वह जड़
पकड़ कर पूरे मुल्क में फैल गई।

10उस का साया पहाड़ों पर छा गया, और उस की
शाख़ों ने देवदार के अज़ीम दरख़्तों को ढाँक लिया।
11उस की टहनियाँ मग़रिब में समुन्दर तक फैल
गईं, उस की डालियाँ मशरिक़ में दरया-ए-फ़ुरात तक
पहुँच गईं।
12तू ने उस की चारदीवारी क्यूँ गिरा दी? अब हर
गुज़रने वाला उस के अंगूर तोड़ लेता है।
13जंगल के सूअर उसे खा खा कर तबाह करते,
खुले मैदान के जानवर वहाँ चरते हैं।

14ऐ लश्करों के ख़ुदा, हमारी तरफ़ दुबारा रुजू
फ़रमा! आसमान से नज़र डाल कर हालात पर ध्यान
दे। इस बेल की देख-भाल कर।

15उसे महफ़ूज़ रख जिसे तेरे दहने हाथ ने ज़मीन में
लगाया, उस बेटे को जिसे तू ने अपने लिए पाला है।
16इस वक़्त वह कट कर नज़र-ए-आतिश हुआ है।
तेरे चेहरे की डाँट-डपट से लोग हलाक हो जाते हैं।
17तेरा हाथ अपने दहने हाथ के बन्दे को पनाह दे,
उस आदमज़ाद को जिसे तू ने अपने लिए पाला था।
18तब हम तुझ से दूर नहीं हो जाएंगे। बख़्श दे कि
हमारी जान में जान आए तो हम तेरा नाम पुकारेंगे।

19ऐ रब, लश्करों के ख़ुदा, हमें बहाल कर। अपने
चेहरे का नूर चमका तो हम नजात पाएँगे।

हक़ीक़ी इबादत क्या है?

81 1आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा
के लिए। तर्ज़ : गित्तीत।

अल्लाह हमारी क़ुव्वत है। उस की ख़ुशी में
शादियाना बजाओ, याक़ूब के ख़ुदा की ताज़ीम में
ख़ुशी के नारे लगाओ।
2गीत गाना शुरू करो। दफ़ बजाओ, सरोद और
सितार की सुरीली आवाज़ निकालो।
3नए चाँद के दिन नरसिंगा फूँको, पूरे चाँद के जिस
दिन हमारी ईद होती है उसे फूँको।
4क्यूँकि यह इस्राईल का फ़र्ज़ है, यह याक़ूब के
ख़ुदा का फ़रमान है।
5जब यूसुफ़ मिस्र के ख़िलाफ़ निकला तो अल्लाह ने
ख़ुद यह मुक़र्रर किया।

मैं ने एक ज़बान सुनी, जो मैं अब तक नहीं जानता
था,
6“मैं ने उस के कंधे पर से बोझ उतारा और उस
के हाथ भारी टोकरी उठाने से आज़ाद किए।
7मुसीबत में तू ने आवाज़ दी तो मैं ने तुझे बचाया।
गरजते बादल में से मैं ने तुझे जवाब दिया और तुझे
मरीबा के पानी पर आज़माया। (सिलाह)
8ऐ मेरी क़ौम, सुन, तो मैं तुझे आगाह करूँगा। ऐ
इस्राईल, काश तू मेरी सुने!
9तेरे दरमियान कोई और ख़ुदा न हो, किसी
अजनबी माबूद को सिज्दा न कर।
10मैं ही रब तेरा ख़ुदा हूँ जो तुझे मुल्क-ए-मिस्र से
निकाल लाया। अपना मुँह ख़ूब खोल तो मैं उसे भर
दूँगा।

11लेकिन मेरी क़ौम ने मेरी न सुनी, इस्राईल मेरी
बात मानने के लिए तय्यार न था।
12चुनाँचे मैं ने उन्हें उन के दिलों की ज़िद के हवाले
कर दिया, और वह अपने ज़ाती मश्वरों के मुताबिक़
ज़िन्दगी गुज़ारने लगे।
13काश मेरी क़ौम सुने, इस्राईल मेरी राहों पर चले!
14तब मैं जल्दी से उस के दुश्मनों को ज़ेर करता,
अपना हाथ उस के मुख़ालिफ़ों के ख़िलाफ़ उठाता।
15तब रब से नफ़रत करने वाले दबक कर उस की
ख़ुशामद करते, उन की शिकस्त अबदी होती।
16लेकिन इस्राईल को मैं बेहतरीन गन्दुम खिलाता,
मैं चटान में से शहद निकाल कर उसे सेर करता।”

सब से आला मुन्सिफ़

82 [1]आसफ़ का ज़बूर।
अल्लाह इलाही मजलिस में खड़ा है,
माबूदों के दरमियान वह अदालत करता है,
[2]“तुम कब तक अदालत में ग़लत फ़ैसले करके
बेदीनों की जानिबदारी करोगे? (सिलाह)
[3]पस्तहालों और यतीमों का इन्साफ़ करो,
मुसीबतज़दों और ज़रूरतमन्दों के हुक़ूक़ क़ाइम
रखो।
[4]पस्तहालों और ग़रीबों को बचा कर बेदीनों के
हाथ से छुड़ाओ।”

[5]लेकिन वह कुछ नहीं जानते, उन्हें समझ ही नहीं
आती। वह तारीकी में टटोल टटोल कर घूमते फिरते
हैं जबकि ज़मीन की तमाम बुन्यादें झूमने लगी हैं।
[6]बेशक मैं ने कहा, “तुम ख़ुदा हो, सब अल्लाह
तआला के फ़र्ज़न्द हो।
[7]लेकिन तुम फ़ानी इन्सान की तरह मर जाओगे,
तुम दीगर हुक्मरानों की तरह गिर जाओगे।”

[8]ऐ अल्लाह, उठ कर ज़मीन की अदालत कर!
क्यूँकि तमाम अक़्वाम तेरी ही मौरूसी मिलकियत
हैं।

क़ौम के दुश्मनों के ख़िलाफ़ दुआ

83 [1]गीत। आसफ़ का ज़बूर।
ऐ अल्लाह, ख़ामोश न रह! ऐ अल्लाह, चुप
न रह!
[2]देख, तेरे दुश्मन शोर मचा रहे हैं, तुझ से नफ़रत
करने वाले अपना सर तेरे ख़िलाफ़ उठा रहे हैं।
[3]तेरी क़ौम के ख़िलाफ़ वह चालाक मन्सूबे बांध
रहे हैं, जो तेरी आड़ में छुप गए हैं उन के ख़िलाफ़
साज़िशें कर रहे हैं।
[4]वह कहते हैं, “आओ, हम उन्हें मिटा दें ताकि
क़ौम नेस्त हो जाए और इस्राईल का नाम-ओ-निशान
बाक़ी न रहे।”
[5]क्यूँकि वह आपस में सलाह-मश्वरा करने के बाद
दिली तौर पर मुत्तहिद हो गए हैं, उन्हों ने तेरे ही
ख़िलाफ़ अह्द बांधा है।
[6]उन में अदोम के ख़ैमे, इस्माईली, मोआब,
हाजिरी,
[7]जबाल, अम्मोन, अमालीक़, फिलिस्तिया और
सूर के बाशिन्दे शामिल हो गए हैं।
[8]असूर भी उन में शरीक हो कर लूत की औलाद
को सहारा दे रहा है। (सिलाह)

[9]उन के साथ वही सुलूक कर जो तू ने मिदियानियों
से यानी क़ैसोन नदी पर सीसरा और याबीन से किया।
[10]क्यूँकि वह ऐन-दोर के पास हलाक हो कर खेत
में गोबर बन गए।
[11]उन के शुरफ़ा के साथ वही बरताओ कर जो तू
ने ओरेब और ज़एब से किया। उन के तमाम सरदार
ज़िबह और ज़ल्मुन्ना की मानिन्द बन जाएँ,
[12]जिन्हों ने कहा, “आओ, हम अल्लाह की चरागाहों
पर क़ब्ज़ा करें।”
[13]ऐ मेरे ख़ुदा, उन्हें लुढ़कबूटी और हवा में उड़ते
हुए भूसे की मानिन्द बना दे।
[14]जिस तरह आग पूरे जंगल में फैल जाती और एक
ही शोला पहाड़ों को झुलसा देता है,
[15]उसी तरह अपनी आँधी से उन का ताक़्क़ुब कर,
अपने तूफ़ान से उन को दह्शतज़दा कर दे।
[16]ऐ रब, उन का मुँह काला कर ताकि वह तेरा नाम
तलाश करें।
[17]वह हमेशा तक शर्मिन्दा और हवासबाख़्ता रहें,
वह शर्मसार हो कर हलाक हो जाएँ।
[18]तब ही वह जान लेंगे कि तू ही जिस का नाम रब
है अल्लाह तआला यानी पूरी दुनिया का मालिक है।

रब के घर पर ख़ुशी

84 [1]क़ोरह ख़ानदान का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : गित्तीत।
ऐ रब्ब-उल-अफ़्वाज, तेरी सुकूनतगाह कितनी प्यारी है!
[2]मेरी जान रब की बारगाहों के लिए तड़पती हुई निढाल है। मेरा दिल बल्कि पूरा जिस्म ज़िन्दा ख़ुदा को ज़ोर से पुकार रहा है।
[3]ऐ रब्ब-उल-अफ़्वाज, ऐ मेरे बादशाह और ख़ुदा, तेरी क़ुर्बानगाहों के पास परिन्दे को भी घर मिल गया, अबाबील को भी अपने बच्चों को पालने का घोंसला मिल गया है।

[4]मुबारक हैं वह जो तेरे घर में बसते हैं, वह हमेशा ही तेरी सताइश करेंगे। (सिलाह)
[5]मुबारक हैं वह जो तुझ में अपनी ताक़त पाते, जो दिल से तेरी राहों में चलते हैं।
[6]वह बुका की ख़ुश्क वादी [i]में से गुज़रते हुए उसे शादाब जगह बना लेते हैं, और बारिशें उसे बरकतों से ढाँप देती हैं।
[7]वह क़दम-ब-क़दम तक़वियत पाते हुए आगे बढ़ते, सब कोह-ए-सिय्यून पर अल्लाह के सामने हाज़िर हो जाते हैं।
[8]ऐ रब, ऐ लश्करों के ख़ुदा, मेरी दुआ सुन! ऐ याक़ूब के ख़ुदा, ध्यान दे! (सिलाह)
[9]ऐ अल्लाह, हमारी ढाल पर करम की निगाह डाल। अपने मसह किए हुए ख़ादिम के चेहरे पर नज़र कर।

[10]तेरी बारगाहों में एक दिन किसी और जगह पर हज़ार दिनों से बेहतर है। मुझे अपने ख़ुदा के घर के दरवाज़े पर हाज़िर रहना बेदीनों के घरों में बसने से कहीं ज़्यादा पसन्द है।
[11]क्यूँकि रब ख़ुदा आफ़ताब और ढाल है, वही हमें फ़ज़्ल और इज़्ज़त से नवाज़ता है। जो दयानतदारी से चलें उन्हें वह किसी भी अच्छी चीज़ से महरूम नहीं रखता।
[12]ऐ रब्ब-उल-अफ़्वाज, मुबारक है वह जो तुझ पर भरोसा रखता है!

नए सिरे से बरकत पाने के लिए दुआ

85 [1]क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
ऐ रब, पहले तू ने अपने मुल्क को पसन्द किया, पहले याक़ूब को बहाल किया।
[2]पहले तू ने अपनी क़ौम का क़ुसूर मुआफ़ किया, उस का तमाम गुनाह ढाँप दिया। (सिलाह)
[3]जो ग़ज़ब हम पर नाज़िल हो रहा था उस का सिलसिला तू ने रोक दिया, जो क़हर हमारे ख़िलाफ़ भड़क रहा था उसे छोड़ दिया।

[4]ऐ हमारी नजात के ख़ुदा, हमें दुबारा बहाल कर। हम से नाराज़ होने से बाज़ आ।
[5]क्या तू हमेशा तक हम से ग़ुस्से रहेगा? क्या तू अपना क़हर पुश्त-दर-पुश्त क़ाइम रखेगा?
[6]क्या तू दुबारा हमारी जान को ताज़ादम नहीं करेगा ताकि तेरी क़ौम तुझ से ख़ुश हो जाए?
[7]ऐ रब, अपनी शफ़क़त हम पर ज़ाहिर कर, अपनी नजात हमें अता फ़रमा।

[8]मैं वह कुछ सुनूँगा जो ख़ुदा रब फ़रमाएगा। क्यूँकि वह अपनी क़ौम और अपने ईमानदारों से सलामती का वादा करेगा, अलबत्ता लाज़िम है कि वह दुबारा हमाक़त में उलझ न जाएँ।
[9]यक़ीनन उस की नजात उन के क़रीब है जो उस का ख़ौफ़ मानते हैं ताकि जलाल हमारे मुल्क में सुकूनत करे।

---
[i]या रोने वाली यानी आँसूओं की वादी।

10 शफ़क़त और वफ़ादारी एक दूसरे के गले लग
गए हैं, रास्ती और सलामती ने एक दूसरे को बोसा
दिया है।
11 सच्चाई ज़मीन से फूट निकलेगी और रास्ती
आसमान से ज़मीन पर नज़र डालेगी।
12 अल्लाह ज़रूर वह कुछ देगा जो अच्छा है, हमारी
ज़मीन ज़रूर अपनी फ़सलें पैदा करेगी।
13 रास्ती उस के आगे आगे चल कर उस के क़दमों
के लिए रास्ता तय्यार करेगी।

मुसीबत में दुआ

86 1 दाऊद की दुआ।
ऐ रब, अपना कान झुका कर मेरी सुन,
क्यूँकि मैं मुसीबतज़दा और मुहताज हूँ।
2 मेरी जान को महफ़ूज़ रख, क्यूँकि मैं ईमानदार हूँ।
अपने ख़ादिम को बचा जो तुझ पर भरोसा रखता है।
तू ही मेरा ख़ुदा है!
3 ऐ रब, मुझ पर मेहरबानी कर, क्यूँकि दिन भर मैं
तुझे पुकारता हूँ।
4 अपने ख़ादिम की जान को ख़ुश कर, क्यूँकि मैं
तेरा आरज़ूमन्द हूँ।
5 क्यूँकि तू ऐ रब भला है, तू मुआफ़ करने के लिए
तय्यार है। जो भी तुझे पुकारते हैं उन पर तू बड़ी
शफ़क़त करता है।
6 ऐ रब, मेरी दुआ सुन, मेरी इल्तिजाओं पर
तवज्जुह कर।
7 मुसीबत के दिन मैं तुझे पुकारता हूँ, क्यूँकि तू मेरी
सुनता है।

8 ऐ रब, माबूदों में से कोई तेरी मानिन्द नहीं है। जो
कुछ तू करता है कोई और नहीं कर सकता।
9 ऐ रब, जितनी भी क़ौमें तू ने बनाईं वह आ कर तेरे
हुज़ूर सिज्दा करेंगी और तेरे नाम को जलाल देंगी।
10 क्यूँकि तू ही अज़ीम है और मोजिज़े करता है। तू
ही ख़ुदा है।
11 ऐ रब, मुझे अपनी राह सिखा ताकि तेरी
वफ़ादारी में चलूँ। बख़्श दे कि मैं पूरे दिल से तेरा
ख़ौफ़ मानूँ।
12 ऐ रब मेरे ख़ुदा, मैं पूरे दिल से तेरा शुक्र करूँगा,
हमेशा तक तेरे नाम की ताज़ीम करूँगा।
13 क्यूँकि तेरी मुझ पर शफ़क़त अज़ीम है, तू ने मेरी
जान को पाताल की गहराइयों से छुड़ाया है।

14 ऐ अल्लाह, मग़रूर मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं,
ज़ालिमों का जथ्था मेरी जान लेने के दरपै है। यह
लोग तेरा लिहाज़ नहीं करते।
15 लेकिन तू, ऐ रब, रहीम और मेहरबान ख़ुदा है।
तू तहम्मुल, शफ़क़त और वफ़ा से भरपूर है।
16 मेरी तरफ़ रुजू फ़रमा, मुझ पर मेहरबानी कर!
अपने ख़ादिम को अपनी क़ुव्वत अता कर, अपनी
ख़ादिमा के बेटे को बचा।
17 मुझे अपनी मेहरबानी का कोई निशान दिखा।
मुझ से नफ़रत करने वाले यह देख कर शर्मिन्दा हो
जाएँ कि तू रब ने मेरी मदद करके मुझे तसल्ली दी है।

सिय्यून अक़्वाम की माँ है

87 1 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। गीत।
उस की बुन्याद मुक़द्दस पहाड़ों पर रखी
गई है।
2 रब सिय्यून के दरवाज़ों को याक़ूब की दीगर
आबादियों से कहीं ज़्यादा प्यार करता है।

3 ऐ अल्लाह के शहर, तेरे बारे में शानदार बातें सुनाई
जाती हैं। (सिलाह)
4 रब फ़रमाता है, “मैं मिस्र और बाबल को
उन लोगों में शुमार करूँगा जो मुझे जानते हैं।”
फ़िलिस्तिया, सूर और एथोपिया के बारे में भी कहा
जाएगा, “इन की पैदाइश यहीं हुई है।”

5 लेकिन सिय्यून के बारे में कहा जाएगा, “हर एक
बाशिन्दा उस में पैदा हुआ है। अल्लाह तआला ख़ुद
उसे क़ाइम रखेगा।”
6 जब रब अक़्वाम को किताब में दर्ज करेगा तो वह
साथ साथ यह भी लिखेगा, “यह सिय्यून में पैदा हुई
हैं।” (सिलाह)
7 और लोग नाचते हुए गाएँगे, “मेरे तमाम चश्मे तुझ
में हैं।”

तर्क किए गए शख़्स के लिए दुआ

88 1 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए। तर्ज़ : महलत लअन्नोत।
हैमान इज़्राही का हिक्मत का गीत।
ऐ रब, ऐ मेरी नजात के ख़ुदा, दिन रात मैं तेरे हुज़ूर
चीख़ता चिल्लाता हूँ।
2 मेरी दुआ तेरे हुज़ूर पहुँचे, अपना कान मेरी चीख़ों
की तरफ़ झुका।
3 क्यूँकि मेरी जान दुख से भरी है, और मेरी टाँगें
क़ब्र में लटकी हुई हैं।
4 मुझे उन में शुमार किया जाता है जो पाताल में
उतर रहे हैं। मैं उस मर्द की मानिन्द हूँ जिस की तमाम
ताक़त जाती रही है।
5 मुझे मुर्दों में तन्हा छोड़ा गया है, क़ब्र में उन
मक़्तूलों की तरह जिन का तू अब ख़याल नहीं रखता
और जो तेरे हाथ के सहारे से मुन्क़ते हो गए हैं।
6 तू ने मुझे सब से गहरे गढ़े में, तारीकतरीन
गहराइयों में डाल दिया है।
7 तेरे ग़ज़ब का पूरा बोझ मुझ पर आ पड़ा है, तू
ने मुझे अपनी तमाम मौजों के नीचे दबा दिया है।
(सिलाह)
8 तू ने मेरे क़रीबी दोस्तों को मुझ से दूर कर दिया
है, और अब वह मुझ से घिन खाते हैं। मैं फंसा हुआ
हूँ और निकल नहीं सकता।
9 मेरी आँखें ग़म के मारे पझ़मुर्दा हो गई हैं। ऐ रब,
दिन भर मैं तुझे पुकारता, अपने हाथ तेरी तरफ़ उठाए
रखता हूँ।
10 क्या तू मुर्दों के लिए मोजिज़े करेगा? क्या पाताल
के बाशिन्दे उठ कर तेरी तम्जीद करेंगे? (सिलाह)
11 क्या लोग क़ब्र में तेरी शफ़्क़त या पाताल में तेरी
वफ़ा बयान करेंगे?
12 क्या तारीकी में तेरे मोजिज़े या मुल्क-ए-फ़रामोश
में तेरी रास्ती मालूम हो जाएगी?

13 लेकिन ऐ रब, मैं मदद के लिए तुझे पुकारता हूँ,
मेरी दुआ सुब्ह-सवेरे तेरे सामने आ जाती है।
14 ऐ रब, तू मेरी जान को क्यूँ रद्द करता, अपने
चेहरे को मुझ से पोशीदा क्यूँ रखता है?
15 मैं मुसीबतज़दा और जवानी से मौत के क़रीब
रहा हूँ। तेरे दहशतनाक हमले बर्दाश्त करते करते मैं
जान से हाथ धो बैठा हूँ।
16 तेरा भड़कता क़हर मुझ पर से गुज़र गया, तेरे
हौलनाक कामों ने मुझे नाबूद कर दिया है।
17 दिन भर वह मुझे सैलाब की तरह घेरे रखते हैं,
हर तरफ़ से मुझ पर हम्लाआवर होते हैं।
18 तू ने मेरे दोस्तों और पड़ोसियों को मुझ से दूर
कर रखा है। तारीकी ही मेरी क़रीबी दोस्त बन गई
है।

इस्राईल की मुसीबत और दाऊद से वादा

89 1 ऐतान इज़्राही का हिक्मत का गीत।
मैं अबद तक रब की मेहरबानियों की
मद्हसराई करूँगा, पुश्त-दर-पुश्त मुँह से तेरी वफ़ा
का एलान करूँगा।
2 क्यूँकि मैं बोला, “तेरी शफ़्क़त हमेशा तक क़ाइम
है, तू ने अपनी वफ़ा की मज़बूत बुन्याद आसमान पर
ही रखी है।”
3 तू ने फ़रमाया, “मैं ने अपने चुने हुए बन्दे से अहद
बांधा, अपने ख़ादिम दाऊद से क़सम खा कर वादा
किया है,
4 ‘मैं तेरी नस्ल को हमेशा तक क़ाइम रखूँगा, तेरा
तख़्त हमेशा तक मज़बूत रखूँगा’।” (सिलाह)

5ऐ रब, आसमान तेरे मोजिज़ों की सताइश करेंगे,
मुक़द्दसीन की जमाअत में ही तेरी वफ़ादारी की
तम्जीद करेंगे।
6क्यूँकि बादलों में कौन रब की मानिन्द है? इलाही
हस्तियों में से कौन रब की मानिन्द है?
7जो भी मुक़द्दसीन की मजलिस में शामिल हैं वह
अल्लाह से ख़ौफ़ खाते हैं। जो भी उस के इर्दगिर्द होते
हैं उन पर उस की अज़मत और रोब छाया रहता है।
8ऐ रब, ऐ लश्करों के ख़ुदा, कौन तेरी मानिन्द है?
ऐ रब, तू क़वी और अपनी वफ़ा से घिरा रहता है।
9तू ठाठें मारते हुए समुन्दर पर हुकूमत करता है।
जब वह मौजज़न हो तो तू उसे थमा देता है।
10तू ने समुन्दरी अज़दहे रहब को कुचल दिया,
और वह मक़्तूल की मानिन्द बन गया। अपने क़वी
बाज़ू से तू ने अपने दुश्मनों को तित्तर-बित्तर कर
दिया।
11आसमान-ओ-ज़मीन तेरे ही हैं। दुनिया और जो
कुछ उस में है तू ने क़ाइम किया।
12तू ने शिमाल-ओ-जुनूब को ख़ल्क़ किया। तबूर
और हर्मून तेरे नाम की ख़ुशी में नारे लगाते हैं।
13तेरा बाज़ू क़वी और तेरा हाथ ताक़तवर है। तेरा
दहना हाथ अज़ीम काम करने के लिए तय्यार है।
14रास्ती और इन्साफ़ तेरे तख़्त की बुन्याद हैं।
शफ़क़त और वफ़ा तेरे आगे आगे चलती हैं।

15मुबारक है वह क़ौम जो तेरी ख़ुशी के नारे लगा
सके। ऐ रब, वह तेरे चेहरे के नूर में चलेंगे।
16रोज़ाना वह तेरे नाम की ख़ुशी मनाएँगे और तेरी
रास्ती से सरफ़राज़ होंगे।
17क्यूँकि तू ही उन की ताक़त की शान है, और तू
अपने करम से हमें सरफ़राज़ करेगा।
18क्यूँकि हमारी ढाल रब ही की है, हमारा बादशाह
इस्राईल के क़ुद्दूस ही का है।

19माज़ी में तू रोया में अपने ईमानदारों से हमकलाम
हुआ। उस वक़्त तू ने फ़रमाया, “मैं ने एक सूरमे को
ताक़त से नवाज़ा है, क़ौम में से एक को चुन कर
सरफ़राज़ किया है।
20मैं ने अपने ख़ादिम दाऊद को पा लिया और उसे
अपने मुक़द्दस तेल से मसह किया है।
21मेरा हाथ उसे क़ाइम रखेगा, मेरा बाज़ू उसे
तक़वियत देगा।
22दुश्मन उस पर ग़ालिब नहीं आएगा, शरीर उसे
ख़ाक में नहीं मिलाएँगे।
23उस के आगे आगे मैं उस के दुश्मनों को पाश
पाश करूँगा। जो उस से नफ़रत रखते हैं उन्हें ज़मीन
पर पटख़ दूँगा।
24मेरी वफ़ा और मेरी शफ़क़त उस के साथ रहेंगी,
मेरे नाम से वह सरफ़राज़ होगा।
25मैं उस के हाथ को समुन्दर पर और उस के दहने
हाथ को दरयाओं पर हुकूमत करने दूँगा।
26वह मुझे पुकार कर कहेगा, ‘तू मेरा बाप, मेरा
ख़ुदा और मेरी नजात की चटान है।’
27मैं उसे अपना पहलौठा और दुनिया का सब से
आला बादशाह बनाऊँगा।
28मैं उसे हमेशा तक अपनी शफ़क़त से नवाज़ता
रहूँगा, मेरा उस के साथ अह्द कभी तमाम नहीं होगा।
29मैं उस की नस्ल हमेशा तक क़ाइम रखूँगा, जब
तक आसमान क़ाइम है उस का तख़्त क़ाइम रखूँगा।
30अगर उस के बेटे मेरी शरीअत तर्क करके मेरे
अह्काम पर अमल न करें,
31अगर वह मेरे फ़रमानों की बेहुरमती करके मेरी
हिदायात के मुताबिक़ ज़िन्दगी न गुज़ारें
32तो मैं लाठी ले कर उन की तादीब करूँगा और
मोहलक वबाओं से उन के गुनाहों की सज़ा दूँगा।
33लेकिन मैं उसे अपनी शफ़क़त से महरूम नहीं
करूँगा, अपनी वफ़ा का इन्कार नहीं करूँगा।
34न मैं अपने अह्द की बेहुरमती करूँगा, न वह
कुछ तब्दील करूँगा जो मैं ने फ़रमाया है।
35मैं ने एक बार सदा के लिए अपनी क़ुद्दूसियत
की क़सम खा कर वादा किया है, और मैं दाऊद को
कभी धोका नहीं दूँगा।

36 उस की नस्ल अबद तक क़ाइम रहेगी, उस का
तख़्त आफ़ताब की तरह मेरे सामने खड़ा रहेगा।
37 चाँद की तरह वह हमेशा तक बरक़रार रहेगा,
और जो गवाह बादलों में है वह वफ़ादार है।"
(सिलाह)

38 लेकिन अब तू ने अपने मसह किए हुए ख़ादिम
को ठुकरा कर रद्द किया, तू उस से ग़ज़बनाक हो
गया है।
39 तू ने अपने ख़ादिम का अह्द नामन्ज़ूर किया और
उस का ताज ख़ाक में मिला कर उस की बेहुरमती
की है।
40 तू ने उस की तमाम फ़सीलें ढा कर उस के क़िलों
को मल्बे के ढेर बना दिया है।
41 जो भी वहाँ से गुज़रे वह उसे लूट लेता है। वह
अपने पड़ोसियों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गया
है।
42 तू ने उस के मुख़ालिफ़ों का दहना हाथ सरफ़राज़
किया, उस के तमाम दुश्मनों को ख़ुश कर दिया है।
43 तू ने उस की तलवार की तेज़ी बेअसर करके
उसे जंग में फ़त्ह पाने से रोक दिया है।
44 तू ने उस की शान ख़त्म करके उस का तख़्त
ज़मीन पर पटख़ दिया है।
45 तू ने उस की जवानी के दिन मुख़्तसर करके उसे
रुस्वाई की चादर में लपेटा है। (सिलाह)

46 ऐ रब, कब तक? क्या तू अपने आप को हमेशा
तक छुपाए रखेगा? क्या तेरा क़हर अबद तक आग
की तरह भड़कता रहेगा?
47 याद रहे कि मेरी ज़िन्दगी कितनी मुख़्तसर है, कि
तू ने तमाम इन्सान कितने फ़ानी ख़ल्क़ किए हैं।
48 कौन है जिस का मौत से वास्ता न पड़े, कौन है
जो हमेशा ज़िन्दा रहे? कौन अपनी जान को मौत के
क़ब्ज़े से बचाए रख सकता है? (सिलाह)

49 ऐ रब, तेरी वह पुरानी मेहरबानियाँ कहाँ हैं जिन
का वादा तू ने अपनी वफ़ा की क़सम खा कर दाऊद
से किया?
50 ऐ रब, अपने ख़ादिमों की ख़जालत याद कर।
मेरा सीना मुतअद्दिद क़ौमों की लान-तान से दुखता
है,
51 क्यूँकि ऐ रब, तेरे दुश्मनों ने मुझे लान-तान की,
उन्हों ने तेरे मसह किए हुए ख़ादिम को हर क़दम पर
लान-तान की है!

52 अबद तक रब की हम्द हो! आमीन, फिर
आमीन।

चौथी किताब 90-106

फ़ानी इन्सान अल्लाह में पनाह ले

90 1 मर्द-ए-ख़ुदा मूसा की दुआ।
ऐ रब, पुश्त-दर-पुश्त तू हमारी पनाहगाह
रहा है।
2 इस से पहले कि पहाड़ पैदा हुए और तू ज़मीन
और दुनिया को वुजूद में लाया तू ही था। ऐ अल्लाह,
तू अज़ल से अबद तक है।
3 तू इन्सान को दुबारा ख़ाक होने देता है। तू
फ़रमाता है, 'ऐ आदमज़ादो, दुबारा ख़ाक में मिल
जाओ!'
4 क्यूँकि तेरी नज़र में हज़ार साल कल के गुज़रे हुए
दिन के बराबर या रात के एक पहर की मानिन्द हैं।
5 तू लोगों को सैलाब की तरह बहा ले जाता है, वह
नींद और उस घास की मानिन्द हैं जो सुब्ह को फूट
निकलती है।
6 वह सुब्ह को फूट निकलती और उगती है, लेकिन
शाम को मुरझा कर सूख जाती है।

7 क्यूँकि हम तेरे ग़ज़ब से फ़ना हो जाते और तेरे
क़हर से हवासबाख़्ता हो जाते हैं।

8 तू ने हमारी ख़ताओं को अपने सामने रखा, हमारे पोशीदा गुनाहों को अपने चेहरे के नूर में लाया है।

9 चुनाँचे हमारे तमाम दिन तेरे क़हर के तहत घटते घटते ख़त्म हो जाते हैं। जब हम अपने सालों के इख़तिताम पर पहुँचते हैं तो ज़िन्दगी सर्द आह के बराबर ही होती है।

10 हमारी उम्र 70 साल या अगर ज़्यादा ताक़त हो तो 80 साल तक पहुँचती है, और जो दिन फ़ख़र का बाइस थे वह भी तक्लीफ़दिह और बेकार हैं। जल्द ही वह गुज़र जाते हैं, और हम परिन्दों की तरह उड़ कर चले जाते हैं।

11 कौन तेरे ग़ज़ब की पूरी शिद्दत जानता है? कौन समझता है कि तेरा क़हर हमारी ख़ुदातरसी की कमी के मुताबिक़ ही है?

12 चुनाँचे हमें हमारे दिनों का सहीह हिसाब करना सिखा ताकि हमारे दिल दानिशमन्द हो जाएँ।

13 ऐ रब, दुबारा हमारी तरफ़ रुजू फ़रमा! तू कब तक दूर रहेगा? अपने ख़ादिमों पर तरस खा!

14 सुब्ह को हमें अपनी शफ़क़त से सेर कर! तब हम ज़िन्दगी भर बाग़ बाग़ होंगे और ख़ुशी मनाएँगे।

15 हमें उतने ही दिन ख़ुशी दिला जितने तू ने हमें पस्त किया है, उतने ही साल जितने हमें दुख सहना पड़ा है।

16 अपने ख़ादिमों पर अपने काम और उन की औलाद पर अपनी अज़मत ज़ाहिर कर।

17 रब हमारा ख़ुदा हमें अपनी मेहरबानी दिखाए। हमारे हाथों का काम मज़बूत कर, हाँ हमारे हाथों का काम मज़बूत कर!

अल्लाह की पनाह में

91 1 जो अल्लाह तआला की पनाह में रहे वह क़ादिर-ए-मुतलक़ के साय में सुकूनत करेगा।

2 मैं कहूँगा, "ऐ रब, तू मेरी पनाह और मेरा क़िला है, मेरा ख़ुदा जिस पर मैं भरोसा रखता हूँ।"

3 क्यूँकि वह तुझे चिड़ीमार के फंदे और मोहलक मर्ज़ से छुड़ाएगा।

4 वह तुझे अपने शाहपरों के नीचे ढाँप लेगा, और तू उस के परों तले पनाह ले सकेगा। उस की वफ़ादारी तेरी ढाल और पुश्ता रहेगी।

5 रात की दहशतों से ख़ौफ़ मत खा, न उस तीर से जो दिन के वक़्त चले।

6 उस मोहलक मर्ज़ से दहशत मत खा जो तारीकी में घूमे फिरे, न उस वबाई बीमारी से जो दोपहर के वक़्त तबाही फैलाए।

7 गो तेरे साथ खड़े हज़ार अफ़राद हलाक हो जाएँ और तेरे दहने हाथ दस हज़ार मर जाएँ, लेकिन तू उस की ज़द में नहीं आएगा।

8 तू अपनी आँखों से इस का मुलाहज़ा करेगा, तू ख़ुद बेदीनों की सज़ा देखेगा।

9 क्यूँकि तू ने कहा है, "रब मेरी पनाहगाह है," तू अल्लाह तआला के साय में छुप गया है।

10 इस लिए तेरा किसी बला से वास्ता नहीं पड़ेगा, कोई आफ़त भी तेरे ख़ैमे के क़रीब फटकने नहीं पाएगी।

11 क्यूँकि वह अपने फ़रिश्तों को हर राह पर तेरी हिफ़ाज़त करने का हुक्म देगा,

12 और वह तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे ताकि तेरे पाँओ को पत्थर से ठेस न लगे।

13 तू शेरबबरों और ज़हरीले साँपों पर क़दम रखेगा, तू जवान शेरों और अज़दहाओं को कुचल देगा।

14 रब फ़रमाता है, "चूँकि वह मुझ से लिपटा रहता है इस लिए मैं उसे बचाऊँगा। चूँकि वह मेरा नाम जानता है इस लिए मैं उसे महफ़ूज़ रखूँगा।

15 वह मुझे पुकारेगा तो मैं उस की सुनूँगा। मुसीबत में मैं उस के साथ हूँगा। मैं उसे छुड़ा कर उस की इज़्ज़त करूँगा।

16 मैं उसे उम्र की दराज़ी बख़्शूँगा और उस पर अपनी नजात ज़ाहिर करूँगा।"

अल्लाह की सताइश करने की ख़ुशी

92 [1]ज़बूर। सबत के लिए गीत।
रब का शुक्र करना भला है। ऐ अल्लाह
तआला, तेरे नाम की मद्हसराई करना भला है।
[2]सुब्ह को तेरी शफ़्क़त और रात को तेरी वफ़ा का
एलान करना भला है,
[3]ख़ासकर जब साथ साथ दस तारों वाला साज़,
सितार और सरोद बजते हैं।

[4]क्यूँकि ऐ रब, तू ने मुझे अपने कामों से ख़ुश किया
है, और तेरे हाथों के काम देख कर मैं ख़ुशी के नारे
लगाता हूँ।
[5]ऐ रब, तेरे काम कितने अज़ीम, तेरे ख़यालात
कितने गहरे हैं।
[6]नादान यह नहीं जानता, अहमक़ को इस की
समझ नहीं आती।
[7]गो बेदीन घास की तरह फूट निकलते और
बदकार सब फलते फूलते हैं, लेकिन आख़िरकार
वह हमेशा के लिए हलाक हो जाएंगे।
[8]मगर तू, ऐ रब, अबद तक सरबुलन्द रहेगा।

[9]क्यूँकि तेरे दुश्मन, ऐ रब, तेरे दुश्मन यक़ीनन
तबाह हो जाएंगे, बदकार सब तित्तर-बित्तर हो जाएंगे।

[10]तू ने मुझे जंगली बैल की सी ताक़त दे कर ताज़ा
तेल से मसह किया है।
[11]मेरी आँख अपने दुश्मनों की शिकस्त से और मेरे
कान उन शरीरों के अन्जाम से लुत्फ़अन्दोज़ हुए हैं
जो मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं।

[12]रास्तबाज़ खजूर के दरख़्त की तरह फले फूलेगा,
वह लुबनान के देवदार के दरख़्त की तरह बढ़ेगा।
[13]जो पौदे रब की सुकूनतगाह में लगाए गए हैं वह
हमारे ख़ुदा की बारगाहों में फलें फूलेंगे।
[14]वह बुढ़ापे में भी फल लाएँगे और तर-ओ-ताज़ा
और हरे-भरे रहेंगे।
[15]उस वक़्त भी वह एलान करेंगे, “रब रास्त है।
वह मेरी चटान है, और उस में नारास्ती नहीं होती।”

अल्लाह अबदी बादशाह है

93 [1]रब बादशाह है, वह जलाल से मुलब्बस
है। रब जलाल से मुलब्बस और क़ुदरत से
कमरबस्ता है। यक़ीनन दुनिया मज़बूत बुन्याद पर
क़ाइम है, और वह नहीं डगमगाएगी।

[2]तेरा तख़्त क़दीम ज़माने से क़ाइम है, तू
अज़ल से मौजूद है।
[3]ऐ रब, सैलाब गरज उठे, सैलाब शोर मचा कर
गरज उठे, सैलाब ठाठें मार कर गरज उठे।
[4]लेकिन एक है जो गहरे पानी के शोर से
ज़्यादा ज़ोर-आवर, जो समुन्दर की ठाठों से ज़्यादा
ताक़तवर है। रब जो बुलन्दियों पर रहता है कहीं
ज़्यादा अज़ीम है।

[5]ऐ रब, तेरे अहकाम हर तरह से क़ाबिल-ए-
एतिमाद हैं। तेरा घर हमेशा तक क़ुद्दूसियत से
आरास्ता रहेगा।

क़ौम पर ज़ुल्म करने वालों से रिहाई के लिए दुआ

94 [1]ऐ रब, ऐ इन्तिक़ाम लेने वाले ख़ुदा!
ऐ इन्तिक़ाम लेने वाले ख़ुदा, अपना नूर
चमका।
[2]ऐ दुनिया के मुन्सिफ़, उठ कर मग़रूरों को उन के
आमाल की मुनासिब सज़ा दे।
[3]ऐ रब, बेदीन कब तक, हाँ कब तक फ़त्ह के नारे
लगाएँगे?

[4]वह कुफ़्र की बातें उगलते रहते, तमाम बदकार
शेख़ी मारते रहते हैं।

5ऐ रब, वह तेरी क़ौम को कुचल रहे, तेरी मौरूसी
मिलकियत पर ज़ुल्म कर रहे हैं।
6बेवाओं और अजनबियों को वह मौत के घाट
उतार रहे, यतीमों को क़त्ल कर रहे हैं।
7वह कहते हैं, "यह रब को नज़र नहीं आता,
याक़ूब का ख़ुदा ध्यान ही नहीं देता।"

8ऐ क़ौम के नादानो, ध्यान दो! ऐ अहमक़ो, तुम्हें
कब समझ आएगी?
9जिस ने कान बनाया, क्या वह नहीं सुनता? जिस
ने आँख को तश्कील दिया क्या वह नहीं देखता?
10जो अक़्वाम को तम्बीह करता और इन्सान को
तालीम देता है क्या वह सज़ा नहीं देता?
11रब इन्सान के ख़यालात जानता है, वह जानता
है कि वह दम भर के ही हैं।

12ऐ रब, मुबारक है वह जिसे तू तर्बियत देता है,
जिसे तू अपनी शरीअत की तालीम देता है
13ताकि वह मुसीबत के दिनों से आराम पाए और
उस वक़्त तक सुकून से ज़िन्दगी गुज़ारे जब तक
बेदीनों के लिए गढ़ा तय्यार न हो।
14क्यूँकि रब अपनी क़ौम को रद्द नहीं करेगा, वह
अपनी मौरूसी मिलकियत को तर्क नहीं करेगा।
15फ़ैसले दुबारा इन्साफ़ पर मब्नी होंगे, और तमाम
दियानतदार दिल उस की पैरवी करेंगे।

16कौन शरीरों के सामने मेरा दिफ़ा करेगा? कौन
मेरे लिए बदकारों का सामना करेगा?
17अगर रब मेरा सहारा न होता तो मेरी जान जल्द
ही ख़ामोशी के मुल्क में जा बसती।
18ऐ रब, जब मैं बोला, "मेरा पाँओ डगमगाने लगा
है" तो तेरी शफ़क़त ने मुझे सँभाला।
19जब तश्वीशनाक ख़यालात मुझे बेचैन करने लगे
तो तेरी तसल्लियों ने मेरी जान को ताज़ादम किया।
20ऐ अल्लाह, क्या तबाही की हुकूमत तेरे साथ
मुत्तहिद हो सकती है, ऐसी हुकूमत जो अपने फ़रमानों
से ज़ुल्म करती है? हरगिज़ नहीं!
21वह रास्तबाज़ की जान लेने के लिए आपस में
मिल जाते और बेक़ुसूरों को क़ातिल ठहराते हैं।
22लेकिन रब मेरा क़िला बन गया है, और मेरा ख़ुदा
मेरी पनाह की चटान साबित हुआ है।
23वह उन की नाइन्साफ़ी उन पर वापस आने देगा
और उन की शरीर हरकतों के जवाब में उन्हें तबाह
करेगा। रब हमारा ख़ुदा उन्हें नेस्त करेगा।

परस्तिश और फ़रमाँबरदारी की दावत

95 1आओ, हम शादियाना बजा कर रब की
मद्हसराई करें, ख़ुशी के नारे लगा कर
अपनी नजात की चटान की तम्जीद करें!
2आओ, हम शुक्रगुज़ारी के साथ उस के हुज़ूर
आएँ, गीत गा कर उस की सताइश करें।
3क्यूँकि रब अज़ीम ख़ुदा और तमाम माबूदों पर
अज़ीम बादशाह है।
4उस के हाथ में ज़मीन की गहराइयाँ हैं, और पहाड़
की बुलन्दियाँ भी उसी की हैं।
5समुन्दर उस का है, क्यूँकि उस ने उसे ख़ल्क़
किया। ख़ुश्की उस की है, क्यूँकि उस के हाथों ने
उसे तश्कील दिया।
6आओ हम सिज्दा करें और रब अपने ख़ालिक़ के
सामने झुक कर घुटने टेकें।
7क्यूँकि वह हमारा ख़ुदा है और हम उस की
चरागाह की क़ौम और उस के हाथ की भेड़ें हैं। अगर
तुम आज उस की आवाज़ सुनो
8"तो अपने दिलों को सख़्त न करो जिस तरह
मरीबा में हुआ, जिस तरह रेगिस्तान में मस्सा में
हुआ।
9वहाँ तुम्हारे बापदादा ने मुझे आज़माया और
जाँचा, हालाँकि उन्हों ने मेरे काम देख लिए थे।

[10] चालीस साल मैं उस नस्ल से घिन खाता रहा।
मैं बोला, ‘उन के दिल हमेशा सहीह राह से हट जाते
हैं, और वह मेरी राहें नहीं जानते।’
[11] अपने ग़ज़ब में मैं ने क़सम खाई, ‘यह कभी
उस मुल्क में दाख़िल नहीं होंगे जहाँ मैं उन्हें सुकून
देता’।”

दुनिया का ख़ालिक़ और मुन्सिफ़

96 [1] रब की तम्जीद में नया गीत गाओ, ऐ पूरी
दुनिया, रब की मद्हसराई करो।
[2] रब की तम्जीद में गीत गाओ, उस के नाम
की सताइश करो, रोज़-ब-रोज़ उस की नजात की
ख़ुशख़बरी सुनाओ।
[3] क़ौमों में उस का जलाल और तमाम उम्मतों में
उस के अजाइब बयान करो।
[4] क्यूँकि रब अज़ीम और सताइश के बहुत लाइक़
है। वह तमाम माबूदों से महीब है।
[5] क्यूँकि दीगर क़ौमों के तमाम माबूद बुत ही हैं
जबकि रब ने आसमान को बनाया।
[6] उस के हुज़ूर शान-ओ-शौकत, उस के मक़्दिस में
क़ुदरत और जलाल है।
[7] ऐ क़ौमों के क़बीलो, रब की तम्जीद करो, रब के
जलाल और क़ुदरत की सताइश करो।
[8] रब के नाम को जलाल दो। क़ुर्बानी ले कर उस
की बारगाहों में दाख़िल हो जाओ।
[9] मुक़द्दस लिबास से आरास्ता हो कर रब को
सिज्दा करो। पूरी दुनिया उस के सामने लरज़ उठे।
[10] क़ौमों में एलान करो, “रब ही बादशाह है!
यक़ीनन दुनिया मज़बूती से क़ाइम है और नहीं
डगमगाएगी। वह इन्साफ़ से क़ौमों की अदालत
करेगा।”

[11] आसमान ख़ुश हो, ज़मीन जश्न मनाए! समुन्दर
और जो कुछ उस में है ख़ुशी से गरज उठे।
[12] मैदान और जो कुछ उस में है बाग़ बाग़ हो। फिर
जंगल के दरख़्त शादियाना बजाएंगे।
[13] वह रब के सामने शादियाना बजाएंगे, क्यूँकि वह
आ रहा है, वह दुनिया की अदालत करने आ रहा है।
वह इन्साफ़ से दुनिया की अदालत करेगा और अपनी
सदाक़त से अक़्वाम का फ़ैसला करेगा।

अल्लाह की सल्तनत पर ख़ुशी

97 [1] रब बादशाह है! ज़मीन जश्न मनाए,
साहिली इलाक़े दूर दूर तक ख़ुश हों।
[2] वह बादलों और गहरे अंधेरे से घिरा रहता है,
रास्ती और इन्साफ़ उस के तख़्त की बुन्याद हैं।
[3] आग उस के आगे आगे भड़क कर चारों तरफ़
उस के दुश्मनों को भस्म कर देती है।
[4] उस की कड़कती बिजलियों ने दुनिया को रौशन
कर दिया तो ज़मीन यह देख कर पेच-ओ-ताब खाने
लगी।
[5] रब के आगे आगे, हाँ पूरी दुनिया के मालिक के
आगे आगे पहाड़ मोम की तरह पिघल गए।
[6] आसमानों ने उस की रास्ती का एलान किया, और
तमाम क़ौमों ने उस का जलाल देखा।

[7] तमाम बुतपरस्त, हाँ सब जो बुतों पर फ़ख़र करते
हैं शर्मिन्दा हों। ऐ तमाम माबूदो, उसे सिज्दा करो!
[8] कोह-ए-सिय्यून सुन कर ख़ुश हुआ। ऐ रब, तेरे
फ़ैसलों के बाइस यहूदाह की बेटियाँ [j] बाग़ बाग़ हुईं।
[9] क्यूँकि तू ऐ रब, पूरी दुनिया पर सब से आला है,
तू तमाम माबूदों से सरबुलन्द है।

[10] तुम जो रब से मुहब्बत रखते हो, बुराई से नफ़रत
करो! रब अपने ईमानदारों की जान को महफ़ूज़
रखता है, वह उन्हें बेदीनों के क़ब्ज़े से छुड़ाता है।

---
[j] एक और मुमकिना तर्जुमा : यहूदाह की आबादियाँ।

[11]रास्तबाज़ के लिए नूर का और दिल के दियानतदारों के लिए शादमानी का बीज बोया गया है।

[12]ऐ रास्तबाज़ो, रब से ख़ुश हो, उस के मुक़द्दस नाम की सताइश करो।

पूरी दुनिया का शाही मुन्सिफ़

98 [1]रब की तम्जीद में नया गीत गाओ, क्यूँकि उस ने मोजिज़े किए हैं। अपने दहने हाथ और मुक़द्दस बाज़ू से उस ने नजात दी है।

[2]रब ने अपनी नजात का एलान किया और अपनी रास्ती क़ौमों के रू-ब-रू ज़ाहिर की है।

[3]उस ने इस्राईल के लिए अपनी शफ़क़त और वफ़ा याद की है। दुनिया की इन्तिहाओं ने सब हमारे ख़ुदा की नजात देखी है।

[4]ऐ पूरी दुनिया, नारे लगा कर रब की मद्‌हसराई करो! आपे में न समाओ और जश्न मना कर हम्द के गीत गाओ!

[5]सरोद बजा कर रब की मद्‌हसराई करो, सरोद और गीत से उस की सताइश करो।

[6]तुरम और नरसिंगा फूँक कर रब बादशाह के हुज़ूर ख़ुशी के नारे लगाओ!

[7]समुन्दर और जो कुछ उस में है, दुनिया और उस के बाशिन्दे ख़ुशी से गरज उठें।

[8]दरया तालियाँ बजाएँ, पहाड़ मिल कर ख़ुशी मनाएँ,

[9]वह रब के सामने ख़ुशी मनाएँ। क्यूँकि वह ज़मीन की अदालत करने आ रहा है। वह इन्साफ़ से दुनिया की अदालत करेगा, रास्ती से क़ौमों का फ़ैसला करेगा।

क़ुद्दूस ख़ुदा

99 [1]रब बादशाह है, अक़्वाम लरज़ उठें! वह करूबी फ़रिश्तों के दरमियान तख़्तनशीन है, दुनिया डगमगाए!

[2]कोह-ए-सिय्यून पर रब अज़ीम है, तमाम अक़्वाम पर सरबुलन्द है।

[3]वह तेरे अज़ीम और पुरजलाल नाम की सताइश करें, क्यूँकि वह क़ुद्दूस है।

[4]वह बादशाह की क़ुदरत की तम्जीद करें जो इन्साफ़ से प्यार करता है। ऐ अल्लाह, तू ही ने अदल क़ाइम किया, तू ही ने याक़ूब में इन्साफ़ और रास्ती पैदा की है।

[5]रब हमारे ख़ुदा की ताज़ीम करो, उस के पाँओ की चौकी के सामने सिज्दा करो, क्यूँकि वह क़ुद्दूस है।

[6]मूसा और हारून उस के इमामों में से थे। समूएल भी उन में से था जो उस का नाम पुकारते थे। उन्हों ने रब को पुकारा, और उस ने उन की सुनी।

[7]वह बादल के सतून में से उन से हमकलाम हुआ, और वह उन अह्काम और फ़रमानों के ताबे रहे जो उस ने उन्हें दिए थे।

[8]ऐ रब हमारे ख़ुदा, तू ने उन की सुनी। तू जो अल्लाह है उन्हें मुआफ़ करता रहा, अलबत्ता उन्हें उन की बुरी हरकतों की सज़ा भी देता रहा।

[9]रब हमारे ख़ुदा की ताज़ीम करो और उस के मुक़द्दस पहाड़ पर सिज्दा करो, क्यूँकि रब हमारा ख़ुदा क़ुद्दूस है।

अल्लाह की सताइश करो!

100 [1]शुक्रगुज़ारी की क़ुर्बानी के लिए ज़बूर।

ऐ पूरी दुनिया, ख़ुशी के नारे लगा कर रब की मद्‌हसराई करो!

[2]ख़ुशी से रब की इबादत करो, जश्न मनाते हुए उस के हुज़ूर आओ!

[3]जान लो कि रब ही ख़ुदा है। उसी ने हमें ख़ल्क़ किया, और हम उस के हैं, उस की क़ौम और उस की चरागाह की भेड़ें।

4 शुक्र करते हुए उस के दरवाज़ों में दाख़िल हो,
सताइश करते हुए उस की बारगाहों में हाज़िर हो।
उस का शुक्र करो, उस के नाम की तम्जीद करो!
5 क्यूँकि रब भला है। उस की शफ़क़त अबदी है,
और उस की वफ़ादारी पुश्त-दर-पुश्त क़ाइम है।

बादशाह की हुकूमत कैसी होनी चाहिए?

101 1 दाऊद का ज़बूर।
मैं शफ़क़त और इन्साफ़ का गीत
गाऊँगा। ऐ रब, मैं तेरी मद्हसराई करूँगा।
2 मैं बड़ी एहतियात से बेइल्ज़ाम राह पर चलूँगा।
लेकिन तू कब मेरे पास आएगा? मैं ख़ुलूसदिली से
अपने घर में ज़िन्दगी गुज़ारूँगा।
3 मैं शरारत की बात अपने सामने नहीं रखता और
बुरी हरकतों से नफ़रत करता हूँ। ऐसी चीज़ें मेरे साथ
लिपट न जाएँ।
4 झूटा दिल मुझ से दूर रहे। मैं बुराई को जानना ही
नहीं चाहता।
5 जो चुपके से अपने पड़ोसी पर तोहमत लगाए उसे
मैं ख़ामोश कराऊँगा, जिस की आँखें मग़रूर और
दिल मुतकब्बिर हो उसे बर्दाश्त नहीं करूँगा।
6 मेरी आँखें मुल्क के वफ़ादारों पर लगी रहती हैं
ताकि वह मेरे साथ रहें। जो बेइल्ज़ाम राह पर चले
वही मेरी ख़िदमत करे।
7 धोकेबाज़ मेरे घर में न ठहरे, झूट बोलने वाला
मेरी मौजूदगी में क़ाइम न रहे।
8 हर सुब्ह को मैं मुल्क के तमाम बेदीनों को
ख़ामोश कराऊँगा ताकि तमाम बदकारों को रब के
शहर में से मिटाया जाए।

सिय्यून की बहाली के लिए दुआ (तौबा का पाँचवाँ ज़बूर)

102 1 मुसीबतज़दा की दुआ, उस वक़्त
जब वह निढाल हो कर रब के सामने
अपनी आह-ओ-ज़ारी उंडेल देता है।
ऐ रब, मेरी दुआ सुन! मदद के लिए मेरी आहें तेरे
हुज़ूर पहुँचें।
2 जब मैं मुसीबत में हूँ तो अपना चेहरा मुझ से
छुपाए न रख बल्कि अपना कान मेरी तरफ़ झुका।
जब मैं पुकारूँ तो जल्द ही मेरी सुन।
3 क्यूँकि मेरे दिन धुएँ की तरह ग़ाइब हो रहे हैं, मेरी
हड्डियाँ कोएलों की तरह दहक रही हैं।
4 मेरा दिल घास की तरह झुलस कर सूख गया है,
और मैं रोटी खाना भी भूल गया हूँ।
5 आह-ओ-ज़ारी करते करते मेरा जिस्म सुकड़ गया
है, जिल्द और हड्डियाँ ही रह गई हैं।
6 मैं रेगिस्तान में दश्ती उल्लू और खंडरात में छोटे
उल्लू की मानिन्द हूँ।
7 मैं बिस्तर पर जागता रहता हूँ, छत पर तन्हा
परिन्दे की मानिन्द हूँ।
8 दिन भर मेरे दुश्मन मुझे लान-तान करते हैं। जो
मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं वह मेरा नाम ले कर लानत
करते हैं।
9 राख मेरी रोटी है, और जो कुछ पीता हूँ उस में
मेरे आँसू मिले होते हैं।
10 क्यूँकि मुझ पर तेरी लानत और तेरा ग़ज़ब
नाज़िल हुआ है। तू ने मुझे उठा कर ज़मीन पर पटख़
दिया है।
11 मेरे दिन शाम के ढलने वाले साय की मानिन्द हैं।
मैं घास की तरह सूख रहा हूँ।

12 लेकिन तू ऐ रब अबद तक तख़्तनशीन है, तेरा
नाम पुश्त-दर-पुश्त क़ाइम रहता है।
13 अब आ, कोह-ए-सिय्यून पर रहम कर। क्यूँकि
उस पर मेहरबानी करने का वक़्त आ गया है, मुक़र्ररा
वक़्त आ गया है।
14 क्यूँकि तेरे ख़ादिमों को उस का एक एक पत्थर
प्यारा है, और वह उस के मल्बे पर तरस खाते हैं।
15 तब ही क़ौमें रब के नाम से डरेंगी, और दुनिया
के तमाम बादशाह तेरे जलाल का ख़ौफ़ खाएँगे।

[16]क्यूँकि रब सिय्यून को अज़ सर-ए-नौ तामीर करेगा, वह अपने पूरे जलाल के साथ ज़ाहिर हो जाएगा।

[17]मुफ़लिसों की दुआ पर वह ध्यान देगा और उन की फ़र्यादों को हक़ीर नहीं जानेगा।

[18]आने वाली नस्ल के लिए यह क़लमबन्द हो जाए ताकि जो क़ौम अभी पैदा नहीं हुई वह रब की सताइश करे।

[19]क्यूँकि रब ने अपने मक़्दिस की बुलन्दियों से झाँका है, उस ने आसमान से ज़मीन पर नज़र डाली है

[20]ताकि क़ैदियों की आह-ओ-ज़ारी सुने और मरने वालों की ज़न्जीरें खोले।

[21]क्यूँकि उस की मर्ज़ी है कि वह कोह-ए-सिय्यून पर रब के नाम का एलान करें और यरूशलम में उस की सताइश करें,

[22]कि क़ौमें और सल्तनतें मिल कर जमा हो जाएँ और रब की इबादत करें।

[23]रास्ते में ही अल्लाह ने मेरी ताक़त तोड़ कर मेरे दिन मुख़्तसर कर दिए हैं।

[24]मैं बोला, "ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे ज़िन्दों के मुल्क से दूर न कर, मेरी ज़िन्दगी तो अधूरी रह गई है। लेकिन तेरे साल पुश्त-दर-पुश्त क़ाइम रहते हैं।

[25]तू ने क़दीम ज़माने में ज़मीन की बुन्याद रखी, और तेरे ही हाथों ने आसमानों को बनाया।

[26]यह तो तबाह हो जाएंगे, लेकिन तू क़ाइम रहेगा। यह सब कपड़े की तरह घिस फट जाएंगे। तू उन्हें पुराने लिबास की तरह बदल देगा, और वह जाते रहेंगे।

[27]लेकिन तू वही का वही रहता है, और तेरी ज़िन्दगी कभी ख़त्म नहीं होती।

[28]तेरे ख़ादिमों के फ़र्ज़न्द तेरे हुज़ूर बसते रहेंगे, और उन की औलाद तेरे सामने क़ाइम रहेगी।"

रब की शफ़क़त की सताइश

103 [1]दाऊद का ज़बूर।
ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर! मेरा रग-ओ-रेशा उस के क़ुद्दूस नाम की हम्द करे!

[2]ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर और जो कुछ उस ने तेरे लिए किया है उसे भूल न जा।

[3]क्यूँकि वह तेरे तमाम गुनाहों को मुआफ़ करता, तुझे तमाम बीमारियों से शिफ़ा देता है।

[4]वह इवज़ाना दे कर तेरी जान को मौत के गढ़े से छुड़ा लेता, तेरे सर को अपनी शफ़क़त और रहमत के ताज से आरास्ता करता है।

[5]वह तेरी ज़िन्दगी को अच्छी चीज़ों से सेर करता है, और तू दुबारा जवान हो कर उक़ाब की सी तक़वियत पाता है।

[6]रब तमाम मज़्लूमों के लिए रास्ती और इन्साफ़ क़ाइम करता है।

[7]उस ने अपनी राहें मूसा पर और अपने अज़ीम काम इस्राईलियों पर ज़ाहिर किए।

[8]रब रहीम और मेहरबान है, वह तहम्मुल और शफ़क़त से भरपूर है।

[9]न वह हमेशा डाँटता रहेगा, न अबद तक नाराज़ रहेगा।

[10]न वह हमारी ख़ताओं के मुताबिक़ सज़ा देता, न हमारे गुनाहों का मुनासिब अज्र देता है।

[11]क्यूँकि जितना बुलन्द आसमान है, उतनी ही अज़ीम उस की शफ़क़त उन पर है जो उस का ख़ौफ़ मानते हैं।

[12]जितनी दूर मशरिक़ मग़रिब से है उतना ही उस ने हमारे क़ुसूर हम से दूर कर दिए हैं।

[13]जिस तरह बाप अपने बच्चों पर तरस खाता है उसी तरह रब उन पर तरस खाता है जो उस का ख़ौफ़ मानते हैं।

14 क्यूँकि वह हमारी साख़्त जानता है, उसे याद है
कि हम ख़ाक ही हैं।
15 इन्सान के दिन घास की मानिन्द हैं, और वह
जंगली फूल की तरह ही फलता फूलता है।
16 जब उस पर से हवा गुज़रे तो वह नहीं रहता, और
उस के नाम-ओ-निशान का भी पता नहीं चलता।

17 लेकिन जो रब का ख़ौफ़ मानें उन पर वह हमेशा
तक मेहरबानी करेगा, वह अपनी रास्ती उन के पोतों
और नवासों पर भी ज़ाहिर करेगा।
18 शर्त यह है कि वह उस के अह्द के मुताबिक़
ज़िन्दगी गुज़ारें और ध्यान से उस के अह्काम पर
अमल करें।

19 रब ने आसमान पर अपना तख़्त क़ाइम किया है,
और उस की बादशाही सब पर हुकूमत करती है।
20 ऐ रब के फ़रिश्तो, उस के ताक़तवर सूरमाओ,
जो उस के फ़रमान पूरे करते हो ताकि उस का कलाम
माना जाए, रब की सताइश करो!
21 ऐ तमाम लश्करो, तुम सब जो उस के ख़ादिम
हो और उस की मर्ज़ी पूरी करते हो, रब की सताइश
करो!
22 तुम सब जिन्हें उस ने बनाया, रब की सताइश
करो! उस की सल्तनत की हर जगह पर उस की
तम्जीद करो। ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर!

ख़ालिक़ की हम्द-ओ-सना

104 1 ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर! ऐ
रब मेरे ख़ुदा, तू निहायत ही अज़ीम है,
तू जाह-ओ-जलाल से आरास्ता है।
2 तेरी चादर नूर है जिसे तू ओढ़े रहता है। तू
आसमान को ख़ैमे की तरह तान कर
3 अपना बालाख़ाना उस के पानी के बीच में तामीर
करता है। बादल तेरा रथ है, और तू हवा के परों पर
सवार होता है।
4 तू हवाओं को अपने क़ासिद और आग के शोलों
को अपने ख़ादिम बना देता है।

5 तू ने ज़मीन को मज़बूत बुन्याद पर रखा ताकि वह
कभी न डगमगाए।
6 सैलाब ने उसे लिबास की तरह ढाँप दिया, और
पानी पहाड़ों के ऊपर ही खड़ा हुआ।
7 लेकिन तेरे डाँटने पर पानी फ़रार हुआ, तेरी
गरजती आवाज़ सुन कर वह एक दम भाग गया।
8 तब पहाड़ ऊँचे हुए और वादियाँ उन जगहों पर
उतर आईं जो तू ने उन के लिए मुक़र्रर की थीं।
9 तू ने एक हद बांधी जिस से पानी बढ़ नहीं सकता।
आइन्दा वह कभी पूरी ज़मीन को नहीं ढाँकने का।
10 तू वादियों में चश्मे फूटने देता है, और वह पहाड़ों
में से बह निकलते हैं।
11 बहते बहते वह खुले मैदान के तमाम जानवरों
को पानी पिलाते हैं। जंगली गधे आ कर अपनी प्यास
बुझाते हैं।
12 परिन्दे उन के किनारों पर बसेरा करते, और उन
की चहचहाती आवाज़ें घने बेल-बूटों में से सुनाई देती
हैं।
13 तू अपने बालाख़ाने से पहाड़ों को तर करता है,
और ज़मीन तेरे हाथ से सेर हो कर हर तरह का फल
लाती है।
14 तू जानवरों के लिए घास फूटने और इन्सान
के लिए पौदे उगने देता है ताकि वह ज़मीन की
काश्तकारी करके रोटी हासिल करे।
15 तेरी मै इन्सान का दिल ख़ुश करती, तेरा तेल
उस का चेहरा रौशन कर देता, तेरी रोटी उस का
दिल मज़बूत करती है।
16 रब के दरख़्त यानी लुबनान में उस के लगाए हुए
देवदार के दरख़्त सेराब रहते हैं।
17 परिन्दे उन में अपने घोंसले बना लेते हैं, और
लक़लक़ जूनीपर के दरख़्त में अपना आशियाना।
18 पहाड़ों की बुलन्दियों पर पहाड़ी बकरों का राज
है, चटानों में बिज्जू पनाह लेते हैं।

[19] तू ने साल को महीनों में तक़सीम करने के लिए चाँद बनाया, और सूरज को ग़ुरूब होने के औक़ात मालूम हैं।

[20] तू अंधेरा फैलने देता है तो दिन ढल जाता है और जंगली जानवर हरकत में आ जाते हैं।

[21] जवान शेरबबर दहाड़ कर शिकार के पीछे पड़ जाते और अल्लाह से अपनी ख़ुराक का मुतालबा करते हैं।

[22] फिर सूरज तुलू होने लगता है, और वह खिसक कर अपने भटों में छुप जाते हैं।

[23] उस वक़्त इन्सान घर से निकल कर अपने काम में लग जाता और शाम तक मसरूफ़ रहता है।

[24] ऐ रब, तेरे अनगिनत काम कितने अज़ीम हैं! तू ने हर एक को हिक्मत से बनाया, और ज़मीन तेरी मख़्लूक़ात से भरी पड़ी है।

[25] समुन्दर को देखो, वह कितना बड़ा और वसी है। उस में बेशुमार जानदार हैं, बड़े भी और छोटे भी।

[26] उस की सतह पर जहाज़ इधर उधर सफ़र करते हैं, उस की गहराइयों में लिवियातान फिरता है, वह अज़दहा जिसे तू ने उस में उछलने कूदने के लिए तश्कील दिया था।

[27] सब तेरे इन्तिज़ार में रहते हैं कि तू उन्हें वक़्त पर खाना मुहय्या करे।

[28] तू उन में ख़ुराक तक़सीम करता है तो वह उसे इकट्ठा करते हैं। तू अपनी मुट्ठी खोलता है तो वह अच्छी चीज़ों से सेर हो जाते हैं।

[29] जब तू अपना चेहरा छुपा लेता है तो उन के हवास गुम हो जाते हैं। जब तू उन का दम निकाल लेता है तो वह नेस्त हो कर दुबारा ख़ाक में मिल जाते हैं।

[30] तू अपना दम भेज देता है तो वह पैदा हो जाते हैं। तू ही रू-ए-ज़मीन को बहाल करता है।

[31] रब का जलाल अबद तक क़ाइम रहे! रब अपने काम की ख़ुशी मनाए!

[32] वह ज़मीन पर नज़र डालता है तो वह लरज़ उठती है। वह पहाड़ों को छू देता है तो वह धुआँ छोड़ते हैं।

[33] मैं उम्र भर रब की तम्जीद में गीत गाऊँगा, जब तक ज़िन्दा हूँ अपने ख़ुदा की मद्हसराई करूँगा।

[34] मेरी बात उसे पसन्द आए! मैं रब से कितना ख़ुश हूँ!

[35] गुनाहगार ज़मीन से मिट जाएँ और बेदीन नेस्त-ओ-नाबूद हो जाएँ। ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर! रब की हम्द हो!

माज़ी में रब की नजात की हम्द

105 [1] रब का शुक्र करो और उस का नाम पुकारो! अक़्वाम में उस के कामों का एलान करो।

[2] साज़ बजा कर उस की मद्हसराई करो। उस के तमाम अजाइब के बारे में लोगों को बताओ।

[3] उस के मुक़द्दस नाम पर फ़ख़र करो। रब के तालिब दिल से ख़ुश हों।

[4] रब और उस की क़ुदरत की दरयाफ़्त करो, हर वक़्त उस के चेहरे के तालिब रहो।

[5] जो मोजिज़े उस ने किए उन्हें याद करो। उस के इलाही निशान और उस के मुँह के फ़ैसले दोहराते रहो।

[6] तुम जो उस के ख़ादिम इब्राहीम की औलाद और याक़ूब के फ़र्ज़न्द हो, जो उस के बर्गुज़ीदा लोग हो, तुम्हें सब कुछ याद रहे!

[7] वही रब हमारा ख़ुदा है, वही पूरी दुनिया की अदालत करता है।

[8] वह हमेशा अपने अह्द का ख़याल रखता है, उस कलाम का जो उस ने हज़ार पुश्तों के लिए फ़रमाया था।

[9] यह वह अह्द है जो उस ने इब्राहीम से बांधा, वह वादा जो उस ने क़सम खा कर इस्हाक़ से किया था।

[10]उस ने उसे याक़ूब के लिए क़ाइम किया ताकि वह उस के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे, उस ने तस्दीक़ की कि यह मेरा इस्राईल से अबदी अह्द है।

[11]साथ साथ उस ने फ़रमाया, "मैं तुझे मुल्क-ए-कनआन दूँगा। यह तेरी मीरास का हिस्सा होगा।"

[12]उस वक़्त वह तादाद में कम और थोड़े ही थे बल्कि मुल्क में अजनबी ही थे।

[13]अब तक वह मुख़्तलिफ़ क़ौमों और सल्तनतों में घूमते फिरते थे।

[14]लेकिन अल्लाह ने उन पर किसी को ज़ुल्म करने न दिया, और उन की ख़ातिर उस ने बादशाहों को डाँटा,

[15]"मेरे मसह किए हुए ख़ादिमों को मत छेड़ना, मेरे नबियों को नुक़्सान मत पहुँचाना।"

[16]फिर अल्लाह ने मुल्क-ए-कनआन में काल पड़ने दिया और ख़ुराक का हर ज़ख़ीरा ख़त्म किया।

[17]लेकिन उस ने उन के आगे आगे एक आदमी को मिस्र भेजा यानी यूसुफ़ को जो ग़ुलाम बन कर फ़रोख़्त हुआ।

[18]उस के पाँओ और गर्दन ज़न्जीरों में जकड़े रहे

[19]जब तक वह कुछ पूरा न हुआ जिस की पेशगोई यूसुफ़ ने की थी, जब तक रब के फ़रमान ने उस की तस्दीक़ न की।

[20]तब मिस्री बादशाह ने अपने बन्दों को भेज कर उसे रिहाई दी, क़ौमों के हुक्मरान ने उसे आज़ाद किया।

[21]उस ने उसे अपने घराने पर निगरान और अपनी तमाम मिलकियत पर हुक्मरान मुक़र्रर किया।

[22]यूसुफ़ को फ़िरऔन के रईसों को अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ चलाने और मिस्री बुज़ुर्गों को हिक्मत की तालीम देने की ज़िम्मादारी भी दी गई।

[23]फिर याक़ूब का ख़ानदान मिस्र आया, और इस्राईल हाम के मुल्क में अजनबी की हैसियत से बसने लगा।

[24]वहाँ अल्लाह ने अपनी क़ौम को बहुत फलने फूलने दिया, उस ने उसे उस के दुश्मनों से ज़्यादा ताक़तवर बना दिया।

[25]साथ साथ उस ने मिस्रियों का रवय्या बदल दिया, तो वह उस की क़ौम इस्राईल से नफ़रत करके रब के ख़ादिमों से चालाकियाँ करने लगे।

[26]तब अल्लाह ने अपने ख़ादिम मूसा और अपने चुने हुए बन्दे हारून को मिस्र में भेजा।

[27]मुल्क-ए-हाम में आ कर उन्हों ने उन के दरमियान अल्लाह के इलाही निशान और मोजिज़े दिखाए।

[28]अल्लाह के हुक्म पर मिस्र पर तारीकी छा गई, मुल्क में अंधेरा हो गया। लेकिन उन्हों ने उस के फ़रमान न माने।

[29]उस ने उन का पानी ख़ून में बदल कर उन की मछलियों को मरवा दिया।

[30]मिस्र के मुल्क पर मेंढकों के ग़ोल छा गए जो उन के हुक्मरानों के अन्दरूनी कमरों तक पहुँच गए।

[31]अल्लाह के हुक्म पर मिस्र के पूरे इलाक़े में मक्खियों और जूओं के ग़ोल फैल गए।

[32]बारिश की बजाए उस ने उन के मुल्क पर ओले और दहकते शोले बरसाए।

[33]उस ने उन की अंगूर की बेलें और अन्जीर के दरख़्त तबाह कर दिए, उन के इलाक़े के दरख़्त तोड़ डाले।

[34]उस के हुक्म पर अनगिनत टिड्डियाँ अपने बच्चों समेत मुल्क पर हम्लाआवर हुईं।

[35]वह उन के मुल्क की तमाम हरियाली और उन के खेतों की तमाम पैदावार चट कर गईं।

[36]फिर अल्लाह ने मिस्र में तमाम पहलौठों को मार डाला, उन की मर्दानगी का पहला फल तमाम हुआ।

37 इस के बाद वह इस्राईल को चाँदी और सोने से
नवाज़ कर मिस्र से निकाल लाया। उस वक़्त उस के
क़बीलों में ठोकर खाने वाला एक भी नहीं था।
38 मिस्र ख़ुश था जब वह रवाना हुए, क्यूँकि उन पर
इस्राईल की दहशत छा गई थी।
39 दिन को अल्लाह ने उन के ऊपर बादल कम्बल
की तरह बिछा दिया, रात को आग मुहय्या की ताकि
रौशनी हो।
40 जब उन्हों ने ख़ुराक माँगी तो उस ने उन्हें बटेर
पहुँचा कर आसमानी रोटी से सेर किया।
41 उस ने चटान को चाक किया तो पानी फूट
निकला, और रेगिस्तान में पानी की नदियाँ बहने
लगीं।

42 क्यूँकि उस ने उस मुक़द्दस वादे का ख़याल रखा
जो उस ने अपने ख़ादिम इब्राहीम से किया था।
43 चुनाँचे वह अपनी चुनी हुई क़ौम को मिस्र से
निकाल लाया, और वह ख़ुशी और शादमानी के नारे
लगा कर निकल आए।
44 उस ने उन्हें दीगर अक़्वाम के ममालिक दिए,
और उन्हों ने दीगर उम्मतों की मेहनत के फल पर
क़ब्ज़ा किया।
45 क्यूँकि वह चाहता था कि वह उस के अहकाम
और हिदायात के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारें। रब की
हम्द हो।

अल्लाह का फ़ज़्ल और इस्राईल की सरकशी

106 1 रब की हम्द हो! रब का शुक्र करो,
क्यूँकि वह भला है, और उस की
शफ़क़त अबदी है।
2 कौन रब के तमाम अज़ीम काम सुना सकता, कौन
उस की मुनासिब तम्जीद कर सकता है?

3 मुबारक हैं वह जो इन्साफ़ क़ाइम रखते, जो हर
वक़्त रास्त काम करते हैं।
4 ऐ रब, अपनी क़ौम पर मेहरबानी करते वक़्त मेरा
ख़याल रख, नजात देते वक़्त मेरी भी मदद कर
5 ताकि मैं तेरे चुने हुए लोगों की ख़ुशहाली देख सकूँ
और तेरी क़ौम की ख़ुशी में शरीक हो कर तेरी मीरास
के साथ सताइश कर सकूँ।

6 हम ने अपने बापदादा की तरह गुनाह किया है,
हम से नाइन्साफ़ी और बेदीनी सरज़द हुई है।
7 जब हमारे बापदादा मिस्र में थे तो उन्हें तेरे
मोजिज़ों की समझ न आई और तेरी मुतअद्दिद
मेहरबानियाँ याद न रहीं बल्कि वह समुन्दर यानी
बहर-ए-क़ुल्ज़ुम पर सरकश हुए।

8 तो भी उस ने उन्हें अपने नाम की ख़ातिर बचाया,
क्यूँकि वह अपनी क़ुदरत का इज़्हार करना चाहता
था।
9 उस ने बहर-ए-क़ुल्ज़ुम को झिड़का तो वह ख़ुश्क
हो गया। उस ने उन्हें समुन्दर की गहराइयों में से यूँ
गुज़रने दिया जिस तरह रेगिस्तान में से।
10 उस ने उन्हें नफ़रत करने वाले के हाथ से छुड़ाया
और इवज़ाना दे कर दुश्मन के हाथ से रिहा किया।
11 उन के मुख़ालिफ़ पानी में डूब गए। एक भी न
बचा।
12 तब उन्हों ने अल्लाह के फ़रमानों पर ईमान ला
कर उस की मद्हसराई की।

13 लेकिन जल्द ही वह उस के काम भूल गए। वह
उस की मर्ज़ी का इन्तिज़ार करने के लिए तय्यार न
थे।
14 रेगिस्तान में शदीद लालच में आ कर उन्हों ने
वहीं बयाबान में अल्लाह को आज़माया।
15 तब उस ने उन की दरख़्वास्त पूरी की, लेकिन
साथ साथ मोहलक वबा भी उन में फैला दी।
16 ख़ैमागाह में वह मूसा और रब के मुक़द्दस इमाम
हारून से हसद करने लगे।

17 तब ज़मीन खुल गई, और उस ने दातन को हड़प कर लिया, अबीराम के जत्थे को अपने अन्दर दफ़न कर लिया।

18 आग उन के जत्थे में भड़क उठी, और बेदीन नज़र-ए-आतिश हुए।

19 वह कोह-ए-होरिब यानी सीना के दामन में बछड़े का बुत ढाल कर उस के सामने औंधे मुँह हो गए।

20 उन्हों ने अल्लाह को जलाल देने के बजाए घास खाने वाले बैल की पूजा की।

21 वह अल्लाह को भूल गए, हालाँकि उसी ने उन्हें छुड़ाया था, उसी ने मिस्र में अज़ीम काम किए थे।

22 जो मोजिज़े हाम के मुल्क में हुए और जो जलाली वाक़िआत बहर-ए-क़ुल्ज़ुम पर पेश आए थे वह सब अल्लाह के हाथ से हुए थे।

23 चुनाँचे अल्लाह ने फ़रमाया कि मैं उन्हें नेस्त-ओ-नाबूद करूँगा। लेकिन उस का चुना हुआ ख़ादिम मूसा रख़ने में खड़ा हो गया ताकि उस के ग़ज़ब को इस्राईलियों को मिटाने से रोके। सिर्फ़ इस वजह से अल्लाह अपने इरादे से बाज़ आया।

24 फिर उन्हों ने कनआन के ख़ुशगवार मुल्क को हक़ीर जाना। उन्हें यक़ीन नहीं था कि अल्लाह अपना वादा पूरा करेगा।

25 वह अपने ख़ैमों में बुड़बुड़ाने लगे और रब की आवाज़ सुनने के लिए तय्यार न हुए।

26 तब उस ने अपना हाथ उन के ख़िलाफ़ उठाया ताकि उन्हें वहीं रेगिस्तान में हलाक करे

27 और उन की औलाद को दीगर अक़्वाम में फैंक कर मुख़्तलिफ़ ममालिक में मुन्तशिर कर दे।

28 वह बाल-फ़ग़ूर देवता से लिपट गए और मुर्दों के लिए पेश की गई क़ुर्बानियों का गोश्त खाने लगे।

29 उन्हों ने अपनी हरकतों से रब को तैश दिलाया तो उन में मोहलक बीमारी फैल गई।

30 लेकिन फ़ीन्हास ने उठ कर उन की अदालत की। तब वबा रुक गई।

31 इसी बिना पर अल्लाह ने उसे पुश्त-दर-पुश्त और अबद तक रास्तबाज़ क़रार दिया।

32 मरीबा के चश्मे पर भी उन्हों ने रब को ग़ुस्सा दिलाया। उन ही के बाइस मूसा का बुरा हाल हुआ।

33 क्यूँकि उन्हों ने उस के दिल में इतनी तल्ख़ी पैदा की कि उस के मुँह से बेजा बातें निकलीं।

34 जो दीगर क़ौमें मुल्क में थीं उन्हें उन्हों ने नेस्त न किया, हालाँकि रब ने उन्हें यह करने को कहा था।

35 न सिर्फ़ यह बल्कि वह ग़ैरक़ौमों से रिश्ता बांध कर उन में घुल मिल गए और उन के रस्म-ओ-रिवाज अपना लिए।

36 वह उन के बुतों की पूजा करने में लग गए, और यह उन के लिए फंदे का बाइस बन गए।

37 वह अपने बेटे-बेटियों को बदरूहों के हुज़ूर क़ुर्बान करने से भी न कतराए।

38 हाँ, उन्हों ने अपने बेटे-बेटियों को कनआन के देवताओं के हुज़ूर पेश करके उन का मासूम ख़ून बहाया। इस से मुल्क की बेहुरमती हुई।

39 वह अपनी ग़लत हरकतों से नापाक और अपने ज़िनाकाराना कामों से अल्लाह से बेवफ़ा हुए।

40 तब अल्लाह अपनी क़ौम से सख़्त नाराज़ हुआ, और उसे अपनी मौरूसी मिलकियत से घिन आने लगी।

41 उस ने उन्हें दीगर क़ौमों के हवाले किया, और जो उन से नफ़रत करते थे वह उन पर हुकूमत करने लगे।

42 उन के दुश्मनों ने उन पर ज़ुल्म करके उन को अपना मुती बना लिया।

43 अल्लाह बार बार उन्हें छुड़ाता रहा, हालाँकि वह अपने सरकश मन्सूबों पर तुले रहे और अपने क़ुसूर में डूबते गए।

[44] लेकिन उस ने मदद के लिए उन की आहें सुन कर उन की मुसीबत पर ध्यान दिया।
[45] उस ने उन के साथ अपना अह्द याद किया, और वह अपनी बड़ी शफ़क़त के बाइस पछताया।
[46] उस ने होने दिया कि जिस ने भी उन्हें गिरिफ़्तार किया उस ने उन पर तरस खाया।

[47] ऐ रब हमारे ख़ुदा, हमें बचा! हमें दीगर क़ौमों से निकाल कर जमा कर। तब ही हम तेरे मुक़द्दस नाम की सताइश करेंगे और तेरे क़ाबिल-ए-तारीफ़ कामों पर फ़ख़र करेंगे।
[48] अज़ल से अबद तक रब, इस्राईल के ख़ुदा की हम्द हो। तमाम क़ौम कहे, "आमीन! रब की हम्द हो!"

पाँचवीं किताब 107-15

नजातयाफ़्ता की शुक्रगुज़ारी

107 [1] रब का शुक्र करो, क्यूँकि वह भला है, और उस की शफ़क़त अबदी है।
[2] रब के नजातयाफ़्ता जिन को उस ने इवज़ाना दे कर दुश्मन के क़ब्ज़े से छुड़ाया है सब यह कहें।
[3] उस ने उन्हें मशरिक़ से मग़रिब तक और शिमाल से जुनूब तक दीगर ममालिक से इकट्ठा किया है।

[4] बाज़ रेगिस्तान में सहीह रास्ता भूल कर वीरान रास्ते पर मारे मारे फिरे, और कहीं भी आबादी न मिली।
[5] भूक और प्यास के मारे उन की जान निढाल हो गई।
[6] तब उन्हों ने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा, और उस ने उन्हें उन की तमाम परेशानियों से छुटकारा दिया।
[7] उस ने उन्हें सहीह राह पर ला कर ऐसी आबादी तक पहुँचाया जहाँ रह सकते थे।
[8] वह रब का शुक्र करें कि उस ने अपनी शफ़क़त और अपने मोजिज़े इन्सान पर ज़ाहिर किए हैं।
[9] क्यूँकि वह प्यासी जान को आसूदा करता और भूकी जान को कस्रत की अच्छी चीज़ों से सेर करता है।

[10] दूसरे ज़न्जीरों और मुसीबत में जकड़े हुए अंधेरे और गहरी तारीकी में बसते थे,
[11] क्यूँकि वह अल्लाह के फ़रमानों से सरकश हुए थे, उन्हों ने अल्लाह तआला का फ़ैसला हक़ीर जाना था।
[12] इस लिए अल्लाह ने उन के दिल को तक्लीफ़ में मुब्तला करके पस्त कर दिया। जब वह ठोकर खा कर गिर गए और मदद करने वाला कोई न रहा था
[13] तो उन्हों ने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा, और उस ने उन्हें उन की तमाम परेशानियों से छुटकारा दिया।
[14] वह उन्हें अंधेरे और गहरी तारीकी से निकाल लाया और उन की ज़न्जीरें तोड़ डालीं।
[15] वह रब का शुक्र करें कि उस ने अपनी शफ़क़त और अपने मोजिज़े इन्सान पर ज़ाहिर किए हैं।
[16] क्यूँकि उस ने पीतल के दरवाज़े तोड़ डाले, लोहे के कुंडे टुकड़े टुकड़े कर दिए हैं।

[17] कुछ लोग अहमक़ थे, वह अपने सरकश चाल-चलन और गुनाहों के बाइस परेशानियों में मुब्तला हुए।
[18] उन्हें हर ख़ुराक से घिन आने लगी, और वह मौत के दरवाज़ों के क़रीब पहुँचे।
[19] तब उन्हों ने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा, और उस ने उन्हें उन की तमाम परेशानियों से छुटकारा दिया।
[20] उस ने अपना कलाम भेज कर उन्हें शिफ़ा दी और उन्हें मौत के गढ़े से बचाया।
[21] वह रब का शुक्र करें कि उस ने अपनी शफ़क़त और मोजिज़े इन्सान पर ज़ाहिर किए हैं।

22 वह शुक्रगुज़ारी की क़ुर्बानियाँ पेश करें और ख़ुशी के नारे लगा कर उस के कामों का चर्चा करें।

23 बाज़ बहरी जहाज़ में बैठ गए और तिजारत के सिलसिले में समुन्दर पर सफ़र करते करते दूरदराज़ इलाक़ों तक पहुँचे।
24 उन्हों ने रब के अज़ीम काम और समुन्दर की गहराइयों में उस के मोजिज़े देखे हैं।
25 क्यूँकि रब ने हुक्म दिया तो आँधी चली जो समुन्दर की मौजें बुलन्दियों पर लाई।
26 वह आसमान तक चढ़ीं और गहराइयों तक उतरीं। परेशानी के बाइस मल्लाहों की हिम्मत जवाब दे गई।
27 वह शराब में धुत आदमी की तरह लड़खड़ाते और डगमगाते रहे। उन की तमाम हिक्मत नाकाम साबित हुई।
28 तब उन्हों ने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा, और उस ने उन्हें तमाम परेशानियों से छुटकारा दिया।
29 उस ने समुन्दर को थमा दिया और ख़ामोशी फैल गई, लहरें साकित हो गईं।
30 मुसाफ़िर पुरसुकून हालात देख कर ख़ुश हुए, और अल्लाह ने उन्हें मन्ज़िल-ए-मक़सूद तक पहुँचाया।
31 वह रब का शुक्र करें कि उस ने अपनी शफ़क़त और अपने मोजिज़े इन्सान पर ज़ाहिर किए हैं।
32 वह क़ौम की जमाअत में उस की ताज़ीम करें, बुज़ुर्गों की मजलिस में उस की हम्द करें।

33 कई जगहों पर वह दरयाओं को रेगिस्तान में और चश्मों को प्यासी ज़मीन में बदल देता है।
34 बाशिन्दों की बुराई देख कर वह ज़रख़ेज़ ज़मीन को कल्लर के बयाबान में बदल देता है।
35 दूसरी जगहों पर वह रेगिस्तान को झील में और प्यासी ज़मीन को चश्मों में बदल देता है।
36 वहाँ वह भूकों को बसा देता है ताकि आबादियाँ क़ाइम करें।
37 तब वह खेत और अंगूर के बाग़ लगाते हैं जो ख़ूब फल लाते हैं।
38 अल्लाह उन्हें बरकत देता है तो उन की तादाद बहुत बढ़ जाती है। वह उन के रेवड़ों को भी कम होने नहीं देता।
39 जब कभी उन की तादाद कम हो जाती और वह मुसीबत और दुख के बोझ तले ख़ाक में दब जाते हैं
40 तो वह शुरफ़ा पर अपनी हिक़ारत उंडेल देता और उन्हें रेगिस्तान में भगा कर सहीह रास्ते से दूर फिरने देता है।
41 लेकिन मुह्ताज को वह मुसीबत की दलदल से निकाल कर सरफ़राज़ करता और उस के ख़ानदानों को भेड़-बकरियों की तरह बढ़ा देता है।

42 सीधी राह पर चलने वाले यह देख कर ख़ुश होंगे, लेकिन बेइन्साफ़ का मुँह बन्द किया जाएगा।
43 कौन दानिशमन्द है? वह इस पर ध्यान दे, वह रब की मेहरबानियों पर ग़ौर करे।

जंग में रब पर उम्मीद

108 1 दाऊद का ज़बूर। गीत।
ऐ अल्लाह, मेरा दिल मज़बूत है। मैं साज़ बजा कर तेरी मद्हसराई करूँगा। ऐ मेरी जान, जाग उठ!
2 ऐ सितार और सरोद, जाग उठो! मैं तुलू-ए-सुब्ह को जगाऊँगा।
3 ऐ रब, मैं क़ौमों में तेरी सताइश, उम्मतों में तेरी मद्हसराई करूँगा।
4 क्यूँकि तेरी शफ़क़त आसमान से कहीं बुलन्द है, तेरी वफ़ादारी बादलों तक पहुँचती है।
5 ऐ अल्लाह, आसमान पर सरफ़राज़ हो! तेरा जलाल पूरी दुनिया पर छा जाए।
6 अपने दहने हाथ से मदद करके मेरी सुन ताकि जो तुझे प्यारे हैं नजात पाएँ।

[7] अल्लाह ने अपने मक़्दिस में फ़रमाया है, “मैं फ़त्ह
मनाते हुए सिकम को तक़्सीम करूँगा और वादी-ए-
सुक्कात को नाप कर बाँट दूँगा।
[8] जिलिआद मेरा है और मनस्सी मेरा है। इफ़्राईम
मेरा ख़ोद और यहूदाह मेरा शाही असा है।
[9] मोआब मेरा ग़ुसल का बर्तन है, और अदोम पर
मैं अपना जूता फैंक दूँगा। मैं फ़िलिस्ती मुल्क पर
ज़ोरदार नारे लगाऊँगा!”

[10] कौन मुझे क़िलाबन्द शहर में लाएगा? कौन मेरी
राहनुमाई करके मुझे अदोम तक पहुँचाएगा?
[11] ऐ अल्लाह, तू ही यह कर सकता है, गो तू ने हमें
रद्द किया है। ऐ अल्लाह, तू हमारी फ़ौजों का साथ नहीं
देता जब वह लड़ने के लिए निकलती हैं।
[12] मुसीबत में हमें सहारा दे, क्यूँकि इस वक़्त
इन्सानी मदद बेकार है।
[13] अल्लाह के साथ हम ज़बरदस्त काम करेंगे,
क्यूँकि वही हमारे दुश्मनों को कुचल देगा।

बेरहम मुख़ालिफ़ के सामने अल्लाह से दुआ

109 [1] दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए।
ऐ अल्लाह मेरे फ़ख़र, ख़ामोश न रह!
[2] क्यूँकि उन्हों ने अपना बेदीन और फ़रेबदिह मुँह
मेरे ख़िलाफ़ खोल कर झूटी ज़बान से मेरे साथ बात
की है।
[3] वह मुझे नफ़रत के अल्फ़ाज़ से घेर कर
बिलावजह मुझ से लड़े हैं।
[4] मेरी मुहब्बत के जवाब में वह मुझ पर अपनी
दुश्मनी का इज़्हार करते हैं। लेकिन दुआ ही मेरा
सहारा है।
[5] मेरी नेकी के इवज़ वह मुझे नुक़्सान पहुँचाते और
मेरे प्यार के बदले मुझ से नफ़रत करते हैं।
[6] ऐ अल्लाह, किसी बेदीन को मुक़र्रर कर जो मेरे
दुश्मन के ख़िलाफ़ गवाही दे, कोई मुख़ालिफ़ उस के
दहने हाथ खड़ा हो जाए जो उस पर इल्ज़ाम लगाए।
[7] मुक़द्दमे में उसे मुजरिम ठहराया जाए। उस की
दुआएँ भी उस के गुनाहों में शुमार की जाएँ।
[8] उस की ज़िन्दगी मुख़्तसर हो, कोई और उस की
ज़िम्मादारी उठाए।
[9] उस की औलाद यतीम और उस की बीवी बेवा
बन जाए।
[10] उस के बच्चे आवारा फिरें और भीक माँगने पर
मज्बूर हो जाएँ। उन्हें उन के तबाहशुदा घरों से निकल
कर इधर उधर रोटी ढूँडनी पड़े।
[11] जिस से उस ने क़र्ज़ा लिया था वह उस के तमाम
माल पर क़ब्ज़ा करे, और अजनबी उस की मेहनत
का फल लूट लें।
[12] कोई न हो जो उस पर मेहरबानी करे या उस के
यतीमों पर रहम करे।
[13] उस की औलाद को मिटाया जाए, अगली पुश्त
में उन का नाम-ओ-निशान तक न रहे।
[14] रब उस के बापदादा की नाइन्साफ़ी का लिहाज़
करे, और वह उस की माँ की ख़ता भी दरगुज़र न
करे।
[15] उन का बुरा किरदार रब के सामने रहे, और वह
उन की याद रू-ए-ज़मीन पर से मिटा डाले।
[16] क्यूँकि उस को कभी मेहरबानी करने का ख़याल
न आया बल्कि वह मुसीबतज़दा, मुह्ताज और
शिकस्तादिल का ताक़्क़ुब करता रहा ताकि उसे मार
डाले।
[17] उसे लानत करने का शौक़ था, चुनाँचे लानत
उसी पर आए! उसे बरकत देना पसन्द नहीं था,
चुनाँचे बरकत उस से दूर रहे।
[18] उस ने लानत चादर की तरह ओढ़ ली, चुनाँचे
लानत पानी की तरह उस के जिस्म में और तेल की
तरह उस की हड्डियों में सिरायत कर जाए।
[19] वह कपड़े की तरह उस से लिपटी रहे, पटके की
तरह हमेशा उस से कमरबस्ता रहे।

[20] रब मेरे मुख़ालिफ़ों को और उन्हें जो मेरे ख़िलाफ़ बुरी बातें करते हैं यही सज़ा दे।

[21] लेकिन तू ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, अपने नाम की ख़ातिर मेरे साथ मेहरबानी का सुलूक कर। मुझे बचा, क्यूँकि तेरी ही शफ़क़त तसल्लीबख़्श है।

[22] क्यूँकि मैं मुसीबतज़दा और ज़रूरतमन्द हूँ। मेरा दिल मेरे अन्दर मजरूह है।

[23] शाम के ढलते साय की तरह मैं ख़त्म होने वाला हूँ। मुझे टिड्डी की तरह झाड़ कर दूर कर दिया गया है।

[24] रोज़ा रखते रखते मेरे घुटने डगमगाने लगे और मेरा जिस्म सूख गया है।

[25] मैं अपने दुश्मनों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गया हूँ। मुझे देख कर वह सर हिला कर "तौबा तौबा" कहते हैं।

[26] ऐ रब मेरे ख़ुदा, मेरी मदद कर! अपनी शफ़क़त का इज़हार करके मुझे छुड़ा!

[27] उन्हें पता चले कि यह तेरे हाथ से पेश आया है, कि तू रब ही ने यह सब कुछ किया है।

[28] जब वह लानत करें तो मुझे बरकत दे! जब वह मेरे ख़िलाफ़ उठें तो बख़्श दे कि शर्मिन्दा हो जाएँ जबकि तेरा ख़ादिम ख़ुश हो।

[29] मेरे मुख़ालिफ़ रुस्वाई से मुलब्बस हो जाएँ, उन्हें शर्मिन्दगी की चादर ओढ़नी पड़े।

[30] मैं ज़ोर से रब की सताइश करूँगा, बहुतों के दरमियान उस की हम्द करूँगा।

[31] क्यूँकि वह मुह्ताज के दहने हाथ खड़ा रहता है ताकि उसे उन से बचाए जो उसे मुजरिम ठहराते हैं।

अबदी बादशाह और इमाम

110 [1] दाऊद का ज़बूर।
रब ने मेरे रब से कहा, "मेरे दहने हाथ बैठ, जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँओ की चौकी न बना दूँ।"

[2] रब सिय्यून से तेरी सल्तनत की सरहद्दें बढ़ा कर कहेगा, "आस-पास के दुश्मनों पर हुकूमत कर!"

[3] जिस दिन तू अपनी फ़ौज को खड़ा करेगा तेरी क़ौम ख़ुशी से तेरे पीछे हो लेगी। तू मुक़द्दस शान-ओ-शौकत से आरास्ता हो कर तुलू-ए-सुब्ह के बातिन से अपनी जवानी की ओस पाएगा।

[4] रब ने क़सम खाई है और इस से पछताएगा नहीं, "तू अबद तक इमाम है, ऐसा इमाम जैसा मलिक-ए-सिद्क़ था।"

[5] रब तेरे दहने हाथ पर रहेगा और अपने ग़ज़ब के दिन दीगर बादशाहों को चूर चूर करेगा।

[6] वह क़ौमों में अदालत करके मैदान को लाशों से भर देगा और दूर तक सरों को पाश पाश करेगा।

[7] रास्ते में वह नदी से पानी पी लेगा, इस लिए अपना सर उठाए फिरेगा।

अल्लाह के फ़ज़्ल की तम्जीद

111 [1] रब की हम्द हो! मैं पूरे दिल से दियानतदारों की मजलिस और जमाअत में रब का शुक्र करूँगा।

[2] रब के काम अज़ीम हैं। जो उन से लुत्फ़अन्दोज़ होते हैं वह उन का ख़ूब मुतालआ करते हैं।

[3] उस का काम शानदार और जलाली है, उस की रास्ती अबद तक क़ाइम रहती है।

[4] वह अपने मोजिज़े याद कराता है। रब मेहरबान और रहीम है।

[5] जो उस का ख़ौफ़ मानते हैं उन्हें उस ने ख़ुराक मुहय्या की है। वह हमेशा तक अपने अह्द का ख़याल रखेगा।

[6] उस ने अपनी क़ौम को अपने ज़बरदस्त कामों का एलान करके कहा, "मैं तुम्हें ग़ैरक़ौमों की मीरास अता करूँगा।"

[7] जो भी काम उस के हाथ करें वह सच्चे और रास्त हैं। उस के तमाम अह्काम क़ाबिल-ए-एतिमाद हैं।

[8] वह अज़ल से अबद तक क़ाइम हैं, और उन पर सच्चाई और दयानतदारी से अमल करना है।

[9] उस ने अपनी क़ौम का फ़िद्या भेज कर उसे छुड़ाया है। उस ने फ़रमाया, "मेरा क़ौम के साथ अह्द अबद तक क़ाइम रहे।" उस का नाम क़ुद्दूस और पुरजलाल है।

[10] हिक्मत इस से शुरू होती है कि हम रब का ख़ौफ़ मानें। जो भी उस के अह्काम पर अमल करे उसे अच्छी समझ हासिल होगी। उस की हम्द हमेशा तक क़ाइम रहेगी।

अल्लाह के ख़ौफ़ की तारीफ़

112 [1] रब की हम्द हो! मुबारक है वह जो अल्लाह का ख़ौफ़ मानता और उस के अह्काम से बहुत लुत्फ़अन्दोज़ होता है।

[2] उस के फ़र्ज़न्द मुल्क में ताक़तवर होंगे, और दियानतदार की नस्ल को बरकत मिलेगी।

[3] दौलत और ख़ुशहाली उस के घर में रहेगी, और उस की रास्तबाज़ी अबद तक क़ाइम रहेगी।

[4] अंधेरे में चलते वक़्त दियानतदारों पर रौशनी चमकती है। वह रास्तबाज़, मेहरबान और रहीम है।

[5] मेहरबानी करना और क़र्ज़ देना बाबरकत है। जो अपने मुआमलों को इन्साफ़ से हल करे वह अच्छा करेगा,

[6] क्यूँकि वह अबद तक नहीं डगमगाएगा। रास्तबाज़ हमेशा ही याद रहेगा।

[7] वह बुरी ख़बर मिलने से नहीं डरता। उस का दिल मज़बूत है, और वह रब पर भरोसा रखता है।

[8] उस का दिल मुस्तह्कम है। वह सहमा हुआ नहीं रहता, क्यूँकि वह जानता है कि एक दिन मैं अपने दुश्मनों की शिकस्त देख कर ख़ुश हूँगा।

[9] वह फ़य्याज़ी से ज़रूरतमन्दों में ख़ैरात बिखेर देता है। उस की रास्तबाज़ी हमेशा क़ाइम रहेगी, और उसे इज़्ज़त के साथ सरफ़राज़ किया जाएगा।

[10] बेदीन यह देख कर नाराज़ हो जाएगा, वह दाँत पीस पीस कर नेस्त हो जाएगा। जो कुछ बेदीन चाहते हैं वह जाता रहेगा।

अल्लाह की अज़मत और मेहरबानी

113 [1] रब की हम्द हो! ऐ रब के ख़ादिमो, रब के नाम की सताइश करो, रब के नाम की तारीफ़ करो।

[2] रब के नाम की अब से अबद तक तम्जीद हो।

[3] तुलू-ए-सुब्ह से ग़ुरूब-ए-आफ़ताब तक रब के नाम की हम्द हो।

[4] रब तमाम अक़्वाम से सरबुलन्द है, उस का जलाल आसमान से अज़ीम है।

[5] कौन रब हमारे ख़ुदा की मानिन्द है जो बुलन्दियों पर तख़्तनशीन है

[6] और आसमान-ओ-ज़मीन को देखने के लिए नीचे झुकता है?

[7] पस्तहाल को वह ख़ाक में से उठा कर पाँओ पर खड़ा करता, मुह्ताज को राख से निकाल कर सरफ़राज़ करता है।

[8] वह उसे शुरफ़ा के साथ, अपनी क़ौम के शुरफ़ा के साथ बिठा देता है।

[9] बाँझ को वह औलाद अता करता है ताकि वह घर में ख़ुशी से ज़िन्दगी गुज़ार सके। रब की हम्द हो!

मिस्र में अल्लाह के मोजिज़ात

114 [1] जब इस्राईल मिस्र से रवाना हुआ और याक़ूब का घराना अजनबी ज़बान बोलने वाली क़ौम से निकल आया

[2] तो यहूदाह अल्लाह का मक़्दिस बन गया और इस्राईल उस की बादशाही।

[3] यह देख कर समुन्दर भाग गया और दरया-ए-यर्दन पीछे हट गया।

[4] पहाड़ मेंढों की तरह कूदने और पहाड़ियाँ जवान भेड़-बकरियों की तरह फाँदने लगीं।

5ऐ समुन्दर, क्या हुआ कि तू भाग गया है? ऐ यर्दन,
क्या हुआ कि तू पीछे हट गया है?
6ऐ पहाड़ो, क्या हुआ कि तुम मेंढों की तरह कूदने
लगे हो? ऐ पहाड़ियो, क्या हुआ कि तुम जवान भेड़-
बकरियों की तरह फाँदने लगी हो?
7ऐ ज़मीन, रब के हुज़ूर, याक़ूब के ख़ुदा के हुज़ूर
लरज़ उठ,
8उस के सामने थरथरा जिस ने चटान को जोहड़
में और सख़्त पत्थर को चश्मे में बदल दिया।

अल्लाह ही की हम्द हो

115 1ऐ रब, हमारी ही इज़्ज़त की ख़ातिर
काम न कर बल्कि इस लिए कि तेरे
नाम को जलाल मिले, इस लिए कि तू मेहरबान और
वफ़ादार ख़ुदा है।
2दीगर अक़्वाम क्यूँ कहें, "उन का ख़ुदा कहाँ है?"
3हमारा ख़ुदा तो आसमान पर है, और जो जी चाहे
करता है।

4उन के बुत सोने-चाँदी के हैं, इन्सान के हाथ ने
उन्हें बनाया है।
5उन के मुँह हैं लेकिन वह बोल नहीं सकते। उन
की आँखें हैं लेकिन वह देख नहीं सकते।
6उन के कान हैं लेकिन वह सुन नहीं सकते, उन
की नाक है लेकिन वह सूँघ नहीं सकते।
7उन के हाथ हैं, लेकिन वह छू नहीं सकते। उन के
पाँओ हैं, लेकिन वह चल नहीं सकते। उन के गले से
आवाज़ नहीं निकलती।
8जो बुत बनाते हैं वह उन की मानिन्द हो जाएँ,
जो उन पर भरोसा रखते हैं वह उन जैसे बेहिस्स-ओ-
हरकत हो जाएँ।

9ऐ इस्राईल, रब पर भरोसा रख! वही तेरा सहारा
और तेरी ढाल है।
10ऐ हारून के घराने, रब पर भरोसा रख! वही तेरा
सहारा और तेरी ढाल है।
11ऐ रब का ख़ौफ़ मानने वालो, रब पर भरोसा
रखो! वही तुम्हारा सहारा और तुम्हारी ढाल है।

12रब ने हमारा ख़याल किया है, और वह हमें
बरकत देगा। वह इस्राईल के घराने को बरकत देगा,
वह हारून के घराने को बरकत देगा।
13वह रब का ख़ौफ़ मानने वालों को बरकत देगा,
ख़्वाह छोटे हों या बड़े।
14रब तुम्हारी तादाद में इज़ाफ़ा करे, तुम्हारी भी
और तुम्हारी औलाद की भी।
15रब जो आसमान-ओ-ज़मीन का ख़ालिक़ है तुम्हें
बरकत से मालामाल करे।
16आसमान तो रब का है, लेकिन ज़मीन को उस
ने आदमज़ादों को बख़्श दिया है।
17ऐ रब, मुर्दे तेरी सताइश नहीं करते, ख़ामोशी के
मुल्क में उतरने वालों में से कोई भी तेरी तम्जीद नहीं
करता।
18लेकिन हम रब की सताइश अब से अबद तक
करेंगे। रब की हम्द हो!

मौत से नजात पर शुक्रगुज़ारी

116 1मैं रब से मुहब्बत रखता हूँ, क्यूँकि
उस ने मेरी आवाज़ और मेरी इल्तिजा
सुनी है।
2उस ने अपना कान मेरी तरफ़ झुकाया है, इस लिए
मैं उम्र भर उसे पुकारूँगा।

3मौत ने मुझे अपनी ज़न्जीरों में जकड़ लिया, और
पाताल की परेशानियाँ मुझ पर ग़ालिब आईं। मैं
मुसीबत और दुख में फंस गया।
4तब मैं ने रब का नाम पुकारा, "ऐ रब, मेहरबानी
करके मुझे बचा!"
5रब मेहरबान और रास्त है, हमारा ख़ुदा रहीम है।
6रब सादा लोगों की हिफ़ाज़त करता है। जब मैं
पस्तहाल था तो उस ने मुझे बचाया।

7 ऐ मेरी जान, अपनी आरामगाह के पास वापस
आ, क्यूँकि रब ने तेरे साथ भलाई की है।
8 क्यूँकि ऐ रब, तू ने मेरी जान को मौत से, मेरी
आँखों को आँसू बहाने से और मेरे पाँओ को फिसलने
से बचाया है।
9 अब मैं ज़िन्दों की ज़मीन में रह कर रब के हुज़ूर
चलूँगा।
10 मैं ईमान लाया और इस लिए बोला, "मैं शदीद
मुसीबत में फंस गया हूँ।"
11 मैं सख़्त घबरा गया और बोला, "तमाम इन्सान
दरोग़गो हैं।"
12 जो भलाइयाँ रब ने मेरे साथ की हैं उन सब के
इवज़ मैं क्या दूँ?
13 मैं नजात का प्याला उठा कर रब का नाम
पुकारूँगा।
14 मैं रब के हुज़ूर उस की सारी क़ौम के सामने ही
अपनी मन्नतें पूरी करूँगा।

15 रब की निगाह में उस के ईमानदारों की मौत
गिराँक़दर है।
16 ऐ रब, यक़ीनन मैं तेरा ख़ादिम, हाँ तेरा ख़ादिम
और तेरी ख़ादिमा का बेटा हूँ। तू ने मेरी ज़न्जीरों को
तोड़ डाला है।
17 मैं तुझे शुक्रगुज़ारी की क़ुर्बानी पेश करके तेरा
नाम पुकारूँगा।
18 मैं रब के हुज़ूर उस की सारी क़ौम के सामने ही
अपनी मन्नतें पूरी करूँगा।
19 मैं रब के घर की बारगाहों में, ऐ यरूशलम तेरे
बीच में ही उन्हें पूरा करूँगा। रब की हम्द हो।

तमाम अक़्वाम अल्लाह की हम्द करें

117 1 ऐ तमाम अक़्वाम, रब की तम्जीद
करो! ऐ तमाम उम्मतो, उस की
मद्हसराई करो!
2 क्यूँकि उस की हम पर शफ़क़त अज़ीम है, और
रब की वफ़ादारी अबदी है। रब की हम्द हो!

अल्लाह की मदद पर शुक्रगुज़ारी

118 1 रब का शुक्र करो, क्यूँकि वह भला
है, और उस की शफ़क़त अबदी है।
2 इस्राईल कहे, "उस की शफ़क़त अबदी है।"
3 हारून का घराना कहे, "उस की शफ़क़त अबदी
है।"
4 रब का ख़ौफ़ मानने वाले कहें, "उस की शफ़क़त
अबदी है।"

5 मुसीबत में मैं ने रब को पुकारा तो रब ने मेरी सुन
कर मेरे पाँओ को खुले मैदान में क़ाइम कर दिया है।
6 रब मेरे हक़ में है, इस लिए मैं नहीं डरूँगा। इन्सान
मेरा क्या बिगाड़ सकता है?
7 रब मेरे हक़ में है और मेरा सहारा है, इस लिए मैं
उन की शिकस्त देख कर ख़ुश हूँगा जो मुझ से नफ़रत
करते हैं।

8 रब में पनाह लेना इन्सान पर एतिमाद करने से
कहीं बेहतर है।
9 रब में पनाह लेना शुरफ़ा पर एतिमाद करने से
कहीं बेहतर है।

10 तमाम अक़्वाम ने मुझे घेर लिया, लेकिन मैं ने
अल्लाह का नाम ले कर उन्हें भगा दिया।
11 उन्हों ने मुझे घेर लिया, हाँ चारों तरफ़ से घेर
लिया, लेकिन मैं ने अल्लाह का नाम ले कर उन्हें भगा
दिया।
12 वह शहद की मक्खियों की तरह चारों तरफ़ से
मुझ पर हम्लाआवर हुए, लेकिन काँटेदार झाड़ियों की
आग की तरह जल्द ही बुझ गए। मैं ने रब का नाम
ले कर उन्हें भगा दिया।
13 दुश्मन ने मुझे धक्का दे कर गिराने की कोशिश
की, लेकिन रब ने मेरी मदद की।
14 रब मेरी क़ुव्वत और मेरा गीत है, वह मेरी नजात
बन गया है।

15 ख़ुशी और फ़त्ह के नारे रास्तबाज़ों के ख़ैमों में गूँजते हैं, "रब का दहना हाथ ज़बरदस्त काम करता है!

16 रब का दहना हाथ सरफ़राज़ करता है, रब का दहना हाथ ज़बरदस्त काम करता है!"

17 मैं नहीं मरूँगा बल्कि ज़िन्दा रह कर रब के काम बयान करूँगा।

18 गो रब ने मेरी सख़्त तादीब की है, उस ने मुझे मौत के हवाले नहीं किया।

19 रास्ती के दरवाज़े मेरे लिए खोल दो ताकि मैं उन में दाख़िल हो कर रब का शुक्र करूँ।

20 यह रब का दरवाज़ा है, इसी में रास्तबाज़ दाख़िल होते हैं।

21 मैं तेरा शुक्र करता हूँ, क्यूँकि तू ने मेरी सुन कर मुझे बचाया है।

22 जिस पत्थर को मकान बनाने वालों ने रद्द किया वह कोने का बुन्यादी पत्थर बन गया।

23 यह रब ने किया और देखने में कितना हैरतअंगेज़ है।

24 इसी दिन रब ने अपनी क़ुदरत दिखाई है। आओ, हम शादियाना बजा कर उस की ख़ुशी मनाएँ।

25 ऐ रब, मेहरबानी करके हमें बचा! ऐ रब, मेहरबानी करके कामयाबी अता फ़रमा!

26 मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है। रब की सुकूनतगाह से हम तुम्हें बरकत देते हैं।

27 रब ही ख़ुदा है, और उस ने हमें रौशनी बख़्शी है। आओ, ईद की क़ुर्बानी रस्सियों से क़ुर्बानगाह के सींगों के साथ बान्धो।

28 तू मेरा ख़ुदा है, और मैं तेरा शुक्र करता हूँ। ऐ मेरे ख़ुदा, मैं तेरी ताज़ीम करता हूँ।

29 रब की सताइश करो, क्यूँकि वह भला है और उस की शफ़क़त अबदी है।

अल्लाह के कलाम की शान

1

119 1 मुबारक हैं वह जिन का चाल-चलन
बेइल्ज़ाम है, जो रब की शरीअत के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते हैं।

2 मुबारक हैं वह जो उस के अहकाम पर अमल करते और पूरे दिल से उस के तालिब रहते हैं,

3 जो बदी नहीं करते बल्कि उस की राहों पर चलते हैं।

4 तू ने हमें अपने अहकाम दिए हैं, और तू चाहता है कि हम हर लिहाज़ से उन के ताबे रहें।

5 काश मेरी राहें इतनी पुख़्ता हों कि मैं साबितक़दमी से तेरे अहकाम पर अमल करूँ!

6 तब मैं शर्मिन्दा नहीं हूँगा, क्यूँकि मेरी आँखें तेरे तमाम अहकाम पर लगी रहेंगी।

7 जितना मैं तेरे बा-इन्साफ़ फ़ैसलों के बारे में सीखूँगा उतना ही दियानतदार दिल से तेरी सताइश करूँगा।

8 तेरे अहकाम पर मैं हर वक़्त अमल करूँगा। मुझे पूरी तरह तर्क न कर!

2

9 नौजवान अपनी राह को किस तरह पाक रखे? इस तरह कि तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे।

10 मैं पूरे दिल से तेरा तालिब रहा हूँ। मुझे अपने अहकाम से भटकने न दे।

11 मैं ने तेरा कलाम अपने दिल में महफ़ूज़ रखा है ताकि तेरा गुनाह न करूँ।

12 ऐ रब, तेरी हम्द हो! मुझे अपने अहकाम सिखा।

13 अपने होंटों से मैं दूसरों को तेरे मुँह की तमाम हिदायात सुनाता हूँ।

14 मैं तेरे अहकाम की राह से उतना लुत्फ़अन्दोज़ होता हूँ जितना कि हर तरह की दौलत से।

[15] मैं तेरी हिदायात में महव-ए-ख़याल रहूँगा और
तेरी राहों को तकता रहूँगा।
[16] मैं तेरे फ़रमानों से लुत्फ़अन्दोज़ होता हूँ और तेरा
कलाम नहीं भूलता।

3

[17] अपने ख़ादिम से भलाई कर ताकि मैं ज़िन्दा रहूँ
और तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारूँ।
[18] मेरी आँखों को खोल ताकि तेरी शरीअत के
अजाइब देखूँ।
[19] दुनिया में मैं परदेसी ही हूँ। अपने अह्काम मुझ
से छुपाए न रख!
[20] मेरी जान हर वक़्त तेरी हिदायात की आर्ज़ू करते
करते निढाल हो रही है।
[21] तू मग़रूरों को डाँटता है। उन पर लानत जो तेरे
अह्काम से भटक जाते हैं!
[22] मुझे लोगों की तौहीन और तह्क़ीर से रिहाई दे,
क्यूँकि मैं तेरे अह्काम के ताबे रहा हूँ।
[23] गो बुज़ुर्ग मेरे ख़िलाफ़ मन्सूबे बांधने के लिए बैठ
गए हैं, तेरा ख़ादिम तेरे अह्काम में महव-ए-ख़याल
रहता है।
[24] तेरे अह्काम से ही मैं लुत्फ़ उठाता हूँ, वही मेरे
मुशीर हैं।

4

[25] मेरी जान ख़ाक में दब गई है। अपने कलाम के
मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।
[26] मैं ने अपनी राहें बयान कीं तो तू ने मेरी सुनी।
मुझे अपने अह्काम सिखा।
[27] मुझे अपने अह्काम की राह समझने के क़ाबिल
बना ताकि तेरे अजाइब में महव-ए-ख़याल रहूँ।
[28] मेरी जान दुख के मारे निढाल हो गई है। मुझे
अपने कलाम के मुताबिक़ तक़वियत दे।
[29] फ़रेब की राह मुझ से दूर रख और मुझे अपनी
शरीअत से नवाज़।
[30] मैं ने वफ़ा की राह इख़तियार करके तेरे आईन
अपने सामने रखे हैं।
[31] मैं तेरे अह्काम से लिपटा रहता हूँ। ऐ रब, मुझे
शर्मिन्दा न होने दे।
[32] मैं तेरे फ़रमानों की राह पर दौड़ता हूँ, क्यूँकि तू
ने मेरे दिल को कुशादगी बख़्शी है।

5

[33] ऐ रब, मुझे अपने आईन की राह सिखा तो मैं उम्र
भर उन पर अमल करूँगा।
[34] मुझे समझ अता कर ताकि तेरी शरीअत के
मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारूँ और पूरे दिल से उस के
ताबे रहूँ।
[35] अपने अह्काम की राह पर मेरी राहनुमाई कर,
क्यूँकि यही मैं पसन्द करता हूँ।
[36] मेरे दिल को लालच में आने न दे बल्कि उसे
अपने फ़रमानों की तरफ़ माइल कर।
[37] मेरी आँखों को बातिल चीज़ों से फेर ले, और मुझे
अपनी राहों पर सँभाल कर मेरी जान को ताज़ादम
कर।
[38] जो वादा तू ने अपने ख़ादिम से किया वह पूरा
कर ताकि लोग तेरा ख़ौफ़ मानें।
[39] जिस रुस्वाई से मुझे ख़ौफ़ है उस का ख़तरा दूर
कर, क्यूँकि तेरे अह्काम अच्छे हैं।
[40] मैं तेरी हिदायात का शदीद आरज़ूमन्द हूँ, अपनी
रास्ती से मेरी जान को ताज़ादम कर।

6

[41] ऐ रब, तेरी शफ़क़त और वह नजात जिस का
वादा तू ने किया है मुझ तक पहुँचे
[42] ताकि मैं बेइज़्ज़ती करने वाले को जवाब दे सकूँ।
क्यूँकि मैं तेरे कलाम पर भरोसा रखता हूँ।
[43] मेरे मुँह से सच्चाई का कलाम न छीन, क्यूँकि मैं
तेरे फ़रमानों के इन्तिज़ार में हूँ।
[44] मैं हर वक़्त तेरी शरीअत की पैरवी करूँगा, अब
से अबद तक उस में क़ाइम रहूँगा।

45 मैं खुले मैदान में चलता फिरूँगा, क्यूँकि तेरे
आईन का तालिब रहता हूँ।
46 मैं शर्म किए बग़ैर बादशाहों के सामने तेरे
अहकाम बयान करूँगा।
47 मैं तेरे फ़रमानों से लुत्फ़अन्दोज़ होता हूँ, वह मुझे
प्यारे हैं।
48 मैं अपने हाथ तेरे फ़रमानों की तरफ़ उठाऊँगा,
क्यूँकि वह मुझे प्यारे हैं। मैं तेरी हिदायात में महव-
ए-ख़याल रहूँगा।

7

49 उस बात का ख़याल रख जो तू ने अपने ख़ादिम
से की और जिस से तू ने मुझे उम्मीद दिलाई है।
50 मुसीबत में यही तसल्ली का बाइस रहा है कि तेरा
कलाम मेरी जान को ताज़ादम करता है।
51 मग़रूर मेरा हद से ज़्यादा मज़ाक़ उड़ाते हैं,
लेकिन मैं तेरी शरीअत से दूर नहीं होता।
52 ऐ रब, मैं तेरे क़दीम फ़रमान याद करता हूँ तो
मुझे तसल्ली मिलती है।
53 बेदीनों को देख कर मैं आग-बगूला हो जाता हूँ,
क्यूँकि उन्हों ने तेरी शरीअत को तर्क किया है।
54 जिस घर में मैं परदेसी हूँ उस में मैं तेरे अहकाम
के गीत गाता रहता हूँ।
55 ऐ रब, रात को मैं तेरा नाम याद करता हूँ, तेरी
शरीअत पर अमल करता रहता हूँ।
56 यह तेरी बख़्शिश है कि मैं तेरे आईन की पैरवी
करता हूँ।

8

57 रब मेरी मीरास है। मैं ने तेरे फ़रमानों पर अमल
करने का वादा किया है।
58 मैं पूरे दिल से तेरी शफ़क़त का तालिब रहा हूँ।
अपने वादे के मुताबिक़ मुझ पर मेहरबानी कर।
59 मैं ने अपनी राहों पर ध्यान दे कर तेरे अहकाम
की तरफ़ क़दम बढ़ाए हैं।
60 मैं नहीं झिजकता बल्कि भाग कर तेरे अहकाम
पर अमल करने की कोशिश करता हूँ।
61 बेदीनों के रस्सों ने मुझे जकड़ लिया है, लेकिन
मैं तेरी शरीअत नहीं भूलता।
62 आधी रात को मैं जाग उठता हूँ ताकि तेरे रास्त
फ़रमानों के लिए तेरा शुक्र करूँ।
63 मैं उन सब का साथी हूँ जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं,
उन सब का दोस्त जो तेरी हिदायात पर अमल करते
हैं।
64 ऐ रब, दुनिया तेरी शफ़क़त से मामूर है। मुझे अपने
अहकाम सिखा!

9

65 ऐ रब, तू ने अपने कलाम के मुताबिक़ अपने
ख़ादिम से भलाई की है।
66 मुझे सहीह इम्तियाज़ और इर्फ़ान सिखा, क्यूँकि
मैं तेरे अहकाम पर ईमान रखता हूँ।
67 इस से पहले कि मुझे पस्त किया गया मैं आवारा
फिरता था, लेकिन अब मैं तेरे कलाम के ताबे रहता
हूँ।
68 तू भला है और भलाई करता है। मुझे अपने
आईन सिखा!
69 मग़रूरों ने झूट बोल कर मुझ पर कीचड़
उछाली है, लेकिन मैं पूरे दिल से तेरी हिदायात की
फ़रमाँबरदारी करता हूँ।
70 उन के दिल अकड़ कर बेहिस्स हो गए हैं, लेकिन
मैं तेरी शरीअत से लुत्फ़अन्दोज़ होता हूँ।
71 मेरे लिए अच्छा था कि मुझे पस्त किया गया,
क्यूँकि इस तरह मैं ने तेरे अहकाम सीख लिए।
72 जो शरीअत तेरे मुँह से सादिर हुई है वह मुझे
सोने-चाँदी के हज़ारों सिक्कों से ज़्यादा पसन्द है।

10

73 तेरे हाथों ने मुझे बना कर मज़बूत बुन्याद पर रख
दिया है। मुझे समझ अता फ़रमा ताकि तेरे अहकाम
सीख लूँ।

74 जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं वह मुझे देख कर ख़ुश हो
जाएँ, क्यूँकि मैं तेरे कलाम के इन्तिज़ार में रहता हूँ।
75 ऐ रब, मैं ने जान लिया है कि तेरे फ़ैसले रास्त
हैं। यह भी तेरी वफ़ादारी का इज़हार है कि तू ने मुझे
पस्त किया है।
76 तेरी शफ़क़त मुझे तसल्ली दे, जिस तरह तू ने अपने
ख़ादिम से वादा किया है।
77 मुझ पर अपने रहम का इज़हार कर ताकि
मेरी जान में जान आए, क्यूँकि मैं तेरी शरीअत से
लुत्फ़अन्दोज़ होता हूँ।
78 जो मग़रूर मुझे झूट से पस्त कर रहे हैं वह
शर्मिन्दा हो जाएँ। लेकिन मैं तेरे फ़रमानों में महव-
ए-ख़याल रहूँगा।
79 काश जो तेरा ख़ौफ़ मानते और तेरे अह्काम
जानते हैं वह मेरे पास वापस आएँ!
80 मेरा दिल तेरे आईन की पैरवी करने में बेइल्ज़ाम
रहे ताकि मेरी रुस्वाई न हो जाए।

11

81 मेरी जान तेरी नजात की आर्ज़ू करते करते
निढाल हो रही है, मैं तेरे कलाम के इन्तिज़ार में हूँ।
82 मेरी आँखें तेरे वादे की राह देखते देखते धुन्दला
रही हैं। तू मुझे कब तसल्ली देगा?
83 मैं धुएँ में सुकड़ी हुई मशक की मानिन्द हूँ लेकिन
तेरे फ़रमानों को नहीं भूलता।
84 तेरे ख़ादिम को मज़ीद कितनी देर इन्तिज़ार
करना पड़ेगा? तू मेरा ताक़्क़ुब करने वालों की
अदालत कब करेगा?
85 जो मग़रूर तेरी शरीअत के ताबे नहीं होते उन्हों
ने मुझे फंसाने के लिए गढ़े खोद लिए हैं।
86 तेरे तमाम अह्काम पुरवफ़ा हैं। मेरी मदद कर,
क्यूँकि वह झूट का सहारा ले कर मेरा ताक़्क़ुब कर
रहे हैं।
87 वह मुझे रू-ए-ज़मीन पर से मिटाने के क़रीब ही
हैं, लेकिन मैं ने तेरे आईन को तर्क नहीं किया।
88 अपनी शफ़क़त का इज़हार करके मेरी जान को
ताज़ादम कर ताकि तेरे मुँह के फ़रमानों पर अमल
करूँ।

12

89 ऐ रब, तेरा कलाम अबद तक आसमान पर
क़ाइम-ओ-दाइम है।
90 तेरी वफ़ादारी पुश्त-दर-पुश्त रहती है। तू ने
ज़मीन की बुन्याद रखी, और वह वहीं की वहीं
बरक़रार रहती है।
91 आज तक आसमान-ओ-ज़मीन तेरे फ़रमानों को
पूरा करने के लिए हाज़िर रहते हैं, क्यूँकि तमाम चीज़ें
तेरी ख़िदमत करने के लिए बनाई गई हैं।
92 अगर तेरी शरीअत मेरी ख़ुशी न होती तो मैं अपनी
मुसीबत में हलाक हो गया होता।
93 मैं तेरी हिदायात कभी नहीं भूलूँगा, क्यूँकि उन
ही के ज़रीए तू मेरी जान को ताज़ादम करता है।
94 मैं तेरा ही हूँ, मुझे बचा! क्यूँकि मैं तेरे अह्काम
का तालिब रहा हूँ।
95 बेदीन मेरी ताक में बैठ गए हैं ताकि मुझे मार
डालें, लेकिन मैं तेरे आईन पर ध्यान देता रहूँगा।
96 मैं ने देखा है कि हर कामिल चीज़ की हद होती
है, लेकिन तेरे फ़रमान की कोई हद नहीं होती।

13

97 तेरी शरीअत मुझे कितनी प्यारी है! दिन भर मैं
उस में महव-ए-ख़याल रहता हूँ।
98 तेरा फ़रमान मुझे मेरे दुश्मनों से ज़्यादा
दानिशमन्द बना देता है, क्यूँकि वह हमेशा तक मेरा
ख़ज़ाना है।
99 मुझे अपने तमाम उस्तादों से ज़्यादा समझ
हासिल है, क्यूँकि मैं तेरे आईन में महव-ए-ख़याल
रहता हूँ।
100 मुझे बुज़ुर्गों से ज़्यादा समझ हासिल है, क्यूँकि
मैं वफ़ादारी से तेरे अह्काम की पैरवी करता हूँ।

101 मैं ने हर बुरी राह पर क़दम रखने से गुरेज़ किया
है ताकि तेरे कलाम से लिपटा रहूँ।
102 मैं तेरे फ़रमानों से दूर नहीं हुआ, क्यूँकि तू ही
ने मुझे तालीम दी है।
103 तेरा कलाम कितना लज़ीज़ है, वह मेरे मुँह में
शहद से ज़्यादा मीठा है।
104 तेरे अह्काम से मुझे समझ हासिल होती है, इस
लिए मैं झूट की हर राह से नफ़रत करता हूँ।

14

105 तेरा कलाम मेरे पाँओ के लिए चराग़ है जो मेरी
राह को रौशन करता है।
106 मैं ने क़सम खाई है कि तेरे रास्त फ़रमानों की
पैरवी करूँगा, और मैं यह वादा पूरा भी करूँगा।
107 मुझे बहुत पस्त किया गया है। ऐ रब, अपने
कलाम के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।
108 ऐ रब, मेरे मुँह की रज़ाकाराना क़ुर्बानियों को
पसन्द कर और मुझे अपने आईन सिखा!
109 मेरी जान हमेशा ख़तरे में है, लेकिन मैं तेरी
शरीअत नहीं भूलता।
110 बेदीनों ने मेरे लिए फंदा तय्यार कर रखा है,
लेकिन मैं तेरे फ़रमानों से नहीं भटका।
111 तेरे अह्काम मेरी अबदी मीरास बन गए हैं,
क्यूँकि उन से मेरा दिल ख़ुशी से उछलता है।
112 मैं ने अपना दिल तेरे अह्काम पर अमल करने
की तरफ़ माइल किया है, क्यूँकि इस का अज्र अबदी
है।

15

113 मैं दोदिलों से नफ़रत लेकिन तेरी शरीअत से
मुहब्बत करता हूँ।
114 तू मेरी पनाहगाह और मेरी ढाल है, मैं तेरे
कलाम के इन्तिज़ार में रहता हूँ।
115 ऐ बदकारो, मुझ से दूर हो जाओ, क्यूँकि मैं
अपने ख़ुदा के अह्काम से लिपटा रहूँगा।
116 अपने फ़रमान के मुताबिक़ मुझे सँभाल ताकि
ज़िन्दा रहूँ। मेरी आस टूटने न दे ताकि शर्मिन्दा न हो
जाऊँ।
117 मेरा सहारा बन ताकि बच कर हर वक़्त तेरे
आईन का लिहाज़ रखूँ।
118 तू उन सब को रद्द करता है जो तेरे अह्काम से
भटके फिरते हैं, क्यूँकि उन की धोकेबाज़ी फ़रेब ही
है।
119 तू ज़मीन के तमाम बेदीनों को नापाक चाँदी से
ख़ारिज की हुई मैल की तरह फैंक कर नेस्त कर देता
है, इस लिए तेरे फ़रमान मुझे प्यारे हैं।
120 मेरा जिस्म तुझ से दह्शत खा कर थरथराता है,
और मैं तेरे फ़ैसलों से डरता हूँ।

16

121 मैं ने रास्त और बा-इन्साफ़ काम किया है,
चुनाँचे मुझे उन के हवाले न कर जो मुझ पर ज़ुल्म
करते हैं।
122 अपने ख़ादिम की ख़ुशहाली का ज़ामिन बन कर
मग़रूरों को मुझ पर ज़ुल्म करने न दे।
123 मेरी आँखें तेरी नजात और तेरे रास्त वादे की
राह देखते देखते रह गई हैं।
124 अपने ख़ादिम से तेरा सुलूक तेरी शफ़क़त के
मुताबिक़ हो। मुझे अपने अह्काम सिखा।
125 मैं तेरा ही ख़ादिम हूँ। मुझे फ़हम अता फ़रमा
ताकि तेरे आईन की पूरी समझ आए।
126 अब वक़्त आ गया है कि रब क़दम उठाए,
क्यूँकि लोगों ने तेरी शरीअत को तोड़ डाला है।
127 इस लिए मैं तेरे अह्काम को सोने बल्कि
ख़ालिस सोने से ज़्यादा प्यार करता हूँ।
128 इस लिए मैं एहतियात से तेरे तमाम आईन के
मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारता हूँ। मैं हर फ़रेबदिह राह
से नफ़रत करता हूँ।

17

129 तेरे अह्काम ताज्जुबअंगेज़ हैं, इस लिए मेरी
जान उन पर अमल करती है।
130 तेरे कलाम का इन्किशाफ़ रौशनी बख़्शता और
सादालौह को समझ अता करता है।
131 मैं तेरे फ़रमानों के लिए इतना प्यासा हूँ कि मुँह
खोल कर हाँप रहा हूँ।
132 मेरी तरफ़ रुजू फ़रमा और मुझ पर वही
मेहरबानी कर जो तू उन सब पर करता है जो तेरे
नाम से प्यार करते हैं।
133 अपने कलाम से मेरे क़दम मज़बूत कर, किसी
भी गुनाह को मुझ पर हुकूमत न करने दे।
134 फ़िद्या दे कर मुझे इन्सान के ज़ुल्म से छुटकारा
दे ताकि मैं तेरे अह्काम के ताबे रहूँ।
135 अपने चेहरे का नूर अपने ख़ादिम पर चमका
और मुझे अपने अह्काम सिखा।
136 मेरी आँखों से आँसूओं की नदियाँ बह रही हैं,
क्यूँकि लोग तेरी शरीअत के ताबे नहीं रहते।

18

137 ऐ रब, तू रास्त है, और तेरे फ़ैसले दुरुस्त हैं।
138 तू ने रास्ती और बड़ी वफ़ादारी के साथ अपने
फ़रमान जारी किए हैं।
139 मेरी जान ग़ैरत के बाइस तबाह हो गई है, क्यूँकि
मेरे दुश्मन तेरे फ़रमान भूल गए हैं।
140 तेरा कलाम आज़मा कर पाक-साफ़ साबित
हुआ है, तेरा ख़ादिम उसे प्यार करता है।
141 मुझे ज़लील और हक़ीर जाना जाता है, लेकिन
मैं तेरे आईन नहीं भूलता।
142 तेरी रास्ती अबदी है, और तेरी शरीअत सच्चाई
है।
143 मुसीबत और परेशानी मुझ पर ग़ालिब आ गई
हैं, लेकिन मैं तेरे अह्काम से लुत्फ़अन्दोज़ होता हूँ।
144 तेरे अह्काम अबद तक रास्त हैं। मुझे समझ
अता फ़रमा ताकि मैं जीता रहूँ।

19

145 मैं पूरे दिल से पुकारता हूँ, "ऐ रब, मेरी सुन! मैं
तेरे आईन के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारूँगा।"
146 मैं पुकारता हूँ, "मुझे बचा! मैं तेरे अह्काम की
पैरवी करूँगा।"
147 पौ फटने से पहले पहले मैं उठ कर मदद के
लिए पुकारता हूँ। मैं तेरे कलाम के इन्तिज़ार में हूँ।
148 रात के वक़्त ही मेरी आँखें खुल जाती हैं ताकि
तेरे कलाम पर ग़ौर-ओ-ख़ौज़ करूँ।
149 अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मेरी आवाज़ सुन!
ऐ रब, अपने फ़रमानों के मुताबिक़ मेरी जान को
ताज़ादम कर।
150 जो चालाकी से मेरा ताक़्क़ुब कर रहे हैं वह
क़रीब पहुँच गए हैं। लेकिन वह तेरी शरीअत से
इन्तिहाई दूर हैं।
151 ऐ रब, तू क़रीब ही है, और तेरे अह्काम सच्चाई
हैं।
152 बड़ी देर पहले मुझे तेरे फ़रमानों से मालूम हुआ
है कि तू ने उन्हें हमेशा के लिए क़ाइम रखा है।

20

153 मेरी मुसीबत का ख़याल करके मुझे बचा!
क्यूँकि मैं तेरी शरीअत नहीं भूलता।
154 अदालत में मेरे हक़ में लड़ कर मेरा इवज़ाना
दे ताकि मेरी जान छूट जाए। अपने वादे के मुताबिक़
मेरी जान को ताज़ादम कर।
155 नजात बेदीनों से बहुत दूर है, क्यूँकि वह तेरे
अह्काम के तालिब नहीं होते।
156 ऐ रब, तू मुतअद्दिद तरीक़ों से अपने रहम का
इज़हार करता है। अपने आईन के मुताबिक़ मेरी जान
को ताज़ादम कर।
157 मेरा ताक़्क़ुब करने वालों और मेरे दुश्मनों की
बड़ी तादाद है, लेकिन मैं तेरे अह्काम से दूर नहीं
हुआ।

158 बेवफ़ाओं को देख कर मुझे घिन आती है,
क्यूँकि वह तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी नहीं
गुज़ारते।
159 देख, मुझे तेरे अह्काम से प्यार है। ऐ रब, अपनी
शफ़्क़त के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।
160 तेरे कलाम का लुब्ब-ए-लुबाब सच्चाई है, तेरे
तमाम रास्त फ़रमान अबद तक क़ाइम हैं।

21

161 सरदार बिलावजह मेरा पीछा करते हैं, लेकिन
मेरा दिल तेरे कलाम से ही डरता है।
162 मैं तेरे कलाम की ख़ुशी उस की तरह मनाता हूँ
जिसे कस्रत का माल-ए-ग़नीमत मिल गया हो।
163 मैं झूट से नफ़रत करता बल्कि घिन खाता हूँ,
लेकिन तेरी शरीअत मुझे प्यारी है।
164 मैं दिन में सात बार तेरी सताइश करता हूँ,
क्यूँकि तेरे अह्काम रास्त हैं।
165 जिन्हें शरीअत प्यारी है उन्हें बड़ा सुकून हासिल
है, वह किसी भी चीज़ से ठोकर खा कर नहीं गिरेंगे।
166 ऐ रब, मैं तेरी नजात के इन्तिज़ार में रहते हुए
तेरे अह्काम की पैरवी करता हूँ।
167 मेरी जान तेरे फ़रमानों से लिपटी रहती है, वह
उसे निहायत प्यारे हैं।
168 मैं तेरे आईन और हिदायात की पैरवी करता हूँ,
क्यूँकि मेरी तमाम राहें तेरे सामने हैं।

22

169 ऐ रब, मेरी आहें तेरे सामने आएँ, मुझे अपने
कलाम के मुताबिक़ समझ अता फ़रमा।
170 मेरी इल्तिजाएँ तेरे सामने आएँ, मुझे अपने
कलाम के मुताबिक़ छुड़ा!
171 मेरे होंटों से हम्द-ओ-सना फूट निकले, क्यूँकि
तू मुझे अपने अह्काम सिखाता है।
172 मेरी ज़बान तेरे कलाम की मद्हसराई करे,
क्यूँकि तेरे तमाम फ़रमान रास्त हैं।
173 तेरा हाथ मेरी मदद करने के लिए तय्यार रहे,
क्यूँकि मैं ने तेरे अह्काम इख़तियार किए हैं।
174 ऐ रब, मैं तेरी नजात का आरज़ूमन्द हूँ, तेरी
शरीअत से लुत्फ़अन्दोज़ होता हूँ।
175 मेरी जान ज़िन्दा रहे ताकि तेरी सताइश कर
सके। तेरे आईन मेरी मदद करें।
176 मैं भटकी हुई भेड़ की तरह आवारा फिर रहा हूँ।
अपने ख़ादिम को तलाश कर, क्यूँकि मैं तेरे अह्काम
नहीं भूलता।

तोहमत लगाने वालों से रिहाई के लिए दुआ

120 1 ज़ियारत का गीत।
मुसीबत में मैं ने रब को पुकारा, और
उस ने मेरी सुनी।
2 ऐ रब, मेरी जान को झूटे होंटों और फ़रेबदिह
ज़बान से बचा।
3 ऐ फ़रेबदिह ज़बान, वह तेरे साथ किया करे,
मज़ीद तुझे क्या दे?
4 वह तुझ पर जंगजू के तेज़ तीर और दहकते कोएले
बरसाए!

5 मुझ पर अफ़्सोस! मुझे अजनबी मुल्क मसक में,
क़ीदार के ख़ैमों के पास रहना पड़ता है।
6 इतनी देर से अम्न के दुश्मनों के पास रहने से मेरी
जान तंग आ गई है।
7 मैं तो अम्न चाहता हूँ, लेकिन जब कभी बोलूँ तो
वह जंग करने पर तुले होते हैं।

इन्सान का वफ़ादार मुहाफ़िज़

121 1 ज़ियारत का गीत।
मैं अपनी आँखों को पहाड़ों की तरफ़
उठाता हूँ। मेरी मदद कहाँ से आती है?
2 मेरी मदद रब से आती है, जो आसमान-ओ-ज़मीन
का ख़ालिक़ है।

3 वह तेरा पाँओ फिसलने नहीं देगा। तेरा मुहाफ़िज़ ऊँघने का नहीं।

4 यक़ीनन इस्राईल का मुहाफ़िज़ न ऊँघता है, न सोता है।

5 रब तेरा मुहाफ़िज़ है, रब तेरे दहने हाथ पर सायबान है।

6 न दिन को सूरज, न रात को चाँद तुझे ज़रर पहुँचाएगा।

7 रब तुझे हर नुक़सान से बचाएगा, वह तेरी जान को महफ़ूज़ रखेगा।

8 रब अब से अबद तक तेरे आने जाने की पहरादारी करेगा।

यरूशलम पर बरकत

122 1 दाऊद का ज़ियारत का गीत।
मैं उन से ख़ुश हुआ जिन्हों ने मुझ से कहा, "आओ, हम रब के घर चलें।"

2 ऐ यरूशलम, अब हमारे पाँओ तेरे दरवाज़ों में खड़े हैं।

3 यरूशलम शहर यूँ बनाया गया है कि उस के तमाम हिस्से मज़बूती से एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं।

4 वहाँ क़बीले, हाँ रब के क़बीले हाज़िर होते हैं ताकि रब के नाम की सताइश करें जिस तरह इस्राईल को फ़रमाया गया है।

5 क्यूँकि वहाँ तख़्त-ए-अदालत करने के लिए लगाए गए हैं, वहाँ दाऊद के घराने के तख़्त हैं।

6 यरूशलम के लिए सलामती माँगो! "जो तुझ से प्यार करते हैं वह सुकून पाएँ।

7 तेरी फ़सील में सलामती और तेरे महलों में सुकून हो।"

8 अपने भाइयों और हमसायों की ख़ातिर मैं कहूँगा, "तेरे अन्दर सलामती हो!"

9 रब हमारे ख़ुदा के घर की ख़ातिर मैं तेरी ख़ुशहाली का तालिब रहूँगा।

अल्लाह हम पर मेहरबानी करे

123 1 ज़ियारत का गीत।
मैं अपनी आँखों को तेरी तरफ़ उठाता हूँ, तेरी तरफ़ जो आसमान पर तख़्तनशीन है।

2 जिस तरह ग़ुलाम की आँखें अपने मालिक के हाथ की तरफ़ और लौंडी की आँखें अपनी मालिकन के हाथ की तरफ़ लगी रहती हैं उसी तरह हमारी आँखें रब अपने ख़ुदा पर लगी रहती हैं, जब तक वह हम पर मेहरबानी न करे।

3 ऐ रब, हम पर मेहरबानी कर, हम पर मेहरबानी कर! क्यूँकि हम हद से ज़्यादा हिक़ारत का निशाना बन गए हैं।

4 सुकून से ज़िन्दगी गुज़ारने वालों की लान-तान और मग़रूरों की तहक़ीर से हमारी जान दूभर हो गई है।

मुसीबत में अल्लाह हमारा सहारा है

124 1 दाऊद का ज़ियारत का गीत।
इस्राईल कहे, "अगर रब हमारे साथ न होता,

2 अगर रब हमारे साथ न होता जब लोग हमारे ख़िलाफ़ उठे

3 और आग-बगूला हो कर अपना पूरा ग़ुस्सा हम पर उतारा, तो वह हमें ज़िन्दा हड़प कर लेते।

4 फिर सैलाब हम पर टूट पड़ता, नदी का तेज़ धारा हम पर ग़ालिब आ जाता

5 और मुतलातिम पानी हम पर से गुज़र जाता।"

6 रब की हम्द हो जिस ने हमें उन के दाँतों के हवाले न किया, वर्ना वह हमें फाड़ खाते।

7 हमारी जान उस चिड़िया की तरह छूट गई है जो चिड़ीमार के फंदे से निकल कर उड़ गई है। फंदा टूट गया है, और हम बच निकले हैं।

8 रब का नाम, हाँ उसी का नाम हमारा सहारा है जो आसमान-ओ-ज़मीन का ख़ालिक़ है।

चारों तरफ़ से क़ौम की हिफ़ाज़त

125 [1] ज़ियारत का गीत।
जो रब पर भरोसा रखते हैं वह कोह-ए-सिय्यून की मानिन्द हैं जो कभी नहीं डगमगाता बल्कि अबद तक क़ाइम रहता है।
[2] जिस तरह यरूशलम पहाड़ों से घिरा रहता है उसी तरह रब अपनी क़ौम को अब से अबद तक चारों तरफ़ से महफ़ूज़ रखता है।
[3] क्यूँकि बेदीनों की रास्तबाज़ों की मीरास पर हुकूमत नहीं रहेगी, ऐसा न हो कि रास्तबाज़ बदकारी करने की आज़माइश में पड़ जाएँ।
[4] ऐ रब, उन से भलाई कर जो नेक हैं, जो दिल से सीधी राह पर चलते हैं।
[5] लेकिन जो भटक कर अपनी टेढ़ी-मेढ़ी राहों पर चलते हैं उन्हें रब बदकारों के साथ ख़ारिज कर दे। इस्राईल की सलामती हो!

रब अपने क़ैदियों को रिहाई देता है

126 [1] ज़ियारत का गीत।
जब रब ने सिय्यून को बहाल किया तो ऐसा लग रहा था कि हम ख़्वाब देख रहे हैं।
[2] तब हमारा मुँह हंसी-ख़ुशी से भर गया, और हमारी ज़बान शादमानी के नारे लगाने से रुक न सकी। तब दीगर क़ौमों में कहा गया, “रब ने उन के लिए ज़बरदस्त काम किया है।”
[3] रब ने वाक़ई हमारे लिए ज़बरदस्त काम किया है। हम कितने ख़ुश थे, कितने ख़ुश!

[4] ऐ रब, हमें बहाल कर। जिस तरह मौसम-ए-बरसात में दश्त-ए-नजब के ख़ुश्क नाले पानी से भर जाते हैं उसी तरह हमें बहाल कर।
[5] जो आँसू बहा बहा कर बीज बोएँ वह ख़ुशी के नारे लगा कर फ़सल काटेंगे।
[6] वह रोते हुए बीज बोने के लिए निकलेंगे, लेकिन जब फ़सल पक जाए तो ख़ुशी के नारे लगा कर पूले उठाए अपने घर लौटेंगे।

अल्लाह ही हमारा घर तामीर करता है

127 [1] सुलेमान का ज़ियारत का गीत।
अगर रब घर को तामीर न करे तो उस पर काम करने वालों की मेहनत अबस है। अगर रब शहर की पहरादारी न करे तो इन्सानी पहरेदारों की निगहबानी अबस है।
[2] यह भी अबस है कि तुम सुब्ह-सवेरे उठो और पूरे दिन मेहनत-मशक़्क़त के साथ रोज़ी कमा कर रात गए सो जाओ। क्यूँकि जो अल्लाह को प्यारे हैं उन्हें वह उन की ज़रूरियात उन के सोते में पूरी कर देता है।

[3] बच्चे ऐसी नेमत हैं जो हम मीरास में रब से पाते हैं, औलाद एक अज्र है जो वही हमें देता है।
[4] जवानी में पैदा हुए बेटे सूरमे के हाथ में तीरों की मानिन्द हैं।
[5] मुबारक है वह आदमी जिस का तर्कश उन से भरा है। जब वह शहर के दरवाज़े पर अपने दुश्मनों से झगड़ेगा तो शर्मिन्दा नहीं होगा।

जिस ख़ानदान को अल्लाह बरकत देता है

128 [1] ज़ियारत का गीत।
मुबारक है वह जो रब का ख़ौफ़ मान कर उस की राहों पर चलता है।
[2] यक़ीनन तू अपनी मेहनत का फल खाएगा। मुबारक हो, क्यूँकि तू कामयाब होगा।
[3] घर में तेरी बीवी अंगूर की फलदार बेल की मानिन्द होगी, और तेरे बेटे मेज़ के इर्दगिर्द बैठ कर ज़ैतून की ताज़ा शाख़ों [k]की मानिन्द होंगे।

---

[k]इस से मुराद है पैवन्दकारी के लिए दरख़्त से काटी गई टहनियाँ।

[4]जो आदमी रब का ख़ौफ़ माने उसे ऐसी ही बरकत मिलेगी।
[5]रब तुझे कोह-ए-सिय्यून से बरकत दे। वह करे कि तू जीते जी यरूशलम की ख़ुशहाली देखे,
[6]कि तू अपने पोतों-नवासों को भी देखे। इस्राईल की सलामती हो!

मदद के लिए इस्राईल की दुआ

129 [1]ज़ियारत का गीत।
इस्राईल कहे, "मेरी जवानी से ही मेरे दुश्मन बार बार मुझ पर हम्लाआवर हुए हैं।
[2]मेरी जवानी से ही वह बार बार मुझ पर हम्लाआवर हुए हैं। तो भी वह मुझ पर ग़ालिब न आए।"
[3]हल चलाने वालों ने मेरी पीठ पर हल चला कर उस पर अपनी लम्बी लम्बी रेघारयाँ बनाई हैं।
[4]रब रास्त है। उस ने बेदीनों के रस्से काट कर मुझे आज़ाद कर दिया है।

[5]अल्लाह करे कि जितने भी सिय्यून से नफ़रत रखें वह शर्मिन्दा हो कर पीछे हट जाएँ।
[6]वह छतों पर की घास की मानिन्द हों जो सहीह तौर पर बढ़ने से पहले ही मुरझा जाती है
[7]और जिस से न फ़सल काटने वाला अपना हाथ, न पूले बांधने वाला अपना बाज़ू भर सके।
[8]जो भी उन से गुज़रे वह न कहे, "रब तुम्हें बरकत दे।"
हम रब का नाम ले कर तुम्हें बरकत देते हैं!

बड़ी मुसीबत से रिहाई की दुआ (तौबा का छटा ज़बूर)

130 [1]ज़ियारत का गीत।
ऐ रब, मैं तुझे गहराइयों से पुकारता हूँ।
[2]ऐ रब, मेरी आवाज़ सुन! कान लगा कर मेरी इल्तिजाओं पर ध्यान दे!
[3]ऐ रब, अगर तू हमारे गुनाहों का हिसाब करे तो कौन क़ाइम रहेगा? कोई भी नहीं!
[4]लेकिन तुझ से मुआफ़ी हासिल होती है ताकि तेरा ख़ौफ़ माना जाए।

[5]मैं रब के इन्तिज़ार में हूँ, मेरी जान शिद्दत से इन्तिज़ार करती है। मैं उस के कलाम से उम्मीद रखता हूँ।
[6]पहरेदार जिस शिद्दत से पौ फटने के इन्तिज़ार में रहते हैं, मेरी जान उस से भी ज़्यादा शिद्दत के साथ, हाँ ज़्यादा शिद्दत के साथ रब की मुन्तज़िर रहती है।

[7]ऐ इस्राईल, रब की राह देखता रह! क्यूँकि रब के पास शफ़क़त और फ़िद्या का ठोस बन्द-ओ-बस्त है।
[8]वह इस्राईल के तमाम गुनाहों का फ़िद्या दे कर उसे नजात देगा।

बच्चे का सा ईमान

131 [1]ज़ियारत का गीत।
ऐ रब, न मेरा दिल घमंडी है, न मेरी आँखें मग़रूर हैं। जो बातें इतनी अज़ीम और हैरानकुन हैं कि मैं उन से निपट नहीं सकता उन्हें मैं नहीं छेड़ता।
[2]यक़ीनन मैं ने अपनी जान को राहत और सुकून दिलाया है, और अब वह माँ की गोद में बैठे छोटे बच्चे की मानिन्द है, हाँ मेरी जान छोटे बच्चे[1]की मानिन्द है।
[3]ऐ इस्राईल, अब से अबद तक रब के इन्तिज़ार में रह!

[1]जिस बच्चे ने माँ का दूध पीना छोड़ दिया है।

दाऊद का घराना और सिय्यून पर मक़्दिस

132 [1] ज़ियारत का गीत।
ऐ रब, दाऊद का ख़याल रख, उस की तमाम मुसीबतों को याद कर।
[2] उस ने क़सम खा कर रब से वादा किया और याक़ूब के क़वी ख़ुदा के हुज़ूर मन्नत मानी,
[3] "न मैं अपने घर में दाख़िल हूँगा, न बिस्तर पर लेटूँगा,
[4] न मैं अपनी आँखों को सोने दूँगा, न अपने पपोटों को ऊँघने दूँगा
[5] जब तक रब के लिए मक़ाम और याक़ूब के सूरमे के लिए सुकूनतगाह न मिले।"

[6] हम ने इफ़्राता में अह्द के सन्दूक़ की ख़बर सुनी और यार के खुले मैदान में उसे पा लिया।
[7] आओ, हम उस की सुकूनतगाह में दाख़िल हो कर उस के पाँओ की चौकी के सामने सिज्दा करें।

[8] ऐ रब, उठ कर अपनी आरामगाह के पास आ, तू और अह्द का सन्दूक़ जो तेरी क़ुदरत का इज़्हार है।
[9] तेरे इमाम रास्ती से मुलब्बस हो जाएँ, और तेरे ईमानदार ख़ुशी के नारे लगाएँ।

[10] ऐ अल्लाह, अपने ख़ादिम दाऊद की ख़ातिर अपने मसह किए हुए बन्दे के चेहरे को रद्द न कर।
[11] रब ने क़सम खा कर दाऊद से वादा किया है, और वह उस से कभी नहीं फिरेगा, "मैं तेरी औलाद में से एक को तेरे तख़्त पर बिठाऊँगा।
[12] अगर तेरे बेटे मेरे अह्द के वफ़ादार रहें और उन अह्काम की पैरवी करें जो मैं उन्हें सिखाऊँगा तो उन के बेटे भी हमेशा तक तेरे तख़्त पर बैठेंगे।"
[13] क्यूँकि रब ने कोह-ए-सिय्यून को चुन लिया है, और वही वहाँ सुकूनत करने का आरज़ूमन्द था।
[14] उस ने फ़रमाया, "यह हमेशा तक मेरी आरामगाह है, और यहाँ मैं सुकूनत करूँगा, क्यूँकि मैं इस का आरज़ूमन्द हूँ।
[15] मैं सिय्यून की ख़ुराक को कस्रत की बरकत दे कर उस के ग़रीबों को रोटी से सेर करूँगा।
[16] मैं उस के इमामों को नजात से मुलब्बस करूँगा, और उस के ईमानदार ख़ुशी से ज़ोरदार नारे लगाएँगे।
[17] यहाँ मैं दाऊद की ताक़त बढ़ा दूँगा, [m]और यहाँ मैं ने अपने मसह किए हुए ख़ादिम के लिए चराग़ तय्यार कर रखा है।
[18] मैं उस के दुश्मनों को शर्मिन्दगी से मुलब्बस करूँगा जबकि उस के सर का ताज चमकता रहेगा।"

भाइयों की यगान्गत की बरकत

133 [1] दाऊद का ज़बूर। ज़ियारत का गीत।
जब भाई मिल कर और यगान्गत से रहते हैं यह कितना अच्छा और प्यारा है।
[2] यह उस नफ़ीस तेल की मानिन्द है जो हारून इमाम के सर पर उंडेला जाता है और टपक टपक कर उस की दाढ़ी और लिबास के गरेबान पर आ जाता है।
[3] यह उस ओस की मानिन्द है जो कोह-ए-हर्मून से सिय्यून के पहाड़ों पर पड़ती है। क्यूँकि रब ने फ़रमाया है, "वहीं हमेशा तक बरकत और ज़िन्दगी मिलेगी।"

रब के घर में रात की सताइश

134 [1] ज़ियारत का गीत।
आओ, रब की सताइश करो, ऐ रब के तमाम ख़ादिमो जो रात के वक़्त रब के घर में खड़े हो।

---

[m] लफ़्ज़ी तर्जुमा : मैं दाऊद का सींग फूटने दूँगा।

2 मक़्दिस में अपने हाथ उठा कर रब की तम्जीद
करो!
3 रब सिय्यून से तुझे बरकत दे, आसमान-ओ-ज़मीन
का ख़ालिक़ तुझे बरकत दे।

अल्लाह की परस्तिश

135 1 रब की हम्द हो! रब के नाम की
सताइश करो! उस की तम्जीद करो,
ऐ रब के तमाम ख़ादिमो,
2 जो रब के घर में, हमारे ख़ुदा की बारगाहों में खड़े
हो।
3 रब की हम्द करो, क्यूँकि रब भला है। उस के
नाम की मद्हसराई करो, क्यूँकि वह प्यारा है।
4 क्यूँकि रब ने याक़ूब को अपने लिए चुन लिया,
इस्राईल को अपनी मिलकियत बना लिया है।

5 हाँ, मैं ने जान लिया है कि रब अज़ीम है, कि हमारा
रब दीगर तमाम माबूदों से ज़्यादा अज़ीम है।
6 रब जो जी चाहे करता है, ख़्वाह आसमान पर हो
या ज़मीन पर, ख़्वाह समुन्दरों में हो या गहराइयों में
कहीं भी हो।
7 वह ज़मीन की इन्तिहा से बादल चढ़ने देता और
बिजली बारिश के लिए पैदा करता है, वह हवा अपने
गोदामों से निकाल लाता है।
8 मिस्र में उस ने इन्सान-ओ-हैवान के तमाम
पहलौठों को मार डाला।
9 ऐ मिस्र, उस ने अपने इलाही निशान और
मोजिज़ात तेरे दरमियान ही किए। तब फ़िरऔन और
उस के तमाम मुलाज़िम उन का निशाना बन गए।

10 उस ने मुतअद्दिद क़ौमों को शिकस्त दे कर
ताक़तवर बादशाहों को मौत के घाट उतार दिया।
11 अमोरियों का बादशाह सीहोन, बसन का
बादशाह ओज और मुल्क-ए-कनआन की तमाम
सल्तनतें न रहीं।
12 उस ने उन का मुल्क इस्राईल को दे कर फ़रमाया
कि आइन्दा यह मेरी क़ौम की मौरूसी मिलकियत
होगा।

13 ऐ रब, तेरा नाम अबदी है। ऐ रब, तुझे पुश्त-दर-
पुश्त याद किया जाएगा।
14 क्यूँकि रब अपनी क़ौम का इन्साफ़ करके अपने
ख़ादिमों पर तरस खाएगा।

15 दीगर क़ौमों के बुत सोने-चाँदी के हैं, इन्सान के
हाथ ने उन्हें बनाया।
16 उन के मुँह हैं लेकिन वह बोल नहीं सकते, उन
की आँखें हैं लेकिन वह देख नहीं सकते।
17 उन के कान हैं लेकिन वह सुन नहीं सकते, उन
के मुँह में साँस ही नहीं होती।
18 जो बुत बनाते हैं वह उन की मानिन्द हो जाएँ,
जो उन पर भरोसा रखते हैं वह उन जैसे बेहिस्स-ओ-
हरकत हो जाएँ।

19 ऐ इस्राईल के घराने, रब की सताइश कर। ऐ
हारून के घराने, रब की तम्जीद कर।
20 ऐ लावी के घराने, रब की हम्द-ओ-सना कर। ऐ
रब का ख़ौफ़ मानने वालो, रब की सताइश करो।
21 सिय्यून से रब की हम्द हो। उस की हम्द हो जो
यरूशलम में सुकूनत करता है। रब की हम्द हो!

तख़्लीक़ और क़ौम की तारीख़ में अल्लाह के मोजिज़े

136 1 रब का शुक्र करो, क्यूँकि वह भला
है, और उस की शफ़क़त अबदी है।
2 ख़ुदाओं के ख़ुदा का शुक्र करो, क्यूँकि उस की
शफ़क़त अबदी है।
3 मालिकों के मालिक का शुक्र करो, क्यूँकि उस
की शफ़क़त अबदी है।
4 जो अकेला ही अज़ीम मोजिज़े करता है उस का
शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।

5 जिस ने हिक्मत के साथ आसमान बनाया उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।

6 जिस ने ज़मीन को मज़बूती से पानी के ऊपर लगा दिया उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।

7 जिस ने आसमान की रौशनियों को ख़ल्क़ किया उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।

8 जिस ने सूरज को दिन के वक़्त हुकूमत करने के लिए बनाया उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।

9 जिस ने चाँद और सितारों को रात के वक़्त हुकूमत करने के लिए बनाया उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।

10 जिस ने मिस्र में पहलौठों को मार डाला उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।

11 जो इस्राईल को मिस्रियों में से निकाल लाया उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।

12 जिस ने उस वक़्त बड़ी ताक़त और क़ुदरत का इज़हार किया उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।

13 जिस ने बहर-ए-क़ुल्ज़ुम को दो हिस्सों में तक़सीम कर दिया उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।

14 जिस ने इस्राईल को उस के बीच में से गुज़रने दिया उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।

15 जिस ने फ़िरऔन और उस की फ़ौज को बहर-ए-क़ुल्ज़ुम में बहा कर ग़र्क़ कर दिया उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।

16 जिस ने रेगिस्तान में अपनी क़ौम की क़ियादत की उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।

17 जिस ने बड़े बादशाहों को शिकस्त दी उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।

18 जिस ने ताक़तवर बादशाहों को मार डाला उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।

19 जिस ने अमोरियों के बादशाह सीहोन को मौत के घाट उतारा उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।

20 जिस ने बसन के बादशाह ओज को हलाक कर दिया उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।

21 जिस ने उन का मुल्क इस्राईल को मीरास में दिया उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।

22 जिस ने उन का मुल्क अपने ख़ादिम इस्राईल की मौरूसी मिलकियत बनाया उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।

23 जिस ने हमारा ख़याल किया जब हम ख़ाक में दब गए थे उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।

24 जिस ने हमें उन के क़ब्ज़े से छुड़ाया जो हम पर ज़ुल्म कर रहे थे उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।

25 जो तमाम जानदारों को ख़ुराक मुहय्या करता है उस का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।

26 आसमान के ख़ुदा का शुक्र करो, क्यूँकि उस की शफ़क़त अबदी है।

बाबल में जिलावतनों की आह-ओ-ज़ारी

137 1 जब सिय्यून की याद आई तो हम बाबल की नहरों के किनारे ही बैठ कर रो पड़े।

2 हम ने वहाँ के सफ़ेदा के दरख़्तों से अपने सरोद लटका दिए,

3 क्यूँकि जिन्हों ने हमें गिरिफ़्तार किया था उन्हों ने हमें वहाँ गीत गाने को कहा, और जो हमारा मज़ाक़ उड़ाते हैं उन्हों ने ख़ुशी का मुतालबा किया, “हमें सिय्यून का कोई गीत सुनाओ!”

4 लेकिन हम अजनबी मुल्क में किस तरह रब का
गीत गाएँ?
5 ऐ यरूशलम, अगर मैं तुझे भूल जाऊँ तो मेरा दहना
हाथ सूख जाए।
6 अगर मैं तुझे याद न करूँ और यरूशलम को
अपनी अज़ीमतरीन ख़ुशी से ज़्यादा क़ीमती न समझूँ
तो मेरी ज़बान तालू से चिपक जाए।

7 ऐ रब, वह कुछ याद कर जो अदोमियों ने उस
दिन किया जब यरूशलम दुश्मन के क़ब्ज़े में आया।
उस वक़्त वह बोले, "उसे ढा दो! बुन्यादों तक उसे
गिरा दो!"
8 ऐ बाबल बेटी जो तबाह करने पर तुली हुई है,
मुबारक है वह जो तुझे उस का बदला दे जो तू ने
हमारे साथ किया है।
9 मुबारक है वह जो तेरे बच्चों को पकड़ कर पत्थर
पर पटख़ दे।

अल्लाह की मदद के लिए शुक्रगुज़ारी

138 1 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मैं पूरे दिल से तेरी सताइश
करूँगा, माबूदों के सामने ही तेरी तम्जीद करूँगा।
2 मैं तेरी मुक़द्दस सुकूनतगाह की तरफ़ रुख़ करके
सिज्दा करूँगा, तेरी मेहरबानी और वफ़ादारी के
बाइस तेरा शुक्र करूँगा। क्यूँकि तू ने अपने नाम और
कलाम को तमाम चीज़ों पर सरफ़राज़ किया है।
3 जिस दिन मैं ने तुझे पुकारा तू ने मेरी सुन कर मेरी
जान को बड़ी तक़वियत दी।

4 ऐ रब, दुनिया के तमाम हुक्मरान तेरे मुँह के
फ़रमान सुन कर तेरा शुक्र करें।
5 वह रब की राहों की मद्हसराई करें, क्यूँकि रब
का जलाल अज़ीम है।
6 क्यूँकि गो रब बुलन्दियों पर है वह पस्तहाल का
ख़याल करता और मग़रूरों को दूर से ही पहचान
लेता है।
7 जब कभी मुसीबत मेरा दामन नहीं छोड़ती तो तू
मेरी जान को ताज़ादम करता है, तू अपना दहना हाथ
बढ़ा कर मुझे मेरे दुश्मनों के तैश से बचाता है।
8 रब मेरी ख़ातिर बदला लेगा। ऐ रब, तेरी शफ़क़त
अबदी है। उन्हें न छोड़ जिन को तेरे हाथों ने बनाया
है!

अल्लाह सब कुछ जानता और हर जगह मौजूद है

139 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के
राहनुमा के लिए।
ऐ रब, तू मेरा मुआइना करता और मुझे ख़ूब जानता
है।
2 मेरा उठना बैठना तुझे मालूम है, और तू दूर से ही
मेरी सोच समझता है।
3 तू मुझे जाँचता है, ख़्वाह मैं रास्ते में हूँ या आराम
करूँ। तू मेरी तमाम राहों से वाक़िफ़ है।
4 क्यूँकि जब भी कोई बात मेरी ज़बान पर आए तू
ऐ रब पहले ही उस का पूरा इल्म रखता है।
5 तू मुझे चारों तरफ़ से घेरे रखता है, तेरा हाथ मेरे
ऊपर ही रहता है।
6 इस का इल्म इतना हैरानकुन और अज़ीम है कि
मैं इसे समझ नहीं सकता।

7 मैं तेरे रूह से कहाँ भाग जाऊँ, तेरे चेहरे से कहाँ
फ़रार हो जाऊँ?
8 अगर आसमान पर चढ़ जाऊँ तो तू वहाँ मौजूद
है, अगर उतर कर अपना बिस्तर पाताल में बिछाऊँ
तो तू वहाँ भी है।
9 गो मैं तुलू-ए-सुब्ह के परों पर उड़ कर समुन्दर
की दूरतरीन हद पर जा बसूँ,
10 वहाँ भी तेरा हाथ मेरी क़ियादत करेगा, वहाँ भी
तेरा दहना हाथ मुझे थामे रखेगा।
11 अगर मैं कहूँ, "तारीकी मुझे छुपा दे, और मेरे
इर्दगिर्द की रौशनी रात में बदल जाए," तो भी कोई
फ़र्क़ नहीं पड़ेगा।

[12] तेरे सामने तारीकी भी तारीक नहीं होती, तेरे हुज़ूर रात दिन की तरह रौशन होती है बल्कि रौशनी और अंधेरा एक जैसे होते हैं।

[13] क्यूँकि तू ने मेरा बातिन बनाया है, तू ने मुझे माँ के पेट में तश्कील दिया है।
[14] मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि मुझे जलाली और मोजिज़ाना तौर से बनाया गया है। तेरे काम हैरतअंगेज़ हैं, और मेरी जान यह ख़ूब जानती है।
[15] मेरा ढाँचा तुझ से छुपा नहीं था जब मुझे पोशीदगी में बनाया गया, जब मुझे ज़मीन की गहराइयों में तश्कील दिया गया।
[16] तेरी आँखों ने मुझे उस वक़्त देखा जब मेरे जिस्म की शक्ल अभी नामुकम्मल थी। जितने भी दिन मेरे लिए मुक़र्रर थे वह सब तेरी किताब में उस वक़्त दर्ज थे, जब एक भी नहीं गुज़रा था।

[17] ऐ अल्लाह, तेरे ख़यालात समझना मेरे लिए कितना मुश्किल है! उन की कुल तादाद कितनी अज़ीम है।
[18] अगर मैं उन्हें गिन सकता तो वह रेत से ज़्यादा होते। मैं जाग उठता हूँ तो तेरे ही साथ होता हूँ।

[19] ऐ अल्लाह, काश तू बेदीन को मार डाले, कि ख़ूँख़ार मुझ से दूर हो जाएँ।
[20] वह फ़रेब से तेरा ज़िक्र करते हैं, हाँ तेरे मुख़ालिफ़ झूट बोलते हैं।
[21] ऐ रब, क्या मैं उन से नफ़रत न करूँ जो तुझ से नफ़रत करते हैं? क्या मैं उन से घिन न खाऊँ जो तेरे ख़िलाफ़ उठे हैं?
[22] यक़ीनन मैं उन से सख़्त नफ़रत करता हूँ। वह मेरे दुश्मन बन गए हैं।

[23] ऐ अल्लाह, मेरा मुआइना करके मेरे दिल का हाल जान ले, मुझे जाँच कर मेरे बेचैन ख़यालात को जान ले।
[24] मैं नुक़्सानदेह राह पर तो नहीं चल रहा? अबदी राह पर मेरी क़ियादत कर!

दुश्मन से रिहाई की दुआ

140 [1] दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

ऐ रब, मुझे शरीरों से छुड़ा और ज़ालिमों से महफ़ूज़ रख।
[2] दिल में वह बुरे मन्सूबे बांधते, रोज़ाना जंग छेड़ते हैं।
[3] उन की ज़बान साँप की ज़बान जैसी तेज़ है, और उन के होंटों में साँप का ज़हर है। (सिलाह)
[4] ऐ रब, मुझे बेदीन के हाथों से महफ़ूज़ रख, ज़ालिम से मुझे बचाए रख, उन से जो मेरे पाँओ को ठोकर खिलाने के मन्सूबे बांध रहे हैं।
[5] मग़रूरों ने मेरे रास्ते में फंदा और रस्से छुपाए हैं, उन्हों ने जाल बिछा कर रास्ते के किनारे किनारे मुझे पकड़ने के फंदे लगाए हैं। (सिलाह)

[6] मैं रब से कहता हूँ, "तू ही मेरा ख़ुदा है, मेरी इल्तिजाओं की आवाज़ सुन!"
[7] ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, ऐ मेरी क़वी नजात! जंग के दिन तू अपनी ढाल से मेरे सर की हिफ़ाज़त करता है।
[8] ऐ रब, बेदीन का लालच पूरा न कर। उस का इरादा कामयाब होने न दे, ऐसा न हो कि यह लोग सरफ़राज़ हो जाएँ। (सिलाह)
[9] उन्हों ने मुझे घेर लिया है, लेकिन जो आफ़त उन के होंट मुझ पर लाना चाहते हैं वह उन के अपने सरों पर आए!
[10] दहकते कोएले उन पर बरसें, और उन्हें आग में, अथाह गढ़ों में फैंका जाए ताकि आइन्दा कभी न उठें।
[11] तोहमत लगाने वाला मुल्क में क़ाइम न रहे, और बुराई ज़ालिम को मार मार कर उस का पीछा करे।

12 मैं जानता हूँ कि रब अदालत में मुसीबतज़दा का
दिफ़ा करेगा। वही ज़रूरतमन्द का इन्साफ़ करेगा।
13 यक़ीनन रास्तबाज़ तेरे नाम की सताइश करेंगे,
और दियानतदार तेरे हुज़ूर बसेंगे।

हिफ़ाज़त की गुज़ारिश

141 1 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मैं तुझे पुकार रहा हूँ, मेरे पास
आने में जल्दी कर! जब मैं तुझे आवाज़ देता हूँ तो
मेरी फ़र्याद पर ध्यान दे!
2 मेरी दुआ तेरे हुज़ूर बख़ूर की क़ुर्बानी की तरह
क़बूल हो, मेरे तेरी तरफ़ उठाए हुए हाथ शाम की
ग़ल्ला की नज़र की तरह मन्ज़ूर हों।
3 ऐ रब, मेरे मुँह पर पहरा बिठा, मेरे होंटों के
दरवाज़े की निगहबानी कर।
4 मेरे दिल को ग़लत बात की तरफ़ माइल न होने
दे, ऐसा न हो कि मैं बदकारों के साथ मिल कर बुरे
काम में मुलव्वस हो जाऊँ और उन के लज़ीज़ खानों
में शिर्कत करूँ।

5 रास्तबाज़ शफ़क़त से मुझे मारे और मुझे तम्बीह
करे। मेरा सर इस से इन्कार नहीं करेगा, क्यूँकि
यह उस के लिए शिफ़ाबख़्श तेल की मानिन्द होगा।
लेकिन मैं हर वक़्त शरीरों की हरकतों के ख़िलाफ़
दुआ करता हूँ।
6 जब वह गिर कर उस चटान के हाथ में आएँगे जो
उन का मुन्सिफ़ है तो वह मेरी बातों पर ध्यान देंगे,
और उन्हें समझ आएगी कि वह कितनी प्यारी हैं।

7 ऐ अल्लाह, हमारी हड्डियाँ उस ज़मीन की मानिन्द
हैं जिस पर किसी ने इतने ज़ोर से हल चलाया है कि
ढेले उड़ कर इधर उधर बिखर गए हैं। हमारी हड्डियाँ
पाताल के मुँह तक बिखर गई हैं।
8 ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, मेरी आँखें तुझ पर लगी
रहती हैं, और मैं तुझ में पनाह लेता हूँ। मुझे मौत के
हवाले न कर।
9 मुझे उस जाल से महफ़ूज़ रख जो उन्हों ने मुझे
पकड़ने के लिए बिछाया है। मुझे बदकारों के फंदों
से बचाए रख।
10 बेदीन मिल कर उन के अपने जालों में उलझ
जाएँ जबकि मैं बच कर आगे निकलूँ।

सख़्त मुसीबत में मदद की पुकार

142 1 हिक्मत का गीत। दुआ जो दाऊद ने
की जब वह ग़ार में था।
मैं मदद के लिए चीख़ता चिल्लाता रब को पुकारता
हूँ, मैं ज़ोरदार आवाज़ से रब से इल्तिजा करता हूँ।
2 मैं अपनी आह-ओ-ज़ारी उस के सामने उंडेल देता,
अपनी तमाम मुसीबत उस के हुज़ूर पेश करता हूँ।
3 जब मेरी रूह मेरे अन्दर निढाल हो जाती है तो तू
ही मेरी राह जानता है। जिस रास्ते में मैं चलता हूँ उस
में लोगों ने फंदा छुपाया है।
4 मैं दहनी तरफ़ नज़र डाल कर देखता हूँ, लेकिन
कोई नहीं है जो मेरा ख़याल करे। मैं बच नहीं सकता,
कोई नहीं है जो मेरी जान की फ़िक्र करे।

5 ऐ रब, मैं मदद के लिए तुझे पुकारता हूँ। मैं कहता
हूँ, "तू मेरी पनाहगाह और ज़िन्दों के मुल्क में मेरा
मौरूसी हिस्सा है।"
6 मेरी चीख़ों पर ध्यान दे, क्यूँकि मैं बहुत पस्त हो
गया हूँ। मुझे उन से छुड़ा जो मेरा पीछा कर रहे हैं,
क्यूँकि मैं उन पर क़ाबू नहीं पा सकता।
7 मेरी जान को क़ैदख़ाने से निकाल ला ताकि तेरे
नाम की सताइश करूँ। जब तू मेरे साथ भलाई करेगा
तो रास्तबाज़ मेरे इर्दगिर्द जमा हो जाएंगे।

बचाओ और क़ियादत की गुज़ारिश (तौबा का सातवाँ ज़बूर)

143 1 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मेरी दुआ सुन, मेरी
इल्तिजाओं पर ध्यान दे। अपनी वफ़ादारी और
रास्ती की ख़ातिर मेरी सुन!

2 अपने ख़ादिम को अपनी अदालत में न ला, क्यूँकि तेरे हुज़ूर कोई भी जानदार रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता।

3 क्यूँकि दुश्मन ने मेरी जान का पीछा करके उसे ख़ाक में कुचल दिया है। उस ने मुझे उन लोगों की तरह तारीकी में बसा दिया है जो बड़े अर्से से मुर्दा हैं।

4 मेरे अन्दर मेरी रूह निढाल है, मेरे अन्दर मेरा दिल दहशत के मारे बेहिस्स-ओ-हरकत हो गया है।

5 मैं क़दीम ज़माने के दिन याद करता और तेरे कामों पर ग़ौर-ओ-ख़ौज़ करता हूँ। जो कुछ तेरे हाथों ने किया उस में मैं महव-ए-ख़याल रहता हूँ।

6 मैं अपने हाथ तेरी तरफ़ उठाता हूँ, मेरी जान ख़ुश्क ज़मीन की तरह तेरी प्यासी है। (सिलाह)

7 ऐ रब, मेरी सुनने में जल्दी कर। मेरी जान तो ख़त्म होने वाली है। अपना चेहरा मुझ से छुपाए न रख, वर्ना मैं गढ़े में उतरने वालों की मानिन्द हो जाऊँगा।

8 सुब्ह के वक़्त मुझे अपनी शफ़क़त की ख़बर सुना, क्यूँकि मैं तुझ पर भरोसा रखता हूँ। मुझे वह राह दिखा जिस पर मुझे जाना है, क्यूँकि मैं तेरा ही आरज़ूमन्द हूँ।

9 ऐ रब, मुझे मेरे दुश्मनों से छुड़ा, क्यूँकि मैं तुझ में पनाह लेता हूँ।

10 मुझे अपनी मर्ज़ी पूरी करना सिखा, क्यूँकि तू मेरा ख़ुदा है। तेरा नेक रूह हमवार ज़मीन पर मेरी राहनुमाई करे।

11 ऐ रब, अपने नाम की ख़ातिर मेरी जान को ताज़ादम कर। अपनी रास्ती से मेरी जान को मुसीबत से बचा।

12 अपनी शफ़क़त से मेरे दुश्मनों को हलाक कर। जो भी मुझे तंग कर रहे हैं उन्हें तबाह कर! क्यूँकि मैं तेरा ख़ादिम हूँ।

नजात और ख़ुशहाली की दुआ

144 1 दाऊद का ज़बूर।
रब मेरी चटान की हम्द हो, जो मेरे हाथों को लड़ने और मेरी उंगलियों को जंग करने की तर्बियत देता है।

2 वह मेरी शफ़क़त, मेरा क़िला, मेरा नजातदहिन्दा और मेरी ढाल है। उसी में मैं पनाह लेता हूँ, और वही दीगर अक़्वाम को मेरे ताबे कर देता है।

3 ऐ रब, इन्सान कौन है कि तू उस का ख़याल रखे? आदमज़ाद कौन है कि तू उस का लिहाज़ करे?

4 इन्सान दम भर का ही है, उस के दिन तेज़ी से गुज़रने वाले साय की मानिन्द हैं।

5 ऐ रब, अपने आसमान को झुका कर उतर आ! पहाड़ों को छू ताकि वह धुआँ छोड़ें।

6 बिजली भेज कर उन्हें मुन्तशिर कर, अपने तीर चला कर उन्हें दर्हम-बर्हम कर।

7 अपना हाथ बुलन्दियों से नीचे बढ़ा और मुझे छुड़ा कर पानी की गहराइयों और परदेसियों के हाथ से बचा,

8 जिन का मुँह झूट बोलता और दहना हाथ फ़रेब देता है।

9 ऐ अल्लाह, मैं तेरी तम्जीद में नया गीत गाऊँगा, दस तारों का सितार बजा कर तेरी मद्हसराई करूँगा।

10 क्यूँकि तू बादशाहों को नजात देता और अपने ख़ादिम दाऊद को मोहलक तलवार से बचाता है।

11 मुझे छुड़ा कर परदेसियों के हाथ से बचा, जिन का मुँह झूट बोलता और दहना हाथ फ़रेब देता है।

12 हमारे बेटे जवानी में फलने फूलने वाले पौदों की मानिन्द हों, हमारी बेटियाँ महल को सजाने के लिए तराशे हुए कोने के सतून की मानिन्द हों।

[13] हमारे गोदाम भरे रहें और हर क़िस्म की ख़ुराक मुहय्या करें। हमारी भेड़-बकरियाँ हमारे मैदानों में हज़ारों बल्कि बेशुमार बच्चे जन्म दें।

[14] हमारे गाय-बैल मोटे-ताज़े हों, और न कोई ज़ाए हो जाए, न किसी को नुक़्सान पहुँचे। हमारे चौकों में आह-ओ-ज़ारी की आवाज़ सुनाई न दे।

[15] मुबारक है वह क़ौम जिस पर यह सब कुछ सादिक़ आता है, मुबारक है वह क़ौम जिस का ख़ुदा रब है!

अल्लाह की अबदी शफ़क़त

145 [1] दाऊद का ज़बूर। हम्द-ओ-सना का गीत।

ऐ मेरे ख़ुदा, मैं तेरी ताज़ीम करूँगा। ऐ बादशाह, मैं हमेशा तक तेरे नाम की सताइश करूँगा।

[2] रोज़ाना मैं तेरी तम्जीद करूँगा, हमेशा तक तेरे नाम की हम्द करूँगा।

[3] रब अज़ीम और बड़ी तारीफ़ के लाइक़ है। उस की अज़मत इन्सान की समझ से बाहर है।

[4] एक पुश्त अगली पुश्त के सामने वह कुछ सराहे जो तू ने किया है, वह दूसरों को तेरे ज़बरदस्त काम सुनाएँ।

[5] मैं तेरे शानदार जलाल की अज़मत और तेरे मोजिज़ों में महव-ए-ख़याल रहूँगा।

[6] लोग तेरे हैबतनाक कामों की क़ुदरत पेश करें, और मैं भी तेरी अज़मत बयान करूँगा।

[7] वह जोश से तेरी बड़ी भलाई को सराहें और ख़ुशी से तेरी रास्ती की मद्हसराई करें।

[8] रब मेहरबान और रहीम है। वह तहम्मुल और शफ़क़त से भरपूर है।

[9] रब सब के साथ भलाई करता है, वह अपनी तमाम मख़्लूक़ात पर रहम करता है।

[10] ऐ रब, तेरी तमाम मख़्लूक़ात तेरा शुक्र करें। तेरे ईमानदार तेरी तम्जीद करें।

[11] वह तेरी बादशाही के जलाल पर फ़ख़र करें और तेरी क़ुदरत बयान करें

[12] ताकि आदमज़ाद तेरे क़वी कामों और तेरी बादशाही की जलाली शान-ओ-शौकत से आगाह हो जाएँ।

[13] तेरी बादशाही की कोई इन्तिहा नहीं, और तेरी सल्तनत पुश्त-दर-पुश्त हमेशा तक क़ाइम रहेगी।

[14] रब तमाम गिरने वालों का सहारा है। जो भी दब जाए उसे वह उठा खड़ा करता है।

[15] सब की आँखें तेरे इन्तिज़ार में रहती हैं, और तू हर एक को वक़्त पर उस का खाना मुहय्या करता है।

[16] तू अपनी मुट्ठी खोल कर हर जानदार की ख़्वाहिश पूरी करता है।

[17] रब अपनी तमाम राहों में रास्त और अपने तमाम कामों में वफ़ादार है।

[18] रब उन सब के क़रीब है जो उसे पुकारते हैं, जो दयानतदारी से उसे पुकारते हैं।

[19] जो उस का ख़ौफ़ मानें उन की आर्ज़ू वह पूरी करता है। वह उन की फ़र्यादें सुन कर उन की मदद करता है।

[20] रब उन सब को महफ़ूज़ रखता है जो उसे प्यार करते हैं, लेकिन बेदीनों को वह हलाक करता है।

[21] मेरा मुँह रब की तारीफ़ बयान करे, तमाम मख़्लूक़ात हमेशा तक उस के मुक़द्दस नाम की सताइश करें।

अल्लाह की अबदी वफ़ादारी

146 [1] रब की हम्द हो! ऐ मेरी जान, रब की हम्द कर।

[2] जीते जी मैं रब की सताइश करूँगा, उम्र भर अपने ख़ुदा की मद्हसराई करूँगा।

³शुरफ़ा पर भरोसा न रखो, न आदमज़ाद पर जो नजात नहीं दे सकता।

⁴जब उस की रूह निकल जाए तो वह दुबारा ख़ाक में मिल जाता है, उसी वक़्त उस के मन्सूबे अधूरे रह जाते हैं।

⁵मुबारक है वह जिस का सहारा याक़ूब का ख़ुदा है, जो रब अपने ख़ुदा के इन्तिज़ार में रहता है।

⁶क्यूँकि उस ने आसमान-ओ-ज़मीन, समुन्दर और जो कुछ उन में है बनाया है। वह हमेशा तक वफ़ादार है।

⁷वह मज़्लूमों का इन्साफ़ करता और भूकों को रोटी खिलाता है। रब क़ैदियों को आज़ाद करता है।

⁸रब अंधों की आँखें बहाल करता और ख़ाक में दबे हुओं को उठा खड़ा करता है, रब रास्तबाज़ को प्यार करता है।

⁹रब परदेसियों की देख-भाल करता, यतीमों और बेवाओं को क़ाइम रखता है। लेकिन वह बेदीनों की राह को टेढ़ा बना कर कामयाब होने नहीं देता।

¹⁰रब अबद तक हुकूमत करेगा। ऐ सिय्यून, तेरा ख़ुदा पुश्त-दर-पुश्त बादशाह रहेगा। रब की हम्द हो।

काइनात और तारीख़ में रब का बन्द-ओ-बस्त

147 ¹रब की हम्द हो! अपने ख़ुदा की मद्हसराई करना कितना भला है, उस की तम्जीद करना कितना प्यारा और ख़ूबसूरत है।

²रब यरूशलम को तामीर करता और इस्राईल के मुन्तशिर जिलावतनों को जमा करता है।

³वह दिलशिकस्तों को शिफ़ा दे कर उन के ज़ख़्मों पर मर्हम-पट्टी लगाता है।

⁴वह सितारों की तादाद गिन लेता और हर एक का नाम ले कर उन्हें बुलाता है।

⁵हमारा रब अज़ीम है, और उस की क़ुदरत ज़बरदस्त है। उस की हिक्मत की कोई इन्तिहा नहीं।

⁶रब मुसीबतज़दों को उठा खड़ा करता लेकिन बदकारों को ख़ाक में मिला देता है।

⁷रब की तम्जीद में शुक्र का गीत गाओ, हमारे ख़ुदा की ख़ुशी में सरोद बजाओ।

⁸क्यूँकि वह आसमान पर बादल छाने देता, ज़मीन को बारिश मुहय्या करता और पहाड़ों पर घास फूटने देता है।

⁹वह मवेशी को चारा और कव्वे के बच्चों को वह कुछ खिलाता है जो वह शोर मचा कर माँगते हैं।

¹⁰न वह घोड़े की ताक़त से लुत्फ़अन्दोज़ होता, न आदमी की मज़बूत टाँगों से ख़ुश होता है।

¹¹रब उन ही से ख़ुश होता है जो उस का ख़ौफ़ मानते और उस की शफ़क़त के इन्तिज़ार में रहते हैं।

¹²ऐ यरूशलम, रब की मद्हसराई कर! ऐ सिय्यून, अपने ख़ुदा की हम्द कर!

¹³क्यूँकि उस ने तेरे दरवाज़ों के कुंडे मज़बूत करके तेरे दरमियान बसने वाली औलाद को बरकत दी है।

¹⁴वही तेरे इलाक़े में अम्न और सुकून क़ाइम रखता और तुझे बेहतरीन गन्दुम से सेर करता है।

¹⁵वह अपना फ़रमान ज़मीन पर भेजता है तो उस का कलाम तेज़ी से पहुँचता है।

¹⁶वह ऊन जैसी बर्फ़ मुहय्या करता और पाला राख की तरह चारों तरफ़ बिखेर देता है।

¹⁷वह अपने ओले कंकरों की तरह ज़मीन पर फैंक देता है। कौन उस की शदीद सर्दी बर्दाश्त कर सकता है?

¹⁸वह एक बार फिर अपना फ़रमान भेजता है तो बर्फ़ पिघल जाती है। वह अपनी हवा चलने देता है तो पानी टपकने लगता है।

¹⁹उस ने याक़ूब को अपना कलाम सुनाया, इस्राईल पर अपने अह्काम और आईन ज़ाहिर किए हैं।

[20]ऐसा सुलूक उस ने किसी और क़ौम से नहीं किया। दीगर अक़्वाम तो तेरे अह्काम नहीं जानतीं। रब की हम्द हो!

आसमान-ओ-ज़मीन पर अल्लाह की तम्जीद

148 [1]रब की हम्द हो! आसमान से रब की सताइश करो, बुलन्दियों पर उस की तम्जीद करो!

[2]ऐ उस के तमाम फ़रिश्तो, उस की हम्द करो! ऐ उस के तमाम लश्करो, उस की तारीफ़ करो!

[3]ऐ सूरज और चाँद, उस की हम्द करो! ऐ तमाम चमकदार सितारो, उस की सताइश करो!

[4]ऐ बुलन्दतरीन आसमानो और आसमान के ऊपर के पानी, उस की हम्द करो!

[5]वह रब के नाम की सताइश करें, क्यूँकि उस ने फ़रमाया तो वह वुजूद में आए।

[6]उस ने नाक़ाबिल-ए-मन्सूख़ फ़रमान जारी करके उन्हें हमेशा के लिए क़ाइम किया है।

[7]ऐ समुन्दर के अज़दहाओ और तमाम गहराइयो, ज़मीन से रब की तम्जीद करो!

[8]ऐ आग, ओलो, बर्फ़, धुन्द और उस के हुक्म पर चलने वाली आँधियो, उस की हम्द करो!

[9]ऐ पहाड़ो और पहाड़ियो, फलदार दरख़्तो और तमाम देवदारो, उस की तारीफ़ करो!

[10]ऐ जंगली जानवरो, मवीशियो, रेंगने वाली मख़्लूक़ात और परनदो, उस की हम्द करो!

[11]ऐ ज़मीन के बादशाहो और तमाम क़ौमो, सरदारो और ज़मीन के तमाम हुक्मरानो, उस की तम्जीद करो!

[12]ऐ नौजवानो और कुंवारियो, बुज़ुर्गो और बच्चो, उस की हम्द करो!

[13]सब रब के नाम की सताइश करें, क्यूँकि सिर्फ़ उसी का नाम अज़ीम है, उस की अज़मत आसमान-ओ-ज़मीन से आला है।

[14]उस ने अपनी क़ौम को सरफ़राज़ करके [n]अपने तमाम ईमानदारों की शोहरत बढ़ाई है, यानी इस्राईलियों की शोहरत, उस क़ौम की जो उस के क़रीब रहती है। रब की हम्द हो!

सिय्यून रब की हम्द करे!

149 [1]रब की हम्द हो! रब की तम्जीद में नया गीत गाओ, ईमानदारों की जमाअत में उस की तारीफ़ करो।

[2]इस्राईल अपने ख़ालिक़ से ख़ुश हो, सिय्यून के फ़र्ज़न्द अपने बादशाह की ख़ुशी मनाएँ।

[3]वह नाच कर उस के नाम की सताइश करें, दफ़ और सरोद से उस की मद्हसराई करें।

[4]क्यूँकि रब अपनी क़ौम से ख़ुश है। वह मुसीबतज़दों को अपनी नजात की शान-ओ-शौकत से आरास्ता करता है।

[5]ईमानदार इस शान-ओ-शौकत के बाइस ख़ुशी मनाएँ, वह अपने बिस्तरों पर शादमानी के नारे लगाएँ।

[6]उन के मुँह में अल्लाह की हम्द-ओ-सना और उन के हाथों में दोधारी तलवार हो

[7]ताकि दीगर अक़्वाम से इन्तिक़ाम लें और उम्मतों को सज़ा दें।

[8]वह उन के बादशाहों को ज़न्जीरों में और उन के शुरफ़ा को बेड़ियों में जकड़ लेंगे

[9]ताकि उन्हें वह सज़ा दें जिस का फ़ैसला क़लमबन्द हो चुका है। यह इज़्ज़त अल्लाह के तमाम ईमानदारों को हासिल है। रब की हम्द हो!

---

[n]लफ़्ज़ी तर्जुमा : अपनी क़ौम का सींग बुलन्द करके।

रब की हम्द-ओ-सना

150 [1] रब की हम्द हो! अल्लाह के मक़्दिस में
उस की सताइश करो। उस की क़ुदरत
के बने हुए आसमानी गुम्बद में उस की तम्जीद करो।
[2] उस के अज़ीम कामों के बाइस उस की हम्द करो।
उस की ज़बरदस्त अज़मत के बाइस उस की सताइश
करो।
[3] नरसिंगा फूँक कर उस की हम्द करो, सितार और
सरोद बजा कर उस की तम्जीद करो।
[4] दफ़ और लोकनाच से उस की हम्द करो। तारदार
साज़ और बाँसरी बजा कर उस की सताइश करो।
[5] झाँझों की झंकारती आवाज़ से उस की हम्द करो,
गूँजती झाँझ से उस की तारीफ़ करो।
[6] जिस में भी साँस है वह रब की सताइश करे। रब
की हम्द हो!।

अम्साल

किताब का मक़्सद

1 1 ज़ैल में इस्राईल के बादशाह सुलेमान बिन दाऊद की अम्साल क़लमबन्द हैं।

2 इन से तू हिक्मत और तर्बियत हासिल करेगा, बसीरत के अल्फ़ाज़ समझने के क़ाबिल हो जाएगा, 3 और दानाई दिलाने वाली तर्बियत, रास्ती, इन्साफ़ और दयानतदारी अपनाएगा। 4 यह अम्साल सादालौह को होश्यारी और नौजवान को इल्म और तमीज़ सिखाती हैं। 5 जो दाना है वह सुन कर अपने इल्म में इज़ाफ़ा करे, जो समझदार है वह राहनुमाई करने का फ़न सीख ले। 6 तब वह अम्साल और तम्सीलें, दानिशमन्दों की बातें और उन के मुअम्मे समझ लेगा।

7 हिक्मत इस से शुरू होती है कि हम रब का ख़ौफ़ मानें। सिर्फ़ अहमक़ हिक्मत और तर्बियत को हक़ीर जानते हैं।

ग़लत साथियों से ख़बरदार

8 मेरे बेटे, अपने बाप की तर्बियत के ताबे रह, और अपनी माँ की हिदायत मुस्तरद न कर। 9 क्यूँकि यह तेरे सर पर दिलकश सेहरा और तेरे गले में गुलूबन्द हैं। 10 मेरे बेटे, जब ख़ताकार तुझे फुसलाने की कोशिश करें तो उन के पीछे न हो ले। 11 उन की बात न मान जब वह कहें, "आ, हमारे साथ चल! हम ताक में बैठ कर किसी को क़त्ल करें, बिलावजह किसी बेक़ुसूर की घात लगाएँ। 12 हम उन्हें पाताल की तरह ज़िन्दा निगल लें, उन्हें मौत के गढ़े में उतरने वालों की तरह एक दम हड़प कर लें। 13 हम हर क़िस्म की क़ीमती चीज़ हासिल करेंगे, अपने घरों को लूट के माल से भर लेंगे। 14 आ, जुरअत करके हम में शरीक हो जा, हम लूट का तमाम माल बराबर तक़्सीम करेंगे।"

15 मेरे बेटे, उन के साथ मत जाना, अपना पाँओ उन की राहों पर रखने से रोक लेना। 16 क्यूँकि उन के पाँओ ग़लत काम के पीछे दौड़ते, ख़ून बहाने के लिए भागते हैं। 17 जब चिड़ीमार अपना जाल लगा कर उस पर परिन्दों को फाँसने के लिए रोटी के टुकड़े बिखेर देता है तो परिन्दों की नज़र में यह बेमक़्सद है। 18 यह लोग भी एक दिन फंस जाएंगे। जब ताक में बैठ जाते हैं तो अपने आप को तबाह करते हैं, जब दूसरों की घात लगाते हैं तो अपनी ही जान को नुक़्सान पहुँचाते हैं। 19 यही उन सब का अन्जाम है जो नारवा नफ़ा के पीछे भागते हैं। नाजाइज़ नफ़ा अपने मालिक की जान छीन लेता है।

हिक्मत की पुकार

20 हिक्मत गली में ज़ोर से आवाज़ देती, चौकों में बुलन्द आवाज़ से पुकारती है। 21 जहाँ सब से ज़्यादा शोर-शराबा है वहाँ वह चिल्ला चिल्ला कर बोलती, शहर के दरवाज़ों पर ही अपनी तक़रीर करती है, 22 "ऐ सादालौह लोगो, तुम कब तक अपनी सादालौही से मुहब्बत रखोगे? मज़ाक़ उड़ाने वाले कब तक अपने मज़ाक़ से लुत्फ़ उठाएँगे, अहमक़ कब तक इल्म से नफ़रत करेंगे? 23 आओ, मेरी सरज़निश पर ध्यान दो। तब मैं अपनी रूह का चश्मा तुम पर फूटने दूँगी, तुम्हें अपनी बातें सुनाऊँगी। 24 लेकिन जब मैं ने आवाज़ दी तो तुम ने इन्कार किया, जब मैं ने अपना हाथ तुम्हारी तरफ़ बढ़ाया तो किसी ने भी तवज्जुह न दी। 25 तुम ने मेरे किसी मश्वरे की परवा न की, मेरी मलामत तुम्हारे नज़्दीक क़ाबिल-ए-क़बूल नहीं थी। 26 इस लिए जब तुम पर आफ़त आएगी तो मैं क़हक़हा लगाऊँगी, जब तुम

हौलनाक मुसीबत में फंस जाओगे तो तुम्हारा मज़ाक़ उड़ाऊँगी। 27 उस वक़्त तुम पर दहशतनाक आँधी टूट पड़ेगी, आफ़त तूफ़ान की तरह तुम पर आएगी, और तुम मुसीबत और तक्लीफ़ के सैलाब में डूब जाओगे। 28 तब वह मुझे आवाज़ देंगे, लेकिन मैं उन की नहीं सुनूँगी, वह मुझे ढूँडेंगे पर पाएँगे नहीं।

29 क्यूँकि वह इल्म से नफ़रत करके रब का ख़ौफ़ मानने के लिए तय्यार नहीं थे। 30 मेरा मश्वरा उन्हें क़बूल नहीं था बल्कि वह मेरी हर सरज़निश को हक़ीर जानते थे। 31 चुनाँचे अब वह अपने चाल-चलन का फल खाएँ, अपने मन्सूबों की फ़सल खा खा कर सेर हो जाएँ।

32 क्यूँकि सहीह राह से दूर होने का अमल सादालौह को मार डालता है, और अहमक़ों की बेपरवाई उन्हें तबाह करती है। 33 लेकिन जो मेरी सुने वह सुकून से बसेगा, हौलनाक मुसीबत उसे परेशान नहीं करेगी।”

हिक्मत की अहमियत

2 1 मेरे बेटे, मेरी बात क़बूल करके मेरे अह्काम अपने दिल में महफ़ूज़ रख। 2 अपना कान हिक्मत पर धर, अपना दिल समझ की तरफ़ माइल कर। 3 बसीरत के लिए आवाज़ दे, चिल्ला कर समझ माँग। 4 उसे यूँ तलाश कर गोया चाँदी हो, उस का यूँ खोज लगा गोया पोशीदा ख़ज़ाना हो। 5 अगर तू ऐसा करे तो तुझे रब के ख़ौफ़ की समझ आएगी और अल्लाह का इर्फ़ान हासिल होगा। 6 क्यूँकि रब ही हिक्मत अता करता, उसी के मुँह से इर्फ़ान और समझ निकलती है। 7 वह सीधी राह पर चलने वालों को कामयाबी फ़राहम करता और बेइल्ज़ाम ज़िन्दगी गुज़ारने वालों की ढाल बना रहता है। 8 क्यूँकि वह इन्साफ़ पसन्दों की राहों की पहरादारी करता है। जहाँ भी उस के ईमानदार चलते हैं वहाँ वह उन की हिफ़ाज़त करता है।

9 तब तुझे रास्ती, इन्साफ़, दयानतदारी और हर अच्छी राह की समझ आएगी। 10 क्यूँकि तेरे दिल में हिक्मत दाख़िल हो जाएगी, और इल्म-ओ-इर्फ़ान तेरी जान को प्यारा हो जाएगा। 11 तमीज़ तेरी हिफ़ाज़त और समझ तेरी चौकीदारी करेगी। 12 हिक्मत तुझे ग़लत राह और कजरौ बातें करने वाले से बचाए रखेगी। 13 ऐसे लोग सीधी राह को छोड़ देते हैं ताकि तारीक रास्तों पर चलें, 14 वह बुरी हरकतें करने से ख़ुश हो जाते हैं, ग़लत काम की कजरवी देख कर जश्न मनाते हैं। 15 उन की राहें टेढ़ी हैं, और वह जहाँ भी चलें आवारा फिरते हैं।

16 हिक्मत तुझे नाजाइज़ औरत से छुड़ाती है, उस अजनबी औरत से जो चिकनी-चुपड़ी बातें करती, 17 जो अपने जीवनसाथी को तर्क करके अपने ख़ुदा का अह्द भूल जाती है। 18 क्यूँकि उस के घर में दाख़िल होने का अन्जाम मौत, उस की राहों की मन्ज़िल-ए-मक़सूद पाताल है। 19 जो भी उस के पास जाए वह वापस नहीं आएगा, वह ज़िन्दगीबख़्श राहों पर दुबारा नहीं पहुँचेगा।

20 चुनाँचे अच्छे लोगों की राह पर चल फिर, ध्यान दे कि तेरे क़दम रास्तबाज़ों के रास्ते पर रहें। 21 क्यूँकि सीधी राह पर चलने वाले मुल्क में आबाद होंगे, आख़िरकार बेइल्ज़ाम ही उस में बाक़ी रहेंगे। 22 लेकिन बेदीन मुल्क से मिट जाएंगे, और बेवफ़ाओं को उखाड़ कर मुल्क से ख़ारिज कर दिया जाएगा।

अल्लाह के ख़ौफ़ और हिक्मत की बरकत

3 1 मेरे बेटे, मेरी हिदायत मत भूलना। मेरे अह्काम तेरे दिल में महफ़ूज़ रहें। 2 क्यूँकि इन ही से तेरी ज़िन्दगी के दिनों और सालों में इज़ाफ़ा होगा और तेरी ख़ुशहाली बढ़ेगी। 3 शफ़क़त और वफ़ा तेरा दामन न छोड़ें। उन्हें अपने गले से बांधना, अपने दिल की तख़्ती पर कन्दा करना। 4 तब तुझे अल्लाह और इन्सान के सामने मेहरबानी और क़बूलियत हासिल होगी।

5 पूरे दिल से रब पर भरोसा रख, और अपनी अक़्ल
पर तकिया न कर। 6 जहाँ भी तू चले सिर्फ़ उसी को
जान ले, फिर वह ख़ुद तेरी राहों को हमवार करेगा।
7 अपने आप को दानिशमन्द मत समझना बल्कि रब
का ख़ौफ़ मान कर बुराई से दूर रह। 8 इस से तेरा
बदन सेहत पाएगा और तेरी हड्डियाँ तर-ओ-ताज़ा
हो जाएँगी। 9 अपनी मिलकियत और अपनी तमाम
पैदावार के पहले फल से रब का एहतिराम कर,
10 फिर तेरे गोदाम अनाज से भर जाएंगे और तेरे बर्तन
मै से छलक उठेंगे।

11 मेरे बेटे, रब की तर्बियत को रद्द न कर, जब वह
तुझे डाँटे तो रंजीदा न हो। 12 क्यूँकि जो रब को प्यारा
है उस की वह तादीब करता है, जिस तरह बाप उस
बेटे को तम्बीह करता है जो उसे पसन्द है।

हक़ीक़ी दौलत

13 मुबारक है वह जो हिक्मत पाता है, जिसे समझ
हासिल होती है। 14 क्यूँकि हिक्मत चाँदी से कहीं
ज़्यादा सूदमन्द है, और उस से सोने से कहीं ज़्यादा
क़ीमती चीज़ें हासिल होती हैं। 15 हिक्मत मोतियों से
ज़्यादा नफ़ीस है, तेरे तमाम ख़ज़ाने उस का मुक़ाबला
नहीं कर सकते। 16 उस के दहने हाथ में उम्र की
दराज़ी और बाएँ हाथ में दौलत और इज़्ज़त है। 17 उस
की राहें ख़ुशगवार, उस के तमाम रास्ते पुरअम्न हैं।
18 जो उस का दामन पकड़ ले उस के लिए वह
ज़िन्दगी का दरख़्त है। मुबारक है वह जो उस से
लिपटा रहे। 19 रब ने हिक्मत के वसीले से ही ज़मीन
की बुन्याद रखी, समझ के ज़रीए ही आसमान को
मज़बूती से लगाया। 20 उस के इर्फ़ान से ही गहराइयों
का पानी फूट निकला और आसमान से शबनम टपक
कर ज़मीन पर पड़ती है।

21 मेरे बेटे, दानाई और तमीज़ अपने पास महफ़ूज़
रख और उन्हें अपनी नज़र से दूर न होने दे। 22 उन
से तेरी जान तर-ओ-ताज़ा और तेरा गला आरास्ता
रहेगा। 23 तब तू चलते वक़्त महफ़ूज़ रहेगा, और
तेरा पाँओ ठोकर नहीं खाएगा। 24 तू पाँओ फैला कर
सो सकेगा, कोई सदमा तुझे नहीं पहुँचेगा बल्कि तू
लेट कर गहरी नींद सोएगा। 25 नागहाँ आफ़त से मत
डरना, न उस तबाही से जो बेदीन पर ग़ालिब आती
है, 26 क्यूँकि रब पर तेरा एतिमाद है, वही तेरे पाँओ
को फंस जाने से महफ़ूज़ रखेगा।

दूसरों की मदद करने की नसीहत

27 अगर कोई ज़रूरतमन्द हो और तू उस की मदद
कर सके तो उस के साथ भलाई करने से इन्कार न
कर। 28 अगर तू आज कुछ दे सके तो अपने पड़ोसी
से मत कहना, "कल आना तो मैं आप को कुछ दे
दूँगा।" 29 जो पड़ोसी बेफ़िक्र तेरे साथ रहता है उस
के ख़िलाफ़ बुरे मन्सूबे मत बांधना। 30 जिस ने तुझे
नुक़्सान नहीं पहुँचाया अदालत में उस पर बेबुन्याद
इल्ज़ाम न लगाना।

31 न ज़ालिम से हसद कर, न उस की कोई राह
इख़तियार कर। 32 क्यूँकि बुरी राह पर चलने वाले से
रब घिन खाता है जबकि सीधी राह पर चलने वालों
को वह अपने राज़ों से आगाह करता है। 33 बेदीन
के घर पर रब की लानत आती जबकि रास्तबाज़
के घर को वह बरकत देता है। 34 मज़ाक़ उड़ाने
वालों का वह मज़ाक़ उड़ाता, लेकिन फ़रोतनों पर
मेहरबानी करता है। 35 दानिशमन्द मीरास में इज़्ज़त
पाएँगे जबकि अहमक़ के नसीब में शर्मिन्दगी होगी।

बाप की नसीहत

4 1 ऐ बेटो, बाप की नसीहत सुनो, ध्यान दो ताकि
तुम सीख कर समझ हासिल कर सको। 2 मैं
तुम्हें अच्छी तालीम देता हूँ, इस लिए मेरी हिदायत
को तर्क न करो। 3 मैं अभी अपने बाप के घर में
नाज़ुक लड़का था, अपनी माँ का वाहिद बच्चा, 4 तो
मेरे बाप ने मुझे तालीम दे कर कहा,

"पूरे दिल से मेरे अल्फ़ाज़ अपना ले और हर वक़्त
मेरे अहकाम पर अमल कर तो तू जीता रहेगा।
5 हिक्मत हासिल कर, समझ अपना ले! यह चीज़ें मत
भूलना, मेरे मुँह के अल्फ़ाज़ से दूर न होना। 6 हिक्मत

तर्क न कर तो वह तुझे महफ़ूज़ रखेगी। उस से मुहब्बत रख तो वह तेरी देख-भाल करेगी। 7 हिक्मत इस से शुरू होती है कि तू हिक्मत अपना ले। समझ हासिल करने के लिए बाक़ी तमाम मिलकियत क़ुर्बान करने के लिए तय्यार हो। 8 उसे अज़ीज़ रख तो वह तुझे सरफ़राज़ करेगी, उसे गले लगा तो वह तुझे इज़्ज़त बख़्शेगी। 9 तब वह तेरे सर को ख़ूबसूरत सेहरे से आरास्ता करेगी और तुझे शानदार ताज से नवाज़ेगी।”

10 मेरे बेटे, मेरी सुन! मेरी बातें अपना ले तो तेरी उम्र दराज़ होगी। 11 मैं तुझे हिक्मत की राह पर चलने की हिदायत देता, तुझे सीधी राहों पर फिरने देता हूँ। 12 जब तू चलेगा तो तेरे क़दमों को किसी भी चीज़ से रोका नहीं जाएगा, और दौड़ते वक़्त तू ठोकर नहीं खाएगा। 13 तर्बियत का दामन थामे रह! उसे न छोड़ बल्कि महफ़ूज़ रख, क्यूँकि वह तेरी ज़िन्दगी है।

14 बेदीनों की राह पर क़दम न रख, शरीरों के रास्ते पर मत जा। 15 उस से गुरेज़ कर, उस पर सफ़र न कर बल्कि उस से कतरा कर आगे निकल जा। 16 क्यूँकि जब तक उन से बुरा काम सरज़द न हो जाए वह सो ही नहीं सकते, जब तक उन्हों ने किसी को ठोकर खिला कर ख़ाक में मिला न दिया हो वह नींद से महरूम रहते हैं। 17 वह बेदीनी की रोटी खाते और ज़ुल्म की मै पीते हैं। 18 लेकिन रास्तबाज़ की राह तुलू-ए-सुब्ह की पहली रौशनी की मानिन्द है जो दिन के उरूज तक बढ़ती रहती है। 19 इस के मुक़ाबले में बेदीन का रास्ता गहरी तारीकी की मानिन्द है, उन्हें पता ही नहीं चलता कि किस चीज़ से ठोकर खा कर गिर गए हैं।

20 मेरे बेटे, मेरी बातों पर ध्यान दे, मेरे अल्फ़ाज़ पर कान धर। 21 उन्हें अपनी नज़र से ओझल न होने दे बल्कि अपने दिल में महफ़ूज़ रख। 22 क्यूँकि जो यह बातें अपनाएँ वह ज़िन्दगी और पूरे जिस्म के लिए शिफ़ा पाते हैं। 23 तमाम चीज़ों से पहले अपने दिल की हिफ़ाज़त कर, क्यूँकि यही ज़िन्दगी का सरचश्मा है। 24 अपने मुँह से झूट और अपने होंटों से कजगोई दूर कर। 25 ध्यान दे कि तेरी आँखें सीधा आगे की तरफ़ देखें, कि तेरी नज़र उस रास्ते पर लगी रहे जो सीधा है। 26 अपने पाँओ का रास्ता चलने के क़ाबिल बना दे, ध्यान दे कि तेरी राहें मज़बूत हैं। 27 न दाईं, न बाईं तरफ़ मुड़ बल्कि अपने पाँओ को ग़लत क़दम उठाने से बाज़ रख।

ज़िनाकारी से ख़बरदार

5 1 मेरे बेटे, मेरी हिक्मत पर ध्यान दे, मेरी समझ की बातों पर कान धर। 2 फिर तू तमीज़ का दामन थामे रहेगा, और तेरे होंट इल्म-ओ-इर्फ़ान महफ़ूज़ रखेंगे। 3 क्यूँकि ज़िनाकार औरत के होंटों से शहद टपकता है, उस की बातें तेल की तरह चिकनी-चुपड़ी होती हैं। 4 लेकिन अन्जाम में वह ज़हर जैसी कड़वी और दोधारी तलवार जैसी तेज़ साबित होती है। 5 उस के पाँओ मौत की तरफ़ उतरते, उस के क़दम पाताल की जानिब बढ़ते जाते हैं। 6 उस के रास्ते कभी इधर कभी इधर फिरते हैं ताकि तू ज़िन्दगी की राह पर तवज्जुह न दे और उस की आवारगी को जान न ले।

7 चुनाँचे मेरे बेटो, मेरी सुनो और मेरे मुँह की बातों से दूर न हो जाओ। 8 अपने रास्ते उस से दूर रख, उस के घर के दरवाज़े के क़रीब भी न जा। 9 ऐसा न हो कि तू अपनी ताक़त किसी और के लिए सर्फ़ करे और अपने साल ज़ालिम के लिए ज़ाए करे। 10 ऐसा न हो कि परदेसी तेरी मिलकियत से सेर हो जाएँ, कि जो कुछ तू ने मेहनत-मशक़्क़त से हासिल किया वह किसी और के घर में आए। 11 तब आख़िरकार तेरा बदन और गोश्त घुल जाएंगे, और तू आहें भर भर कर 12 कहेगा, “हाय, मैं ने क्यूँ तर्बियत से नफ़रत की, मेरे दिल ने क्यूँ सरज़निश को हक़ीर जाना? 13 हिदायत करने वालों की मैं ने न सुनी, अपने उस्तादों की बातों पर कान न धरा। 14 जमाअत के दरमियान ही रहते हुए मुझ पर ऐसी आफ़त आई कि मैं तबाही के दहाने तक पहुँच गया हूँ।”

[15] अपने ही हौज़ का पानी और अपने ही कुएँ से फूटने वाला पानी पी ले। [16] क्या मुनासिब है कि तेरे चश्मे गलियों में और तेरी नदियाँ चौकों में बह निकलें? [17] जो पानी तेरा अपना है वह तुझ तक महदूद रहे, अजनबी उस में शरीक न हो जाए। [18] तेरा चश्मा मुबारक हो। हाँ, अपनी बीवी से ख़ुश रह। [19] वही तेरी मनमोहन हिरनी और दिलरुबा ग़ज़ाल [o]है। उसी का प्यार तुझे तर-ओ-ताज़ा करे, उसी की मुहब्बत तुझे हमेशा मस्त रखे।

[20] मेरे बेटे, तू अजनबी औरत से क्यूँ मस्त हो जाए, किसी दूसरे की बीवी से क्यूँ लिपट जाए? [21] ख़याल रख, इन्सान की राहें रब को साफ़ दिखाई देती हैं, जहाँ भी वह चले उस पर वह तवज्जुह देता है। [22] बेदीन की अपनी ही हरकतें उसे फंसा देती हैं, वह अपने ही गुनाह के रस्सों में जकड़ा रहता है। [23] वह तर्बियत की कमी के सबब से हलाक हो जाएगा, अपनी बड़ी हमाक़त के बाइस डगमगाते हुए अपने अन्जाम को पहुँचेगा।

ज़मानत देने, काहिली और झूट से ख़बरदार

6 [1] मेरे बेटे, क्या तू अपने पड़ोसी का ज़ामिन बना है? क्या तू ने हाथ मिला कर वादा किया है कि मैं किसी दूसरे का ज़िम्मादार ठहरूँगा? [2] क्या तू अपने वादे से बंधा हुआ, अपने मुँह के अल्फ़ाज़ से फंसा हुआ है? [3] ऐसा करने से तू अपने पड़ोसी के हाथ में आ गया है, इस लिए अपनी जान को छुड़ाने के लिए उस के सामने औंधे मुँह हो कर उसे अपनी मिन्नत-समाजत से तंग कर। [4] अपनी आँखों को सोने न दे, अपने पपोटों को ऊँघने न दे जब तक तू इस ज़िम्मादारी से फ़ारिग़ न हो जाए। [5] जिस तरह ग़ज़ाल शिकारी के हाथ से और परिन्दा चिड़ीमार के हाथ से छूट जाता है उसी तरह सिरतोड़ कोशिश कर ताकि तेरी जान छूट जाए।

[6] ऐ काहिल, चियूँटी के पास जा कर उस की राहों पर ग़ौर कर! उस के नमूने से हिक्मत सीख ले। [7] उस पर न सरदार, न अफ़्सर या हुक्मरान मुक़र्रर है, [8] तो भी वह गर्मियों में सर्दियों के लिए खाने का ज़ख़ीरा कर रखती, फ़सल के दिनों में ख़ूब ख़ुराक इकट्ठी करती है। [9] ऐ काहिल, तू मज़ीद कब तक सोया रहेगा, कब जाग उठेगा? [10] तू कहता है, “मुझे थोड़ी देर सोने दे, थोड़ी देर ऊँघने दे, थोड़ी देर हाथ पर हाथ धरे बैठने दे ताकि आराम कर सकूँ।” [11] लेकिन ख़बरदार, जल्द ही ग़ुर्बत राहज़न की तरह तुझ पर आएगी, मुफ़लिसी हथियार से लेस डाकू की तरह तुझ पर टूट पड़ेगी।

[12] बदमआश और कमीना किस तरह पहचाना जाता है? वह मुँह में झूट लिए फिरता है, [13] अपनी आँखों, पाँओ और उंगलियों से इशारा करके तुझे फ़रेब के जाल में फंसाने की कोशिश करता है। [14] उस के दिल में कजी है, और वह हर वक़्त बुरे मन्सूबे बांधने में लगा रहता है। जहाँ भी जाए वहाँ झगड़े छिड़ जाते हैं। [15] लेकिन ऐसे शख़्स पर अचानक ही आफ़त आएगी। एक ही लम्हे में वह पाश पाश हो जाएगा। तब उस का इलाज नामुमकिन होगा।

[16] रब छः चीज़ों से नफ़रत बल्कि सात चीज़ों से घिन खाता है,

[17] वह आँखें जो ग़ुरूर से देखती हैं, वह ज़बान जो झूट बोलती है, वह हाथ जो बेगुनाहों को क़त्ल करते हैं, [18] वह दिल जो बुरे मन्सूबे बांधता है, वह पाँओ जो दूसरों को नुक़्सान पहुँचाने के लिए भागते हैं, [19] वह गवाह जो अदालत में झूट बोलता और वह जो भाइयों में झगड़ा पैदा करता है।

ज़िना करने से ख़बरदार

[20] मेरे बेटे, अपने बाप के हुक्म से लिपटा रह, और अपनी माँ की हिदायत नज़रअन्दाज़ न कर। [21] उन्हें यूँ अपने दिल के साथ बांधे रख कि कभी

---

[o] लफ़्ज़ी तर्जुमा : पहाड़ी बकरी।

दूर न हो जाएँ। उन्हें हार की तरह अपने गले में डाल
ले। 22 चलते वक़्त वह तेरी राहनुमाई करें, आराम
करते वक़्त तेरी पहरादारी करें, जागते वक़्त तुझ से
हमकलाम हों। 23 क्यूँकि बाप का हुक्म चराग़ और
माँ की हिदायत रौशनी है, तर्बियत की डाँट-डपट
ज़िन्दगीबख़्श राह है। 24 यूँ तू बदकार औरत और
दूसरे की ज़िनाकार बीवी की चिकनी-चुपड़ी बातों
से महफ़ूज़ रहेगा। 25 दिल में उस के हुस्न का लालच
न कर, ऐसा न हो कि वह पलक मार मार कर तुझे
पकड़ ले। 26 क्यूँकि गो कस्बी आदमी को उस के
पैसे से महरूम करती है, लेकिन दूसरे की ज़िनाकार
बीवी उस की क़ीमती जान का शिकार करती है।

27 क्या इन्सान अपनी झोली में भड़कती आग यूँ
उठा कर फिर सकता है कि उस के कपड़े न जलें?
28 या क्या कोई दहकते कोएलों पर यूँ फिर सकता
है कि उस के पाँओ झुलस न जाएँ? 29 इसी तरह जो
किसी दूसरे की बीवी से हमबिसतर हो जाए उस का
अन्जाम बुरा है, जो भी दूसरे की बीवी को छेड़े उसे
सज़ा मिलेगी। 30 जो भूक के मारे अपना पेट भरने के
लिए चोरी करे उसे लोग हद से ज़्यादा हक़ीर नहीं
जानते, 31 हालाँकि उसे चोरी किए हुए माल को सात
गुना वापस करना है और उस के घर की दौलत जाती
रहेगी। 32 लेकिन जो किसी दूसरे की बीवी के साथ
ज़िना करे वह बेअक़ल है। जो अपनी जान को तबाह
करना चाहे वही ऐसा करता है। 33 उस की पिटाई
और बेइज़्ज़ती की जाएगी, और उस की शर्मिन्दगी
कभी नहीं मिटेगी। 34 क्यूँकि शौहर ग़ैरत खा कर और
तैश में आ कर बेरहमी से बदला लेगा। 35 न वह
कोई मुआवज़ा क़बूल करेगा, न रिश्वत लेगा, ख़्वाह
कितनी ज़्यादा क्यूँ न हो।

बेवफ़ा बीवी

7 1 मेरे बेटे, मेरे अल्फ़ाज़ की पैरवी कर, मेरे
अहकाम अपने अन्दर महफ़ूज़ रख। 2 मेरे
अहकाम के ताबे रह तो जीता रहेगा। अपनी आँख
की पुतली की तरह मेरी हिदायत की हिफ़ाज़त कर।
3 उन्हें अपनी उंगली के साथ बांध, अपने दिल की
तख़्ती पर कन्दा कर। 4 हिक्मत से कह, "तू मेरी बहन
है," और समझ से, "तू मेरी क़रीबी रिश्तेदार है।"
5 यही तुझे ज़िनाकार औरत से महफ़ूज़ रखेंगी, दूसरे
की उस बीवी से जो अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से
तुझे फुसलाने की कोशिश करती है।

6 एक दिन मैं ने अपने घर की खिड़की[p] में से बाहर
झाँका 7 तो क्या देखता हूँ कि वहाँ कुछ सादालौह
नौजवान खड़े हैं। उन में से एक बेअक़ल जवान नज़र
आया। 8 वह गली में से गुज़र कर ज़िनाकार औरत
के कोने की तरफ़ टहलने लगा। चलते चलते वह
उस रास्ते पर आ गया जो औरत के घर तक ले जाता
है। 9 शाम का धुन्दल्का था, दिन ढलने और रात का
अंधेरा छाने लगा था। 10 तब एक औरत कस्बी का
लिबास पहने हुए चालाकी से उस से मिलने आई।
11 यह औरत इतनी बेलगाम और ख़ुदसर है कि उस
के पाँओ उस के घर में नहीं टिकते। 12 कभी वह गली
में, कभी चौकों में होती है, हर कोने पर वह ताक में
बैठी रहती है।

13 अब उस ने नौजवान को पकड़ कर उसे बोसा
दिया। बेहया नज़र उस पर डाल कर उस ने कहा,
14 "मुझे सलामती की क़ुर्बानियाँ पेश करनी थीं, और
आज ही मैं ने अपनी मन्नतें पूरी कीं। 15 इस लिए मैं
निकल कर तुझ से मिलने आई, मैं ने तेरा पता किया
और अब तू मुझे मिल गया है। 16 मैं ने अपने बिस्तर
पर मिस्र के रंगीन कम्बल बिछाए, 17 उस पर मुर,
ऊद और दारचीनी की ख़ुश्बू छिड़की है। 18 आओ,
हम सुब्ह तक मुहब्बत का प्याला तह तक पी लें,
हम इश्क़बाज़ी से लुत्फ़अन्दोज़ हों! 19 क्यूँकि मेरा
ख़ावन्द घर में नहीं है, वह लम्बे सफ़र के लिए रवाना
हुआ है। 20 वह बटवे में पैसे डाल कर चला गया है
और पूरे चाँद तक वापस नहीं आएगा।"

---

[p] लफ़्ज़ी तर्जुमा : घर की खिड़की के जंगले।

21 ऐसी बातें करते करते औरत ने नौजवान को
तरग़ीब दे कर अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से
वरग़लाया। 22 नौजवान सीधा उस के पीछे यूँ हो
लिया जिस तरह बैल ज़बह होने के लिए जाता या
हिरन उछल कर फंदे में फंस जाता है। 23 क्यूँकि एक
वक़्त आएगा कि तीर उस का दिल चीर डालेगा।
लेकिन फ़िलहाल उस की हालत उस चिड़िया की
मानिन्द है जो उड़ कर जाल में आ जाती और ख़याल
तक नहीं करती कि मेरी जान ख़तरे में है।

24 चुनाँचे मेरे बेटो, मेरी सुनो, मेरे मुँह की बातों पर
ध्यान दो! 25 तेरा दिल भटक कर उस तरफ़ रुख़
न करे जहाँ ज़िनाकार औरत फिरती है, ऐसा न हो
कि तू आवारा हो कर उस की राहों में उलझ जाए।
26 क्यूँकि उन की तादाद बड़ी है जिन्हें उस ने गिरा
कर मौत के घाट उतारा है, उस ने मुतअद्दिद लोगों
को मार डाला है। 27 उस का घर पाताल का रास्ता
है जो लोगों को मौत की कोठड़ियों तक पहुँचाता है।

हिक्मत की दावत और वादा

8 1 सुनो! क्या हिक्मत आवाज़ नहीं देती? हाँ,
समझ ऊँची आवाज़ से एलान करती है। 2 वह
बुलन्दियों पर खड़ी है, उस जगह जहाँ तमाम रास्ते
एक दूसरे से मिलते हैं। 3 शहर के दरवाज़ों पर जहाँ
लोग निकलते और दाख़िल होते हैं वहाँ हिक्मत
ज़ोरदार आवाज़ से पुकारती है,

4 "ऐ मर्दो, मैं तुम ही को पुकारती हूँ, तमाम
इन्सानों को आवाज़ देती हूँ।

5 ऐ सादालौहो, होश्यारी सीख लो! ऐ अहमक़ो,
समझ अपना लो!

6 सुनो, क्यूँकि मैं शराफ़त की बातें करती हूँ, और
मेरे होंट सच्चाई पेश करते हैं।

7 मेरा मुँह सच बोलता है, क्यूँकि मेरे होंट बेदीनी से
घिन खाते हैं।

8 जो भी बात मेरे मुँह से निकले वह रास्त है, एक
भी पेचदार या टेढ़ी नहीं है।

9 समझदार जानता है कि मेरी बातें सब दुरुस्त हैं,
इल्म रखने वाले को मालूम है कि वह सहीह हैं।

10 चाँदी की जगह मेरी तर्बियत और ख़ालिस सोने
के बजाए इल्म-ओ-इर्फ़ान अपना लो।

11 क्यूँकि हिक्मत मोतियों से कहीं बेहतर है, कोई
भी ख़ज़ाना उस का मुक़ाबला नहीं कर सकता।

12 मैं जो हिक्मत हूँ होश्यारी के साथ बसती हूँ, और
मैं तमीज़ का इल्म रखती हूँ।

13 जो रब का ख़ौफ़ मानता है वह बुराई से नफ़रत
करता है। मुझे ग़ुरूर, तकब्बुर, ग़लत चाल-चलन
और टेढ़ी बातों से नफ़रत है।

14 मेरे पास अच्छा मश्वरा और कामयाबी है। मेरा
दूसरा नाम समझ है, और मुझे क़ुव्वत हासिल है।

15 मेरे वसीले से बादशाह सल्तनत और हुक्मरान
रास्त फ़ैसले करते हैं।

16 मेरे ज़रीए रईस और शुरफ़ा बल्कि तमाम आदिल
मुन्सिफ़ हुकूमत करते हैं।

17 जो मुझे प्यार करते हैं उन्हें मैं प्यार करती हूँ,
और जो मुझे ढूँडते हैं वह मुझे पा लेते हैं।

18 मेरे पास इज़्ज़त-ओ-दौलत, शानदार माल और
रास्ती है।

19 मेरा फल सोने बल्कि ख़ालिस सोने से कहीं
बेहतर है, मेरी पैदावार ख़ालिस चाँदी पर सबक़त
रखती है।

20 मैं रास्ती की राह पर ही चलती हूँ, वहीं जहाँ
इन्साफ़ है।

21 जो मुझ से मुहब्बत रखते हैं उन्हें मैं मीरास में
दौलत मुहय्या करती हूँ। उन के गोदाम भरे रहते हैं।

हिक्मत का तख़्लीक़ में हिस्सा

22 जब रब तख़्लीक़ का सिलसिला अमल में लाया
तो पहले उस ने मुझे ही बनाया। क़दीम ज़माने में मैं
उस के दीगर कामों से पहले ही वुजूद में आई।

23 मुझे अज़ल से मुक़र्रर किया गया, इब्तिदा ही से
जब दुनिया अभी पैदा नहीं हुई थी।

24 न समुन्दर की गहराइयाँ, न कस्रत से फूटने वाले
चश्मे थे जब मैं ने जन्म लिया।
25 न पहाड़ अपनी अपनी जगह पर क़ाइम हुए थे,
न पहाड़ियाँ थीं जब मैं पैदा हुई।
26 उस वक़्त अल्लाह ने न ज़मीन, न उस के मैदान,
और न दुनिया के पहले ढेले बनाए थे।
27 जब उस ने आसमान को उस की जगह पर
लगाया और समुन्दर की गहराइयों पर ज़मीन का
इलाक़ा मुक़र्रर किया तो मैं साथ थी।
28 जब उस ने आसमान पर बादलों और गहराइयों
में सरचश्मों का इन्तिज़ाम मज़बूत किया तो मैं साथ
थी।
29 जब उस ने समुन्दर की हद्दें मुक़र्रर कीं और हुक्म
दिया कि पानी उन से तजावुज़ न करे, जब उस ने
ज़मीन की बुन्यादें अपनी अपनी जगह पर रखीं
30 तो मैं माहिर कारीगर की हैसियत से उस के साथ
थी। रोज़-ब-रोज़ मैं लुत्फ़ का बाइस थी, हर वक़्त उस
के हुज़ूर रंगरलियाँ मनाती रही।
31 मैं उस की ज़मीन की सतह पर रंगरलियाँ मनाती
और इन्सान से लुत्फ़अन्दोज़ होती रही।

32 चुनाँचे मेरे बेटो, मेरी सुनो, क्यूँकि मुबारक हैं वह
जो मेरी राहों पर चलते हैं।
33 मेरी तर्बियत मान कर दानिशमन्द बन जाओ, उसे
नज़रअन्दाज़ मत करना।
34 मुबारक है वह जो मेरी सुने, जो रोज़-ब-रोज़ मेरे
दरवाज़े पर चौकस खड़ा रहे, रोज़ाना मेरी चौखट पर
हाज़िर रहे।
35 क्यूँकि जो मुझे पाए वह ज़िन्दगी और रब की
मन्ज़ूरी पाता है।
36 लेकिन जो मुझे पाने से क़ासिर रहे वह अपनी
जान पर ज़ुल्म करता है, जो भी मुझ से नफ़रत करे
उसे मौत प्यारी है।"

हिक्मत की ज़ियाफ़त

9 1 हिक्मत ने अपना घर तामीर करके अपने लिए
सात सतून तराश लिए हैं।
2 अपने जानवरों को ज़बह करने और अपनी मै
तय्यार करने के बाद उस ने अपनी मेज़ बिछाई है।
3 अब उस ने अपनी नौकरानियों को भेजा है, और
ख़ुद भी लोगों को शहर की बुलन्दियों से ज़ियाफ़त
करने की दावत देती है,
4 "जो सादालौह है, वह मेरे पास आए।" नासमझ
लोगों से वह कहती है, 5 "आओ, मेरी रोटी खाओ,
वह मै पियो जो मैं ने तय्यार कर रखी है। 6 अपनी
सादालौह राहों से बाज़ आओ तो जीते रहोगे, समझ
की राह पर चल पड़ो।"

7 जो लान-तान करने वाले को तालीम दे उस की
अपनी रुस्वाई हो जाएगी, और जो बेदीन को डाँटे
उसे नुक़्सान पहुँचेगा। 8 लान-तान करने वाले की
मलामत न कर वर्ना वह तुझ से नफ़रत करेगा।
दानिशमन्द की मलामत कर तो वह तुझ से मुहब्बत
करेगा। 9 दानिशमन्द को हिदायत दे तो उस की
हिक्मत मज़ीद बढ़ेगी, रास्तबाज़ को तालीम दे तो
वह अपने इल्म में इज़ाफ़ा करेगा।
10 रब का ख़ौफ़ मानने से ही हिक्मत शुरू होती
है, क़ुद्दूस ख़ुदा को जानने से ही समझ हासिल होती
है। 11 मुझ से ही तेरी उम्र के दिनों और सालों में
इज़ाफ़ा होगा। 12 अगर तू दानिशमन्द हो तो ख़ुद इस
से फ़ाइदा उठाएगा, अगर लान-तान करने वाला हो
तो तुझे ही इस का नुक़्सान झेलना पड़ेगा।

हमाक़त बीबी की ज़ियाफ़त

13 हमाक़त बीबी बेलगाम और नासमझ है, वह
कुछ नहीं जानती। 14 उस का घर शहर की बुलन्दी
पर वाक़े है। दरवाज़े के पास कुर्सी पर बैठी 15 वह
गुज़रने वालों को जो सीधी राह पर चलते हैं ऊँची

आवाज़ से दावत देती है, [16]“जो सादालौह है वह मेरे पास आए।”

जो नासमझ हैं उन से वह कहती है, [17]“चोरी का पानी मीठा और पोशीदगी में खाई गई रोटी लज़ीज़ होती है।”

[18]लेकिन उन्हें मालूम नहीं कि हमाक़त बीबी के घर में सिर्फ़ मुर्दों की रूहें बसती हैं, कि उस के मेहमान पाताल की गहराइयों में रहते हैं।

सुलेमान की हिक्मत भरी हिदायात

10 [1]ज़ैल में सुलेमान की अम्साल क़लमबन्द हैं।

ज़िन्दगीबख़्श बातें

दानिशमन्द बेटा अपने बाप को ख़ुशी दिलाता जबकि अहमक़ बेटा अपनी माँ को दुख पहुँचाता है।

[2]ख़ज़ानों का कोई फ़ाइदा नहीं अगर वह बेदीन तरीक़ों से जमा हो गए हों, लेकिन रास्तबाज़ी मौत से बचाए रखती है।

[3]रब रास्तबाज़ को भूके मरने नहीं देता, लेकिन बेदीनों का लालच रोक देता है।

[4]ढीले हाथ ग़ुर्बत और मेहनती हाथ दौलत की तरफ़ ले जाते हैं।

[5]जो गर्मियों में फ़सल जमा करता है वह दानिशमन्द बेटा है जबकि जो फ़सल की कटाई के वक़्त सोया रहता है वह वालिदैन के लिए शर्म का बाइस है।

[6]रास्तबाज़ का सर बरकत के ताज से आरास्ता रहता है जबकि बेदीनों के मुँह पर ज़ुल्म का पर्दा पड़ा रहता है।

[7]लोग रास्तबाज़ को याद करके उसे मुबारक कहते हैं, लेकिन बेदीन का नाम सड़ कर मिट जाएगा।

[8]जो दिल से दानिशमन्द है वह अह्काम क़बूल करता है, लेकिन बकवासी तबाह हो जाएगा।

[9]जिस का चाल-चलन बेइल्ज़ाम है वह सुकून से ज़िन्दगी गुज़ारता है, लेकिन जो टेढ़ा रास्ता इख़्तियार करे उसे पकड़ा जाएगा।

[10]आँख मारने वाला दुख पहुँचाता है, और बकवासी तबाह हो जाएगा।

[11]रास्तबाज़ का मुँह ज़िन्दगी का सरचश्मा है, लेकिन बेदीन के मुँह पर ज़ुल्म का पर्दा पड़ा रहता है।

[12]नफ़रत झगड़े छेड़ती रहती जबकि मुहब्बत तमाम ख़ताओं पर पर्दा डाल देती है।

[13]समझदार के होंटों पर हिक्मत पाई जाती है, लेकिन नासमझ सिर्फ़ डंडे का पैग़ाम समझता है।

[14]दानिशमन्द अपना इल्म महफ़ूज़ रखते हैं, लेकिन अहमक़ का मुँह जल्द ही तबाही की तरफ़ ले जाता है।

[15]अमीर की दौलत क़िलाबन्द शहर है जिस में वह महफ़ूज़ है जबकि ग़रीब की ग़ुर्बत उस की तबाही का बाइस है।

[16]जो कुछ रास्तबाज़ कमा लेता है वह ज़िन्दगी का बाइस है, लेकिन बेदीन अपनी रोज़ी गुनाह करने के लिए इस्तेमाल करता है।

[17]जो तर्बियत क़बूल करे वह दूसरों को ज़िन्दगी की राह पर लाता है, जो नसीहत नज़रअन्दाज़ करे वह दूसरों को सहीह राह से दूर ले जाता है।

[18]जो अपनी नफ़रत छुपाए रखे वह झूट बोलता है, जो दूसरों के बारे में ग़लत ख़बरें फैलाए वह अहमक़ है।

[19]जहाँ बहुत बातें की जाती हैं वहाँ गुनाह भी आ मौजूद होता है, जो अपनी ज़बान को क़ाबू में रखे वह दानिशमन्द है।

[20]रास्तबाज़ की ज़बान उम्दा चाँदी है जबकि बेदीन के दिल की कोई क़दर नहीं।

21 रास्तबाज़ की ज़बान बहुतों की परवरिश करती है, [q]लेकिन अहमक़ अपनी बेअक़्ली के बाइस हलाक हो जाते हैं।

22 रब की बरकत दौलत का बाइस है, हमारी अपनी मेहनत-मशक़्क़त इस में इज़ाफ़ा नहीं करती।

23 अहमक़ ग़लत काम से अपना दिल बहलाता, लेकिन समझदार हिक्मत से लुत्फ़अन्दोज़ होता है।

24 जिस चीज़ से बेदीन दहशत खाता है वही उस पर आएगी, लेकिन रास्तबाज़ की आर्ज़ू पूरी हो जाएगी।

25 जब तूफ़ान आते हैं तो बेदीन का नाम-ओ-निशान मिट जाता जबकि रास्तबाज़ हमेशा तक क़ाइम रहता है।

26 जिस तरह दाँत सिरके से और आँखें धुएँ से तंग आ जाती हैं उसी तरह वह तंग आ जाता है जो सुस्त आदमी से काम करवाता है।

27 जो रब का ख़ौफ़ माने उस की ज़िन्दगी के दिनों में इज़ाफ़ा होता है जबकि बेदीन की ज़िन्दगी वक़्त से पहले ही ख़त्म हो जाती है।

28 रास्तबाज़ आख़िरकार ख़ुशी मनाएँगे, क्यूँकि उन की उम्मीद बर आएगी। लेकिन बेदीनों की उम्मीद जाती रहेगी।

29 रब की राह बेइल्ज़ाम शख़्स के लिए पनाहगाह, लेकिन बदकार के लिए तबाही का बाइस है।

30 रास्तबाज़ कभी डाँवाँडोल नहीं होगा, लेकिन बेदीन मुल्क में आबाद नहीं रहेंगे।

31 रास्तबाज़ का मुँह हिक्मत का फल लाता रहता है, लेकिन कजगो ज़बान को काट डाला जाएगा।

32 रास्तबाज़ के होंट जानते हैं कि अल्लाह को क्या पसन्द है, लेकिन बेदीन का मुँह टेढ़ी बातें ही जानता है।

11

1 रब ग़लत तराज़ू से घिन खाता है, वह सहीह तराज़ू ही से ख़ुश होता है।

2 जहाँ तकब्बुर है वहाँ बदनामी भी क़रीब ही रहती है, लेकिन जो हलीम है उस के दामन में हिक्मत रहती है।

3 सीधी राह पर चलने वालों की दयानतदारी उन की राहनुमाई करती जबकि बेवफ़ाओं की नमकहरामी उन्हें तबाह करती है।

4 ग़ज़ब के दिन दौलत का कोई फ़ाइदा नहीं जबकि रास्तबाज़ी लोगों की जान को छुड़ाती है।

5 बेइल्ज़ाम की रास्तबाज़ी उस का रास्ता हमवार बना देती है जबकि बेदीन की बुरी हरकतें उसे गिरा देती हैं।

6 सीधी राह पर चलने वालों की रास्तबाज़ी उन्हें छुड़ा देती जबकि बेवफ़ाओं का लालच उन्हें फंसा देता है।

7 दम तोड़ते वक़्त बेदीन की सारी उम्मीद जाती रहती है, जिस दौलत की तवक़्क़ो उस ने की वह जाती रहती है।

8 रास्तबाज़ की जान मुसीबत से छूट जाती है, और उस की जगह बेदीन फंस जाता है।

9 काफ़िर अपने मुँह से अपने पड़ोसी को तबाह करता है, लेकिन रास्तबाज़ों का इल्म उन्हें छुड़ाता है।

10 जब रास्तबाज़ कामयाब हों तो पूरा शहर जश्न मनाता है, जब बेदीन हलाक हों तो ख़ुशी के नारे बुलन्द हो जाते हैं।

11 सीधी राह पर चलने वालों की बरकत से शहर तरक़्क़ी करता है, लेकिन बेदीन के मुँह से वह मिस्मार हो जाता है।

12 नासमझ आदमी अपने पड़ोसी को हक़ीर जानता है जबकि समझदार आदमी ख़ामोश रहता है।

13 तोहमत लगाने वाला दूसरों के राज़ फ़ाश करता है, लेकिन क़ाबिल-ए-एतिमाद शख़्स वह भेद पोशीदा रखता है जो उस के सपुर्द किया गया हो।

---

[q]लफ़्ज़ी तर्जुमा : रास्तबाज़ के होंट बहुतों को चराते हैं।

14 जहाँ क़ियादत की कमी है वहाँ क़ौम का तनज़्ज़ुल यक़ीनी है, जहाँ मुशीरों की कसरत है वहाँ क़ौम फ़त्हयाब रहेगी।

15 जो अजनबी का ज़ामिन हो जाए उसे यक़ीनन नुक़्सान पहुँचेगा, जो ज़ामिन बनने से इन्कार करे वह महफ़ूज़ रहेगा।

16 नेक औरत इज़्ज़त से और ज़ालिम आदमी दौलत से लिपटे रहते हैं।

17 शफ़ीक़ का अच्छा सुलूक उसी के लिए फ़ाइदामन्द है जबकि ज़ालिम का बुरा सुलूक उसी के लिए नुक़्सानदेह है।

18 जो कुछ बेदीन कमाता है वह फ़रेबदिह है, लेकिन जो रास्ती का बीज बोए उस का अज्र यक़ीनी है।

19 रास्तबाज़ी का फल ज़िन्दगी है जबकि बुराई के पीछे भागने वाले का अन्जाम मौत है।

20 रब कजदिलों से घिन खाता है, वह बेइल्ज़ाम राह पर चलने वालों ही से ख़ुश होता है।

21 यक़ीन करो, बदकार सज़ा से नहीं बचेगा जबकि रास्तबाज़ों के फ़र्ज़न्द छूट जाएंगे।

22 जिस तरह सूअर की थूथनी में सोने का छल्ला खटकता है उसी तरह ख़ूबसूरत औरत की बेतमीज़ी खटकती है।

23 अल्लाह रास्तबाज़ों की आर्ज़ू अच्छी चीज़ों से पूरी करता है, लेकिन उस का ग़ज़ब बेदीनों की उम्मीद पर नाज़िल होता है।

24 एक आदमी की दौलत में इज़ाफ़ा होता है, गो वह फ़य्याज़दिली से तक़सीम करता है। दूसरे की ग़ुर्बत में इज़ाफ़ा होता है, गो वह हद से ज़्यादा कंजूस है।

25 फ़य्याज़दिल ख़ुशहाल रहेगा, जो दूसरों को तर-ओ-ताज़ा करे वह ख़ुद ताज़ादम रहेगा।

26 लोग गन्दुम के ज़ख़ीराअन्दोज़ पर लानत भेजते हैं, लेकिन जो गन्दुम को बाज़ार में आने देता है उस के सर पर बरकत आती है।

27 जो भलाई की तलाश में रहे वह अल्लाह की मन्ज़ूरी चाहता है, लेकिन जो बुराई की तलाश में रहे वह ख़ुद बुराई के फंदे में फंस जाएगा।

28 जो अपनी दौलत पर भरोसा रखे वह गिर जाएगा, लेकिन रास्तबाज़ हरे-भरे पत्तों की तरह फलें फूलेंगे।

29 जो अपने घर में गड़बड़ पैदा करे वह मीरास में हवा ही पाएगा। अहमक़ दानिशमन्द का नौकर बनेगा।

30 रास्तबाज़ का फल ज़िन्दगी का दरख़्त है, और दानिशमन्द आदमी जानें जीतता है।

31 रास्तबाज़ को ज़मीन पर ही अज्र मिलता है। तो फिर बेदीन और गुनाहगार सज़ा क्यूँ न पाएँ?

12 1 जिसे इल्म-ओ-इर्फ़ान प्यारा है उसे तर्बियत भी प्यारी है, जिसे नसीहत से नफ़रत है वह बेअक़ल है।

2 रब अच्छे आदमी से ख़ुश होता है जबकि वह साज़िश करने वाले को क़ुसूरवार ठहराता है।

3 इन्सान बेदीनी की बुन्याद पर क़ाइम नहीं रह सकता जबकि रास्तबाज़ की जड़ें उखाड़ी नहीं जा सकतीं।

4 सुघड़ बीवी अपने शौहर का ताज है, लेकिन जो शौहर की रुस्वाई का बाइस है वह उस की हड्डियों में सड़ाहट की मानिन्द है।

5 रास्तबाज़ के ख़यालात मुन्सिफ़ाना हैं जबकि बेदीनों के मन्सूबे फ़रेबदिह हैं।

6 बेदीनों के अल्फ़ाज़ लोगों को क़त्ल करने की ताक में रहते हैं जबकि सीधी राह पर चलने वालों की बातें लोगों को छुड़ा लेती हैं।

7 बेदीनों को ख़ाक में यूँ मिलाया जाता है कि उन का नाम-ओ-निशान तक नहीं रहता, लेकिन रास्तबाज़ का घर क़ाइम रहता है।

8 किसी की जितनी अक़ल-ओ-समझ है उतना ही लोग उस की तारीफ़ करते हैं, लेकिन जिस के ज़हन में फ़ुतूर है उसे हक़ीर जाना जाता है।

[9] निचले तब्क़े का जो आदमी अपनी ज़िम्मादारियाँ अदा करता है वह उस आदमी से कहीं बेहतर है जो नख़रा बघारता है गो उस के पास रोटी भी नहीं है।

[10] रास्तबाज़ अपने मवेशी का भी ख़याल करता है जबकि बेदीन का दिल ज़ालिम ही ज़ालिम है।

[11] जो अपनी ज़मीन की खेतीबाड़ी करे उस के पास कसरत का खाना होगा, लेकिन जो फ़ुज़ूल चीज़ों के पीछे पड़ जाए वह नासमझ है।

[12] बेदीन दूसरों को जाल में फंसाने से अपना दिल बहलाता है, लेकिन रास्तबाज़ की जड़ फलदार होती है।

[13] शरीर अपनी ग़लत बातों के जाल में उलझ जाता जबकि रास्तबाज़ मुसीबत से बच जाता है।

[14] इन्सान अपने मुँह के फल से ख़ूब सेर हो जाता है, और जो काम उस के हाथों ने किया उस का अज्र उसे ज़रूर मिलेगा।

[15] अहमक़ की नज़र में उस की अपनी राह ठीक है, लेकिन दानिशमन्द दूसरों के मश्वरे पर ध्यान देता है।

[16] अहमक़ एक दम अपनी नाराज़ी का इज़्हार करता है, लेकिन दाना अपनी बदनामी छुपाए रखता है।

[17] दियानतदार गवाह खुले तौर पर सच्चाई बयान करता है जबकि झूटा गवाह धोका ही धोका पेश करता है।

[18] गप्पें हाँकने वाले की बातें तलवार की तरह ज़ख़्मी कर देती हैं जबकि दानिशमन्द की ज़बान शिफ़ा देती है।

[19] सच्चे होंट हमेशा तक क़ाइम रहते हैं जबकि झूटी ज़बान एक ही लम्हे के बाद ख़त्म हो जाती है।

[20] बुरे मन्सूबे बांधने वाले का दिल धोके से भरा रहता जबकि सलामती के मश्वरे देने वाले का दिल ख़ुशी से छलकता है।

[21] कोई भी आफ़त रास्तबाज़ पर नहीं आएगी जबकि दुख तक्लीफ़ बेदीनों का दामन कभी नहीं छोड़ेगी।

[22] रब फ़रेबदिह होंटों से घिन खाता है, लेकिन जो वफ़ादारी से ज़िन्दगी गुज़ारते हैं उन से वह ख़ुश होता है।

[23] समझदार अपना इल्म छुपाए रखता जबकि अहमक़ अपने दिल की हमाक़त बुलन्द आवाज़ से सब को पेश करता है।

[24] जिस के हाथ मेहनती हैं वह हुकूमत करेगा, लेकिन जिस के हाथ ढीले हैं उसे बेगार में काम करना पड़ेगा।

[25] जिस के दिल में परेशानी है वह दबा रहता है, लेकिन कोई भी अच्छी बात उसे ख़ुशी दिलाती है।

[26] रास्तबाज़ अपनी चरागाह मालूम कर लेता है, लेकिन बेदीनों की राह उन्हें आवारा फिरने देती है।

[27] ढीला आदमी अपना शिकार नहीं पकड़ सकता जबकि मेहनती शख़्स कसरत का माल हासिल कर लेता है।

[28] रास्ती की राह में ज़िन्दगी है, लेकिन ग़लत राह मौत तक पहुँचाती है।

13 [1] दानिशमन्द बेटा अपने बाप की तर्बियत क़बूल करता है, लेकिन तानाज़न परवा ही नहीं करता अगर कोई उसे डाँटे।

[2] इन्सान अपने मुँह के अच्छे फल से ख़ूब सेर हो जाता है, लेकिन बेवफ़ा के दिल में ज़ुल्म का लालच रहता है।

[3] जो अपनी ज़बान क़ाबू में रखे वह अपनी ज़िन्दगी महफ़ूज़ रखता है, जो अपनी ज़बान को बेलगाम छोड़ दे वह तबाह हो जाएगा।

[4] काहिल आदमी लालच करता है, लेकिन उसे कुछ नहीं मिलता जबकि मेहनती शख़्स की आर्ज़ू पूरी हो जाती है।

[5] रास्तबाज़ झूट से नफ़रत करता है, लेकिन बेदीन शर्म और रुस्वाई का बाइस है।

[6] रास्ती बेइल्ज़ाम की हिफ़ाज़त करती जबकि बेदीनी गुनाहगार को तबाह कर देती है।

[7]कुछ लोग अमीर का रूप भर कर फिरते हैं गो ग़रीब हैं। दूसरे ग़रीब का रूप भर कर फिरते हैं गो अमीरतरीन हैं।

[8]कभी अमीर को अपनी जान छुड़ाने के लिए ऐसा तावान देना पड़ता है कि तमाम दौलत जाती रहती है, लेकिन ग़रीब की जान इस क़िस्म की धमकी से बची रहती है।

[9]रास्तबाज़ की रौशनी चमकती रहती [r]जबकि बेदीन का चराग़ बुझ जाता है।

[10]मग़रूरों में हमेशा झगड़ा होता है जबकि दानिशमन्द सलाह-मश्वरे के मुताबिक़ ही चलते हैं।

[11]जल्दबाज़ी से हासिलशुदा दौलत जल्द ही ख़त्म हो जाती है जबकि जो रफ़्ता रफ़्ता अपना माल जमा करे वह उसे बढ़ाता रहेगा।

[12]जो उम्मीद वक़्त पर पूरी न हो जाए वह दिल को बीमार कर देती है, लेकिन जो आर्ज़ू पूरी हो जाए वह ज़िन्दगी का दरख़्त है।

[13]जो अच्छी हिदायत को हक़ीर जाने उसे नुक़सान पहुँचेगा, लेकिन जो हुक्म माने उसे अज्र मिलेगा।

[14]दानिशमन्द की हिदायत ज़िन्दगी का सरचश्मा है जो इन्सान को मोहलक फंदों से बचाए रखती है।

[15]अच्छी समझ मन्ज़ूरी अता करती है, लेकिन बेवफ़ा की राह अबदी तबाही का बाइस है।

[16]ज़हीन हर काम सोच समझ कर करता, लेकिन अहमक़ तमाम नज़रों के सामने ही अपनी हमाक़त की नुमाइश करता है।

[17]बेदीन क़ासिद मुसीबत में फंस जाता जबकि वफ़ादार क़ासिद शिफ़ा का बाइस है।

[18]जो तर्बियत की परवा न करे उसे ग़ुर्बत और शर्मिन्दगी हासिल होगी, लेकिन जो दूसरे की नसीहत मान जाए उस का एहतिराम किया जाएगा।

[19]जो आर्ज़ू पूरी हो जाए वह दिल को तर-ओ-ताज़ा करती है, लेकिन अहमक़ बुराई से दरेग़ करने से घिन खाता है।

[20]जो दानिशमन्दों के साथ चले वह ख़ुद दानिशमन्द हो जाएगा, लेकिन जो अहमक़ों के साथ चले उसे नुक़्सान पहुँचेगा।

[21]मुसीबत गुनाहगार का पीछा करती है जबकि रास्तबाज़ों का अज्र ख़ुशहाली है।

[22]नेक आदमी के बेटे और पोते उस की मीरास पाएँगे, लेकिन गुनाहगार की दौलत रास्तबाज़ के लिए महफ़ूज़ रखी जाएगी।

[23]ग़रीब का खेत कस्रत की फ़सलें मुहय्या कर सकता है, लेकिन जहाँ इन्साफ़ नहीं वहाँ सब कुछ छीन लिया जाता है।

[24]जो अपने बेटे को तम्बीह नहीं करता वह उस से नफ़रत करता है। जो उस से मुहब्बत रखे वह वक़्त पर उस की तर्बियत करता है।

[25]रास्तबाज़ जी भर कर खाना खाता है, लेकिन बेदीन का पेट ख़ाली रहता है।

14 [1]हिक्मत बीबी अपना घर तामीर करती है, लेकिन हमाक़त बीबी अपने ही हाथों से उसे ढा देती है।

[2]जो सीधी राह पर चलता है वह अल्लाह का ख़ौफ़ मानता है, लेकिन जो ग़लत राह पर चलता है वह उसे हक़ीर जानता है।

[3]अहमक़ की बातों से वह डंडा निकलता है जो उसे उस के तकब्बुर की सज़ा देता है, लेकिन दानिशमन्द के होंट उसे महफ़ूज़ रखते हैं।

[4]जहाँ बैल नहीं वहाँ चरनी ख़ाली रहती है, बैल की ताक़त ही से कस्रत की फ़सलें पैदा होती हैं।

[5]वफ़ादार गवाह झूट नहीं बोलता, लेकिन झूटे गवाह के मुँह से झूट निकलता है।

[6]तानाज़न हिक्मत को ढूँडता है, लेकिन बेफ़ाइदा। समझदार के इल्म में आसानी से इज़ाफ़ा होता है।

[7]अहमक़ से दूर रह, क्यूँकि तू उस की बातों में इल्म नहीं पाएगा।

---

[r]लफ़्ज़ी तर्जुमा : ख़ुशी मनाती।

[8] ज़हीन की हिक्मत इस में है कि वह सोच समझ कर अपनी राह पर चले, लेकिन अहमक़ की हमाक़त सरासर धोका ही है।

[9] अहमक़ अपने क़ुसूर का मज़ाक़ उड़ाते हैं, लेकिन सीधी राह पर चलने वाले रब को मन्ज़ूर हैं।

[10] हर दिल की अपनी ही तल्ख़ी होती है जिस से सिर्फ़ वही वाक़िफ़ है, और उस की ख़ुशी में भी कोई और शरीक नहीं हो सकता।

[11] बेदीन का घर तबाह हो जाएगा, लेकिन सीधी राह पर चलने वाले का ख़ैमा फले फूलेगा।

[12] ऐसी राह भी होती है जो देखने में ठीक तो लगती है गो उस का अन्जाम मौत है।

[13] दिल हंसते वक़्त भी रंजीदा हो सकता है, और ख़ुशी के इख़्तिताम पर दुख ही बाक़ी रह जाता है।

[14] जिस का दिल बेवफ़ा है वह जी भर कर अपने चाल-चलन का कड़वा फल खाएगा जबकि नेक आदमी अपने आमाल के मीठे फल से सेर हो जाएगा।

[15] सादालौह हर एक की बात मान लेता है जबकि ज़हीन आदमी अपना हर क़दम सोच समझ कर उठाता है।

[16] दानिशमन्द डरते डरते ग़लत काम से दरेग़ करता है, लेकिन अहमक़ ख़ुदएतिमाद है और एक दम मुश्तइल हो जाता है।

[17] ग़ुसीला आदमी अहमक़ाना हरकतें करता है, और लोग साज़िशी शख़्स से नफ़रत करते हैं।

[18] सादालौह मीरास में हमाक़त पाता है जबकि ज़हीन आदमी का सर इल्म के ताज से आरास्ता रहता है।

[19] शरीरों को नेकों के सामने झुकना पड़ेगा, और बेदीनों को रास्तबाज़ के दरवाज़े पर औंधे मुँह होना पड़ेगा।

[20] ग़रीब के हमसाय भी उस से नफ़रत करते हैं जबकि अमीर के बेशुमार दोस्त होते हैं।

[21] जो अपने पड़ोसी को हक़ीर जाने वह गुनाह करता है। मुबारक है वह जो ज़रूरतमन्द पर तरस खाता है।

[22] बुरे मन्सूबे बांधने वाले सब आवारा फिरते हैं। लेकिन अच्छे मन्सूबे बांधने वाले शफ़क़त और वफ़ा पाएँगे।

[23] मेहनत-मशक़्क़त करने में हमेशा फ़ाइदा होता है, जबकि ख़ाली बातें करने से लोग ग़रीब हो जाते हैं।

[24] दानिशमन्दों का अज्र दौलत का ताज है जबकि अहमक़ों का अज्र हमाक़त ही है।

[25] सच्चा गवाह जानें बचाता है जबकि झूटा गवाह फ़रेबदिह है।

[26] जो रब का ख़ौफ़ माने उस के पास महफ़ूज़ क़िला है जिस में उस की औलाद भी पनाह ले सकती है।

[27] रब का ख़ौफ़ ज़िन्दगी का सरचश्मा है जो इन्सान को मोहलक फंदों से बचाए रखता है।

[28] जितनी आबादी मुल्क में है उतनी ही बादशाह की शान-ओ-शौकत है। रिआया की कमी हुक्मरान के तनज़्ज़ुल का बाइस है।

[29] तहम्मुल करने वाला बड़ी समझदारी का मालिक है, लेकिन ग़ुसीला आदमी अपनी हमाक़त का इज़्हार करता है।

[30] पुरसुकून दिल जिस्म को ज़िन्दगी दिलाता जबकि हसद हड्डियों को गलने देता है।

[31] जो पस्तहाल पर ज़ुल्म करे वह उस के ख़ालिक़ की तहक़ीर करता है जबकि जो ज़रूरतमन्द पर तरस खाए वह अल्लाह का एहतिराम करता है।

[32] बेदीन की बुराई उसे ख़ाक में मिला देती है, लेकिन रास्तबाज़ मरते वक़्त भी अल्लाह में पनाह लेता है।

[33] हिक्मत समझदार के दिल में आराम करती है, और वह अहमक़ों के दरमियान भी ज़ाहिर हो जाती है।

[34] रास्ती से हर क़ौम सरफ़राज़ होती है जबकि गुनाह से उम्मतें रुसवा हो जाती हैं।

[35] बादशाह दानिशमन्द मुलाज़िम से ख़ुश होता है, लेकिन शर्मनाक काम करने वाला मुलाज़िम उस के ग़ुस्से का निशाना बन जाता है।

15 1 नर्म जवाब ग़ुस्सा ठंडा करता, लेकिन तुरश बात तैश दिलाती है।

2 दानिशमन्दों की ज़बान इल्म-ओ-इर्फ़ान फैलाती है जबकि अहमक़ का मुँह हमाक़त का ज़ोर से उबलने वाला चश्मा है।

3 रब की आँखें हर जगह मौजूद हैं, वह बुरे और भले सब पर ध्यान देती हैं।

4 नर्म ज़बान ज़िन्दगी का दरख़्त है जबकि फ़रेबदिह ज़बान शिकस्तादिल कर देती है।

5 अहमक़ अपने बाप की तर्बियत को हक़ीर जानता है, लेकिन जो नसीहत माने वह दानिशमन्द है।

6 रास्तबाज़ के घर में बड़ा ख़ज़ाना होता है, लेकिन जो कुछ बेदीन हासिल करता है वह तबाही का बाइस है।

7 दानिशमन्दों के होंट इल्म-ओ-इर्फ़ान का बीज बिखेर देते हैं, लेकिन अहमक़ों का दिल ऐसा नहीं करता।

8 रब बेदीनों की क़ुर्बानी से घिन खाता, लेकिन सीधी राह पर चलने वालों की दुआ से ख़ुश होता है।

9 रब बेदीन की राह से घिन खाता, लेकिन रास्ती का पीछा करने वाले से प्यार करता है।

10 जो सहीह राह को तर्क करे उस की सख़्त तादीब की जाएगी, जो नसीहत से नफ़रत करे वह मर जाएगा।

11 पाताल और आलम-ए-अर्वाह रब को साफ़ नज़र आते हैं। तो फिर इन्सानों के दिल उसे क्यूँ न साफ़ दिखाई दें?

12 तानाज़न को दूसरों की नसीहत पसन्द नहीं आती, इस लिए वह दानिशमन्दों के पास नहीं जाता।

13 जिस का दिल ख़ुश है उस का चेहरा खुला रहता है, लेकिन जिस का दिल परेशान है उस की रूह शिकस्ता रहती है।

14 समझदार का दिल इल्म-ओ-इर्फ़ान की तलाश में रहता, लेकिन अहमक़ हमाक़त की चरागाह में चरता रहता है।

15 मुसीबतज़दा के तमाम दिन बुरे हैं, लेकिन जिस का दिल ख़ुश है वह रोज़ाना जश्न मनाता है।

16 जो ग़रीब रब का ख़ौफ़ मानता है उस का हाल उस करोड़पती से कहीं बेहतर है जो बड़ी बेचैनी से ज़िन्दगी गुज़ारता है।

17 जहाँ मुहब्बत है वहाँ सब्ज़ी का सालन बहुत है, जहाँ नफ़रत है वहाँ मोटे-ताज़े बछड़े की ज़ियाफ़त भी बेफ़ाइदा है।

18 ग़ुसीला आदमी झगड़े छेड़ता रहता जबकि तहम्मुल करने वाला लोगों के ग़ुस्से को ठंडा कर देता है।

19 काहिल का रास्ता काँटेदार बाड़ की मानिन्द है, लेकिन दियानतदारों की राह पक्की सड़क ही है।

20 दानिशमन्द बेटा अपने बाप के लिए ख़ुशी का बाइस है, लेकिन अहमक़ अपनी माँ को हक़ीर जानता है।

21 नासमझ आदमी हमाक़त से लुत्फ़अन्दोज़ होता, लेकिन समझदार आदमी सीधी राह पर चलता है।

22 जहाँ सलाह-मश्वरा नहीं होता वहाँ मन्सूबे नाकाम रह जाते हैं, जहाँ बहुत से मुशीर होते हैं वहाँ कामयाबी होती है।

23 इन्सान मौज़ूँ जवाब देने से ख़ुश हो जाता है, वक़्त पर मुनासिब बात कितनी अच्छी होती है।

24 ज़िन्दगी की राह चढ़ती रहती है ताकि समझदार उस पर चलते हुए पाताल में उतरने से बच जाए।

25 रब मुतकब्बिर का घर ढा देता, लेकिन बेवा की ज़मीन की हुदूद महफ़ूज़ रखता है।

26 रब बुरे मन्सूबों से घिन खाता है, और मेहरबान अल्फ़ाज़ उस के नज़्दीक पाक हैं।

27 जो नाजाइज़ नफ़ा कमाए वह अपने घर पर आफ़त लाता है, लेकिन जो रिश्वत से नफ़रत रखे वह जीता रहेगा।

28 रास्तबाज़ का दिल सोच समझ कर जवाब देता है, लेकिन बेदीन का मुँह ज़ोर से उबलने वाला चश्मा है जिस से बुरी बातें निकलती रहती हैं।

[29] रब बेदीनों से दूर रहता, लेकिन रास्तबाज़ की दुआ सुनता है।

[30] चमकती आँखें दिल को ख़ुशी दिलाती हैं, अच्छी ख़बर पूरे जिस्म को तर-ओ-ताज़ा कर देती है।

[31] जो ज़िन्दगीबख़्श नसीहत पर ध्यान दे वह दानिशमन्दों के दरमियान ही सुकूनत करेगा।

[32] जो तर्बियत की परवा न करे वह अपने आप को हक़ीर जानता है, लेकिन जो नसीहत पर ध्यान दे उस की समझ में इज़ाफ़ा होता है।

[33] रब का ख़ौफ़ ही वह तर्बियत है जिस से इन्सान हिक्मत सीखता है। पहले फ़रोतनी अपना ले, क्यूँकि यही इज़्ज़त पाने का पहला क़दम है।

16

[1] इन्सान दिल में मन्सूबे बांधता है, लेकिन ज़बान का जवाब रब की तरफ़ से आता है।

[2] इन्सान की नज़र में उस की तमाम राहें पाक-साफ़ हैं, लेकिन रब ही रूहों की जाँच-पड़ताल करता है।

[3] जो कुछ भी तू करना चाहे उसे रब के सपुर्द कर। तब ही तेरे मन्सूबे कामयाब होंगे।

[4] रब ने सब कुछ अपने ही मक़ासिद पूरे करने के लिए बनाया है। वह दिन भी पहले से मुक़र्रर है जब बेदीन पर आफ़त आएगी।

[5] रब हर मग़रूर दिल से घिन खाता है। यक़ीनन वह सज़ा से नहीं बचेगा।

[6] शफ़क़त और वफ़ादारी गुनाह का कफ़्फ़ारा देती हैं। रब का ख़ौफ़ मानने से इन्सान बुराई से दूर रहता है।

[7] अगर रब किसी इन्सान की राहों से ख़ुश हो तो वह उस के दुश्मनों को भी उस से सुलह कराने देता है।

[8] इन्साफ़ से थोड़ा बहुत कमाना नाइन्साफ़ी से बहुत दौलत जमा करने से कहीं बेहतर है।

[9] इन्सान अपने दिल में मन्सूबे बांधता रहता है, लेकिन रब ही मुक़र्रर करता है कि वह आख़िरकार किस राह पर चल पड़े।

[10] बादशाह के होंट गोया इलाही फ़ैसले पेश करते हैं, उस का मुँह अदालत करते वक़्त बेवफ़ा नहीं होता।

[11] रब दुरुस्त तराज़ू का मालिक है, उसी ने तमाम बाटों का इन्तिज़ाम क़ाइम किया।

[12] बादशाह बेदीनी से घिन खाता है, क्यूँकि उस का तख़्त रास्तबाज़ी की बुन्याद पर मज़बूत रहता है।

[13] बादशाह रास्तबाज़ होंटों से ख़ुश होता और साफ़ बात करने वाले से मुहब्बत रखता है।

[14] बादशाह का ग़ुस्सा मौत का पेशख़ैमा है, लेकिन दानिशमन्द उसे ठंडा करने के तरीक़े जानता है।

[15] जब बादशाह का चेहरा खिल उठे तो मतलब ज़िन्दगी है। उस की मन्ज़ूरी मौसम-ए-बहार के तर-ओ-ताज़ा करने वाले बादल की मानिन्द है।

[16] हिक्मत का हुसूल सोने से कहीं बेहतर और समझ पाना चाँदी से कहीं बढ़ कर है।

[17] दियानतदार की मज़बूत राह बुरे काम से दूर रहती है, जो अपनी राह की पहरादारी करे वह अपनी जान बचाए रखता है।

[18] तबाही से पहले ग़ुरूर और गिरने से पहले तकब्बुर आता है।

[19] फ़रोतनी से ज़रूरतमन्दों के दरमियान बसना घमंडियों के लूटे हुए माल में शरीक होने से कहीं बेहतर है।

[20] जो कलाम पर ध्यान दे वह ख़ुशहाल होगा, मुबारक है वह जो रब पर भरोसा रखे।

[21] जो दिल से दानिशमन्द है उसे समझदार क़रार दिया जाता है, और मीठे अल्फ़ाज़ तालीम में इज़ाफ़ा करते हैं।

[22] फ़हम अपने मालिक के लिए ज़िन्दगी का सरचश्मा है, लेकिन अहमक़ की अपनी ही हमाक़त उसे सज़ा देती है।

[23] दानिशमन्द का दिल समझ की बातें ज़बान पर लाता और तालीम देने में होंटों का सहारा बनता है।

24 मेहरबान अल्फ़ाज़ ख़ालिस शहद हैं, वह जान के लिए शीरीं और पूरे जिस्म को तर-ओ-ताज़ा कर देते हैं।

25 ऐसी राह भी होती है जो देखने में तो ठीक लगती है गो उस का अन्जाम मौत है।

26 मज़दूर का ख़ाली पेट उसे काम करने पर मज्बूर करता, उस की भूक उसे हाँकती रहती है।

27 शरीर कुरेद कुरेद कर ग़लत काम निकाल लेता, उस के होंटों पर झुलसाने वाली आग रहती है।

28 कजरौ आदमी झगड़े छेड़ता रहता, और तोहमत लगाने वाला दिली दोस्तों में भी रख़ना डालता है।

29 ज़ालिम अपने पड़ोसी को वरग़ला कर ग़लत राह पर ले जाता है।

30 जो आँख मारे वह ग़लत मन्सूबे बांध रहा है, जो अपने होंट चबाए वह ग़लत काम करने पर तुला हुआ है।

31 सफ़ेद बाल एक शानदार ताज हैं जो रास्तबाज़ ज़िन्दगी गुज़ारने से हासिल होते हैं।

32 तहम्मुल करने वाला सूरमे से सबक़त लेता है, जो अपने आप को क़ाबू में रखे वह शहर को शिकस्त देने वाले से बरतर है।

33 इन्सान तो क़ुरआ डालता है, लेकिन उस का हर फ़ैसला रब की तरफ़ से है।

17 1 जिस घर में रोटी का बासी टुकड़ा सुकून के साथ खाया जाए वह उस घर से कहीं बेहतर है जिस में लड़ाई-झगड़ा है, ख़्वाह उस में कितनी शानदार ज़ियाफ़त क्यूँ न हो रही हो।

2 समझदार मुलाज़िम मालिक के उस बेटे पर क़ाबू पाएगा जो शर्म का बाइस है, और जब भाइयों में मौरूसी मिलकियत तक़सीम की जाए तो उसे भी हिस्सा मिलेगा।

3 सोना-चाँदी कुठाली में पिघला कर पाक-साफ़ की जाती है, लेकिन रब ही दिल की जाँच-पड़ताल करता है।

4 बदकार शरीर होंटों पर ध्यान और धोकेबाज़ तबाहकुन ज़बान पर तवज्जुह देता है।

5 जो ग़रीब का मज़ाक़ उड़ाए वह उस के ख़ालिक़ की तह्क़ीर करता है, जो दूसरे की मुसीबत देख कर ख़ुश हो जाए वह सज़ा से नहीं बचेगा।

6 पोते बूढ़ों का ताज और वालिदैन अपने बच्चों के ज़ेवर हैं।

7 अहमक़ के लिए बड़ी बड़ी बातें करना मौज़ूँ नहीं, लेकिन शरीफ़ होंटों पर फ़रेब कहीं ज़्यादा ग़ैरमुनासिब है।

8 रिश्वत देने वाले की नज़र में रिश्वत जादू की मानिन्द है। जिस दरवाज़े पर भी खटखटाए वह खुल जाता है।

9 जो दूसरे की ग़लती को दरगुज़र करे वह मुहब्बत को फ़रोग़ देता है, लेकिन जो माज़ी की ग़लतियाँ दोहराता रहे वह क़रीबी दोस्तों में निफ़ाक़ पैदा करता है।

10 अगर समझदार को डाँटा जाए तो वह ख़ूब सीख लेता है, लेकिन अगर अहमक़ को सौ बार मारा जाए तो भी वह इतना नहीं सीखता।

11 शरीर सरकशी पर तुला रहता है, लेकिन उस के ख़िलाफ़ ज़ालिम क़ासिद भेजा जाएगा।

12 जो अहमक़ अपनी हमाक़त में उलझा हुआ हो उस से दरेग़ कर, क्यूँकि उस से मिलने से बेहतर यह है कि तेरा उस रीछनी से वास्ता पड़े जिस के बच्चे उस से छीन लिए गए हों।

13 जो भलाई के इवज़ बुराई करे उस के घर से बुराई कभी दूर नहीं होगी।

14 लड़ाई-झगड़ा छेड़ना बन्द में रख़ना डालने के बराबर है। इस से पहले कि मुक़द्दमाबाज़ी शुरू हो उस से बाज़ आ।

15 जो बेदीन को बेक़ुसूर और रास्तबाज़ को मुजरिम ठहराए उस से रब घिन खाता है।

16 अहमक़ के हाथ में पैसों का क्या फ़ाइदा है? क्या वह हिक्मत ख़रीद सकता है जबकि उस में अक़्ल नहीं? हरगिज़ नहीं!

17 पड़ोसी वह है जो हर वक़्त मुहब्बत रखता है,
भाई वह है जो मुसीबत में सहारा देने के लिए पैदा
हुआ है।
18 जो हाथ मिला कर अपने पड़ोसी का ज़ामिन होने
का वादा करे वह नासमझ है।
19 जो लड़ाई-झगड़े से मुहब्बत रखे वह गुनाह से
मुहब्बत रखता है, जो अपना दरवाज़ा हद से ज़्यादा
बड़ा बनाए वह तबाही को दाख़िल होने की दावत
देता है।
20 जिस का दिल टेढ़ा है वह ख़ुशहाली नहीं पाएगा,
और जिस की ज़बान चालाक है वह मुसीबत में उलझ
जाएगा।
21 जिस के हाँ अहमक़ बेटा पैदा हो जाए उसे दुख
पहुँचता है, और अक़ल से ख़ाली बेटा बाप के लिए
ख़ुशी का बाइस नहीं होता।
22 ख़ुशबाश दिल पूरे जिस्म को शिफ़ा देता है,
लेकिन शिकस्ता रूह हड्डियों को ख़ुश्क कर देती है।
23 बेदीन चुपके से रिश्वत ले कर इन्साफ़ की राहों
को बिगाड़ देता है।
24 समझदार अपनी नज़र के सामने हिक्मत रखता
है, लेकिन अहमक़ की नज़रें दुनिया की इन्तिहा तक
आवारा फिरती हैं।
25 अहमक़ बेटा बाप के लिए रंज का बाइस और
माँ के लिए तल्ख़ी का सबब है।
26 बेक़ुसूर पर जुर्माना लगाना ग़लत है, और शरीफ़
को उस की दयानतदारी के सबब से कोड़े लगाना
बुरा है।
27 जो अपनी ज़बान को क़ाबू में रखे वह इल्म-ओ-
इर्फ़ान का मालिक है, जो ठंडे दिल से बात करे वह
समझदार है।
28 अगर अहमक़ ख़ामोश रहे तो वह भी दानिशमन्द
लगता है। जब तक वह बात न करे लोग उसे
समझदार क़रार देते हैं।

18 1 जो दूसरों से अलग हो जाए वह अपने
ज़ाती मक़ासिद पूरे करना चाहता और
समझ की हर बात पर झगड़ने लगता है।
2 अहमक़ समझ से लुत्फ़अन्दोज़ नहीं होता बल्कि
सिर्फ़ अपने दिल की बातें दूसरों पर ज़ाहिर करने से।
3 जहाँ बेदीन आए वहाँ हिक़ारत भी आ मौजूद
होती, और जहाँ रुस्वाई हो वहाँ तानाज़नी भी होती
है।
4 इन्सान के अल्फ़ाज़ गहरा पानी हैं, हिक्मत का
सरचश्मा बहती हुई नदी है।
5 बेदीन की जानिबदारी करके रास्तबाज़ का हक़
मारना ग़लत है।
6 अहमक़ के होंट लड़ाई-झगड़ा पैदा करते हैं, उस
का मुँह ज़ोर से पिटाई का मुतालबा करता है।
7 अहमक़ का मुँह उस की तबाही का बाइस है,
उस के होंट ऐसा फंदा हैं जिस में उस की अपनी जान
उलझ जाती है।
8 तोहमत लगाने वाले की बातें लज़ीज़ खाने के
लुक़्मों की मानिन्द हैं, वह दिल की तह तक उतर
जाती हैं।
9 जो अपने काम में ज़रा भी ढीला हो जाए, उसे याद
रहे कि ढीलेपन का भाई तबाही है।
10 रब का नाम मज़बूत बुर्ज है जिस में रास्तबाज़
भाग कर महफ़ूज़ रहता है।
11 अमीर समझता है कि मेरी दौलत मेरा क़िलाबन्द
शहर और मेरी ऊँची चारदीवारी है जिस में मैं महफ़ूज़
हूँ।
12 तबाह होने से पहले इन्सान का दिल मग़रूर हो
जाता है, इज़्ज़त मिलने से पहले लाज़िम है कि वह
फ़रोतन हो जाए।
13 दूसरे की बात सुनने से पहले जवाब देना हमाक़त
है। जो ऐसा करे उस की रुस्वाई हो जाएगी।
14 बीमार होते वक़्त इन्सान की रूह जिस्म की
परवरिश करती है, लेकिन अगर रूह शिकस्ता हो
तो फिर कौन उस को सहारा देगा?
15 समझदार का दिल इल्म अपनाता और
दानिशमन्द का कान इर्फ़ान का खोज लगाता रहता
है।

16 तोहफ़ा रास्ता खोल कर देने वाले को बड़ों तक पहुँचा देता है।

17 जो अदालत में पहले अपना मौक़िफ़ पेश करे वह उस वक़्त तक हक़-ब-जानिब लगता है जब तक दूसरा फ़रीक़ सामने आ कर उस की हर बात की तहक़ीक़ न करे।

18 क़ुरआ डालने से झगड़े ख़त्म हो जाते और बड़ों का एक दूसरे से लड़ने का ख़तरा दूर हो जाता है।

19 जिस भाई को एक दफ़ा मायूस कर दिया जाए उसे दुबारा जीत लेना क़िलाबन्द शहर पर फ़त्ह पाने से ज़्यादा दुश्वार है। झगड़े हल करना बुर्ज के कुंडे तोड़ने की तरह मुश्किल है।

20 इन्सान अपने मुँह के फल से सेर हो जाएगा, वह अपने होंटों की पैदावार को जी भर कर खाएगा।

21 ज़बान का ज़िन्दगी और मौत पर इख़्तियार है, जो उसे प्यार करे वह उस का फल भी खाएगा।

22 जिसे बीवी मिली उसे अच्छी नेमत मिली, और उसे रब की मन्ज़ूरी हासिल हुई।

23 ग़रीब मिन्नत करते करते अपना मुआमला पेश करता है, लेकिन अमीर का जवाब सख़्त होता है।

24 कई दोस्त तुझे तबाह करते हैं, लेकिन ऐसे भी हैं जो तुझ से भाई से ज़्यादा लिपटे रहते हैं।

19 1 जो ग़रीब बेइल्ज़ाम ज़िन्दगी गुज़ारे वह टेढ़ी बातें करने वाले अहमक़ से कहीं बेहतर है।

2 अगर इल्म साथ न हो तो सरगर्मी का कोई फ़ाइदा नहीं। जल्दबाज़ ग़लत राह पर आता रहता है।

3 गो इन्सान की अपनी हमाक़त उसे भटका देती है तो भी उस का दिल रब से नाराज़ होता है।

4 दौलतमन्द के दोस्तों में इज़ाफ़ा होता है, लेकिन ग़रीब का एक दोस्त भी उस से अलग हो जाता है।

5 झूटा गवाह सज़ा से नहीं बचेगा, जो झूटी गवाही दे उस की जान नहीं छूटेगी।

6 मुतअद्दिद लोग बड़े आदमी की ख़ुशामद करते हैं, और हर एक उस आदमी का दोस्त है जो तोहफ़े देता है।

7 ग़रीब के तमाम भाई उस से नफ़रत करते हैं, तो फिर उस के दोस्त उस से क्यूँ दूर न रहें। वह बातें करते करते उन का पीछा करता है, लेकिन वह ग़ाइब हो जाते हैं।

8 जो हिक्मत अपना ले वह अपनी जान से मुहब्बत रखता है, जो समझ की परवरिश करे उसे कामयाबी होगी।

9 झूटा गवाह सज़ा से नहीं बचेगा, झूटी गवाही देने वाला तबाह हो जाएगा।

10 अहमक़ के लिए ऐश-ओ-इश्रत से ज़िन्दगी गुज़ारना मौज़ूँ नहीं, लेकिन ग़ुलाम की हुक्मरानों पर हुकूमत कहीं ज़्यादा ग़ैरमुनासिब है।

11 इन्सान की हिक्मत उसे तहम्मुल सिखाती है, और दूसरों के जराइम से दरगुज़र करना उस का फ़ख़र है।

12 बादशाह का तैश जवान शेरबबर की दहाड़ों की मानिन्द है जबकि उस की मन्ज़ूरी घास पर शबनम की तरह तर-ओ-ताज़ा करती है।

13 अहमक़ बेटा बाप की तबाही और झगड़ालू बीवी मुसलसल टपकने वाली छत है।

14 मौरूसी घर और मिलकियत बापदादा की तरफ़ से मिलती है, लेकिन समझदार बीवी रब की तरफ़ से है।

15 सुस्त होने से इन्सान गहरी नींद सो जाता है, लेकिन ढीला शख़्स भूके मरेगा।

16 जो वफ़ादारी से हुक्म पर अमल करे वह अपनी जान महफ़ूज़ रखता है, लेकिन जो अपनी राहों की परवा न करे वह मर जाएगा।

17 जो ग़रीब पर मेहरबानी करे वह रब को उधार देता है, वही उसे अज्र देगा।

18 जब तक उम्मीद की किरन बाक़ी हो अपने बेटे की तादीब कर, लेकिन इतने जोश में न आ कि वह मर जाए।

19 जो हद से ज़्यादा तैश में आए उसे जुर्माना देना पड़ेगा। उसे बचाने की कोशिश मत कर वर्ना उस का तैश और बढ़ेगा।

[20] अच्छा मश्वरा अपना और तर्बियत क़बूल कर ताकि आइन्दा दानिशमन्द हो।

[21] इन्सान दिल में मुतअद्दिद मन्सूबे बांधता रहता है, लेकिन रब का इरादा हमेशा पूरा हो जाता है।

[22] इन्सान का लालच उस की रुस्वाई का बाइस है, और ग़रीब दरोग़गो से बेहतर है।

[23] रब का ख़ौफ़ ज़िन्दगी का मम्बा है। ख़ुदातरस आदमी सेर हो कर सुकून से सो जाता और मुसीबत से महफ़ूज़ रहता है।

[24] काहिल अपना हाथ खाने के बर्तन में डाल कर उसे मुँह तक नहीं ला सकता।

[25] तानाज़न को मार तो सादालौह सबक़ सीखेगा, समझदार को डाँट तो उस के इल्म में इज़ाफ़ा होगा।

[26] जो अपने बाप पर ज़ुल्म करे और अपनी माँ को निकाल दे वह वालिदैन के लिए शर्म और रुस्वाई का बाइस है।

[27] मेरे बेटे, तर्बियत पर ध्यान देने से बाज़ न आ, वर्ना तू इल्म-ओ-इर्फ़ान की राह से भटक जाएगा।

[28] शरीर गवाह इन्साफ़ का मज़ाक़ उड़ाता है, और बेदीन का मुँह आफ़त की ख़बरें फैलाता है।

[29] तानाज़न के लिए सज़ा और अहमक़ की पीठ के लिए कोड़ा तय्यार है।

20 [1] मै तानाज़न का बाप और शराब शोर-शराबा की माँ है। जो यह पी पी कर डगमगाने लगे वह दानिशमन्द नहीं।

[2] बादशाह का क़हर जवान शेरबबर की दहाड़ों की मानिन्द है, जो उसे तैश दिलाए वह अपनी जान पर खेलता है।

[3] लड़ाई-झगड़े से बाज़ रहना इज़्ज़त का तुर्रा-ए-इम्तियाज़ है जबकि हर अहमक़ झगड़ने के लिए तय्यार रहता है।

[4] काहिल वक़्त पर हल नहीं चलाता, चुनाँचे जब वह फ़सल पकते वक़्त अपने खेत पर निगाह करे तो कुछ नज़र नहीं आएगा।

[5] इन्सान के दिल का मन्सूबा गहरे पानी की मानिन्द है, लेकिन समझदार आदमी उसे निकाल कर अमल में लाता है।

[6] बहुत से लोग अपनी वफ़ादारी पर फ़ख़र करते हैं, लेकिन क़ाबिल-ए-एतिमाद शख़्स कहाँ पाया जाता है?

[7] जो रास्तबाज़ बेइल्ज़ाम ज़िन्दगी गुज़ारे उस की औलाद मुबारक है।

[8] जब बादशाह तख़्त-ए-अदालत पर बैठ जाए तो वह अपनी आँखों से सब कुछ छानकर हर ग़लत बात एक तरफ़ कर लेता है।

[9] कौन कह सकता है, "मैं ने अपने दिल को पाक-साफ़ कर रखा है, मैं अपने गुनाह से पाक हो गया हूँ"?

[10] ग़लत बाट और ग़लत पैमाइश, रब दोनों से घिन खाता है।

[11] लड़के का किरदार उस के सुलूक से मालूम होता है। इस से पता चलता है कि उस का चाल-चलन पाक और रास्त है या नहीं।

[12] सुनने वाले कान और देखने वाली आँखें दोनों ही रब ने बनाई हैं।

[13] नींद को प्यार न कर वर्ना ग़रीब हो जाएगा। अपनी आँखों को खुला रख तो जी भर कर खाना खाएगा।

[14] गाहक दुकानदार से कहता है, "यह कैसी नाक़िस चीज़ है!" लेकिन फिर जा कर दूसरों के सामने अपने सौदे पर शेख़ी मारता है।

[15] सोना और कस्रत के मोती पाए जा सकते हैं, लेकिन समझदार होंट उन से कहीं ज़्यादा क़ीमती हैं।

[16] ज़मानत का वह लिबास वापस न कर जो किसी ने परदेसी का ज़ामिन बन कर दिया है। अगर वह अजनबी का ज़ामिन हो तो उस ज़मानत पर ज़रूर क़ब्ज़ा कर जो उस ने दी थी।

[17] धोके से हासिल की हुई रोटी आदमी को मीठी लगती है, लेकिन उस का अन्जाम कंकरों से भरा मुँह है।

18 मन्सूबे सलाह-मश्वरे से मज़बूत हो जाते हैं, और जंग करने से पहले दूसरों की हिदायात पर ध्यान दे।

19 अगर तू बुह्तान लगाने वाले को हमराज़ बनाए तो वह इधर उधर फिर कर बात फैलाएगा। चुनाँचे बातूनी से गुरेज़ कर।

20 जो अपने बाप या माँ पर लानत करे उस का चराग़ घने अंधेरे में बुझ जाएगा।

21 जो मीरास शुरू में बड़ी जल्दी से मिल जाए वह आख़िर में बरकत का बाइस नहीं होगी।

22 मत कहना, "मैं ग़लत काम का इन्तिक़ाम लूँगा।" रब के इन्तिज़ार में रह तो वही तेरी मदद करेगा।

23 रब झूटे बाटों से घिन खाता है, और ग़लत तराज़ू उसे अच्छा नहीं लगता।

24 रब हर एक के क़दम मुक़र्रर करता है। तो फिर इन्सान किस तरह अपनी राह समझ सकता है?

25 इन्सान अपने लिए फंदा तय्यार करता है जब वह जल्दबाज़ी से मन्नत मानता और बाद में ही मन्नत के नताइज पर ग़ौर करने लगता है।

26 दानिशमन्द बादशाह बेदीनों को छान छानकर उड़ा लेता है, हाँ वह गाहने का आला ही उन पर से गुज़रने देता है।

27 आदमज़ाद की रूह रब का चराग़ है जो इन्सान के बातिन की तह तक सब कुछ की तहक़ीक़ करता है।

28 शफ़्क़त और वफ़ा बादशाह को महफ़ूज़ रखती हैं, शफ़्क़त से वह अपना तख़्त मुस्तहकम कर लेता है।

29 नौजवानों का फ़ख़र उन की ताक़त और बुज़ुर्गों की शान उन के सफ़ेद बाल हैं।

30 ज़ख़्म और चोटें बुराई को दूर कर देती हैं, ज़र्बें बातिन की तह तक सब कुछ साफ़ कर देती हैं।

21 1 बादशाह का दिल रब के हाथ में नहर की मानिन्द है। वह जिधर चाहे उस का रुख़ फेर देता है।

2 हर आदमी की राह उस की अपनी नज़र में ठीक लगती है, लेकिन रब ही दिलों की जाँच-पड़ताल करता है।

3 रास्तबाज़ी और इन्साफ़ करना रब को ज़बह की क़ुर्बानियों से कहीं ज़्यादा पसन्द है।

4 मग़रूर आँखें और मुतकब्बिर दिल जो बेदीनों का चराग़ हैं गुनाह हैं।

5 मेहनती शख़्स के मन्सूबे नफ़ा का बाइस हैं, लेकिन जल्दबाज़ी ग़ुर्बत तक पहुँचा देती है।

6 फ़रेबदिह ज़बान से जमा किया हुआ ख़ज़ाना बिखर जाने वाला धुआँ और मोहलक फंदा है।

7 बेदीनों का ज़ुल्म ही उन्हें घसीट कर ले जाता है, क्यूँकि वह इन्साफ़ करने से इन्कार करते हैं।

8 क़ुसूरवार की राह पेचदार है जबकि पाक शख़्स सीधी राह पर चलता है।

9 झगड़ालू बीवी के साथ एक ही घर में रहने की निस्बत छत के किसी कोने में गुज़ारा करना बेहतर है।

10 बेदीन ग़लत काम करने के लालच में रहता है और अपने किसी भी पड़ोसी पर तरस नहीं खाता।

11 तानाज़न पर जुर्माना लगा तो सादालौह सबक़ सीखेगा, दानिशमन्द को तालीम दे तो उस के इल्म में इज़ाफ़ा होगा।

12 अल्लाह जो रास्त है बेदीन के घर को ध्यान में रखता है, वही बेदीन को ख़ाक में मिला देता है।

13 जो कान में उंगली डाल कर ग़रीब की मदद के लिए चीख़ें नहीं सुनता वह भी एक दिन चीख़ें मारेगा, और उस की भी सुनी नहीं जाएगी।

14 पोशीदगी में सिला देने से दूसरे का ग़ुस्सा ठंडा हो जाता, किसी की जेब गर्म करने से उस का सख़्त तैश दूर हो जाता है।

15 जब इन्साफ़ किया जाए तो रास्तबाज़ ख़ुश हो जाता, लेकिन बदकार दहशत खाने लगता है।

16 जो समझ की राह से भटक जाए वह एक दिन मुर्दों की जमाअत में आराम करेगा।

[17]जो ऐश-ओ-इश्रत की ज़िन्दगी पसन्द करे वह ग़रीब हो जाएगा, जिसे मै और तेल प्यारा हो वह अमीर नहीं हो जाएगा।

[18]जब रास्तबाज़ का फ़िद्या देना है तो बेदीन को दिया जाएगा, और दियानतदार की जगह बेवफ़ा को दिया जाएगा।

[19]झगड़ालू और तंग करने वाली बीवी के साथ बसने की निस्बत रेगिस्तान में गुज़ारा करना बेहतर है।

[20]दानिशमन्द के घर में उम्दा ख़ज़ाना और तेल होता है, लेकिन अहमक़ अपना सारा माल हड़प कर लेता है।

[21]जो इन्साफ़ और शफ़क़त का ताक़्क़ुब करता रहे वह ज़िन्दगी, रास्ती और इज़्ज़त पाएगा।

[22]दानिशमन्द आदमी ताक़तवर फ़ौजियों के शहर पर हम्ला करके वह क़िलाबन्दी ढा देता है जिस पर उन का पूरा एतिमाद था।

[23]जो अपने मुँह और ज़बान की पहरादारी करे वह अपनी जान को मुसीबत से बचाए रखता है।

[24]मग़रूर और घमंडी का नाम 'तानाज़न' है, हर काम वह बेहद तकब्बुर के साथ करता है।

[25]काहिल का लालच उसे मौत के घाट उतार देता है, क्यूँकि उस के हाथ काम करने से इन्कार करते हैं।

[26]लालची पूरा दिन लालच करता रहता है, लेकिन रास्तबाज़ फ़य्याज़दिली से देता है।

[27]बेदीनों की क़ुर्बानी क़ाबिल-ए-घिन है, ख़ासकर जब उसे बुरे मक़सद से पेश किया जाए।

[28]झूटा गवाह तबाह हो जाएगा, लेकिन जो दूसरे की ध्यान से सुने उस की बात हमेशा तक क़ाइम रहेगी।

[29]बेदीन आदमी गुस्ताख़ अन्दाज़ से पेश आता है, लेकिन सीधी राह पर चलने वाला सोच समझ कर अपनी राह पर चलता है।

[30]किसी की भी हिक्मत, समझ या मन्सूबा रब का सामना नहीं कर सकता।

[31]घोड़े को जंग के दिन के लिए तय्यार तो किया जाता है, लेकिन फ़त्ह रब के हाथ में है।

22 [1]नेक नाम बड़ी दौलत से क़ीमती, और मन्ज़ूर-ए-नज़र होना सोने-चाँदी से बेहतर है।

[2]अमीर और ग़रीब एक दूसरे से मिलते जुलते हैं, रब उन सब का ख़ालिक़ है।

[3]ज़हीन आदमी ख़तरा पहले से भाँप कर छुप जाता है, जबकि सादालौह आगे बढ़ कर उस की लपेट में आ जाता है।

[4]फ़रोतनी और रब का ख़ौफ़ मानने का फल दौलत, एहतिराम और ज़िन्दगी है।

[5]बेदीन की राह में काँटे और फंदे होते हैं। जो अपनी जान महफ़ूज़ रखना चाहे वह उन से दूर रहता है।

[6]छोटे बच्चे को सहीह राह पर चलने की तर्बियत कर तो वह बूढ़ा हो कर भी उस से नहीं हटेगा।

[7]अमीर ग़रीब पर हुकूमत करता, और क़र्ज़दार क़र्ज़ख़्वाह का ग़ुलाम होता है।

[8]जो नाइन्साफ़ी का बीज बोए वह आफ़त की फ़सल काटेगा, तब उस की ज़ियादती की लाठी टूट जाएगी।

[9]फ़य्याज़दिल को बरकत मिलेगी, क्यूँकि वह पस्तहाल को अपने खाने में शरीक करता है।

[10]तानाज़न को भगा दे तो लड़ाई-झगड़ा घर से निकल जाएगा, तू तू मैं मैं और एक दूसरे की बेइज़्ज़ती करने का सिलसिला ख़त्म हो जाएगा।

[11]जो दिल की पाकीज़गी को प्यार करे और मेहरबान ज़बान का मालिक हो वह बादशाह का दोस्त बनेगा।

[12]रब की आँखें इल्म-ओ-इर्फ़ान की देख-भाल करती हैं, लेकिन वह बेवफ़ा की बातों को तबाह होने देता है।

[13]काहिल कहता है, "गली में शेर है, अगर बाहर जाऊँ तो मुझे किसी चौक में फाड़ खाएगा।"

[14]ज़िनाकार औरत का मुँह गहरा गढ़ा है। जिस से रब नाराज़ हो वह उस में गिर जाता है।

[15] बच्चे के दिल में हमाक़त टिकती है, लेकिन
तर्बियत की छड़ी उसे भगा देती है।
[16] एक पस्तहाल पर ज़ुल्म करता है ताकि दौलत
पाए, दूसरा अमीर को तोहफ़े देता है लेकिन ग़रीब
हो जाता है।

दानिशमन्दों की 30 कहावतें

[17] कान लगा कर दानाओं की बातों पर ध्यान दे,
दिल से मेरी तालीम अपना ले! [18] क्यूँकि अच्छा है
कि तू उन्हें अपने दिल में महफ़ूज़ रखे, वह सब तेरे
होंटों पर मुस्तइद रहें। [19] आज मैं तुझे, हाँ तुझे ही
तालीम दे रहा हूँ ताकि तेरा भरोसा रब पर रहे। [20] मैं
ने तेरे लिए 30 कहावतें क़लमबन्द की हैं, ऐसी बातें
जो मश्वरों और इल्म से भरी हुई हैं। [21] क्यूँकि मैं तुझे
सच्चाई की क़ाबिल-ए-एतिमाद बातें सिखाना चाहता
हूँ ताकि तू उन्हें क़ाबिल-ए-एतिमाद जवाब दे सके
जिन्हों ने तुझे भेजा है।

-१-

[22] पस्तहाल को इस लिए न लूट कि वह पस्तहाल
है, मुसीबतज़दा को अदालत में मत कुचलना।
[23] क्यूँकि रब ख़ुद उन का दिफ़ा करके उन्हें लूट लेगा
जो उन्हें लूट रहे हैं।

-२-

[24] ग़ुसीले शख़्स का दोस्त न बन, न उस से ज़्यादा
ताल्लुक़ रख जो जल्दी से आग-बगूला हो जाता है।
[25] ऐसा न हो कि तू उस का चाल-चलन अपना कर
अपनी जान के लिए फंदा लगाए।

-३-

[26] कभी हाथ मिला कर वादा न कर कि मैं दूसरे के
कर्ज़े का ज़ामिन हूँगा। [27] क़र्ज़दार के पैसे वापस न
करने पर अगर तू भी पैसे अदा न कर सके तो तेरी
चारपाई भी तेरे नीचे से छीन ली जाएगी।

-४-

[28] ज़मीन की जो हुदूद तेरे बापदादा ने मुक़र्रर कीं
उन्हें आगे पीछे मत करना।

-५-

[29] क्या तुझे ऐसा आदमी नज़र आता है जो अपने
काम में माहिर है? वह निचले तब्क़े के लोगों की
ख़िदमत नहीं करेगा बल्कि बादशाहों की।

-६-

23 [1] अगर तू किसी हुक्मरान के खाने में शरीक
हो जाए तो ख़ूब ध्यान दे कि तू किस के
हुज़ूर है। [2] अगर तू पेटू हो तो अपने गले पर छुरी रख।
[3] उस की उम्दा चीज़ों का लालच मत कर, क्यूँकि यह
खाना फ़रेबदिह है।

-७-

[4] अपनी पूरी ताक़त अमीर बनने में सर्फ़ न कर,
अपनी हिक्मत ऐसी कोशिशों से ज़ाए मत कर। [5] एक
नज़र दौलत पर डाल तो वह ओझल हो जाती है, और
पर लगा कर उक़ाब की तरह आसमान की तरफ़ उड़
जाती है।

-८-

[6] जलने वाले की रोटी मत खा, उस के लज़ीज़ खानों
का लालच न कर। [7] क्यूँकि यह गले में बाल की तरह
होगा। वह तुझ से कहेगा, “खाओ, पियो!” लेकिन
उस का दिल तेरे साथ नहीं है। [8] जो लुक़्मा तू ने
खा लिया उस से तुझे क़ै आएगी, और तेरी उस से
दोस्ताना बातें ज़ाए हो जाएँगी।

-९-

[9] अहमक़ से बात न कर, क्यूँकि वह तेरी
दानिशमन्द बातें हक़ीर जानेगा।

-१०-

10 ज़मीन की जो हुदूद क़दीम ज़माने में मुक़र्रर हुईं उन्हें आगे पीछे मत करना, और यतीमों के खेतों पर क़ब्ज़ा न कर। 11 क्यूँकि उन का छुड़ाने वाला क़वी है, वह उन के हक़ में ख़ुद तेरे ख़िलाफ़ लड़ेगा।

-११-

12 अपना दिल तर्बियत के हवाले कर और अपने कान इल्म की बातों पर लगा।

-१२-

13 बच्चे को तर्बियत से महरूम न रख, छड़ी से उसे सज़ा देने से वह नहीं मरेगा। 14 छड़ी से उसे सज़ा दे तो उस की जान मौत से छूट जाएगी।

-१३-

15 मेरे बेटे, अगर तेरा दिल दानिशमन्द हो तो मेरा दिल भी ख़ुश होगा। 16 मैं अन्दर ही अन्दर ख़ुशी मनाऊँगा जब तेरे होंट दियानतदार बातें करेंगे।

-१४-

17 तेरा दिल गुनाहगारों को देख कर कुढ़ता न रहे बल्कि पूरे दिन रब का ख़ौफ़ रखने में सरगर्म रहे। 18 क्यूँकि तेरी उम्मीद जाती नहीं रहेगी बल्कि तेरा मुस्तक़बिल यक़ीनन अच्छा होगा।

-१५-

19 मेरे बेटे, सुन कर दानिशमन्द हो जा और सहीह राह पर अपने दिल की राहनुमाई कर। 20 शराबी और पेटू से दरेग़ कर, 21 क्यूँकि शराबी और पेटू ग़रीब हो जाएंगे, और काहिली उन्हें चीथड़े पहनाएगी।

-१६-

22 अपने बाप की सुन जिस ने तुझे पैदा किया, और अपनी माँ को हक़ीर न जान जब बूढ़ी हो जाए। 23 सच्चाई ख़रीद ले और कभी फ़रोख़्त न कर, उस में शामिल हिक्मत, तर्बियत और समझ अपना ले।

24 रास्तबाज़ का बाप बड़ी ख़ुशी मनाता है, और दानिशमन्द बेटे का वालिद उस से लुत्फ़अन्दोज़ होता है।

25 चुनाँचे अपने माँ-बाप के लिए ख़ुशी का बाइस हो, ऐसी ज़िन्दगी गुज़ार कि तेरी माँ जश्न मना सके।

-१७-

26 मेरे बेटे, अपना दिल मेरे हवाले कर, तेरी आँखें मेरी राहें पसन्द करें। 27 क्यूँकि कस्बी गहरा गढ़ा और ज़िनाकार औरत तंग कुआँ है, 28 डाकू की तरह वह ताक लगाए बैठ कर मर्दों में बेवफ़ाओं का इज़ाफ़ा करती है।

-१८-

29 कौन आहें भरता है? कौन हाय हाय करता और लड़ाई-झगड़े में मुलव्वस रहता है? किस को बिलावजह चोटें लगती, किस की आँखें धुन्दली सी रहती हैं? 30 वह जो रात गए तक मै पीने और मसालेदार मै से मज़ा लेने में मसरूफ़ रहता है। 31 मै को तकता न रह, ख़्वाह उस का सुर्ख़ रंग कितनी ख़ूबसूरती से प्याले में क्यूँ न चमके, ख़्वाह उसे बड़े मज़े से क्यूँ न पिया जाए। 32 अन्जामकार वह तुझे साँप की तरह काटेगी, नाग की तरह डसेगी। 33 तेरी आँखें अजीब-ओ-ग़रीब मन्ज़र देखेंगी और तेरा दिल बेतुकी बातें हकलाएगा। 34 तू समुन्दर के बीच में लेटने वाले की मानिन्द होगा, उस जैसा जो मस्तूल पर चढ़ कर लेट गया हो। 35 तू कहेगा, "मेरी पिटाई हुई लेकिन दर्द महसूस न हुआ, मुझे मारा गया लेकिन मालूम न हुआ। मैं कब जाग उठूँगा ताकि दुबारा शराब की तरफ़ रुख़ कर सकूँ?"

-१९-

24 1 शरीरों से हसद न कर, न उन से सोहबत रखने की आर्ज़ू रख, 2 क्यूँकि उन का दिल

ज़ुल्म करने पर तुला रहता है, उन के होंट दूसरों को दुख पहुँचाते हैं।

-२०-

[3] हिक्मत घर को तामीर करती, समझ उसे मज़बूत बुन्याद पर खड़ा कर देती, [4] और इल्म-ओ-इर्फ़ान उस के कमरों को बेशक़ीमत और मनमोहन चीज़ों से भर देता है।

-२१-

[5] दानिशमन्द को ताक़त हासिल होती और इल्म रखने वाले की क़ुव्वत बढ़ती रहती है, [6] क्यूँकि जंग करने के लिए हिदायत और फ़त्ह पाने के लिए मुतअद्दिद मुशीरों की ज़रूरत होती है।

-२२-

[7] हिक्मत इतनी बुलन्द-ओ-बाला है कि अहमक़ उसे पा नहीं सकता। जब बुज़ुर्ग शहर के दरवाज़े में फ़ैसला करने के लिए जमा होते हैं तो वह कुछ नहीं कह सकता।

-२३-

[8] बुरे मन्सूबे बांधने वाला साज़िशी कहलाता है।
[9] अहमक़ की चालाकियाँ गुनाह हैं, और लोग तानाज़न से घिन खाते हैं।

-२४-

[10] अगर तू मुसीबत के दिन हिम्मत हार कर ढीला हो जाए तो तेरी ताक़त जाती रहेगी।

-२५-

[11] जिन्हें मौत के हवाले किया जा रहा है उन्हें छुड़ा,
जो क़साई की तरफ़ डगमगाते हुए जा रहे हैं उन्हें रोक
दे। [12] शायद तू कहे, "हमें तो इस के बारे में इल्म नहीं था।" लेकिन यक़ीन जान, जो दिल की जाँच-पड़ताल करता है वह बात समझता है, जो तेरी जान की देख-भाल करता है उसे मालूम है। वह इन्सान को उस के आमाल का बदला देता है।

-२६-

[13] मेरे बेटे, शहद खा क्यूँकि वह अच्छा है, छत्ते का
ख़ालिस शहद मीठा है। [14] जान ले कि हिक्मत इसी तरह तेरी जान के लिए मीठी है। अगर तू उसे पाए तो तेरी उम्मीद जाती नहीं रहेगी बल्कि तेरा मुस्तक़बिल अच्छा होगा।

-२७-

[15] ऐ बेदीन, रास्तबाज़ के घर की ताक लगाए मत
बैठना, उस की रिहाइशगाह तबाह न कर। [16] क्यूँकि गो रास्तबाज़ सात बार गिर जाए तो भी हर बार दुबारा उठ खड़ा होगा जबकि बेदीन एक बार ठोकर खा कर मुसीबत में फंसा रहेगा।

-२८-

[17] अगर तेरा दुश्मन गिर जाए तो ख़ुश न हो, अगर
वह ठोकर खाए तो तेरा दिल जश्न न मनाए। [18] ऐसा न हो कि रब यह देख कर तेरा रवय्या पसन्द न करे और अपना ग़ुस्सा दुश्मन पर उतारने से बाज़ आए।

-२९-

[19] बदकारों को देख कर मुश्तइल न हो जा, बेदीनों
के बाइस कुढ़ता न रह। [20] क्यूँकि शरीरों का कोई मुस्तक़बिल नहीं, बेदीनों का चराग़ बुझ जाएगा।

-३०-

[21] मेरे बेटे, रब और बादशाह का ख़ौफ़ मान, और
सरकशों में शरीक न हो। [22] क्यूँकि अचानक ही उन पर आफ़त आएगी, किसी को पता ही नहीं चलेगा जब दोनों उन पर हम्ला करके उन्हें तबाह कर देंगे।

दानिशमन्दों की मज़ीद कहावतें

23 ज़ैल में दानिशमन्दों की मज़ीद कहावतें
क़लमबन्द हैं।
अदालत में जानिबदारी दिखाना बुरी बात है। 24 जो
क़ुसूरवार से कहे, "तू बेक़ुसूर है" उस पर क़ौमें
लानत भेजेंगी, उस की सरज़निश उम्मतें करेंगी।
25 लेकिन जो क़ुसूरवार को मुजरिम ठहराए वह
ख़ुशहाल होगा, उसे कस्रत की बरकत मिलेगी।
26 सच्चा जवाब दोस्त के बोसे की मानिन्द है।
27 पहले बाहर का काम मुकम्मल करके अपने
खेतों को तय्यार कर, फिर ही अपना घर तामीर कर।
28 बिलावजह अपने पड़ोसी के ख़िलाफ़ गवाही मत
दे। या क्या तू अपने होंटों से धोका देना चाहता है?
29 मत कहना, "जिस तरह उस ने मेरे साथ किया
उसी तरह मैं उस के साथ करूँगा, मैं उस के हर फ़ेल
का मुनासिब जवाब दूँगा।"

30 एक दिन मैं सुस्त और नासमझ आदमी के खेत
और अंगूर के बाग़ में से गुज़रा। 31 हर जगह काँटेदार
झाड़ियाँ फैली हुई थीं, ख़ुदरौ पौदे पूरी ज़मीन पर छा
गए थे। उस की चारदीवारी भी गिर गई थी। 32 यह
देख कर मैं ने दिल से ध्यान दिया और सबक़ सीख
लिया,
33 अगर तू कहे, "मुझे थोड़ी देर सोने दे, थोड़ी देर
ऊँघने दे, थोड़ी देर हाथ पर हाथ धरे बैठने दे ताकि
मैं आराम कर सकूँ" 34 तो ख़बरदार, जल्द ही ग़ुर्बत
राहज़न की तरह तुझ पर आएगी, मुफ़लिसी हथियार
से लेस डाकू की तरह तुझ पर आ पड़ेगी।

सुलेमान की मज़ीद कहावतें

25 1 ज़ैल में सुलेमान की मज़ीद कहावतें दर्ज
हैं जिन्हें यहूदाह के बादशाह हिज़क़ियाह
के लोगों ने जमा किया।
2 अल्लाह का जलाल इस में ज़ाहिर होता
है कि वह मुआमला पोशीदा रखता है, बादशाह का
जलाल इस में कि वह मुआमले की तहक़ीक़ करता
है।
3 जितना आसमान बुलन्द और ज़मीन गहरी है
उतना ही बादशाहों के दिल का खोज नहीं लगाया
जा सकता।
4 चाँदी से मैल दूर करो तो सुनार बर्तन बनाने में
कामयाब हो जाएगा, 5 बेदीन को बादशाह के हुज़ूर
से दूर करो तो उस का तख़्त रास्ती की बुन्याद पर
क़ाइम रहेगा।
6 बादशाह के हुज़ूर अपने आप पर फ़ख़र न कर, न
इज़्ज़त की उस जगह पर खड़ा हो जा जो बुज़ुर्गों के
लिए मख़्सूस है। 7 इस से पहले कि शुरफ़ा के सामने
ही तेरी बेइज़्ज़ती हो जाए बेहतर है कि तू पीछे खड़ा
हो जा और बाद में कोई तुझ से कहे, "यहाँ सामने
आ जाएँ।"
जो कुछ तेरी आँखों ने देखा उसे अदालत में पेश
करने में 8 जल्दबाज़ी न कर, क्यूँकि तू क्या करेगा
अगर तेरा पड़ोसी तेरे मुआमले को झुटला कर तुझे
शर्मिन्दा करे?
9 अदालत में अपने पड़ोसी से लड़ते वक़्त वह बात
बयान न कर जो किसी ने पोशीदगी में तेरे सपुर्द की,
10 ऐसा न हो कि सुनने वाला तेरी बेइज़्ज़ती करे। तब
तेरी बदनामी कभी नहीं मिटेगी।
11 वक़्त पर मौज़ूँ बात चाँदी के बर्तन में सोने के
सेब की मानिन्द है। 12 दानिशमन्द की नसीहत क़बूल
करने वाले के लिए सोने की बाली और ख़ालिस सोने
के गुलूबन्द की मानिन्द है।
13 क़ाबिल-ए-एतिमाद क़ासिद भेजने वाले के लिए
फ़सल काटते वक़्त बर्फ़ की ठंडक जैसा है, इस तरह
वह अपने मालिक की जान को तर-ओ-ताज़ा कर देता
है।
14 जो शेख़ी मार कर तोहफ़ों का वादा करे लेकिन
कुछ न दे वह उन तूफ़ानी बादलों की मानिन्द है जो
बरसे बग़ैर गुज़र जाते हैं।

15 हुक्मरान को तहम्मुल से क़ाइल किया जा
सकता, और नर्म ज़बान हड्डियाँ तोड़ने के क़ाबिल
है।
16 अगर शहद मिल जाए तो ज़रूरत से ज़्यादा मत
खा, हद से ज़्यादा खाने से तुझे क़ै आएगी।
17 अपने पड़ोसी के घर में बार बार जाने से अपने
क़दमों को रोक, वर्ना वह तंग आ कर तुझ से नफ़रत
करने लगेगा।
18 जो अपने पड़ोसी के ख़िलाफ़ झूटी गवाही दे वह
हथौड़े, तलवार और तेज़ तीर जैसा नुक़्सानदेह है।
19 मुसीबत के वक़्त बेवफ़ा पर एतिबार करना
ख़राब दाँत या डगमगाते पाँओ की तरह तक्लीफ़दिह
है।
20 दुखते दिल के लिए गीत गाना उतना ही ग़ैरमौज़ूँ
है जितना सर्दियों के मौसम में क़मीस उतारना या
सोडे पर सिरका डालना।
21 अगर तेरा दुश्मन भूका हो तो उसे खाना खिला,
अगर प्यासा हो तो पानी पिला। 22 क्यूँकि ऐसा करने
से तू उस के सर पर जलते हुए कोएलों का ढेर
लगाएगा, और रब तुझे अज्र देगा।
23 जिस तरह काले बादल लाने वाली हवा बारिश
पैदा करती है उसी तरह बातूनी की चुपके से की गई
बातों से लोगों के मुँह बिगड़ जाते हैं।
24 झगड़ालू बीवी के साथ एक ही घर में रहने की
निस्बत छत के किसी कोने में गुज़ारा करना बेहतर
है।
25 दूरदराज़ मुल्क की ख़ुशख़बरी प्यासे गले में ठंडा
पानी है।
26 जो रास्तबाज़ बेदीन के सामने डगमगाने लगे,
वह गदला चश्मा और आलूदा कुआँ है।
27 ज़्यादा शहद खाना अच्छा नहीं, और न ही ज़्यादा
अपनी इज़्ज़त की फ़िक्र करना।
28 जो अपने आप पर क़ाबू न पा सके वह उस शहर
की मानिन्द है जिस की फ़सील ढा दी गई है।

26 1 अहमक़ की इज़्ज़त करना उतना ही
ग़ैरमौज़ूँ है जितना मौसम-ए-गर्मा में बर्फ़ या
फ़सल काटते वक़्त बारिश।
2 बिलावजह भेजी हुई लानत फड़फड़ाती चिड़िया
या उड़ती हुई अबाबील की तरह ओझल हो कर
बेअसर रह जाती है।
3 घोड़े को छड़ी से, गधे को लगाम से और अहमक़
की पीठ को लाठी से तर्बियत दे।
4 जब अहमक़ अहमक़ाना बातें करे तो उसे जवाब
न दे, वर्ना तू उसी के बराबर हो जाएगा।
5 जब अहमक़ अहमक़ाना बातें करे तो उसे जवाब
दे, वर्ना वह अपनी नज़र में दानिशमन्द ठहरेगा।
6 जो अहमक़ के हाथ पैग़ाम भेजे वह उस की
मानिन्द है जो अपने पाँओ पर कुल्हाड़ी मार कर
अपने आप से ज़ियादती करता है।[s]
7 अहमक़ के मुँह में हिक्मत की बात मफ़्लूज की
बेहरकत लटकती टाँगों की तरह बेकार है।
8 अहमक़ का एहतिराम करना ग़ुलेल के साथ
पत्थर बांधने के बराबर है।
9 अहमक़ के मुँह में हिक्मत की बात नशे में धुत
शराबी के हाथ में काँटेदार झाड़ी की मानिन्द है।
10 जो अहमक़ या हर किसी गुज़रने वाले को काम
पर लगाए वह सब को ज़ख़्मी करने वाले तीरअन्दाज़
की मानिन्द है।
11 जो अहमक़ अपनी हमाक़त दोहराए वह अपनी
क़ै के पास वापस आने वाले कुत्ते की मानिन्द है।
12 क्या कोई दिखाई देता है जो अपने आप को
दानिशमन्द समझता है? उस की निस्बत अहमक़ के
सुधरने की ज़्यादा उम्मीद है।
13 काहिल कहता है, “रास्ते में शेर है, हाँ चौकों में
शेर फिर रहा है!”
14 जिस तरह दरवाज़ा क़ब्ज़े पर घूमता है उसी तरह
काहिल अपने बिस्तर पर करवटें बदलता है।

[s] लफ़्ज़ी तर्जुमा : ज़ियादती का प्याला पीता है।

15 जब काहिल अपना हाथ खाने के बर्तन में डाल
दे तो वह इतना सुस्त है कि उसे मुँह तक वापस नहीं
ला सकता।

16 काहिल अपनी नज़र में हिक्मत से जवाब देने
वाले सात आदमियों से कहीं ज़्यादा दानिशमन्द है।

17 जो गुज़रते वक़्त दूसरों के झगड़े में मुदाख़लत
करे वह उस आदमी की मानिन्द है जो कुत्ते को कानों
से पकड़ ले।

18–19 जो अपने पड़ोसी को फ़रेब दे कर बाद में
कहे, "मैं सिर्फ़ मज़ाक़ कर रहा था" वह उस दीवाने
की मानिन्द है जो लोगों पर जलते हुए और मोहलक
तीर बरसाता है।

20 लकड़ी के ख़त्म होने पर आग बुझ जाती है,
तोहमत लगाने वाले के चले जाने पर झगड़ा बन्द हो
जाता है।

21 अंगारों में कोएले और आग में लकड़ी डाल तो
आग भड़क उठेगी। झगड़ालू को कहीं भी खड़ा कर
तो लोग मुश्तइल हो जाएंगे।

22 तोहमत लगाने वाले की बातें लज़ीज़ खाने के
लुक़्मों जैसी हैं, वह दिल की तह तक उतर जाती हैं।

23 जलने वाले होंट और शरीर दिल मिट्टी के उस
बर्तन की मानिन्द हैं जिसे चमकदार बनाया गया हो।

24 नफ़रत करने वाला अपने होंटों से अपना असली
रूप छुपा लेता है, लेकिन उस का दिल फ़रेब से भरा
रहता है। 25 जब वह मेहरबान बातें करे तो उस पर
यक़ीन न कर, क्यूँकि उस के दिल में सात मकरूह
बातें हैं। 26 गो उस की नफ़रत फ़िलहाल फ़रेब से
छुपी रहे, लेकिन एक दिन उस का ग़लत किरदार
पूरी जमाअत के सामने ज़ाहिर हो जाएगा।

27 जो दूसरों को फंसाने के लिए गढ़ा खोदे वह उस
में ख़ुद गिर जाएगा, जो पत्थर लुढ़का कर दूसरों पर
फैंकना चाहे उस पर ही पत्थर वापस लुढ़क आएगा।

28 झूटी ज़बान उन से नफ़रत करती है जिन्हें वह
कुचल देती है, ख़ुशामद करने वाला मुँह तबाही मचा
देता है।

27 1 उस पर शेख़ी न मार जो तू कल करेगा,
तुझे क्या मालूम कि कल का दिन क्या कुछ
फ़राहम करेगा?

2 तेरा अपना मुँह और अपने होंट तेरी तारीफ़ न करें
बल्कि वह जो तुझ से वाक़िफ़ भी न हो।

3 पत्थर भारी और रेत वज़नी है, लेकिन जो अहमक़
तुझे तंग करे वह ज़्यादा नाक़ाबिल-ए-बर्दाश्त है।

4 ग़ुस्सा ज़ालिम होता और तैश सैलाब की तरह
इन्सान पर आ जाता है, लेकिन कौन हसद का
मुक़ाबला कर सकता है?

5 खुली मलामत छुपी हुई मुहब्बत से बेहतर है।

6 प्यार करने वाले की ज़र्बें वफ़ा का सबूत हैं,
लेकिन नफ़रत करने वाले के मुतअद्दिद बोसों से
ख़बरदार रह।

7 जो सेर है वह शहद को भी पाँओ तले रौंद देता
है, लेकिन भूके को कड़वी चीज़ें भी मीठी लगती हैं।

8 जो आदमी अपने घर से निकल कर मारा मारा
फिरे वह उस परिन्दे की मानिन्द है जो अपने घोंसले
से भाग कर कभी इधर कभी इधर फड़फड़ाता रहता
है।

9 तेल और बख़ूर दिल को ख़ुश करते हैं, लेकिन
दोस्त अपने अच्छे मश्वरों से ख़ुशी दिलाता है।

10 अपने दोस्तों को कभी न छोड़, न अपने ज़ाती
दोस्तों को न अपने बाप के दोस्तों को। तब तुझे
मुसीबत के दिन अपने भाई से मदद नहीं माँगनी
पड़ेगी। क्यूँकि क़रीब का पड़ोसी दूर के भाई से
बेहतर है।

11 मेरे बेटे, दानिशमन्द बन कर मेरे दिल को ख़ुश
कर ताकि मैं अपने हक़ीर जानने वाले को जवाब दे
सकूँ।

12 ज़हीन आदमी ख़तरा पहले से भाँप कर छुप
जाता है, जबकि सादालौह आगे बढ़ कर उस की
लपेट में आ जाता है।

13 ज़मानत का वह लिबास वापस न कर जो किसी
ने परदेसी का ज़ामिन बन कर दिया है। अगर वह

अजनबी औरत का ज़ामिन हो तो उस ज़मानत पर ज़रूर क़ब्ज़ा कर जो उस ने दी थी।

[14] जो सुब्ह-सवेरे बुलन्द आवाज़ से अपने पड़ोसी को बरकत दे उस की बरकत लानत ठहराई जाएगी।

[15] झगड़ालू बीवी मूसलाधार बारिश के बाइस मुसलसल टपकने वाली छत की मानिन्द है। [16] उसे रोकना हवा को रोकने या तेल को पकड़ने के बराबर है।

[17] लोहा लोहे को और इन्सान इन्सान के ज़हन को तेज़ करता है।

[18] जो अन्जीर के दरख़्त की देख-भाल करे वह उस का फल खाएगा, जो अपने मालिक की वफ़ादारी से ख़िदमत करे उस का एहतिराम किया जाएगा।

[19] जिस तरह पानी चेहरे को मुनअकिस करता है उसी तरह इन्सान का दिल इन्सान को मुनअकिस करता है।

[20] न मौत और न पाताल कभी सेर होते हैं, न इन्सान की आँखें।

[21] सोना और चाँदी कुठाली में पिघला कर पाक-साफ़ कर, लेकिन इन्सान का किरदार इस से मालूम कर कि लोग उस की कितनी क़दर करते हैं।

[22] अगर अहमक़ को अनाज की तरह ओखली और मूसल से कूटा भी जाए तो भी उस की हमाक़त दूर नहीं हो जाएगी।

[23] एहतियात से अपनी भेड़-बकरियों की हालत पर ध्यान दे, अपने रेवड़ों पर ख़ूब तवज्जुह दे। [24] क्यूँकि कोई भी दौलत हमेशा तक क़ाइम नहीं रहती, कोई भी ताज नस्ल-दर-नस्ल बरक़रार नहीं रहता। [25] खुले मैदान में घास काट कर जमा कर ताकि नई घास उग सके, चारा पहाड़ों से भी इकट्ठा कर। [26] तब तू भेड़ों की ऊन से कपड़े बना सकेगा, बकरों की फ़रोख़्त से खेत ख़रीद सकेगा, [27] और बकरियाँ इतना दूध देंगी कि तेरे, तेरे ख़ानदान और तेरे नौकर-चाकरों के लिए काफ़ी होगा।

28 [1] बेदीन फ़रार हो जाता है हालाँकि ताक़्क़ुब करने वाला कोई नहीं होता, लेकिन रास्तबाज़ अपने आप को जवान शेरबबर की तरह महफ़ूज़ समझता है।

[2] मुल्क की ख़ताकारी के सबब से उस की हुकूमत की यगान्गत क़ाइम नहीं रहेगी, लेकिन समझदार और दानिशमन्द आदमी उसे बड़ी देर तक क़ाइम रखेगा।

[3] जो ग़रीब ग़रीबों पर ज़ुल्म करे वह उस मूसलाधार बारिश की मानिन्द है जो सैलाब ला कर फ़सलों को तबाह कर देती है।

[4] जिस ने शरीअत को तर्क किया वह बेदीन की तारीफ़ करता है, लेकिन जो शरीअत के ताबे रहता है वह उस की मुख़ालफ़त करता है।

[5] शरीर इन्साफ़ नहीं समझते, लेकिन रब के तालिब सब कुछ समझते हैं।

[6] बेइल्ज़ाम ज़िन्दगी गुज़ारने वाला ग़रीब टेढ़ी राहों पर चलने वाले अमीर से बेहतर है।

[7] जो शरीअत की पैरवी करे वह समझदार बेटा है, लेकिन अय्याशों का साथी अपने बाप की बेइज़्ज़ती करता है।

[8] जो अपनी दौलत नाजाइज़ सूद से बढ़ाए वह उसे किसी और के लिए जमा कर रहा है, ऐसे शख़्स के लिए जो ग़रीबों पर रहम करेगा।

[9] जो अपने कान में उंगली डाले ताकि शरीअत की बातें न सुने उस की दुआएँ भी क़ाबिल-ए-घिन हैं।

[10] जो सीधी राह पर चलने वालों को ग़लत राह पर लाए वह अपने ही गढ़े में गिर जाएगा, लेकिन बेइल्ज़ाम अच्छी मीरास पाएँगे।

[11] अमीर अपने आप को दानिशमन्द समझता है, लेकिन जो ज़रूरतमन्द समझदार है वह उस का असली किरदार मालूम कर लेता है।

[12] जब रास्तबाज़ फ़तहयाब हों तो मुल्क की शान-ओ-शौकत बढ़ जाती है, लेकिन जब बेदीन उठ खड़े हों तो लोग छुप जाते हैं।

[13] जो अपने गुनाह छुपाए वह नाकाम रहेगा, लेकिन जो उन्हें तस्लीम करके तर्क करे वह रहम पाएगा।

14 मुबारक है वह जो हर वक़्त रब का ख़ौफ़ माने, लेकिन जो अपना दिल सख़्त करे वह मुसीबत में फंस जाएगा।

15 पस्तहाल क़ौम पर हुकूमत करने वाला बेदीन ग़ुर्राते हुए शेरबबर और हम्लाआवर रीछ की मानिन्द है।

16 जहाँ नासमझ हुक्मरान है वहाँ ज़ुल्म होता है, लेकिन जिसे ग़लत नफ़ा से नफ़रत हो उस की उम्र दराज़ होगी।

17 जो किसी को क़त्ल करे वह मौत तक अपने क़ुसूर के नीचे दबा हुआ मारा मारा फिरेगा। ऐसे शख़्स का सहारा न बन!

18 जो बेइल्ज़ाम ज़िन्दगी गुज़ारे वह बचा रहेगा, लेकिन जो टेढ़ी राह पर चले वह अचानक ही गिर जाएगा।

19 जो अपनी ज़मीन की खेतीबाड़ी करे वह जी भर कर रोटी खाएगा, लेकिन जो फ़ुज़ूल चीज़ों के पीछे पड़ जाए वह ग़ुर्बत से सेर हो जाएगा।

20 क़ाबिल-ए-एतिमाद आदमी को कस्रत की बरकतें हासिल होंगी, लेकिन जो भाग भाग कर दौलत जमा करने में मसरूफ़ रहे वह सज़ा से नहीं बचेगा।

21 जानिबदारी बुरी बात है, लेकिन इन्सान रोटी का टुकड़ा हासिल करने के लिए मुजरिम बन जाता है।

22 लालची भाग भाग कर दौलत जमा करता है, उसे मालूम ही नहीं कि इस का अन्जाम ग़ुर्बत ही है।

23 आख़िरकार नसीहत देने वाला चापलूसी करने वाले से ज़्यादा मन्ज़ूर होता है।

24 जो अपने बाप या माँ को लूट कर कहे, "यह जुर्म नहीं है" वह मोहलक क़ातिल का शरीक-ए-कार होता है।

25 लालची झगड़ों का मम्बा रहता है, लेकिन जो रब पर भरोसा रखे वह ख़ुशहाल रहेगा।

26 जो अपने दिल पर भरोसा रखे वह बेवुक़ूफ़ है, लेकिन जो हिक्मत की राह पर चले वह महफ़ूज़ रहेगा।

27 ग़रीबों को देने वाला ज़रूरतमन्द नहीं होगा, लेकिन जो अपनी आँखें बन्द करके उन्हें नज़रअन्दाज़ करे उस पर बहुत लानतें आएँगी।

28 जब बेदीन उठ खड़े हों तो लोग छुप जाते हैं, लेकिन जब हलाक हो जाएँ तो रास्तबाज़ों की तादाद बढ़ जाती है।

29 1 जो मुतअद्दिद नसीहतों के बावुजूद हटधर्म रहे वह अचानक ही बर्बाद हो जाएगा, और शिफ़ा का इम्कान ही नहीं होगा।

2 जब रास्तबाज़ बहुत हैं तो क़ौम ख़ुश होती, लेकिन जब बेदीन हुकूमत करे तो क़ौम आहें भर्ती है।

3 जिसे हिक्मत प्यारी हो वह अपने बाप को ख़ुशी दिलाता है, लेकिन कस्बियों का साथी अपनी दौलत उड़ा देता है।

4 बादशाह इन्साफ़ से मुल्क को मुस्तहकम करता, लेकिन हद से ज़्यादा टैक्स लेने से उसे तबाह करता है।

5 जो अपने पड़ोसी की चापलूसी करे वह उस के क़दमों के आगे जाल बिछाता है।

6 शरीर जुर्म करते वक़्त अपने आप को फंसा देता, लेकिन रास्तबाज़ ख़ुशी मना कर शादमान रहता है।

7 रास्तबाज़ पस्तहालों के हुक़ूक़ का ख़याल रखता है, लेकिन बेदीन परवा ही नहीं करता।

8 तानाज़न शहर में अफ़्रा-तफ़्री मचा देते जबकि दानिशमन्द ग़ुस्सा ठंडा कर देते हैं।

9 जब दानिशमन्द आदमी अदालत में अहमक़ से लड़े तो अहमक़ तैश में आ जाता या क़हक़हा लगाता है, सुकून का इम्कान ही नहीं होता।

10 ख़ूँख़ार आदमी बेइल्ज़ाम शख़्स से नफ़रत करता, लेकिन सीधी राह पर चलने वाला उस की बेहतरी चाहता है।

11 अहमक़ अपना पूरा ग़ुस्सा उतारता, लेकिन दानिशमन्द उसे रोक कर क़ाबू में रखता है।

12 जो हुक्मरान झूट पर ध्यान दे उस के तमाम मुलाज़िम बेदीन होंगे।

13 जब ग़रीब और ज़ालिम की मुलाक़ात होती है तो दोनों की आँखों को रौशन करने वाला रब ही है।

14 जो बादशाह दयानतदारी से ज़रूरतमन्द की अदालत करे उस का तख़्त हमेशा तक क़ाइम रहेगा।

15 छड़ी और नसीहत हिक्मत पैदा करती हैं। जिसे बेलगाम छोड़ा जाए वह अपनी माँ के लिए शर्मिन्दगी का बाइस होगा।

16 जब बेदीन फलें फूलें तो गुनाह भी फलता फूलता है, लेकिन रास्तबाज़ उन की शिकस्त के गवाह होंगे।

17 अपने बेटे की तर्बियत कर तो वह तुझे सुकून और ख़ुशी दिलाएगा।

18 जहाँ रोया नहीं वहाँ क़ौम बेलगाम हो जाती है, लेकिन मुबारक है वह जो शरीअत के ताबे रहता है।

19 नौकर सिर्फ़ अल्फ़ाज़ से नहीं सुधरता। अगर वह बात समझे भी तो भी ध्यान नहीं देगा।

20 क्या कोई दिखाई देता है जो बात करने में जल्दबाज़ है? उस की निस्बत अहमक़ के सुधरने की ज़्यादा उम्मीद है।

21 जो ग़ुलाम जवानी से नाज़-ओ-नेमत में पल कर बिगड़ जाए उस का बुरा अन्जाम होगा।

22 ग़ज़बआलूद आदमी झगड़े छेड़ता रहता है, ग़ुसीले शख़्स से मुतअद्दिद गुनाह सरज़द होते हैं।

23 तकब्बुर अपने मालिक को पस्त कर देगा जबकि फ़रोतन शख़्स इज़्ज़त पाएगा।

24 जो चोर का साथी हो वह अपनी जान से नफ़रत रखता है। गो उस से हलफ़ उठवाया जाए कि चोरी के बारे में गवाही दे तो भी कुछ नहीं बताता बल्कि हलफ़ की लानत की ज़द में आ जाता है।

25 जो इन्सान से ख़ौफ़ खाए वह फंदे में फंस जाएगा, लेकिन जो रब का ख़ौफ़ माने वह महफ़ूज़ रहेगा।

26 बहुत लोग हुक्मरान की मन्ज़ूरी के तालिब रहते हैं, लेकिन इन्साफ़ रब ही की तरफ़ से मिलता है।

27 रास्तबाज़ बदकार से और बेदीन सीधी राह पर चलने वाले से घिन खाता है।

अजूर की कहावतें

30 1 ज़ैल में अजूर बिन याक़ा की कहावतें
हैं। वह मस्सा का रहने वाला था। उस ने
फ़रमाया,

ऐ अल्लाह, मैं थक गया हूँ, ऐ अल्लाह, मैं थक गया हूँ,
यह मेरे बस की बात नहीं रही। 2 यक़ीनन मैं इन्सानों
में सब से ज़्यादा नादान हूँ, मुझे इन्सान की समझ
हासिल नहीं। 3 न मैं ने हिक्मत सीखी, न क़ुद्दूस ख़ुदा
के बारे में इल्म रखता हूँ।

4 कौन आसमान पर चढ़ कर वापस उतर आया? किस ने हवा को अपने हाथों में जमा किया? किस ने गहरे पानी को चादर में लपेट लिया? किस ने ज़मीन की हुदूद को अपनी अपनी जगह पर क़ाइम किया है? उस का नाम क्या है, उस के बेटे का क्या नाम है? अगर तुझे मालूम हो तो मुझे बता!

5 अल्लाह की हर बात आज़मूदा है, जो उस में पनाह ले उस के लिए वह ढाल है।

6 उस की बातों में इज़ाफ़ा मत कर, वर्ना वह तुझे डाँटेगा और तू झूटा ठहरेगा।

7 ऐ रब, मैं तुझ से दो चीज़ें माँगता हूँ, मेरे मरने से
पहले इन से इन्कार न कर। 8 पहले, दरोग़गोई और
झूट मुझ से दूर रख। दूसरे, न ग़ुर्बत न दौलत मुझे दे
बल्कि उतनी ही रोटी जितनी मेरा हक़ है, 9 ऐसा न
हो कि मैं दौलत के बाइस सेर हो कर तेरा इन्कार
करूँ और कहूँ, “रब कौन है?” ऐसा भी न हो कि मैं
ग़ुर्बत के बाइस चोरी करके अपने ख़ुदा के नाम की
बेहुरमती करूँ।

10 मालिक के सामने मुलाज़िम पर तोहमत न लगा, ऐसा न हो कि वह तुझ पर लानत भेजे और तुझे इस का बुरा नतीजा भुगतना पड़े।

11 ऐसी नस्ल भी है जो अपने बाप पर लानत करती और अपनी माँ को बरकत नहीं देती।

12 ऐसी नस्ल भी है जो अपनी नज़र में पाक-साफ़ है, गो उस की ग़िलाज़त दूर नहीं हुई।

13 ऐसी नस्ल भी है जिस की आँखें बड़े तकब्बुर से देखती हैं, जो अपनी पलकें बड़े घमंड से मारती है।

14 ऐसी नस्ल भी है जिस के दाँत तलवारें और जबड़े छुरियाँ हैं ताकि दुनिया के मुसीबतज़दों को खा जाएँ, मुआशरे के ज़रूरतमन्दों को हड़प कर लें।

15 जोंक की दो बेटियाँ हैं, चूसने के दो आज़ा जो चीख़ते रहते हैं, "और दो, और दो"

तीन चीज़ें हैं जो कभी सेर नहीं होतीं बल्कि चार हैं जो कभी नहीं कहतीं, "अब बस करो, अब काफ़ी है," 16 पाताल, बाँझ का रहम, ज़मीन जिस की प्यास कभी नहीं बुझती और आग जो कभी नहीं कहती, "अब बस करो, अब काफ़ी है।"

17 जो आँख बाप का मज़ाक़ उड़ाए और माँ की हिदायत को हक़ीर जाने उसे वादी के कव्वे अपनी चोंचों से निकालेंगे और गिद्ध के बच्चे खा जाएंगे।

18 तीन बातें मुझे हैरतज़दा करती हैं बल्कि चार हैं जिन की मुझे समझ नहीं आती, 19 आसमान की बुलन्दियों पर उक़ाब की राह, चटान पर साँप की राह, समुन्दर के बीच में जहाज़ की राह और वह राह जो मर्द कुंवारी के साथ चलता है।

20 ज़िनाकार औरत की यह राह है, वह खा लेती और फिर अपना मुँह पोंछ कर कहती है, "मुझ से कोई ग़लती नहीं हुई।"

21 ज़मीन तीन चीज़ों से लरज़ उठती है बल्कि चार चीज़ें बर्दाश्त नहीं कर सकती, 22 वह ग़ुलाम जो बादशाह बन जाए, वह अहमक़ जो जी भर कर खाना खा सके, 23 वह नफ़रतअंगेज़ [t]औरत जिस की शादी हो जाए और वह नौकरानी जो अपनी मालिकन की मिलकियत पर क़ब्ज़ा करे।

24 ज़मीन की चार मख़्लूक़ात निहायत ही दानिशमन्द हैं हालाँकि छोटी हैं। 25 च्यूँटियाँ कमज़ोर नस्ल हैं लेकिन गर्मियों के मौसम में सर्दियों के लिए ख़ुराक जमा करती हैं, 26 बिज्जू कमज़ोर नस्ल हैं लेकिन चटानों में ही अपने घर बना लेते हैं, 27 टिड्डियों का बादशाह नहीं होता ताहम सब परे बांध कर निकलती हैं, 28 छिपकलियाँ गो हाथ से पकड़ी जाती हैं, ताहम शाही महलों में पाई जाती हैं।

29 तीन बल्कि चार जानदार पुरवक़ार अन्दाज़ में चलते हैं। 30 पहले, शेरबबर जो जानवरों में ज़ोर-आवर है और किसी से भी पीछे नहीं हटता, 31 दूसरे, मुर्ग़ा जो अकड़ कर चलता है, तीसरे, बकरा और चौथे अपनी फ़ौज के साथ चलने वाला बादशाह।

32 अगर तू ने मग़रूर हो कर हमाक़त की या बुरे मन्सूबे बांधे तो अपने मुँह पर हाथ रख कर ख़ामोश हो जा, 33 क्यूँकि दूध बिलोने से मक्खन, नाक को मरोड़ने [u]से ख़ून और किसी को ग़ुस्सा दिलाने से लड़ाई-झगड़ा पैदा होता है।

लमूएल की कहावतें

31 1 ज़ैल में मस्सा के बादशाह लमूएल की कहावतें हैं। उस की माँ ने उसे यह तालीम दी,

2 ऐ मेरे बेटे, मेरे पेट के फल, जो मेरी मन्नतों से पैदा हुआ, मैं तुझे क्या बताऊँ? 3 अपनी पूरी ताक़त औरतों पर ज़ाए न कर, उन पर जो बादशाहों की तबाही का बाइस हैं।

4 ऐ लमूएल, बादशाहों के लिए मै पीना मुनासिब नहीं, हुक्मरानों के लिए शराब की आर्ज़ू रखना मौज़ूँ नहीं। 5 ऐसा न हो कि वह पी पी कर क़वानीन भूल जाएँ और तमाम मज़्लूमों का हक़ मारें। 6 शराब उन्हें पिला जो तबाह होने वाले हैं, मै उन्हें पिला जो ग़म खाते हैं, 7 ऐसे ही पी पी कर अपनी ग़ुर्बत और मुसीबत भूल जाएँ।

[t]लफ़्ज़ी तर्जुमा : जिस से नफ़रत की जाती है।

[u]लफ़्ज़ी तर्जुमा : दबाओ डालने।

8 अपना मुँह उन के लिए खोल जो बोल नहीं सकते,
उन के हक़ में जो ज़रूरतमन्द हैं। 9 अपना मुँह खोल
कर इन्साफ़ से अदालत कर और मुसीबतज़दा और
ग़रीबों के हुक़ूक़ महफ़ूज़ रख।

सुघड़ बीवी की तारीफ़

10 सुघड़ बीवी कौन पा सकता है? ऐसी औरत
मोतियों से कहीं ज़्यादा बेशक़ीमत है। 11 उस पर
उस के शौहर को पूरा एतिमाद है, और वह नफ़ा से
महरूम नहीं रहेगा। 12 उम्र भर वह उसे नुक़्सान नहीं
पहुँचाएगी बल्कि बरकत का बाइस होगी।

13 वह ऊन और सन चुन कर बड़ी मेहनत से धागा
बना लेती है। 14 तिजारती जहाज़ों की तरह वह
दूरदराज़ इलाक़ों से अपनी रोटी ले आती है।

15 वह पौ फटने से पहले ही जाग उठती है
ताकि अपने घर वालों के लिए खाना और अपनी
नौकरानियों के लिए उन का हिस्सा तय्यार करे।
16 सोच-बिचार के बाद वह खेत ख़रीद लेती, अपने
कमाए हुए पैसों से अंगूर का बाग़ लगा लेती है।

17 ताक़त से कमरबस्ता हो कर वह अपने बाज़ूओं
को मज़बूत करती है। 18 वह महसूस करती है, "मेरा
कारोबार फ़ाइदामन्द है," इस लिए उस का चराग़
रात के वक़्त भी नहीं बुझता। 19 उस के हाथ हर
वक़्त ऊन और कतान कातने में मसरूफ़ रहते हैं।
20 वह अपनी मुट्ठी मुसीबतज़दों और ग़रीबों के लिए
खोल कर उन की मदद करती है। 21 जब बर्फ़ पड़े तो
उसे घर वालों के बारे में कोई डर नहीं, क्यूँकि सब
गर्म गर्म कपड़े पहने हुए हैं। 22 अपने बिस्तर के लिए
वह अच्छे कम्बल बना लेती, और ख़ुद वह बारीक
कतान और अर्ग़वानी रंग के लिबास पहने फिरती है।

23 शहर के दरवाज़े में बैठे मुल्क के बुज़ुर्ग उस के
शौहर से ख़ूब वाक़िफ़ हैं, और जब कभी कोई फ़ैसला
करना हो तो वह भी शूरा में शरीक होता है।

24 बीवी कपड़ों की सिलाई करके उन्हें फ़रोख़्त
करती है, सौदागर उस के कमरबन्द ख़रीद लेते हैं।

25 वह ताक़त और वक़ार से मुलब्बस रहती और
हंस कर आने वाले दिनों का सामना करती है। 26 वह
हिक्मत से बात करती, और उस की ज़बान पर
शफ़ीक़ तालीम रहती है। 27 वह सुस्ती की रोटी नहीं
खाती बल्कि अपने घर में हर मुआमले की देख-भाल
करती है।

28 उस के बेटे खड़े हो कर उसे मुबारक कहते हैं,
उस का शौहर भी उस की तारीफ़ करके कहता है,
29 "बहुत सी औरतें सुघड़ साबित हुई हैं, लेकिन तू
उन सब पर सब्क़त रखती है!"

30 दिलफ़रेबी, धोका और हुस्न पल भर का है,
लेकिन जो औरत अल्लाह का ख़ौफ़ माने वह क़ाबिल-
ए-तारीफ़ है। 31 उसे उस की मेहनत का अज्र दो! शहर
के दरवाज़ों में उस के काम उस की सताइश करें!।

वाइज़

हर दुनियावी चीज़ बातिल है

1 1 ज़ैल में वाइज़ के अल्फ़ाज़ क़लमबन्द हैं, उस के जो दाऊद का बेटा और यरूशलम में बादशाह है,

2 वाइज़ फ़रमाता है, “बातिल ही बातिल, बातिल ही बातिल, सब कुछ बातिल ही बातिल है!” 3 सूरज तले जो मेहनत-मशक़्क़त इन्सान करे उस का क्या फ़ाइदा है? कुछ नहीं! 4 एक पुश्त आती और दूसरी जाती है, लेकिन ज़मीन हमेशा तक क़ाइम रहती है। 5 सूरज तुलू और ग़ुरूब हो जाता है, फिर सुरअत से उसी जगह वापस चला जाता है जहाँ से दुबारा तुलू होता है। 6 हवा जुनूब की तरफ़ चलती, फिर मुड़ कर शिमाल की तरफ़ चलने लगती है। यूँ चक्कर काट काट कर वह बार बार नुक़्ता-ए-आग़ाज़ पर वापस आती है। 7 तमाम दरया समुन्दर में जा मिलते हैं, तो भी समुन्दर की सतह वही रहती है, क्यूँकि दरयाओं का पानी मुसलसल उन सरचश्मों के पास वापस आता है जहाँ से बह निकला है। 8 इन्सान बातें करते करते थक जाता है और सहीह तौर से कुछ बयान नहीं कर सकता। आँख कभी इतना नहीं देखती कि कहे, “अब बस करो, काफ़ी है।” कान कभी इतना नहीं सुनता कि और न सुनना चाहे। 9 जो कुछ पेश आया वही दुबारा पेश आएगा, जो कुछ किया गया वही दुबारा किया जाएगा। सूरज तले कोई भी बात नई नहीं। 10 क्या कोई बात है जिस के बारे में कहा जा सके, “देखो, यह नई है”? हरगिज़ नहीं, यह भी हम से बहुत देर पहले ही मौजूद थी। 11 जो पहले ज़िन्दा थे उन्हें कोई याद नहीं करता, और जो आने वाले हैं उन्हें भी वह याद नहीं करेंगे जो उन के बाद आएँगे।

हिक्मत हासिल करना बातिल है

12 मैं जो वाइज़ हूँ यरूशलम में इस्राईल का बादशाह था। 13 मैं ने अपनी पूरी ज़हनी ताक़त इस पर लगाई कि जो कुछ आसमान तले किया जाता है उस की हिक्मत के ज़रीए तफ़्तीश-ओ-तहक़ीक़ करूँ। यह काम नागवार है गो अल्लाह ने ख़ुद इन्सान को इस में मेहनत-मशक़्क़त करने की ज़िम्मादारी दी है।

14 मैं ने तमाम कामों का मुलाहज़ा किया जो सूरज तले होते हैं, तो नतीजा यह निकला किसब कुछ बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है। 15 जो पेचदार है वह सीधा नहीं हो सकता, जिस की कमी है उसे गिना नहीं जा सकता।

16 मैं ने दिल में कहा, “हिक्मत में मैं ने इतना इज़ाफ़ा किया और इतनी तरक़्क़ी की कि उन सब से सब्क़त ले गया जो मुझ से पहले यरूशलम पर हुकूमत करते थे। मेरे दिल ने बहुत हिक्मत और इल्म अपना लिया है।” 17 मैं ने अपनी पूरी ज़हनी ताक़त इस पर लगाई कि हिक्मत समझूँ, नीज़ कि मुझे दीवानगी और हमाक़त की समझ भी आए। लेकिन मुझे मालूम हुआ कि यह भी हवा को पकड़ने के बराबर है। 18 क्यूँकि जहाँ हिक्मत बहुत है वहाँ रंजीदगी भी बहुत है। जो इल्म-ओ-इर्फ़ान में इज़ाफ़ा करे, वह दुख में इज़ाफ़ा करता है।

दुनिया की ख़ुशियाँ बातिल हैं

2 1 मैं ने अपने आप से कहा, “आ, ख़ुशी को आज़मा कर अच्छी चीज़ों का तजरिबा कर!” लेकिन यह भी बातिल ही निकला। 2 मैं बोला, “हंसना बेहूदा है, और ख़ुशी से क्या हासिल होता है?” 3 मैं ने दिल में अपना जिस्म मै से तर-ओ-ताज़ा

करने और हमाक़त अपनाने के तरीक़े ढूँड निकाले।
इस के पीछे भी मेरी हिक्मत मालूम करने की कोशिश
थी, क्यूँकि मैं देखना चाहता था कि जब तक इन्सान
आसमान तले जीता रहे उस के लिए क्या कुछ करना
मुफ़ीद है।

4 मैं ने बड़े बड़े काम अन्जाम दिए, अपने लिए
मकान तामीर किए, ताकिस्तान लगाए, 5 मुतअद्दिद
बाग़ और पार्क लगा कर उन में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के
फलदार दरख़्त लगाए। 6 फलने फूलने वाले जंगल
की आबपाशी के लिए मैं ने तालाब बनवाए। 7 मैं ने
ग़ुलाम और लौंडियाँ ख़रीद लीं। ऐसे ग़ुलाम भी बहुत
थे जो घर में पैदा हुए थे। मुझे उतने गाय-बैल और
भेड़-बकरियाँ मिलीं जितनी मुझ से पहले यरूशलम
में किसी को हासिल न थीं। 8 मैं ने अपने लिए सोना-
चाँदी और बादशाहों और सूबों के ख़ज़ाने जमा किए।
मैं ने गुलूकार मर्द-ओ-ख़वातीन हासिल किए, साथ
साथ कस्रत की ऐसी चीज़ें जिन से इन्सान अपना
दिल बहलाता है।

9 यूँ मैं ने बहुत तरक़्क़ी करके उन सब पर सब्क़त
हासिल की जो मुझ से पहले यरूशलम में थे। और हर
काम में मेरी हिक्मत मेरे दिल में क़ाइम रही। 10 जो
कुछ भी मेरी आँखें चाहती थीं वह मैं ने उन के लिए
मुहय्या किया, मैं ने अपने दिल से किसी भी ख़ुशी
का इन्कार न किया। मेरे दिल ने मेरे हर काम से
लुत्फ़ उठाया, और यह मेरी तमाम मेहनत-मशक़्क़त
का अज्र रहा।

11 लेकिन जब मैं ने अपने हाथों के तमाम कामों
का जाइज़ा लिया, उस मेहनत-मशक़्क़त का जो मैं ने
की थी तो नतीजा यही निकला कि सब कुछ बातिल
और हवा को पकड़ने के बराबर है। सूरज तले किसी
भी काम का फ़ाइदा नहीं होता।

सब का एक ही अन्जाम है

12 फिर मैं हिक्मत, बेहुदगी और हमाक़त पर ग़ौर
करने लगा। मैं ने सोचा, जो आदमी बादशाह की
वफ़ात पर तख़्तनशीन होगा वह क्या करेगा? वही
कुछ जो पहले भी किया जा चुका है!

13 मैं ने देखा कि जिस तरह रौशनी अंधेरे से
बेहतर है उसी तरह हिक्मत हमाक़त से बेहतर है।
14 दानिशमन्द के सर में आँखें हैं जबकि अहमक़
अंधेरे ही में चलता है। लेकिन मैं ने यह भी जान
लिया कि दोनों का एक ही अन्जाम है। 15 मैं ने दिल
में कहा, "अहमक़ का सा अन्जाम मेरा भी होगा।
तो फिर इतनी ज़्यादा हिक्मत हासिल करने का क्या
फ़ाइदा है? यह भी बातिल है।" 16 क्यूँकि अहमक़
की तरह दानिशमन्द की याद भी हमेशा तक नहीं
रहेगी। आने वाले दिनों में सब की याद मिट जाएगी।
अहमक़ की तरह दानिशमन्द को भी मरना ही है!

17 यूँ सोचते सोचते मैं ज़िन्दगी से नफ़रत करने
लगा। जो भी काम सूरज तले किया जाता है वह
मुझे बुरा लगा, क्यूँकि सब कुछ बातिल और हवा
को पकड़ने के बराबर है। 18 सूरज तले मैं ने जो कुछ
भी मेहनत-मशक़्क़त से हासिल किया था उस से मुझे
नफ़रत हो गई, क्यूँकि मुझे यह सब कुछ उस के लिए
छोड़ना है जो मेरे बाद मेरी जगह आएगा। 19 और क्या
मालूम कि वह दानिशमन्द या अहमक़ होगा? लेकिन
जो भी हो, वह उन तमाम चीज़ों का मालिक होगा जो
हासिल करने के लिए मैं ने सूरज तले अपनी पूरी
ताक़त और हिक्मत सर्फ़ की है। यह भी बातिल है।

20 तब मेरा दिल मायूस हो कर हिम्मत हारने लगा,
क्यूँकि जो भी मेहनत-मशक़्क़त मैं ने सूरज तले की
थी वह बेकार सी लगी। 21 क्यूँकि ख़्वाह इन्सान
अपना काम हिक्मत, इल्म और महारत से क्यूँ न करे,
आख़िरकार उसे सब कुछ किसी के लिए छोड़ना है
जिस ने उस के लिए एक उंगली भी नहीं हिलाई।
यह भी बातिल और बड़ी मुसीबत है। 22 क्यूँकि
आख़िर में इन्सान के लिए क्या कुछ क़ाइम रहता
है, जबकि उस ने सूरज तले इतनी मेहनत-मशक़्क़त
और कोशिशों के साथ सब कुछ हासिल कर लिया
है? 23 उस के तमाम दिन दुख और रंजीदगी से भरे

रहते हैं, रात को भी उस का दिल आराम नहीं पाता।
यह भी बातिल ही है।
24 इन्सान के लिए सब से अच्छी बात यह है कि
खाए पिए और अपनी मेहनत-मशक़्क़त के फल से
लुत्फ़अन्दोज़ हो। लेकिन मैं ने यह भी जान लिया कि
अल्लाह ही यह सब कुछ मुहय्या करता है। 25 क्यूँकि
उस के बग़ैर कौन खा कर ख़ुश हो सकता है? कोई
नहीं! 26 जो इन्सान अल्लाह को मन्ज़ूर हो उसे वह
हिक्मत, इल्म-ओ-इर्फ़ान और ख़ुशी अता करता है,
लेकिन गुनाहगार को वह जमा करने और ज़ख़ीरा
करने की ज़िम्मादारी देता है ताकि बाद में यह दौलत
अल्लाह को मन्ज़ूर शख़्स के हवाले की जाए। यह भी
बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है।

हर बात का अपना वक़्त है

3 1 हर चीज़ की अपनी घड़ी होती, आसमान तले
हर मुआमले का अपना वक़्त होता है,
2 जन्म लेने और मरने का,
पौदा लगाने और उखाड़ने का,
3 मार देने और शिफ़ा देने का,
ढा देने और तामीर करने का,
4 रोने और हँसने का,
आहें भरने और रक़्स करने का,
5 पत्थर फैंकने और पत्थर जमा करने का,
गले मिलने और इस से बाज़ रहने का,
6 तलाश करने और खो देने का,
महफ़ूज़ रखने और फैंकने का,
7 फाड़ने और सी कर जोड़ने का,
ख़ामोश रहने और बोलने का,
8 प्यार करने और नफ़रत करने का,
जंग लड़ने और सलामती से ज़िन्दगी गुज़ारने का,

9 चुनाँचे क्या फ़ाइदा है कि काम करने वाला
मेहनत-मशक़्क़त करे?
10 मैं ने वह तक्लीफ़दिह काम-काज देखा जो
अल्लाह ने इन्सान के सपुर्द किया ताकि वह उस में
उलझा रहे। 11 उस ने हर चीज़ को यूँ बनाया है कि
वह अपने वक़्त के लिए ख़ूबसूरत और मुनासिब हो।
उस ने इन्सान के दिल में जाविदानी भी डाली है, गो
वह शुरू से ले कर आख़िर तक उस काम की तह
तक नहीं पहुँच सकता जो अल्लाह ने किया है। 12 मैं
ने जान लिया कि इन्सान के लिए इस से बेहतर कुछ
नहीं है कि वह ख़ुश रहे और जीते जी ज़िन्दगी का
मज़ा ले। 13 क्यूँकि अगर कोई खाए पिए और तमाम
मेहनत-मशक़्क़त के साथ साथ ख़ुशहाल भी हो तो
यह अल्लाह की बख़्शिश है।
14 मुझे समझ आई कि जो कुछ अल्लाह करे वह
अबद तक क़ाइम रहेगा। उस में न इज़ाफ़ा हो सकता
है न कमी। अल्लाह यह सब कुछ इस लिए करता है
कि इन्सान उस का ख़ौफ़ माने। 15 जो हाल में पेश
आ रहा है वह माज़ी में पेश आ चुका है, और जो
मुस्तक़बिल में पेश आएगा वह भी पेश आ चुका है।
हाँ, जो कुछ गुज़र चुका है उसे अल्लाह दुबारा वापस
लाता है।

इन्सान फ़ानी है

16 मैं ने सूरज तले मज़ीद देखा, जहाँ अदालत
करनी है वहाँ नाइन्साफ़ी है, जहाँ इन्साफ़ करना है
वहाँ बेदीनी है। 17 लेकिन मैं दिल में बोला, "अल्लाह
रास्तबाज़ और बेदीन दोनों की अदालत करेगा,
क्यूँकि हर मुआमले और काम का अपना वक़्त होता
है।"
18 मैं ने यह भी सोचा, "जहाँ तक इन्सानों का
ताल्लुक़ है अल्लाह उन की जाँच-पड़ताल करता है
ताकि उन्हें पता चले कि वह जानवरों की मानिन्द
हैं। 19 क्यूँकि इन्सान-ओ-हैवान का एक ही अन्जाम
है। दोनों दम छोड़ते, दोनों में एक सा दम है, इस लिए
इन्सान को हैवान की निस्बत ज़्यादा फ़ाइदा हासिल
नहीं होता। सब कुछ बातिल ही है। 20 सब कुछ एक
ही जगह चला जाता है, सब कुछ ख़ाक से बना है
और सब कुछ दुबारा ख़ाक में मिल जाएगा। 21 कौन
यक़ीन से कह सकता है कि इन्सान की रूह ऊपर

की तरफ़ जाती और हैवान की रूह नीचे ज़मीन में
उतरती है?”
22 ग़रज़ मैं ने जान लिया कि इन्सान के लिए इस से
बेहतर कुछ नहीं है कि वह अपने कामों में ख़ुश रहे,
यही उस के नसीब में है। क्यूँकि कौन उसे वह देखने
के क़ाबिल बनाएगा जो उस के बाद पेश आएगा?
कोई नहीं!

मुर्दों का हाल बेहतर है

4 1 मैं ने एक बार फिर नज़र डाली तो मुझे वह
तमाम ज़ुल्म नज़र आया जो सूरज तले होता है।
मज़्लूमों के आँसू बहते हैं, और तसल्ली देने वाला कोई
नहीं होता। ज़ालिम उन से ज़ियादती करते हैं, और
तसल्ली देने वाला कोई नहीं होता। 2 यह देख कर मैं ने
मुर्दों को मुबारक कहा, हालाँकि वह अर्से से वफ़ात
पा चुके थे। मैं ने कहा, “वह हाल के ज़िन्दा लोगों
से कहीं मुबारक हैं। 3 लेकिन इन से ज़्यादा मुबारक
वह है जो अब तक वुजूद में नहीं आया, जिस ने वह
तमाम बुराइयाँ नहीं देखीं जो सूरज तले होती हैं।”

ग़ुर्बत में सुकून बेहतर है

4 मैं ने यह भी देखा कि सब लोग इस लिए मेहनत-
मशक़्क़त और महारत से काम करते हैं कि एक
दूसरे से हसद करते हैं। यह भी बातिल और हवा
को पकड़ने के बराबर है। 5 एक तरफ़ तो अहमक़
हाथ पर हाथ धरे बैठने के बाइस अपने आप को
तबाही तक पहुँचाता है। 6 लेकिन दूसरी तरफ़ अगर
कोई मुट्ठी भर रोज़ी कमा कर सुकून के साथ ज़िन्दगी
गुज़ार सके तो यह इस से बेहतर है कि दोनों मुट्ठियाँ
सिरतोड़ मेहनत और हवा को पकड़ने की कोशिशों
के बाद ही भरें।

तन्हाई की निस्बत मिल कर रहना बेहतर है

7 मैं ने सूरज तले मज़ीद कुछ देखा जो बातिल है।
8 एक आदमी अकेला ही था। न उस के बेटा था, न
भाई। वह बेहद मेहनत-मशक़्क़त करता रहा, लेकिन
उस की आँखें कभी अपनी दौलत से मुत्मइन न थीं।
सवाल यह रहा, “मैं इतनी सिरतोड़ कोशिश किस
के लिए कर रहा हूँ? मैं अपनी जान को ज़िन्दगी के
मज़े लेने से क्यूँ महरूम रख रहा हूँ?” यह भी बातिल
और नागवार मुआमला है।
9 दो एक से बेहतर हैं, क्यूँकि उन्हें अपने काम-काज
का अच्छा अज्र मिलेगा। 10 अगर एक गिर जाए तो
उस का साथी उसे दुबारा खड़ा करेगा। लेकिन उस
पर अफ़सोस जो गिर जाए और कोई साथी न हो जो
उसे दुबारा खड़ा करे। 11 नीज़, जब दो सर्दियों के
मौसम में मिल कर बिस्तर पर लेट जाएँ तो वह गर्म
रहते हैं। जो तन्हा है वह किस तरह गर्म हो जाएगा?
12 एक शख़्स पर क़ाबू पाया जा सकता है जबकि दो
मिल कर अपना दिफ़ा कर सकते हैं। तीन लड़ियों
वाली रस्सी जल्दी से नहीं टूटती।

क़ौम की क़बूलियत फ़ुज़ूल है

13 जो लड़का ग़रीब लेकिन दानिशमन्द है वह उस
बुज़ुर्ग लेकिन अहमक़ बादशाह से कहीं बेहतर है जो
तम्बीह मानने से इन्कार करे। 14 क्यूँकि गो वह बूढ़े
बादशाह की हुकूमत के दौरान ग़ुर्बत में पैदा हुआ था
तो भी वह जेल से निकल कर बादशाह बन गया।
15 लेकिन फिर मैं ने देखा कि सूरज तले तमाम लोग
एक और लड़के के पीछे हो लिए जिसे पहले की
जगह तख़्तनशीन होना था। 16 उन तमाम लोगों की
इन्तिहा नहीं थी जिन की क़ियादत वह करता था।
तो भी जो बाद में आएँगे वह उस से ख़ुश नहीं होंगे।
यह भी बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है।

अल्लाह का ख़ौफ़ मानना

5 1 अल्लाह के घर में जाते वक़्त अपने क़दमों का
ख़याल रख और सुनने के लिए तय्यार रह। यह
अहमक़ों की क़ुर्बानियों से कहीं बेहतर है, क्यूँकि
वह जानते ही नहीं कि ग़लत काम कर रहे हैं।
2 बोलने में जल्दबाज़ी न कर, तेरा दिल अल्लाह
के हुज़ूर कुछ बयान करने में जल्दी न करे। अल्लाह

आसमान पर है जबकि तू ज़मीन पर ही है। लिहाज़ा बेहतर है कि तू कम बातें करे। [3] क्यूँकि जिस तरह हद से ज़्यादा मेहनत-मशक़्क़त से ख़्वाब आने लगते हैं उसी तरह बहुत बातें करने से आदमी की हमाक़त ज़ाहिर होती है।

[4] अगर तू अल्लाह के हुज़ूर मन्नत माने तो उसे पूरा करने में देर मत कर। वह अहमक़ों से ख़ुश नहीं होता, चुनाँचे अपनी मन्नत पूरी कर। [5] मन्नत न मानना मन्नत मान कर उसे पूरा न करने से बेहतर है।

[6] अपने मुँह को इजाज़त न दे कि वह तुझे गुनाह में फंसाए, और अल्लाह के पैग़म्बर के सामने न कह, "मुझ से ग़ैरइरादी ग़लती हुई है।" क्या ज़रूरत है कि अल्लाह तेरी बात से नाराज़ हो कर तेरी मेहनत का काम तबाह करे?

[7] जहाँ बहुत ख़्वाब देखे जाते हैं वहाँ फ़ुज़ूल बातें और बेशुमार अल्फ़ाज़ होते हैं। चुनाँचे अल्लाह का ख़ौफ़ मान!

ज़ालिमों का ज़ुल्म

[8] क्या तुझे सूबे में ऐसे लोग नज़र आते हैं जो ग़रीबों पर ज़ुल्म करते, उन का हक़ मारते और उन्हें इन्साफ़ से महरूम रखते हैं? ताज्जुब न कर, क्यूँकि एक सरकारी मुलाज़िम दूसरे की निगहबानी करता है, और उन पर मज़ीद मुलाज़िम मुक़र्रर होते हैं। [9] चुनाँचे मुल्क के लिए हर लिहाज़ से फ़ाइदा इस में है कि ऐसा बादशाह उस पर हुकूमत करे जो काश्तकारी की फ़िक्र करता है।

दौलत ख़ुशहाली की ज़मानत नहीं दे सकती

[10] जिसे पैसे प्यारे हों वह कभी मुत्मइन नहीं होगा, ख़्वाह उस के पास कितने ही पैसे क्यूँ न हों। जो ज़रदोसत हो वह कभी आसूदा नहीं होगा, ख़्वाह उस के पास कितनी ही दौलत क्यूँ न हो। यह भी बातिल ही है। [11] जितना माल में इज़ाफ़ा हो उतना ही उन की तादाद बढ़ती है जो उसे खा जाते हैं। उस के मालिक को उस का क्या फ़ाइदा है सिवाए इस के कि वह उसे देख देख कर मज़ा ले? [12] काम-काज करने वाले की नींद मीठी होती है, ख़्वाह उस ने कम या ज़्यादा खाना खाया हो, लेकिन अमीर की दौलत उसे सोने नहीं देती।

[13] मुझे सूरज तले एक निहायत बुरी बात नज़र आई। जो दौलत किसी ने अपने लिए महफ़ूज़ रखी वह उस के लिए नुक़्सान का बाइस बन गई। [14] क्यूँकि जब यह दौलत किसी मुसीबत के बाइस तबाह हो गई और आदमी के हाँ बेटा पैदा हुआ तो उस के हाथ में कुछ नहीं था। [15] माँ के पेट से निकलते वक़्त वह नंगा था, और इसी तरह कूच करके चला भी जाएगा। उस की मेहनत का कोई फल नहीं होगा जिसे वह अपने साथ ले जा सके।

[16] यह भी बहुत बुरी बात है कि जिस तरह इन्सान आया उसी तरह कूच करके चला भी जाता है। उसे क्या फ़ाइदा हुआ है कि उस ने हवा के लिए मेहनत-मशक़्क़त की हो? [17] जीते जी वह हर दिन तारीकी में खाना खाते हुए गुज़ारता, ज़िन्दगी भर वह बड़ी रंजीदगी, बीमारी और ग़ुस्से में मुब्तला रहता है।

[18] तब मैं ने जान लिया कि इन्सान के लिए अच्छा और मुनासिब है कि वह जितने दिन अल्लाह ने उसे दिए हैं खाए पिए और सूरज तले अपनी मेहनत-मशक़्क़त के फल का मज़ा ले, क्यूँकि यही उस के नसीब में है। [19] क्यूँकि जब अल्लाह किसी शख़्स को माल-ओ-मता अता करके उसे इस क़ाबिल बनाए कि उस का मज़ा ले सके, अपना नसीब क़बूल कर सके और मेहनत-मशक़्क़त के साथ साथ ख़ुश भी हो सके तो यह अल्लाह की बख़्शिश है। [20] ऐसे शख़्स को ज़िन्दगी के दिनों पर ग़ौर-ओ-ख़ौज़ करने का कम ही वक़्त मिलता है, क्यूँकि अल्लाह उसे दिल में ख़ुशी दिला कर मसरूफ़ रखता है।

6 [1] मुझे सूरज तले एक और बुरी बात नज़र आई जो इन्सान को अपने बोझ तले दबाए रखती है।

[2] अल्लाह किसी आदमी को माल-ओ-मता और इज़्ज़त अता करता है। ग़रज़ उस के पास सब कुछ है जो उस का दिल चाहे। लेकिन अल्लाह उसे इन चीज़ों

से लुत्फ़ उठाने नहीं देता बल्कि कोई अजनबी उस
का मज़ा लेता है। यह बातिल और एक बड़ी मुसीबत
है। 3 हो सकता है कि किसी आदमी के सौ बच्चे पैदा
हों और वह उम्ररसीदा भी हो जाए, लेकिन ख़्वाह वह
कितना बूढ़ा क्यूँ न हो जाए, अगर अपनी ख़ुशहाली
का मज़ा न ले सके और आख़िरकार सहीह रुसूमात
के साथ दफ़नाया न जाए तो इस का क्या फ़ाइदा?
मैं कहता हूँ कि उस की निस्बत माँ के पेट में ज़ाए
हो गए बच्चे का हाल बेहतर है। 4 बेशक ऐसे बच्चे का
आना बेमानी है, और वह अंधेरे में ही कूच करके
चला जाता बल्कि उस का नाम तक अंधेरे में छुपा
रहता है। 5 लेकिन गो उस ने न कभी सूरज देखा, न
उसे कभी मालूम हुआ कि ऐसी चीज़ है ताहम उसे
मज़कूरा आदमी से कहीं ज़्यादा आराम-ओ-सुकून
हासिल है। 6 और अगर वह दो हज़ार साल तक जीता
रहे, लेकिन अपनी ख़ुशहाली से लुत्फ़अन्दोज़ न हो
सके तो क्या फ़ाइदा है? सब को तो एक ही जगह
जाना है।

7 इन्सान की तमाम मेहनत-मशक़्क़त का यह
मक़्सद है कि पेट भर जाए, तो भी उस की भूक कभी
नहीं मिटती। 8 दानिशमन्द को क्या हासिल है जिस
के बाइस वह अहमक़ से बरतर है? इस का क्या
फ़ाइदा है कि ग़रीब आदमी ज़िन्दों के साथ मुनासिब
सुलूक करने का फ़न सीख ले? 9 दूरदराज़ चीज़ों के
आरज़ूमन्द रहने की निस्बत बेहतर यह है कि इन्सान
उन चीज़ों से लुत्फ़ उठाए जो आँखों के सामने ही हैं।
यह भी बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है।

अल्लाह का मुक़ाबला कोई नहीं कर सकता

10 जो कुछ भी पेश आता है उस का नाम पहले
ही रखा गया है, जो भी इन्सान वुजूद में आता है
वह पहले ही मालूम था। कोई भी इन्सान उस का
मुक़ाबला नहीं कर सकता जो उस से ताक़तवर है।
11 क्यूँकि जितनी भी बातें इन्सान करे उतना ही ज़्यादा
मालूम होगा कि बातिल हैं। इन्सान के लिए इस का
क्या फ़ाइदा?

12 किस को मालूम है कि उन थोड़े और बेकार दिनों
के दौरान जो साय की तरह गुज़र जाते हैं इन्सान के
लिए क्या कुछ फ़ाइदामन्द है? कौन उसे बता सकता
है कि उस के चले जाने पर सूरज तले क्या कुछ पेश
आएगा?

अच्छा क्या है?

7 1 अच्छा नाम ख़ुश्बूदार तेल से और मौत का
दिन पैदाइश के दिन से बेहतर है।

2 ज़ियाफ़त करने वालों के घर में जाने की निस्बत
मातम करने वालों के घर में जाना बेहतर है, क्यूँकि
हर इन्सान का अन्जाम मौत ही है। जो ज़िन्दा हैं वह
इस बात पर ख़ूब ध्यान दें। 3 दुख हंसी से बेहतर
है, उतरा हुआ चेहरा दिल की बेहतरी का बाइस है।
4 दानिशमन्द का दिल मातम करने वालों के घर में
ठहरता जबकि अहमक़ का दिल ऐश-ओ-इश्रत करने
वालों के घर में टिक जाता है।

5 अहमक़ों के गीत सुनने की निस्बत दानिशमन्द
की झिड़कियों पर ध्यान देना बेहतर है। 6 अहमक़
के क़हक़हे देगची तले चटख़ने वाले काँटों की आग
की मानिन्द हैं। यह भी बातिल ही है।

7 नारवा नफ़ा दानिशमन्द को अहमक़ बना देता,
रिश्वत दिल को बिगाड़ देती है।

8 किसी मुआमले का अन्जाम उस की इब्तिदा से
बेहतर है, सब्र करना मग़रूर होने से बेहतर है।

9 ग़ुस्सा करने में जल्दी न कर, क्यूँकि ग़ुस्सा
अहमक़ों की गोद में ही आराम करता है।

10 यह न पूछ कि आज की निस्बत पुराना ज़माना
बेहतर क्यूँ था, क्यूँकि यह हिक्मत की बात नहीं।

11 अगर हिक्मत के इलावा मीरास में मिलकियत
भी मिल जाए तो यह अच्छी बात है, यह उन के
लिए सूदमन्द है जो सूरज देखते हैं। 12 क्यूँकि हिक्मत
पैसों की तरह पनाह देती है, लेकिन हिक्मत का ख़ास
फ़ाइदा यह है कि वह अपने मालिक की जान बचाए
रखती है।

[13] अल्लाह के काम का मुलाहज़ा कर। जो कुछ उस ने पेचदार बनाया कौन उसे सुलझा सकता है?

[14] ख़ुशी के दिन ख़ुश हो, लेकिन मुसीबत के दिन ख़याल रख कि अल्लाह ने यह दिन भी बनाया और वह भी इस लिए कि इन्सान अपने मुस्तक़बिल के बारे में कुछ मालूम न कर सके।

इन्तिहापसन्दों से दरेग़ कर

[15] अपनी अबस ज़िन्दगी के दौरान मैं ने दो बातें देखी हैं। एक तरफ़ रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ी के बावुजूद तबाह हो जाता जबकि दूसरी तरफ़ बेदीन अपनी बेदीनी के बावुजूद उम्ररसीदा हो जाता है।
[16] न हद से ज़्यादा रास्तबाज़ी दिखा, न हद से ज़्यादा दानिशमन्दी। अपने आप को तबाह करने की क्या ज़रूरत है? [17] न हद से ज़्यादा बेदीनी, न हद से ज़्यादा हमाक़त दिखा। मुक़र्ररा वक़्त से पहले मरने की क्या ज़रूरत है? [18] अच्छा है कि तू यह बात थामे रखे और दूसरी भी न छोड़े। जो अल्लाह का ख़ौफ़ माने वह दोनों खतरों से बच निकलेगा।

[19] हिक्मत दानिशमन्द को शहर के दस हुक्मरानों से ज़्यादा ताक़तवर बना देती है। [20] दुनिया में कोई भी इन्सान इतना रास्तबाज़ नहीं कि हमेशा अच्छा काम करे और कभी गुनाह न करे।

[21] लोगों की हर बात पर ध्यान न दे, ऐसा न हो कि तू नौकर की लानत भी सुन ले जो वह तुझ पर करता है। [22] क्यूँकि दिल में तू जानता है कि तू ने ख़ुद मुतअद्दिद बार दूसरों पर लानत भेजी है।

कौन दानिशमन्द है?

[23] हिक्मत के ज़रीए मैं ने इन तमाम बातों की जाँच-पड़ताल की। मैं बोला, "मैं दानिशमन्द बनना चाहता हूँ," लेकिन हिक्मत मुझ से दूर रही। [24] जो कुछ मौजूद है वह दूर और निहायत गहरा है। कौन उस की तह तक पहुँच सकता है? [25] चुनाँचे मैं रुख़ बदल कर पूरे ध्यान से इस की तहक़ीक़-ओ-तफ़्तीश करने लगा कि हिक्मत और मुख़्तलिफ़ बातों के सहीह नताइज क्या हैं। नीज़, मैं बेदीनी की हमाक़त और बेहुदगी की दीवानगी मालूम करना चाहता था।

[26] मुझे मालूम हुआ कि मौत से कहीं तल्ख़ वह औरत है जो फंदा है, जिस का दिल जाल और हाथ ज़न्जीरें हैं। जो आदमी अल्लाह को मन्ज़ूर हो वह बच निकलेगा, लेकिन गुनाहगार उस के जाल में उलझ जाएगा।

[27] वाइज़ फ़रमाता है, "यह सब कुछ मुझे मालूम हुआ जब मैं ने मुख़्तलिफ़ बातें एक दूसरे के साथ मुन्सलिक कीं ताकि सहीह नताइज तक पहुँचूँ।
[28] लेकिन जिसे मैं ढूँडता रहा वह न मिला। हज़ार अफ़राद में से मुझे सिर्फ़ एक ही दियानतदार मर्द मिला, लेकिन एक भी दियानतदार औरत नहीं।[v]

[29] मुझे सिर्फ़ इतना ही मालूम हुआ कि गो अल्लाह ने इन्सानों को दियानतदार बनाया, लेकिन वह कई क़िस्म की चालाकियाँ ढूँड निकालते हैं।"

8 [1] कौन दानिशमन्द की मानिन्द है? कौन बातों की सहीह तश्रीह करने का इल्म रखता है? हिक्मत इन्सान का चेहरा रौशन और उस के मुँह का सख़्त अन्दाज़ नर्म कर देती है।

हुक्मरान का इख़तियार

[2] मैं कहता हूँ, बादशाह के हुक्म पर चल, क्यूँकि तू ने अल्लाह के सामने हलफ़ उठाया है। [3] बादशाह के हुज़ूर से दूर होने में जल्दबाज़ी न कर। किसी बुरे मुआमले में मुब्तला न हो जा, क्यूँकि उसी की मर्ज़ी चलती है। [4] बादशाह के फ़रमान के पीछे उस का इख़तियार है, इस लिए कौन उस से पूछे, "तू क्या कर रहा है?" [5] जो उस के हुक्म पर चले उस का किसी बुरे मुआमले से वास्ता नहीं पड़ेगा, क्यूँकि दानिशमन्द दिल मुनासिब वक़्त और इन्साफ़ की राह जानता है।

---

[v] 'दियानतदार' इज़ाफ़ा है ताकि आयत का जो ग़ालिबन मतलब है वह साफ़ हो जाए।

[6] क्यूँकि हर मुआमले के लिए मुनासिब वक़्त और इन्साफ़ की राह होती है। लेकिन मुसीबत इन्सान को दबाए रखती है, [7] क्यूँकि वह नहीं जानता कि मुस्तक़बिल कैसा होगा। कोई उसे यह नहीं बता सकता है। [8] कोई भी इन्सान हवा को बन्द रखने के क़ाबिल नहीं। [w]इसी तरह किसी को भी अपनी मौत का दिन मुक़र्रर करने का इख़तियार नहीं। यह उतना यक़ीनी है जितना यह कि फ़ौजियों को जंग के दौरान फ़ारिग़ नहीं किया जाता और बेदीनी बेदीन को नहीं बचाती।

[9] मैं ने यह सब कुछ देखा जब पूरे दिल से उन तमाम बातों पर ध्यान दिया जो सूरज तले होती हैं, जहाँ इस वक़्त एक आदमी दूसरे को नुक़्सान पहुँचाने का इख़तियार रखता है।

दुनिया में नाइन्साफ़ी

[10] फिर मैं ने देखा कि बेदीनों को इज़्ज़त के साथ दफ़नाया गया। यह लोग मक़्दिस के पास आते जाते थे! लेकिन जो रास्तबाज़ थे उन की याद शहर में मिट गई। यह भी बातिल ही है।

[11] मुजरिमों को जल्दी से सज़ा नहीं दी जाती, इस लिए लोगों के दिल बुरे काम करने के मन्सूबों से भर जाते हैं। [12] गुनाहगार से सौ गुनाह सरज़द होते हैं, तो भी उम्ररसीदा हो जाता है।

बेशक मैं यह भी जानता हूँ कि ख़ुदातरस लोगों की ख़ैर होगी, उन की जो अल्लाह के चेहरे से डरते हैं। [13] बेदीन की ख़ैर नहीं होगी, क्यूँकि वह अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं मानता। उस की ज़िन्दगी के दिन ज़्यादा नहीं बल्कि साय जैसे आरिज़ी होंगे। [14] तो भी एक और बात दुनिया में पेश आती है जो बातिल है, रास्तबाज़ों को वह सज़ा मिलती है जो बेदीनों को मिलनी चाहिए, और बेदीनों को वह अज्र मिलता है जो रास्तबाज़ों को मिलना चाहिए। यह देख कर मैं बोला, "यह भी बातिल ही है।"

[15] चुनाँचे मैं ने ख़ुशी की तारीफ़ की, क्यूँकि सूरज तले इन्सान के लिए इस से बेहतर कुछ नहीं है कि वह खाए पिए और ख़ुश रहे। फिर मेहनत-मशक़्क़त करते वक़्त ख़ुशी उतने ही दिन उस के साथ रहेगी जितने अल्लाह ने सूरज तले उस के लिए मुक़र्रर किए हैं।

जो कुछ अल्लाह करता है वह नाक़ाबिल-ए-फ़हम है

[16] मैं ने अपनी पूरी ज़हनी ताक़त इस पर लगाई कि हिक्मत जान लूँ और ज़मीन पर इन्सान की मेहनतों का मुआइना कर लूँ, ऐसी मेहनतें कि उसे दिन रात नींद नहीं आती। [17] तब मैं ने अल्लाह का सारा काम देख कर जान लिया कि इन्सान उस तमाम काम की तह तक नहीं पहुँच सकता जो सूरज तले होता है। ख़्वाह वह उस की कितनी तहक़ीक़ क्यूँ न करे तो भी वह तह तक नहीं पहुँच सकता। हो सकता है कोई दानिशमन्द दावा करे, "मुझे इस की पूरी समझ आई है," लेकिन ऐसा नहीं है, वह तह तक नहीं पहुँच सकता।

9 [1] इन तमाम बातों पर मैं ने दिल से ग़ौर किया। इन के मुआइने के बाद मैं ने नतीजा निकाला कि रास्तबाज़ और दानिशमन्द और जो कुछ वह करें अल्लाह के हाथ में हैं। ख़्वाह मुहब्बत हो ख़्वाह नफ़रत, इस की भी समझ इन्सान को नहीं आती, दोनों की जड़ें उस से पहले माज़ी में हैं। [2] सब के नसीब में एक ही अन्जाम है, रास्तबाज़ और बेदीन के, नेक और बद के, पाक और नापाक के, क़ुर्बानियाँ पेश करने वाले के और उस के जो कुछ नहीं पेश करता। अच्छे शख़्स और गुनाहगार का एक ही अन्जाम है, हलफ़ उठाने वाले और इस से डर कर गुरेज़ करने वाले की एक ही मन्ज़िल है।

[3] सूरज तले हर काम की यही मुसीबत है कि हर एक के नसीब में एक ही अन्जाम है। इन्सान का मुलाहज़ा कर। उस का दिल बुराई से भरा रहता

[w]एक और मुमकिना तर्जुमा : कोई भी इन्सान अपनी जान को निकलने से नहीं रोक सकता।

बल्कि उम्र भर उस के दिल में बेहुदगी रहती है।
लेकिन आख़िरकार उसे मुर्दों में ही जा मिलना है।
4 जो अब तक ज़िन्दों में शरीक है उसे उम्मीद है।
क्यूँकि ज़िन्दा कुत्ते का हाल मुर्दा शेर से बेहतर है।
5 कम अज़ कम जो ज़िन्दा हैं वह जानते हैं कि हम
मरेंगे। लेकिन मुर्दे कुछ नहीं जानते, उन्हें मज़ीद कोई
अज्र नहीं मिलना है। उन की यादें भी मिट जाती हैं।
6 उन की मुहब्बत, नफ़रत और ग़ैरत सब कुछ बड़ी
देर से जाती रही है। अब वह कभी भी उन कामों में
हिस्सा नहीं लेंगे जो सूरज तले होते हैं।

ज़िन्दगी के मज़े ले!

7 चुनाँचे जा कर अपना खाना ख़ुशी के साथ खा,
अपनी मै ज़िन्दादिली से पी, क्यूँकि अल्लाह काफ़ी
देर से तेरे कामों से ख़ुश है। 8 तेरे कपड़े हर वक़्त
सफ़ेद [x]हों, तेरा सर तेल से महरूम न रहे। 9 अपने
जीवनसाथी के साथ जो तुझे प्यारा है ज़िन्दगी के
मज़े लेता रह। सूरज तले की बातिल ज़िन्दगी के
जितने दिन अल्लाह ने तुझे बख़्श दिए हैं उन्हें इसी तरह
गुज़ार! क्यूँकि ज़िन्दगी में और सूरज तले तेरी मेहनत-
मशक़्क़त में यही कुछ तेरे नसीब में है। 10 जिस काम
को भी हाथ लगाए उसे पूरे जोश-ओ-ख़ुरोश से कर,
क्यूँकि पाताल में जहाँ तू जा रहा है न कोई काम है,
न मन्सूबा, न इल्म और न हिक्मत।

दुनिया में हिक्मत की क़दर नहीं की जाती

11 मैं ने सूरज तले मज़ीद कुछ देखा। यक़ीनी बात
नहीं कि मुक़ाबले में सब से तेज़ दौड़ने वाला जीत
जाए, कि जंग में पहलवान फ़त्ह पाए, कि दानिशमन्द
को ख़ुराक हासिल हो, कि समझदार को दौलत मिले
या कि आलिम मन्ज़ूरी पाए। नहीं, सब कुछ मौक़े
और इत्तिफ़ाक़ पर मुन्हसिर होता है। 12 नीज़, कोई
भी इन्सान नहीं जानता कि मुसीबत का वक़्त कब
उस पर आएगा। जिस तरह मछलियाँ ज़ालिम जाल में
उलझ जाती या परिन्दे फंदे में फंस जाते हैं उसी तरह
इन्सान मुसीबत में फंस जाता है। मुसीबत अचानक
ही उस पर आ जाती है।
13 सूरज तले मैं ने हिक्मत की एक और मिसाल
देखी जो मुझे अहम लगी।
14 कहीं कोई छोटा शहर था जिस में थोड़े से
अफ़राद बसते थे। एक दिन एक ताक़तवर बादशाह
उस से लड़ने आया। उस ने उस का मुहासरा किया
और इस मक़्सद से उस के इर्दगिर्द बड़े बड़े बुर्ज
खड़े किए। 15 शहर में एक आदमी रहता था जो
दानिशमन्द अलबत्ता ग़रीब था। इस शख़्स ने अपनी
हिक्मत से शहर को बचा लिया। लेकिन बाद में किसी
ने भी ग़रीब को याद न किया। 16 यह देख कर मैं
बोला, "हिक्मत ताक़त से बेहतर है," लेकिन ग़रीब
की हिक्मत हक़ीर जानी जाती है। कोई भी उस की
बातों पर ध्यान नहीं देता। 17 दानिशमन्द की जो बातें
आराम से सुनी जाएँ वह अहमक़ों के दरमियान रहने
वाले हुक्मरान के ज़ोरदार एलानात से कहीं बेहतर हैं।
18 हिक्मत जंग के हथियारों से बेहतर है, लेकिन एक
ही गुनाहगार बहुत कुछ जो अच्छा है तबाह करता
है।

मुख़्तलिफ़ हिदायात

10 1 मरी हुई मक्खियाँ ख़ुश्बूदार तेल ख़राब
करती हैं, और हिक्मत और इज़्ज़त की
निस्बत थोड़ी सी हमाक़त का ज़्यादा असर होता है।
2 दानिशमन्द का दिल सहीह राह चुन लेता है
जबकि अहमक़ का दिल ग़लत राह पर आ जाता है।
3 रास्ते पर चलते वक़्त भी अहमक़ समझ से ख़ाली
है, जिस से भी मिले उसे बताता है कि वह बेवुक़ूफ़
है। [y]
4 अगर हुक्मरान तुझ से नाराज़ हो जाए तो अपनी
जगह मत छोड़, क्यूँकि पुरसुकून रवय्या बड़ी बड़ी
ग़लतियाँ दूर कर देता है।

---

[x] यानी ख़ुशी मनाने के कपड़े।

[y] इब्रानी ज़ूमानी है। दूसरा मतलब 'कि मैं बेवुक़ूफ़ हूँ' हो सकता है।

[5]मुझे सूरज तले एक ऐसी बुरी बात नज़र आई जो अक्सर हुक्मरानों से सरज़द होती है। [6]अहमक़ को बड़े उह्दों पर फ़ाइज़ किया जाता है जबकि अमीर छोटे उह्दों पर ही रहते हैं। [7]मैं ने ग़ुलामों को घोड़े पर सवार और हुक्मरानों को ग़ुलामों की तरह पैदल चलते देखा है।

[8]जो गढ़ा खोदे वह ख़ुद उस में गिर सकता है, जो दीवार गिरा दे हो सकता है कि साँप उसे डसे। [9]जो कान से पत्थर निकाले उसे चोट लग सकती है, जो लकड़ी चीर डाले वह ज़ख़्मी हो जाने के ख़तरे में है।

[10]अगर कुल्हाड़ी कुन्द हो और कोई उसे तेज़ न करे तो ज़्यादा ताक़त दरकार है। लिहाज़ा हिक्मत को सहीह तौर से अमल में ला, तब ही कामयाबी हासिल होगी।

[11]अगर इस से पहले कि सपेरा साँप पर क़ाबू पाए वह उसे डसे तो फिर सपेरा होने का क्या फ़ाइदा?

[12]दानिशमन्द अपने मुँह की बातों से दूसरों की मेहरबानी हासिल करता है, लेकिन अहमक़ के अपने ही होंट उसे हड़प कर लेते हैं। [13]उस का बयान अहमक़ाना बातों से शुरू और ख़तरनाक बेवुक़ूफ़ियों से ख़त्म होता है। [14]ऐसा शख़्स बातें करने से बाज़ नहीं आता, गो इन्सान मुस्तक़बिल के बारे में कुछ नहीं जानता। कौन उसे बता सकता है कि उस के बाद क्या कुछ होगा? [15]अहमक़ का काम उसे थका देता है, और वह शहर का रास्ता भी नहीं जानता।

[16]उस मुल्क पर अफ़्सोस जिस का बादशाह बच्चा है और जिस के बुज़ुर्ग सुब्ह ही ज़ियाफ़त करने लगते हैं। [17]मुबारक है वह मुल्क जिस का बादशाह शरीफ़ है और जिस के बुज़ुर्ग नशे में धुत नहीं रहते बल्कि मुनासिब वक़्त पर और नज़्म-ओ-ज़ब्त के साथ खाना खाते हैं।

[18]जो सुस्त है उस के घर के शहतीर झुकने लगते हैं, जिस के हाथ ढीले हैं उस की छत से पानी टपकने लगता है।

[19]ज़ियाफ़त करने से हंसी-ख़ुशी और मै पीने से ज़िन्दादिली पैदा होती है, लेकिन पैसा ही सब कुछ मुहय्या करता है।

[20]ख़यालों में भी बादशाह पर लानत न कर, अपने सोने के कमरे में भी अमीर पर लानत न भेज, ऐसा न हो कि कोई परिन्दा तेरे अल्फ़ाज़ ले कर उस तक पहुँचाए।

मेहनत का फ़ाइदा

11 [1]अपनी रोटी पानी पर फैंक कर जाने दे तो मुतअद्दिद दिनों के बाद वह तुझे फिर मिल जाएगी। [2]अपनी मिलकियत सात बल्कि आठ मुख़्तलिफ़ कामों में लगा दे, क्यूँकि तुझे क्या मालूम कि मुल्क किस किस मुसीबत से दोचार होगा।

[3]अगर बादल पानी से भरे हों तो ज़मीन पर बारिश ज़रूर होगी। दरख़्त जुनूब या शिमाल की तरफ़ गिर जाए तो उसी तरफ़ पड़ा रहेगा।

[4]जो हर वक़्त हवा का रुख़ देखता रहे वह कभी बीज नहीं बोएगा। जो बादलों को तकता रहे वह कभी फ़सल की कटाई नहीं करेगा।

[5]जिस तरह न तुझे हवा के चक्कर मालूम हैं, न यह कि माँ के पेट में बच्चा किस तरह तश्कील पाता है उसी तरह तू अल्लाह का काम नहीं समझ सकता, जो सब कुछ अमल में लाता है।

[6]सुब्ह के वक़्त अपना बीज बो और शाम को भी काम में लगा रह, क्यूँकि क्या मालूम कि किस काम में कामयाबी होगी, इस में, उस में या दोनों में।

अपनी जवानी से लुत्फ़अन्दोज़ हो

[7]रौशनी कितनी भली है, और सूरज आँखों के लिए कितना ख़ुशगवार है। [8]जितने भी साल इन्सान ज़िन्दा रहे उतने साल वह ख़ुशबाश रहे। साथ साथ उसे याद रहे कि तारीक दिन भी आने वाले हैं, और कि उन की बड़ी तादाद होगी। जो कुछ आने वाला है वह बातिल ही है।

9 ऐ नौजवान, जब तक तू जवान है ख़ुश रह और जवानी के मज़े लेता रह। जो कुछ तेरा दिल चाहे और तेरी आँखों को पसन्द आए वह कर, लेकिन याद रहे कि जो कुछ भी तू करे उस का जवाब अल्लाह तुझ से तलब करेगा। 10 चुनाँचे अपने दिल से रंजीदगी और अपने जिस्म से दुख-दर्द दूर रख, क्यूँकि जवानी और काले बाल दम भर के ही हैं।

12 1 जवानी में ही अपने ख़ालिक़ को याद रख, इस से पहले कि मुसीबत के दिन आएँ, वह साल क़रीब आएँ जिन के बारे में तू कहेगा, "यह मुझे पसन्द नहीं।" 2 उसे याद रख इस से पहले कि रौशनी तेरे लिए ख़त्म हो जाए, सूरज, चाँद और सितारे अंधेरे हो जाएँ और बारिश के बाद बादल लौट आएँ। 3 उसे याद रख, इस से पहले कि घर के पहरेदार थरथराने लगें, ताक़तवर आदमी कुबड़े हो जाएँ, गन्दुम पीसने वाली नौकरानियाँ कम होने के बाइस काम करना छोड़ दें और खिड़कियों में से देखने वाली ख़वातीन धुन्दला जाएँ। 4 उसे याद रख, इस से पहले कि गली में पहुँचाने वाला दरवाज़ा बन्द हो जाए और चक्की की आवाज़ आहिस्ता हो जाए। जब चिड़ियाँ चहचहाने लगेंगी तो तू जाग उठेगा, लेकिन तमाम गीतों की आवाज़ दबी सी सुनाई देगी। 5 उसे याद रख, इस से पहले कि तू ऊँची जगहों और गलियों के खतरों से डरने लगे। गो बादाम का फूल खिल जाए, टिड्डी बोझ तले दब जाए और करीर का फूल फूट निकले, लेकिन तू कूच करके अपने अबदी घर में चला जाएगा, और मातम करने वाले गलियों में घूमते फिरेंगे।

6 अल्लाह को याद रख, इस से पहले कि चाँदी का रस्सा टूट जाए, सोने का बर्तन टुकड़े टुकड़े हो जाए, चश्मे के पास घड़ा पाश पाश हो जाए और कुएँ का पानी निकालने वाला पहिया टूट कर उस में गिर जाए। 7 तब तेरी ख़ाक दुबारा उस ख़ाक में मिल जाएगी जिस से निकल आई और तेरी रूह उस ख़ुदा के पास लौट जाएगी जिस ने उसे बख़्शा था।

8 वाइज़ फ़रमाता है, "बातिल ही बातिल! सब कुछ बातिल ही बातिल है!"

ख़ातमा

9 दानिशमन्द होने के इलावा वाइज़ क़ौम को इल्म-ओ-इर्फ़ान की तालीम देता रहा। उस ने मुतअद्दिद अम्साल को सहीह वज़न दे कर उन की जाँच-पड़ताल की और उन्हें तरतीबवार जमा किया। 10 वाइज़ की कोशिश थी कि मुनासिब अल्फ़ाज़ इस्तेमाल करे और दयानतदारी से सच्ची बातें लिखे।

11 दानिशमन्दों के अल्फ़ाज़ आँकुस की मानिन्द हैं, तरतीब से जमाशुदा अम्साल लकड़ी में मज़बूती से ठोंकी गई कीलों जैसी हैं। यह एक ही गल्लाबान की दी हुई हैं।

12 मेरे बेटे, इस के इलावा ख़बरदार रह। किताबें लिखने का सिलसिला कभी ख़त्म नहीं हो जाएगा, और हद से ज़्यादा कुतुबबीनी से जिस्म थक जाता है।

13 आओ, इख़तिताम पर हम तमाम तालीम के ख़ुलासे पर ध्यान दें। रब का ख़ौफ़ मान और उस के अह्काम की पैरवी कर। यह हर इन्सान का फ़र्ज़ है। 14 क्यूँकि अल्लाह हर काम को ख़्वाह वह छुपा ही हो, ख़्वाह बुरा या भला हो अदालत में लाएगा।

ग़ज़ल-उल-ग़ज़लात

तू मेरा बादशाह है

1 [1] सुलेमान की ग़ज़ल-उल-ग़ज़लात।

[2] वह मुझे अपने मुँह से बोसे दे, क्यूँकि तेरी
मुहब्बत मै से कहीं ज़्यादा राहतबख़्श है।

[3] तेरी इत्र की ख़ुश्बू कितनी मनमोहन है, तेरा
नाम छिड़का गया महकदार तेल ही है। इस लिए
कुंवारियाँ तुझे प्यार करती हैं।

[4] आ, मुझे खैंच कर अपने साथ ले जा! आ, हम
दौड़ कर चले जाएँ! बादशाह मुझे अपने कमरों में ले
जाए, और हम बाग़ बाग़ हो कर तेरी ख़ुशी मनाएँ।
हम मै की निस्बत तेरे प्यार की ज़्यादा तारीफ़ करें।
मुनासिब है कि लोग तुझ से मुहब्बत करें।

मुझे हक़ीर न जानो

[5] ऐ यरूशलम की बेटियो, मैं सियाहफ़ाम लेकिन
मनमोहन हूँ, मैं क़ीदार के ख़ैमों जैसी, सुलेमान के
ख़ैमों के पर्दों जैसी ख़ूबसूरत हूँ। [6] इस लिए मुझे हक़ीर
न जानो कि मैं सियाहफ़ाम हूँ, कि मेरी जिल्द धूप से
झुलस गई है। मेरे सगे भाई मुझ से नाराज़ थे, इस
लिए उन्हों ने मुझे अंगूर के बाग़ों की देख-भाल करने
की ज़िम्मादारी दी, अंगूर के अपने ज़ाती बाग़ की
देख-भाल मैं कर न सकी।

तू कहाँ है?

[7] ऐ तू जो मेरी जान का प्यारा है, मुझे बता कि भेड़-
बकरियाँ कहाँ चरा रहा है? तू उन्हें दोपहर के वक़्त
कहाँ आराम करने बिठाता है? मैं क्यूँ निक़ाबपोश
की तरह तेरे साथियों के रेवड़ों के पास ठहरी रहूँ?

[8] क्या तू नहीं जानती, तू जो औरतों में सब से
ख़ूबसूरत है? फिर घर से निकल कर खोज लगा कि
मेरी भेड़-बकरियाँ किस तरफ़ चली गई हैं, अपने
मेमनों को गल्लाबानों के ख़ैमों के पास चरा।

तू कितनी ख़ूबसूरत है

[9] मेरी महबूबा, मैं तुझे किस चीज़ से तश्बीह दूँ? तू
फ़िरऔन का शानदार रथ खैंचने वाली घोड़ी है!
[10] तेरे गाल बालियों से कितने आरास्ता, तेरी गर्दन
मोती के गुलूबन्द से कितनी दिलफ़रेब लगती है।
[11] हम तेरे लिए सोने का ऐसा हार बनवा लेंगे जिस
में चाँदी के मोती लगे होंगे।

[12] जितनी देर बादशाह ज़ियाफ़त में शरीक था मेरे
बालछड़ की ख़ुश्बू चारों तरफ़ फैलती रही।
[13] मेरा महबूब गोया मुर की डिबिया है, जो मेरी
छातियों के दरमियान पड़ी रहती है।
[14] मेरा महबूब मेरे लिए मेहंदी के फूलों का गुच्छा
है, जो ऐन-जदी के अंगूर के बाग़ों से लाया गया है।

[15] मेरी महबूबा, तू कितनी ख़ूबसूरत है, कितनी
हसीन! तेरी आँखें कबूतर ही हैं।

[16] मेरे महबूब, तू कितना ख़ूबसूरत है, कितना
दिलरुबा! सायादार हरियाली हमारा बिस्तर [17] और
देवदार के दरख़्त हमारे घर के शहतीर हैं। जूनीपर के
दरख़्त तख़्तों का काम देते हैं।

तू लासानी है

2 [1] मैं मैदान-ए-शारून का फूल और वादियों की
सोसन हूँ।

2लड़कियों के दरमियान मेरी महबूबा काँटेदार पौदों में सोसन की मानिन्द है।

3जवान आदमियों में मेरा महबूब जंगल में सेब के दरख़्त की मानिन्द है। मैं उस के साय में बैठने की कितनी आरज़ूमन्द हूँ, उस का फल मुझे कितना मीठा लगता है।

मैं इश्क़ के मारे बीमार हो गई हूँ

4वह मुझे मैकदे[z]में लाया है, मेरे ऊपर उस का झंडा मुहब्बत है।
5किशमिश की टिक्कियों से मुझे तर-ओ-ताज़ा करो, सेबों से मुझे तक़वियत दो, क्यूँकि मैं इश्क़ के मारे बीमार हो गई हूँ।
6उस का बायाँ बाज़ू मेरे सर के नीचे होता और दहना बाज़ू मुझे गले लगाता है।
7ऐ यरूशलम की बेटियो, ग़ज़ालों और खुले मैदान की हिरनियों की क़सम खाओ कि जब तक मुहब्बत ख़ुद न चाहे तुम उसे न जगाओगी, न बेदार करोगी।

बहार आ गई है

8सुनो, मेरा महबूब आ रहा है। वह देखो, वह पहाड़ों पर फलाँगता और टीलों पर से उछलता कूदता आ रहा है।
9मेरा महबूब ग़ज़ाल या जवान हिरन की मानिन्द है। अब वह हमारे घर की दीवार के सामने रुक कर खिड़कियों में से झाँक रहा, जंगले में से तक रहा है।

10वह मुझ से कहता है, "ऐ मेरी ख़ूबसूरत महबूबा, उठ कर मेरे साथ चल!
11देख, सर्दियों का मौसम गुज़र गया है, बारिशें भी ख़त्म हो गई हैं।
12ज़मीन से फूल फूट निकले हैं और गीत का वक़्त आ गया है, कबूतरों की ग़ूँ ग़ूँ हमारे मुल्क में सुनाई देती है।
13अन्जीर के दरख़्तों पर पहली फ़सल का फल पक रहा है, और अंगूर की बेलों के फूल ख़ुश्बू फैला रहे हैं। चुनाँचे आ मेरी हसीन महबूबा, उठ कर आ जा!
14ऐ मेरी कबूतरी, चटान की दराड़ों में छुपी न रह, पहाड़ी पत्थरों में पोशीदा न रह बल्कि मुझे अपनी शक्ल दिखा, मुझे अपनी आवाज़ सुनने दे, क्यूँकि तेरी आवाज़ शीरीं, तेरी शक्ल ख़ूबसूरत है।"

15हमारे लिए लोमड़ियों को पकड़ लो, उन छोटी लोमड़ियों को जो अंगूर के बाग़ों को तबाह करती हैं। क्यूँकि हमारी बेलों से फूल फूट निकले हैं।

16मेरा महबूब मेरा ही है, और मैं उसी की हूँ, उसी की जो सोसनों में चरता है।
17ऐ मेरे महबूब, इस से पहले कि शाम की हवा चले और साय लम्बे हो कर फ़रार हो जाएँ ग़ज़ाल या जवान हिरन की तरह संगलाख़ पहाड़ों का रुख़ कर!

रात को महबूब की आर्ज़ू

3 1रात को जब मैं बिस्तर पर लेटी थी तो मैं ने उसे ढूँडा जो मेरी जान का प्यारा है, मैं ने उसे ढूँडा लेकिन न पाया।
2मैं बोली, "अब मैं उठ कर शहर में घूमती, उस की गलियों और चौकों में फिर कर उसे तलाश करती हूँ जो मेरी जान का प्यारा है।" मैं ढूँडती रही लेकिन वह न मिला।
3जो चौकीदार शहर में गश्त करते हैं उन्हों ने मुझे देखा। मैं ने पूछा, "क्या आप ने उसे देखा है जो मेरी जान का प्यारा है?"

---

[z]मैकदे से मुराद ग़ालिबन महल का वह हिस्सा है जिस में बादशाह ज़ियाफ़त करता था।

4 आगे निकलते ही मुझे वह मिल गया जो मेरी जान का प्यारा है। मैं ने उसे पकड़ लिया। अब मैं उसे नहीं छोड़ूँगी जब तक उसे अपनी माँ के घर में न ले जाऊँ, उस के कमरे में न पहुँचाऊँ जिस ने मुझे जन्म दिया था।

5 ऐ यरूशलम की बेटियो, ग़ज़ालों और खुले मैदान की हिरनियों की क़सम खाओ कि जब तक मुहब्बत ख़ुद न चाहे तुम उसे न जगाओगी, न बेदार करोगी।

दूल्हा अपने लोगों के साथ आता है

6 यह कौन है जो धुएँ के सतून की तरह सीधा हमारे पास चला आ रहा है? उस से चारों तरफ़ मुर, बख़ूर और ताजिर की तमाम ख़ुशबूएँ फैल रही हैं।
7 यह तो सुलेमान की पालकी है जो इस्राईल के 60 पहलवानों से घिरी हुई है।
8 सब तलवार से लेस और तजरिबाकार फ़ौजी हैं। हर एक ने अपनी तलवार को रात के हौलनाक खतरों का सामना करने के लिए तय्यार कर रखा है।
9 सुलेमान बादशाह ने ख़ुद यह पालकी लुबनान के देवदार की लकड़ी से बनवाई।
10 उस ने उस के पाए चाँदी से, पुश्त सोने से, और निशस्त अर्ग़वानी रंग के कपड़े से बनवाई। यरूशलम की बेटियों ने बड़े प्यार से उस का अन्दरूनी हिस्सा मुरस्साकारी से आरास्ता किया है।

11 ऐ सिय्यून की बेटियो, निकल आओ और सुलेमान बादशाह को देखो। उस के सर पर वह ताज है जो उस की माँ ने उस की शादी के दिन उस के सर पर पहनाया, उस दिन जब उस का दिल बाग़ बाग़ हुआ।

तू कितनी हसीन है!

4 1 मेरी महबूबा, तू कितनी ख़ूबसूरत, कितनी हसीन है! निक़ाब के पीछे तेरी आँखों की झलक कबूतरों की मानिन्द है। तेरे बाल उन बकरियों की मानिन्द हैं जो उछलती कूदती कोह-ए-जिलिआद से उतरती हैं।
2 तेरे दाँत अभी अभी कतरी और नहलाई हुई भेड़ों जैसे सफ़ेद हैं। हर दाँत का जुड़वाँ है, एक भी गुम नहीं हुआ।
3 तेरे होंट क़िर्मिज़ी रंग का डोरा हैं, तेरा मुँह कितना प्यारा है। निक़ाब के पीछे तेरे गालों की झलक अनार के टुकड़ों की मानिन्द दिखाई देती है।
4 तेरी गर्दन दाऊद के बुर्ज जैसी दिलरुबा है। जिस तरह इस गोल और मज़बूत बुर्ज से पहलवानों की हज़ार ढालें लटकी हैं उस तरह तेरी गर्दन भी ज़ेवरात से आरास्ता है।
5 तेरी छातियाँ सोसनों में चरने वाले ग़ज़ाल के जुड़वाँ बच्चों की मानिन्द हैं।
6 इस से पहले कि शाम की हवा चले और साय लम्बे हो कर फ़रार हो जाएँ मैं मुर के पहाड़ और बख़ूर की पहाड़ी के पास चलूँगा।
7 मेरी महबूबा, तेरा हुस्न कामिल है, तुझ में कोई नुक़्स नहीं है।

दुल्हन का जादू

8 आ मेरी दुल्हन, लुबनान से मेरे साथ आ! हम कोह-ए-अमाना की चोटी से, सनीर और हर्मून की चोटियों से उतरें, शेरों की मान्दों और चीतों के पहाड़ों से उतरें।

9 मेरी बहन, मेरी दुल्हन, तू ने मेरा दिल चुरा लिया है, अपनी आँखों की एक ही नज़र से, अपने गुलूबन्द के एक ही जौहर से तू ने मेरा दिल चुरा लिया है।

10 मेरी बहन, मेरी दुल्हन, तेरी मुहब्बत कितनी मनमोहन है! तेरा प्यार मै से कहीं ज़्यादा पसन्दीदा है। बल्सान की कोई भी ख़ुश्बू तेरी महक का मुक़ाबला नहीं कर सकती।

11 मेरी दुल्हन, जिस तरह शहद छत्ते से टपकता है उसी तरह तेरे होंटों से मिठास टपकती है। दूध और शहद तेरी ज़बान तले रहते हैं। तेरे कपड़ों की ख़ुश्बू सूँघ कर लुबनान की ख़ुश्बू याद आती है।

दुल्हन नफ़ीस बाग़ है

12 मेरी बहन, मेरी दुल्हन, तू एक बाग़ है जिस की चारदीवारी किसी और को अन्दर आने नहीं देती, एक बन्द किया गया चश्मा जिस पर मुहर लगी है।
13 बाग़ में अनार के दरख़्त लगे हैं जिन पर लज़ीज़ फल पक रहा है। मेहंदी के पौदे भी उग रहे हैं।
14 बालछड़, ज़ाफ़रान, ख़ुश्बूदार बेद, दारचीनी, बख़ूर की हर क़िस्म का दरख़्त, मुर, ऊद और हर क़िस्म का बल्सान बाग़ में फलता फूलता है।
15 तू बाग़ का उबलता चश्मा है, एक ऐसा मम्बा जिस का ताज़ा पानी लुबनान से बह कर आता है।

16 ऐ शिमाली हवा, जाग उठ! ऐ जुनूबी हवा, आ! मेरे बाग़ में से गुज़र जा ताकि वहाँ से चारों तरफ़ बल्सान की ख़ुश्बू फैल जाए। मेरा महबूब अपने बाग़ में आ कर उस के लज़ीज़ फलों से खाए।

5 1 मेरी बहन, मेरी दुल्हन, अब मैं अपने बाग़ में दाख़िल हो गया हूँ। मैं ने अपना मुर अपने बल्सान समेत चुन लिया, अपना छत्ता शहद समेत खा लिया, अपनी मै अपने दूध समेत पी ली है। खाओ, मेरे दोस्तो, खाओ और पियो, मुहब्बत से सरशार हो जाओ!

रात को महबूब की तलाश

2 मैं सो रही थी, लेकिन मेरा दिल बेदार रहा। सुन! मेरा महबूब दस्तक दे रहा है,
"ऐ मेरी बहन, मेरी साथी, मेरे लिए दरवाज़ा खोल दे! ऐ मेरी कबूतरी, मेरी कामिल साथी, मेरा सर ओस से तर हो गया है, मेरी ज़ुल्फ़ें रात की शबनम से भीग गई हैं।"

3 "मैं अपना लिबास उतार चुकी हूँ, अब मैं किस तरह उसे दुबारा पहन लूँ? मैं अपने पाँओ धो चुकी हूँ, अब मैं उन्हें किस तरह दुबारा मैला करूँ?"

4 मेरे महबूब ने अपना हाथ दीवार के सूराख़ में से अन्दर डाल दिया। तब मेरा दिल तड़प उठा।
5 मैं उठी ताकि अपने महबूब के लिए दरवाज़ा खोलूँ। मेरे हाथ मुर से, मेरी उंगलियाँ मुर की ख़ुश्बू से टपक रही थीं जब मैं कुंडी खोलने आई।
6 मैं ने अपने महबूब के लिए दरवाज़ा खोल दिया, लेकिन वह मुड़ कर चला गया था। मुझे सख़्त सदमा हुआ। मैं ने उसे तलाश किया लेकिन न मिला। मैं ने उसे आवाज़ दी, लेकिन जवाब न मिला।
7 जो चौकीदार शहर में गश्त करते हैं उन से मेरा वास्ता पड़ा, उन्हों ने मेरी पिटाई करके मुझे ज़ख़्मी कर दिया। फ़सील के चौकीदारों ने मेरी चादर भी छीन ली।
8 ऐ यरूशलम की बेटियो, क़सम खाओ कि अगर मेरा महबूब मिला तो उसे इत्तिला दोगी, मैं मुहब्बत के मारे बीमार हो गई हूँ।
9 तू जो औरतों में सब से हसीन है, हमें बता, तेरे महबूब की क्या ख़ासियत है जो दूसरों में नहीं है? तेरा महबूब दूसरों से किस तरह सब्क़त रखता है कि तू हमें ऐसी क़सम खिलाना चाहती है?
10 मेरे महबूब की जिल्द गुलाबी और सफ़ेद है। हज़ारों के साथ उस का मुक़ाबला करो तो उस का आला किरदार नुमायाँ तौर पर नज़र आएगा।
11 उस का सर ख़ालिस सोने का है, उस के बाल खजूर के फूलदार गुच्छों [a] की मानिन्द और कव्वे की तरह सियाह हैं।

[a] इब्रानी लफ़्ज़ का मतलब मुब्हम सा है।

12 उस की आँखें नदियों के किनारे के कबूतरों की मानिन्द हैं, जो दूध में नहलाए और कस्रत के पानी के पास बैठे हैं।
13 उस के गाल बल्सान की क्यारी की मानिन्द, उस के होंट मुर से टपकते सोसन के फूलों जैसे हैं।
14 उस के बाज़ू सोने की सलाखें हैं जिन में पुखराज [b]जड़े हुए हैं, उस का जिस्म हाथीदाँत का शाहकार है जिस में संग-ए-लाजवर्द [c]के पत्थर लगे हैं।
15 उस की रानें मरमर के सतून हैं जो ख़ालिस सोने के पाइयों पर लगे हैं। उस का हुल्या लुबनान और देवदार के दरख़्तों जैसा उम्दा है।
16 उस का मुँह मिठास ही है, ग़रज़ वह हर लिहाज़ से पसन्दीदा है।

ए यरूशलम की बेटियो, यह है मेरा महबूब, मेरा दोस्त।

6 1 ऐ तू जो औरतों में सब से ख़ूबसूरत है, तेरा महबूब किधर चला गया है? उस ने कौन सी सिम्त इख़्तियार की ताकि हम तेरे साथ उस का खोज लगाएँ?

2 मेरा महबूब यहाँ से उतर कर अपने बाग़ में चला गया है, वह बल्सान की क्यारियों के पास गया है ताकि बाग़ों में चरे और सोसन के फूल चुने।
3 मैं अपने महबूब की ही हूँ, और वह मेरा ही है, वह जो सोसनों में चरता है।

तू कितनी ख़ूबसूरत है

4 मेरी महबूबा, तू तिर्ज़ा शहर जैसी हसीन, यरूशलम जैसी ख़ूबसूरत और अलमबरदार दस्तों जैसी रोबदार है।

5 अपनी नज़रों को मुझ से हटा ले, क्यूँकि वह मुझ में उलझन पैदा कर रही हैं।
तेरे बाल उन बकरियों की मानिन्द हैं जो उछलती कूदती कोह-ए-जिलिआद से उतरती हैं।
6 तेरे दाँत अभी अभी नहलाई हुई भेड़ों जैसे सफ़ेद हैं। हर दाँत का जुड़वाँ है, एक भी गुम नहीं हुआ।
7 निक़ाब के पीछे तेरे गालों की झलक अनार के टुकड़ों की मानिन्द दिखाई देती है।

8 गो बादशाह की 60 बीवियाँ, 80 दाश्ताएँ और बेशुमार कुंवारियाँ हों
9 लेकिन मेरी कबूतरी, मेरी कामिल साथी लासानी है। वह अपनी माँ की वाहिद बेटी है, जिस ने उसे जन्म दिया उस की पाक लाडली है। बेटियों ने उसे देख कर उसे मुबारक कहा, रानियों और दाश्ताओं ने उस की तारीफ़ की,
10 "यह कौन है जो तुलू-ए-सुब्ह की तरह चमक उठी, जो चाँद जैसी ख़ूबसूरत, आफ़ताब जैसी पाक और अलमबरदार दस्तों जैसी रोबदार है?"

महबूबा के लिए आर्ज़ू

11 मैं अख़रोट के बाग़ में उतर आया ताकि वादी में फूटने वाले पौदों का मुआइना करूँ। मैं यह भी मालूम करना चाहता था कि क्या अंगूर की कोंपलें निकल आई या अनार के फूल लग गए हैं।
12 लेकिन चलते चलते न जाने क्या हुआ, मेरी आर्ज़ू ने मुझे मेरी शरीफ़ क़ौम के रथों के पास पहुँचाया।

महबूबा की दिलकशी

13 ऐ शूलम्मीत, लौट आ, लौट आ! मुड़ कर लौट आ ताकि हम तुझ पर नज़र करें।

तुम शूलम्मीत को क्यूँ देखना चाहती हो? हम लश्करगाह का लोकनाच देखना चाहती हैं!

7 1 ऐ रईस की बेटी, जूतों में चलने का तेरा अन्दाज़ कितना मनमोहन है! तेरी ख़ुशवज़ा रानें माहिर कारीगर के ज़ेवरात की मानिन्द हैं।

---

[b]topas

[c]lapis lazuli

2 तेरी नाफ़ प्याला है जो मै से कभी नहीं महरूम रहती। तेरा जिस्म गन्दुम का ढेर है जिस का इहाता सोसन के फूलों से किया गया है।

3 तेरी छातियाँ ग़ज़ाल के जुड़वाँ बच्चों की मानिन्द हैं।

4 तेरी गर्दन हाथीदाँत का मीनार, तेरी आँखें हस्बोन शहर के तालाब हैं, वह जो बत-रब्बीम के दरवाज़े के पास हैं। तेरी नाक मीनार-ए-लुबनान की मानिन्द है जिस का मुँह दमिश्क़ की तरफ़ है।

5 तेरा सर कोह-ए-कर्मिल की मानिन्द है, तेरे खुले बाल अर्ग़वान की तरह क़ीमती और दिलकश हैं। बादशाह तेरी ज़ुल्फ़ों की ज़न्जीरों में जकड़ा रहता है।

महबूबा के लिए आर्ज़ू

6 ऐ ख़ुशियों से लबरेज़ मुहब्बत, तू कितनी हसीन है, कितनी दिलरुबा!

7 तेरा क़द-ओ-क़ामत खजूर के दरख़्त सा, तेरी छातियाँ अंगूर के गुच्छों जैसी हैं।

8 मैं बोला, "मैं खजूर के दरख़्त पर चढ़ कर उस के फूलदार गुच्छों [d]पर हाथ लगाऊँगा।" तेरी छातियाँ अंगूर के गुच्छों की मानिन्द हों, तेरे साँस की ख़ुश्बू सेबों की ख़ुश्बू जैसी हो।

9 तेरा मुँह बेहतरीन मै हो, ऐसी मै जो सीधी मेरे महबूब के मुँह में जा कर नर्मी से होंटों और दाँतों में से गुज़र जाए।

महबूब के लिए आर्ज़ू

10 मैं अपने महबूब की ही हूँ, और वह मुझे चाहता है।

11 आ, मेरे महबूब, हम शहर से निकल कर दीहात में रात गुज़ारें।

12 आ, हम सुब्ह-सवेरे अंगूर के बाग़ों में जा कर मालूम करें कि क्या बेलों से कोंपलें निकल आई हैं और फूल लगे हैं, कि क्या अनार के दरख़्त खिल रहे हैं। वहाँ मैं तुझ पर अपनी मुहब्बत का इज़हार करूँगी।

13 मर्दुमगयाह [e]की ख़ुश्बू फैल रही, और हमारे दरवाज़े पर हर क़िस्म का लज़ीज़ फल है, नई फ़सल का भी और गुज़री का भी। क्यूँकि मैं ने यह चीज़ें तेरे लिए, अपने महबूब के लिए महफ़ूज़ रखी हैं।

काश हम अकेले हों

8 1 काश तू मेरा सगा भाई [f]होता, तब अगर बाहर तुझ से मुलाक़ात होती तो मैं तुझे बोसा देती और कोई न होता जो यह देख कर मुझे हक़ीर जानता।

2 मैं तेरी राहनुमाई करके तुझे अपनी माँ के घर में ले जाती, उस के घर में जिस ने मुझे तालीम दी। वहाँ मैं तुझे मसालेदार मै और अपने अनारों का रस पिलाती।

3 उस का बायाँ बाज़ू मेरे सर के नीचे होता और दायाँ बाज़ू मुझे गले लगाता है।

4 ऐ यरूशलम की बेटियो, क़सम खाओ कि जब तक मुहब्बत ख़ुद न चाहे तुम उसे न जगाओगी, न बेदार करोगी।

महबूब की आख़िरी बात

5 यह कौन है जो अपने महबूब का सहारा ले कर रेगिस्तान से चढ़ी आ रही है?

सेब के दरख़्त तले मैं ने तुझे जगा दिया, वहाँ जहाँ तेरी माँ ने तुझे जन्म दिया, जहाँ उस ने दर्द-ए-ज़ह में मुब्तला हो कर तुझे पैदा किया।

---

[d] इब्रानी लफ़्ज़ का मतलब मुब्हम सा है।

[e] एक पौदा जिस के बारे में सोचा जाता था कि उसे खा कर बाँझ औरत भी बच्चे को जन्म देगी।

[f] लफ़्ज़ी तर्जुमा : मेरा भाई होता, जिसे मेरी माँ ने दूध पिलाया होता।

[6]मुझे मुहर की तरह अपने दिल पर, अपने बाज़ू पर लगाए रख! क्यूँकि मुहब्बत मौत जैसी ताक़तवर, और उस की सरगर्मी पाताल जैसी बेलचक है। वह दहकती आग, रब का भड़कता शोला है।

[7]पानी का बड़ा सैलाब भी मुहब्बत को बुझा नहीं सकता, बड़े दरया भी उसे बहा कर ले जा नहीं सकते। और अगर कोई मुहब्बत को पाने के लिए अपने घर की तमाम दौलत पेश भी करे तो भी उसे जवाब में हक़ीर ही जाना जाएगा।

महबूबा की आख़िरी बात

[8]हमारी छोटी बहन की छातियाँ नहीं हैं। हम अपनी बहन के लिए क्या करें अगर कोई उस से रिश्ता बांधने आए?

[9]अगर वह दीवार हो तो हम उस पर चाँदी का क़िलाबन्द इन्तिज़ाम बनाएँगे। अगर वह दरवाज़ा हो तो हम उसे देवदार के तख़्ते से महफ़ूज़ रखेंगे।

[10]मैं दीवार हूँ, और मेरी छातियाँ मज़बूत मीनार हैं। अब मैं उस की नज़र में ऐसी ख़ातून बन गई हूँ जिसे सलामती हासिल हुई है।

सुलेमान से ज़्यादा दौलतमन्द

[11]बाल-हामून में सुलेमान का अंगूर का बाग़ था। इस बाग़ को उस ने पहरेदारों के हवाले कर दिया। हर एक को उस की फ़सल के लिए चाँदी के हज़ार सिक्के देने थे।

[12]लेकिन मेरा अपना अंगूर का बाग़ मेरे सामने ही मौजूद है। ऐ सुलेमान, चाँदी के हज़ार सिक्के तेरे लिए हैं, और 200 सिक्के उन के लिए जो उस की फ़सल की पहरादारी करते हैं।

मुझे ही पुकार

[13]ऐ बाग़ में बसने वाली, मेरे साथी तेरी आवाज़ पर तवज्जुह दे रहे हैं। मुझे ही अपनी आवाज़ सुनने दे।

[14]ऐ मेरे महबूब, ग़ज़ाल या जवान हिरन की तरह बल्सान के पहाड़ों की जानिब भाग जा!।